

पालि महाव्याकरण

प्रकाशकीय निवेदन

हिन्दी पाठकों के सम्मुख आज 'पालि-महाव्याकरण' उपस्थित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। आज तक किसी भी भारतीय भाषा में इतना पूर्ण, और साथ ही साथ सरल, पालि-व्याकरण प्रकाशित नहीं हुआ। मेरा विश्वास है कि विद्यार्थी तथा विद्वानों को इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी।

महाबोधि सभा ने अभी तक त्रिपिटक के कई मुख्य मुख्य ग्रन्थों का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है, जिससे हिन्दी पाठकों को पालि-साहित्य की विभूति का परिचय मिला है। किंतु, अनुवाद मूल ग्रन्थों का स्थान नहीं ले सकते। बौद्ध साहित्य के गम्भीर ग्रन्थयन के लिए मूल ग्रन्थों का अवलोकन करना नितान्त आवश्यक है। इस 'व्याकरण' की सहायता से अब यह आसान हो जायगा। भिक्षु जगदीश काश्यप, एम० ए० ने इस महान कार्य को करके हम सबों को अनुग्रहीत किया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में व्यय अधिक हुआ है, जिसका भार मैं आप विद्यानुरागी महानुभावों की सहायता के भरोसे पर ही वहन कर रहा हूँ। अभी तक जो दान प्राप्त हुआ है उसका व्योरा निम्न प्रकार है:—

Mr. Rajah Hewavitarne, Colombo	..	50/-
Mr. P. D. Richard, Kitulgala.	..	25/-
Mr. T. J. Samarakone, Matara	..	25/-
Mr. W. James Sinno, Bisowela.	..	10/-
Collected by Mr. D. M. Kiri Banda, Ram-		
bukkana	10/-
Ceylon Pilgrim Party, December, 1939.	..	41/-
Mr. P. Jayatilaka, Colombo	30/-
Mr. H. M. Gunasekara, Colombo	..	20/-
Mrs. J. P. Ratnayaka, Wadduwa	10/-
Mrs. J. H. Perera, Wadduwa	10/-

(४)

Mr. & Mrs. Wijayakoon, Colombo ..	30/-
Small amounts.	42/12/-

निवेदक

अह्मचारी देवप्रिय बलिसिंह, बी० ए०

मन्त्री

महाबोध सभा, सारनाथ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि-महाव्याकरण

लेखक

भिक्षु जगदीश काश्यप

महाबोधि सभा, सारनाथ
बनारस

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लाँ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रकाशक
महाबोधि सभा, सारनाथ
बनारस

समर्पण

जिन्होंने बड़े स्नेह से मा के समान मेरा लालन-पालन
किया, जिनकी प्रेरणा से 'तारा' को पढ़ाने के
लिए हिन्दी में पालि-व्याकरण लिखने
का संकल्प हुआ, उन्हीं दिव-
गत 'उपासिका' की
स्मृति में ।

भूमिका

पालि-व्याकरणों में 'मोग्गल्लान' अत्यन्त पूर्ण और प्रौढ़ है। इसी के सारे सूत्रों को मैं ने इस तरह सजा कर सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है, कि क्रमशः प्रवेश कर व्याकरण पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया जा सके।

पुस्तक के वृहत आकार को देख कर ऐसा न समझ लें, कि इसका स्टैण्डर्ड बहुत ऊँचा है, और यह स्कूल-कालेज के विद्यार्थियों के काम की चीज नहीं है। मूल-पुस्तक केवल २८६ पृष्ठों में समाप्त हो जाती है; और, उस में भी आधी से अधिक पाद-टिप्पणियाँ हैं। स्कूल-कालेज के विद्यार्थी इन पाद-टिप्पणियों को छोड़ कर ऊपर ही ऊपर मजे में पढ़ सकते हैं, जो उनके स्टैण्डर्ड के बिलकुल अनुकूल हैं। साथ ही साथ, जो कुछ गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, वे पाद-टिप्पणियों को भी देख सकते हैं।

प्रत्येक 'पाठ' के अन्त में एक अभ्यास दे दिया गया है, जो विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी होगा। अभ्यास की भाषा तथा शैली को त्रिपिटक से अधिक से अधिक निकट रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक के अन्त में, विद्यार्थियों की सहायता के लिए, अभ्यासों के लिए संकेत भी दे दिए हैं।



श्री ब्रह्मचारी देवप्रिय बलिसिंह, मंत्री, महाबोधि सभा, ने पुस्तक के प्रकाशन का भार ग्रहण कर बड़ा उत्साहित किया है।

मित्रवर श्री तपस्वी जी ने आदि से अन्त तक पुस्तक लिखने, अभ्यास बनाने, तथा 'वस्तु-कथा' लिखने में बड़ी ही सहायता की।

हमारे श्रद्धेय नाना, पण्डित अयोध्या प्रसाद, वैदिक रिसर्च स्कालर, तथा राहुल जी ने अनेक सलाहें दी हैं।

परम पूज्य भाई आनन्द कौशल्यायन जी ने प्रूफ देख कर तथा भाषा में जहाँ तहाँ संशोधन कर बड़ी सहायता की है।

(१०)

श्री भवानी शरण, साहित्यरत्न, मारकण्डेय शुक्ल, और जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल प्रभृति हमारी शिष्य-मण्डली ने सूची तथा अनुक्रमणिका तैयार करने में काफी परिश्रम किया है ।

सभी को इस उपकार के लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

भिक्षु जगदीश काश्यप

सारनाथ

२६-४-४०

वस्तु-कथा

पालि-व्याकरण की वस्तु-कथा

पहला खण्ड

बुद्धत्व लाभ करने के बाद से भगवान् ४५ साल तक कोसी-कुसक्षेत्र तथा हिमाचल-विन्ध्य के भीतर घूम-घूम कर अपने धर्म का प्रचार करते रहे । साधारण से साधारण मनुष्य से लेकर उस समय के बड़े से बड़े राजकुमार तक अपना सर्वस्व त्याग भगवान् के संघ में सम्मिलित हुए । जिस प्रकार सभी दिशाओं से नाना नदियाँ बह कर आती हैं, और समुद्र में एक हो जाती हैं, उसी तरह नाना प्रान्त के, नाना जाति के, नाना मत के, तथा नाना गोत्र के कुलपुत्र, परम शान्त निर्वाण के उद्देश्य से भगवान् के संघ में आ, एक हो कर विहार करते थे ।

भगवान् जहाँ कहीं भी चारिका करते थे, बड़ी-बड़ी सख्या में उनकी शिष्य-मण्डली साथ रहती थी । तत्कालीन मगधराज विम्बिसार ने भी भगवान् के धर्म को स्वीकार कर लिया था, और बड़ी श्रद्धा से बुद्ध तथा संघ के निमित्त एक सुरम्य विहार बनवा दिया था; जो 'वेळुवनाराम' नाम से प्रसिद्ध हुआ । श्रावस्ती के विख्यात श्रेष्ठी अनाथपिण्डक ने भी उसी तरह, बुद्ध तथा संघ के लिए श्रावस्ती से कुछ हट कर एक रम्य स्थान में जेतवनाराम बनवाया था । इस तरह, बुद्ध तथा संघ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमने से सारा उत्तर भारत एक हो रहा था ।

बुद्ध का धर्मोपदेश करने का तरीका अत्यन्त सरल था । तैयारी और आडम्बर के बिना ही, जहाँ कहीं जब कभी उचित अवसर आता था, बुद्ध अत्यन्त सरल भाषा में, अत्यन्त सरल ढंग से गम्भीर तथा लोकोत्तर धर्मोपदेश करते थे । उनके शिष्य उन उपदेशों को कण्ठ कर लिया करते थे । जब किसी भिक्षु को कुछ शंका होती थी तो वह बुद्ध के पास जाता था और अपनी शंका निवारण कर लेता था ।

बुद्ध के सारे उपदेश मौखिक ही हुए थे। उन्होंने अपने उपदेशों को लिख रखने की कभी कोई बात कही हो इसका उल्लेख नहीं आता है। बुद्ध का अभिप्राय था कि उनका धर्म केवल कुछ पण्डित लोगों या भिक्षुओं की ही चीज हो कर न रहे। वे चाहते थे कि उनके धर्म का संदेश सूरज की किरण की तरह, भोपड़ी से लेकर प्रासाद तक समान रूप से व्याप्त हो।

मागधी

इस अभिप्राय से, सारे मध्य मण्डल में उस समय जो भाषा सामान्य रूप से बोली जाती थी, उसी में बुद्ध ने समस्त उपदेश दिए। ऊपर कहा जा चुका है कि, बुद्ध के संघ में उत्तर भारत के सभी प्रदेशों के, सभी वर्गों के कुलपुत्र प्रव्रजित हो सम्मिलित हुए थे। मगध के भी, वैशाली के भी, मिथिला के भी, काशी के भी, कोशल के भी, राजकुल के भी, श्रेष्ठी कुल के भी, शूद्र कुल के भी, सब भिक्षु समान रूप से एक साथ रहते थे। यह निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रान्त और समाज के अनुसार उनकी अपनी-अपनी बोली भी भिन्न-भिन्न रही होगी; किंतु, सभी साथ रहने पर साधारण भाषा मागधी का ही प्रयोग करते थे। आज-कल भी, यदि एक मगही, एक भोजपुरी, एक अवधी, तथा एक मैथिल एक जगह मिलें तो आपस में हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे—मगही, या भोजपुरी का नहीं। हाँ, इतना अवश्य होगा कि, मगही की हिन्दी में कुछ न कुछ मगहिपन, और भोजपुरी की हिन्दी में कुछ न कुछ भोजपुरीपन रहेगा ही। ठीक उसी तरह, भिक्षुसंघ में सामान्य रूप से एक भाषा मागधी का व्यवहार होने पर भी, भिन्न-भिन्न प्रान्त के भिक्षु उसमें अपनी अपनी पुट लगा ही देते थे। यही कारण है कि पालि के 'नाम' तथा 'धातु' के रूपों में हम इतनी भिन्नता पाते हैं।

'कार्य' शब्द के लिए 'कय्य' तथा 'करिय' भी; 'आर्य' शब्द के लिए 'अय्य' तथा 'अरिय' भी रूप मिलते हैं। 'ह्रस्व' शब्द के लिए 'रस्स'; किंतु 'ह्रद' शब्द के लिए 'रहदो' रूप मिलता है। 'रश्मि' शब्द के लिए 'रस्मि'; किंतु, 'अस्मि' के लिए 'अम्हि' हो जाता है।

इन विभिन्नताओं को देखने से, यह बात दृढ़ होती है कि इसका कारण भिक्षुओं का भिन्न भिन्न प्रान्तों से आकर एक साथ रहना ही था। मागधी भाषा का पूरा

विकास भिक्षु-संघ में ही हुआ। यह भाषा सारे मध्य-मण्डल की एक जीवित अन्तर्प्रान्तीय भाषा थी, जिसे सभ्य समुदाय बड़े गौरव से बोलता था।

यही भाषा मगध सम्राटों की राज्य-भाषा बनी, क्योंकि मगध राज्य के विस्तार के बाद ऐसी ही व्यापक भाषा की आवश्यकता थी। राज-भाषा होने से इस भाषा का सम्मान और भी बढ़ गया; तथा मगध-राज्य की भाषा होने के कारण इसका नाम भी 'मागधी' पड़ा।

यह 'मागधी भाषा' मगध की खास अपनी भाषा न थी; किंतु सारे मध्य-मण्डल में बोली जाने वाली वह भाषा थी जिसे मगध-सम्राटों ने अधिक उपयोगी देख कर अपनी राज-भाषा बनाया था। हाँ, इतना तो जरूर हुआ कि मगध की राज-भाषा बनने के बाद इस पर 'मगध' की अपनी बोली की काफी छाप पड़ गई।

इसी मागधी भाषा को बुद्ध ने धर्म-प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम समझ, इसी में अपने सारे उपदेश दिए।

चुल्लवग्ग ५ § ६।१ में एक कथा आती है, जिससे साफ प्रकट होता है कि 'मागधी-भाषा' अपनाते में बुद्ध का क्या प्रयोजन था—

अपनी अपनी भाषा में धर्म सीखने की आज्ञा

“उस समय यमेळ यमेळते-कुल नामक ब्राह्मण जाति के सुन्दर (=कल्याण) वचन वाले, सुन्दर वचन बोलने वाले दो भाई भिक्षु थे। वे जहाँ भगवान् थे वहाँ गए, जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे उन भिक्षुओं ने भगवान् से कहा—

“भन्ते ! इस समय नाना नाम, गोत्र, जाति, कुल के (पुरुष) प्रव्रजित होते हैं। वह अपनी भाषा में बुद्ध वचन को (कह कर उसे) दूषित करते हैं। अच्छा हो भन्ते ! हम बुद्ध-वचन को छन्द^१ में बना दें।

“भगवान् ने फटकारा—भिक्षुओ ! यह अयुक्त है, अनुचित है...। भिक्षुओ ! न यह अप्रसन्नो (=श्रद्धा रहितो) को प्रसन्न करने के लिए है, न प्रसन्नो की (श्रद्धा को) और बढ़ाने के लिए है; बल्कि भिक्षुओ ! यह अप्रसन्नो

^१ वैदिक छन्द में—अट्टकथा।

को और भी अप्रसन्न करने के लिए है, और प्रसन्नों (=श्रद्धालुओं) में से भी किसी-किसी की श्रद्धा को उल्टा करने वाला है।

“फटकार कर धार्मिक कथा कह भगवान् ने भिक्षुओं को संबोधित किया—

“भिक्षुओ ! बुद्ध-वचन को छन्द^१ में न करना चाहिए। जो करेगा उसे ‘दुष्कृत’ अपराध लगेगा।

“भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ अपनी भाषा में बुद्ध-वचन सीखने की।”

बुद्धघोषाचार्य ने अपनी अट्टकथा में ‘सकाय निरुत्तिया’ का अर्थ ‘मागधी भाषा में’ किया है। किंतु, स्थल को देख कर साफ़ प्रकट होता है कि यहां बुद्ध की इच्छा ‘अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति’ देने की ही है। बुद्ध-संघ में बड़े-बड़े पण्डित से ले कर निरक्षर लोग तक—जिन किन्हीं को निर्वाण को उच्च प्रेरणा मिली—सम्मिलित थे। हो सकता है कि उनमें कुछ अपढ़ लोग बुद्ध ‘मागधी’ न बोल कर अपनी-अपनी प्रान्तीय बोली बोलते रहे हों। आज कल भी कितने ठेठ मगही या भोजपुरी दूसरे प्रान्त में जाने पर, या पढ़े लिखे लोगों के समाज में भी अपनी ही बोली बोलते हैं। उन दो शिक्षित ब्राह्मण भिक्षुओं को अपनी अपनी भाषा में बुद्ध-वचन कहना स्वाभाविक तौर पर बुरा जान पड़ा, इसी लिए उनसे बुद्ध-वचनको वैदिक-छन्दों में करने का प्रस्ताव रखा। किंतु, बुद्ध तो अपनी शिक्षा को सरल से सरल और सुबोध से सुबोध बना कर जनता को देना चाहते थे। उनसे उस प्रस्ताव को अस्वीकार किया, और अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति दी।

पालि

अब प्रश्न होता है कि, इस भाषा का नाम पालि कैसे पड़ा ? किसी भी ग्रन्थ में ‘मागधी भाषा’ के लिए ‘पालि’ नाम का व्यवहार नहीं हुआ है। मोग्गल्लान व्याकरण का आदि श्लोक है:—

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं
सधम्मसङ्घं भासिस्सं मागधं स ह ल क्व णं ।

^१ वैदिक छन्द में—अट्टकथा।

^२ “अलुजानामि भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया बुद्धवचनं परियापुण्णुं।”

यहाँ भी ग्रन्थ का नाम 'भागध शब्द लक्षण' बताया है—'पालि-शब्द लक्षण' नहीं।

'पालि' शब्द का प्रयोग केवल मूल त्रिपिटक के लिए आता है; जैसे—दीर्घ निक्काय पालि, उदान पालि, इत्यादि। "पालिमत्तं इध आनीतं, नत्थि अट्टकथा इध" = यहाँ केवल पालि लाई गई है, यहाँ अर्थकथा नहीं है; "नेव पालियं न अट्टकथायं दिस्सति" = न तो पालि में और न अर्थकथा ही से यह देखा जाता है; "इमिस्सा पन पालिया एवमत्थो वेदितव्वो" = इस पालि का यह अर्थ समझना चाहिए—इत्यादि वाक्यों के देखने से साफ मालूम होता है कि 'पालि' शब्द का प्रयोग मूल त्रिपिटक के लिए होता था।

धीरे धीरे उस भाषा का ही नाम—जिस में बुद्ध-वचन सुरक्षित था—'पालि' हो गया जान पड़ता है।

जब 'भागधी भाषा' का नाम 'पालि भाषा' हो गया, तब लोगों ने इसके विषय में तरह-तरह की हास्यास्पद कल्पनाएँ करनी आरम्भ कर दीं जैसे—पालि भाषा पाटलिपुत्र की भाषा थी; इसलिए इसका नाम 'पाटलि भाषा' पड़ा; 'पाटलि भाषा' ही धीरे-धीरे बिगड़ कर 'पालि भाषा' कही जाने लगी। कुछ लोगों ने 'पालि भाषा' की व्युत्पत्ति 'पल्लि भाषा' से करने की कोशिश की; पल्लि भाषा, अर्थात् गाँव की भाषा : इत्यादि

यह स्मरण रखना चाहिए कि 'पालि' शब्द कभी भी भाषा के लिए नहीं आया है। भाषा के लिए सदैव 'भागधी' नाम ही आता है।

पालि = पंक्ति

आचार्य मोग्गल्लान तथा दूसरे वैयाकरण भी 'पालि' शब्द को 'पा' धातु से परे ण्वादि का 'लि' प्रत्यय लगा कर सिद्ध करते हैं, और उसका अर्थ पंक्ति तथा श्रेणी बताते हैं।

इसी अर्थ को ले कर, मान्य श्री विधुशेखर शास्त्री प्रभृति कुछ विद्वानों का मत है कि 'पालि' का अर्थ 'मूल ग्रन्थ की पंक्ति' है। आज कल भी, पण्डितों को जब किसी मूल ग्रन्थ का हवाला देना होता है तो भट्ट कह देते हैं—पंक्ति में भी यह बात इस तरह है। ऐसा लोग अक्सर कहते देखे जाते हैं—गोसाई जी की पाँत में ऐसा है।

किंतु, यह सिद्धान्त युक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होता।

(१) इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि राजगृह में संगीति हो जाने के बाद 'दीघनिकाय', 'मज्झिम निकाय' आदि मूल ग्रन्थ लिखे गए हों। बल्कि, भिक्षुओं में ऐसी परिपाटी थी कि वे सारे निकाय के निकाय को कण्ठ कर लेते थे। जो भिक्षु दीघनिकाय को याद कर लेता था उसे दीघ भागक अर्थात् 'दीघ-निकाय सुनाने वाला' कहते थे। इसी तरह, सङ्खरुन-भागक, शृंगुत्तर-भागक आदि हुआ करते थे। त्रिपिटक के सभी ग्रन्थ जो 'भागवारों' में विभक्त किए गए हैं, उनका उद्देश्य यही था कि उतना हिस्सा एक बार याद कर सुनाना चाहिए।

ऐसी हालत में, सम्भव नहीं है कि इन ग्रन्थों के साथ लगने वाला शब्द 'पालि' पंक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो। 'पंक्ति' का प्रयोग केवल उसी ग्रन्थ के साथ होना समझ में आता है जो लिखित हो। जो ग्रन्थ केवल सुना सुनोया जाता है उसके विषय में 'पंक्ति' शब्द का व्यवहार करना जँचता नहीं है।

(२) 'पालि' साहित्य में, कहीं भी 'पालि' शब्द 'ग्रन्थ की पंक्ति' के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है। यह ध्यान देने लायक बात है कि मूल त्रिपिटक के ग्रन्थों के अन्दर कहीं 'पालि' शब्द का प्रयोग नहीं देखा जाता है। हाँ, ग्रन्थ के नाम के साथ 'पालि' शब्द लगा दिया जाता है—जैसे, उदान पालि, पारचिसिय पालि आदि। अब, यदि 'पालि' का अर्थ 'पंक्ति' ले तो 'उदान-पंक्ति', पाराजिक-पंक्ति आदि शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं निकलता है।

(३) यदि 'पालि' शब्द का अर्थ 'पंक्ति' होता तो उसे बहुवचन में भी प्रयुक्त होना चाहिए था; जैसे—'उदानस्स पालीसु' = उदान ग्रन्थ की पंक्तियों में, इत्यादि। किंतु, सभी जगह, 'उदान पालियं' ऐसा एक वचनान्त ही पाठ आता है।

तब, 'पालि' का क्या अर्थ है

त्रिपिटक के मूल ग्रन्थों में जगह-जगह पर बुद्ध-देशना = बुद्ध-उपदेश = बुद्ध-वचन के अर्थ में 'धम्म-परियाय' शब्द का पाठ मिलता है। जैसे:—

“परियाय”

(क) “तस्मात्तिह त्वं आनन्द ! इमं धम्म-परियायं अस्थजालन्ति पिनं धारेहि . . . अनुत्तरो संगमविजयो ति पिनं धारेहि :

दीघनिकाय; ब्रह्मजाल सूत्र

अर्थात्—आनन्द ! इस ‘धम्म-परियाय’ (=मेरे उपदेश) को अर्थजाल भी समझो . . . अलौकिक संगमविजय भी समझो ।”

(ख) “एवं वुत्ते मुण्डो राजा आयुष्मान् नारदं एतदवोच—को नु त्वो अय भन्ते ! धम्मपरियायो ति ?

“सोकसल्लहरणो नाम अयं महाराज धम्मपरियायो ति ।

“सग्व भन्ते ! सोकसल्लहरणो, तस्य भन्ते ! सोकसल्लहरणो—इवं हि मे भन्ते धम्मपरियायं सुखा सोकसल्लं प्रहीनन्ति ।

अगुत्तर निकाय

(P. T. S. III. 62)

अर्थात्—ऐसा कहने पर मुण्ड राजा ने आयुष्मान् नारद को कहा, “भन्ते ! इस ‘धम्मपरियाय’ (=धर्म देशना =सूत्र) का क्या नाम है ?

महाराज ! इस ‘धम्मपरियाय’ का नाम ‘शोकशल्यहरण’ है ।

भन्ते ! ठीक है, ठीक है, यह ‘शोकशल्य’ हरण ही है । भन्ते ! इस ‘धम्म-परियाय’ को सुन कर ‘शोकशल्य’ प्रहीण हो गया ।”

ऊपर के उद्धरणों से यह साफ मालूम होता है कि ‘परियाय’ का अर्थ बुद्धोप-देश =सूत्र है ।

पलियाय

अगोक ने भी, इसी अर्थ में अपने धर्म-लेख में इस शब्द का प्रयोग किया है । जैसे:—

भद्रूशिला लेख

पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आहा, अयावाधतं च फासु-विहालतं चा । विदितं वे भंते आवतके हमा बुधसि धंमसि संघसीति

गलवे च पसादे च ए केचि भंते भगवता बुधेन भासिते सवे से सुभासिते वा ए चु खो भंते हमियाये दिसेया देवं सधंमे चिलठितीके होसतीति अलहामि हकं तं वतवे । इमानि भंते धं म-प लि या या नि विनयसमुक्से, अलियवसानि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूते, उपतिसपसिने ए चा लाहुलोवादे मुसावादं अधिगिच्च भगवता बुधेन भासिते । एतान भंते धं म-प लि या या नि इच्छामि । किं ति बहुके भिखुपाये च भिखुनिये चा अभिखिनं सुनयु चा उपधालेयेयु चा । हेवं हेवा उपासका चा उपासिका चा एतेनि भंते इमं लिखापयामि अभिहेतं म जानंताति ।

ऊपर के मूल शिला-लेख का पालि-रूपान्तर इस प्रकार होगा:—

पियदसी राजा मागधं संघं अभिवादनं आह, अप्पावाधतं च फासुविहारतं च । विदितं वो भन्ते ! यावत्तको अम्हाकं बुद्धस्मि, धम्मस्मि संघस्मि गारवो च पसादो च । यो कोचि भन्ते ! भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो), सब्बो सो सुभासितो एव । यो बु खो भन्ते अम्हेहि देसेय्यो, हेवं सदम्मो चिरट्टित्तिको हेसतीति, अरहामि अहं तं वत्तवे ।

इमानि भन्ते ! धम्म-पलियायानि :—विनय-समुक्से, अरियवंसा, अना-गतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसुत्तं, उपतिस्स-पसिनो (पञ्चो), ये च राहुलोवादे मुसावादं अधिकिच्च ।

भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो) ।

एतानि भन्ते ! धम्म-पलियायानि इच्छामि किं ति बहुका भिक्खवो भिक्खु-नियो च अभिक्खणं सुनेय्युं च उपधारेय्युं च; हेवं हेवा उपासका च उपासिका च । एतेन भन्ते ! इमं लेखापयामि अभिहेतं मे जानन्तू ति ।

अर्थात्—प्रियदर्शी (=हितकामी) राजा मगध के संघ को अभिवादन करता है, तथा उनका कुशल-मंगल चाहता है । भन्ते ! आप को मालूम ही है कि बुद्ध, धर्म, तथा संघ के प्रति मेरे हृदय में कितना आदर और श्रद्धा है । भन्ते ! भगवान् ने जो कुछ कहा है सभी सुन्दर ही कहा है । भन्ते ! जो कुछ मुझे कहना है उसे कहता हूँ, जिससे सद्वर्त्म चिरस्थायी हो ।

भन्ते ! ये धम्म-पलियाय हैं:—

१. विनय समुत्कर्ष, २. आर्यवंश, ३. अनागत भय, ४. मुनिगाथा, ५. मोनेय

सूत्र, ६. उपतिष्य-प्रश्न, और ७. 'राहुलोवाद' सूत्र में भगवान् ने जो मृषावाद के विषय में उपदेश दिया है भन्ते ! मैं चाहता हूँ कि सभी भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक तथा उपासिकायें इन्हें सदा सुने और पालन करें। भन्ते ! इसी लिए मैं यह लेख लिखवा रहा हूँ—ऐसा समझें।

पालियाय=पालि

इससे साफ प्रकट होता है कि बुद्ध-वचन के अर्थ में ही 'परियाय = पलियाय' शब्द का प्रयोग किया गया है।

पालि भाषा में बहुधा परि या 'पटि' उपसर्ग का दीर्घ हो कर 'पारि' या 'पाटि' हो जाता है। जैसे:—

परि+लेध्यकं=पारिलेद्यकं

पटि+कङ्खा=पाटिकङ्खा

पटि+भोगो=पाटि भोगो इत्यादि

इसी तरह, 'पलियाय' शब्द का रूप धीरे-धीरे 'पालियाय' हो गया। बाद में, इसी शब्द का लघु-रूप 'पालि' हो गया; और इसका अर्थ हुआ 'बुद्धवचन'।

'दीघनिकाय-पालि', 'उदानपालि', 'पञ्चस्तिय-पालि' आदि कहने से यह मतलब है कि ये ग्रन्थ 'बुद्धवचन' हैं। 'पालि' का अर्थ 'बुद्धवचन' होने से, यह शब्द केवल मूल त्रिपिटक ग्रन्थों के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, अट्टकथा के लिए नहीं।

मागधी भाषा के आधार पर बुद्ध की अपनी शैली की छाप लग कर पालि भाषा का विकास हुआ। पीछे, जनता में त्रिपिटक के साथ-साथ पालि भाषा का खूब प्रचार हुआ।

ए. बेरियेडल कीथ महोदय लिखते हैं:—

The speech of the Buddha, which is assumed to be reproduced in the canon, was doubtless the educated lingua franca which had been devised for the needs of the intercourse of learned men in India.

'Ceylon Daily News', May 1939.

अर्थात्—बुद्ध-भाषा, जो त्रिपिटक में आती है, निस्सन्देह शिक्षित समाज

की बोलचाल की भाषा थी; जिसका गठन भारत के शिक्षित समुदाय के व्यवहार की आवश्यकता की दृष्टि से ही हुआ था।

रायस डेविड्स और गाइगर दोनों विद्वान् इस से बिलकुल सहमत हैं।

लंका में जब त्रिपिटक के साथ 'पालि' शब्द पहुँचा, उस समय 'परियाय = पलियाय = पालियाय' से इसका सम्बन्ध छूट चुका था, और लोगों को यह एक पृथक् नया शब्द मालूम हुआ। वैयाकरणों ने इसका अर्थ 'पा = रक्खणे' धातु में करना प्रारम्भ किया। जैसे:—“पा—रक्खति रक्खतीति पालि = पंक्ति^१।”

^१ 'पंक्ति' का अर्थ यहाँ 'श्रेणी' है। खींच-खाँच कर इसका अर्थ 'ग्रन्थ-पंक्ति' भी किया जा सकता है।

दूसरा खण्ड

पालि और वैदिक भाषा

वैदिक भाषा बोलचाल की भाषा थी। वैदिक काल में आर्यों का जहाँ जहाँ प्रसार हुआ सभी जगह यह भाषा गई। उस समय, भाषा ने व्याकरण की बेड़ी नहीं पहनी थी। बोलने के समय लोगों को गलती हो जाने का डर नहीं लगा रहता था। भावों की अधिक से अधिक अभिव्यञ्जना ही भाषा का अभिप्राय था। यही जीती जागती भाषा का प्रथम लक्षण होता है।

भाषा की स्वतंत्रता

जैसे जैसे आर्य लोग आगे बढ़ते गए इस भाषा का विस्तार होता गया। फलतः, नियम में बाँध रखने वाले एक व्याकरण के अभाव में—भाषा में तरह तरह के नये रूप धड़ल्ले से आने लगे। 'भवति' को कोई 'भवाति' कोई 'भवत्' कोई 'भवात्', जिसको जैसा मन होता था, बोलता था। अर्थ समझा देना भर उनका प्रयोजन था। वैसे ही, कोई पष्ठी के स्थान में चतुर्थी का, तो कोई चतुर्थी के स्थान में पष्ठी का व्यवहार करता था।

वैदिक भाषा की स्वतंत्रता तथा व्यापकता दिखाते हुए पाणिनि सूत्रों के भाष्यकार पतञ्जलि लिखते हैं:—

व्यत्ययो बहुलम् ३।१। ८५। योग-विभागः कर्त्तव्यः। छन्दसि विषये सर्वे विधयो भवन्तीति। सुपां व्यत्ययः। तिङां व्यत्ययः। वार्ण-व्यत्ययः। लिङ्ग-व्यत्ययः। पुरुष-व्यत्ययः। काल-व्यत्ययः। आत्मनेपद-व्यत्ययः। परस्मैपद-व्यत्ययः इति।

सुपाम् व्यत्ययः—... दक्षिणायाः—दक्षिणस्याम् इति प्राप्ते। तिङां व्यत्ययः... तक्षति—तक्षस्ति इति प्राप्ते।

वर्णव्यत्ययः—... शुभितम्...—शुधितम् इति प्राप्ते। लिङ्गव्यत्ययः—
मधो—मधुनः इति प्राप्ते। पुरुषव्यत्ययः—... विभूया—वियूयात्
इति प्राप्ते। कालव्यत्ययः—... इवः सोमेन य क्ष्यभा णे न—यष्टेता
इति प्राप्ते। आत्मनेपद व्यत्ययः—... इच्छते—इच्छति इति प्राप्ते।
परस्मैपद व्यत्ययः—... युध्यति—युध्यते इति प्राप्ते।

नाम-विभक्तियों का, क्रिया-विभक्तियों का, वर्णों का, लिङ्गों का, पुरुषों का,
काल का, आत्मने पद का, तथा परस्मैपद का व्यत्यय (=उल्टा-पुल्टा) होता है।
सुप्-तिङ्-उपग्रह-लिङ्ग-नराणां काल-हल्-अच्-स्वर-कर्तृ-यङां च। व्य-
त्यय मिच्छति शास्त्र-कृद् एपां सोपि च सिध्यति बाहुलकेन ॥१॥

(महा भाष्य)

नाम-विभक्ति, क्रिया-विभक्ति, उपग्रह, लिङ्ग, पुरुष, काल, व्यञ्जन, स्वर,
वैदिक स्वर (Accent), कर्तृ (कारकादि एवं वाच्यादि), यङ्त् इत्यादि
का व्यत्यय, (उल्टा-पुल्टा, व्यतिक्रम) होना पाणिनि-आदि व्याकरण-शास्त्रकार
निर्देश करते हैं। वह व्यत्यय भी कहाँ और कैसे होगा इसका कोई नियम
नहीं है।

नाम-विभक्तियों के प्रयोग में स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में नाम-विभक्तियों के प्रयोग में कितनी स्वतंत्रता थी उसका
पता हमें 'महाभाष्य' से मिलता है:—

सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ७।१।३९ सुपां च सुपो भव-
न्तीति वक्तव्यम् ॥ तिङां च तिङो भवन्तीति वक्तव्यम् ॥ इयाडियाजी
काराणामुपसंख्यानम् ॥ आड्याजयारां चोपसंख्यानं कर्तव्यम् ॥

नाम-विभक्तियों के स्थान में सु^१ (प्रथमा), लुक् (भक्ति-लोप), पूर्व-सवर्ण

^१ सु शब्द को आदेश कहने का अभिप्राय यह है, कि सु प्रत्यय आदेश होने
पर अन्य नाम-विभक्तियाँ नहीं होंगीं। यह सब 'व्यत्ययो बहुलम्' इसके अनुसार
भी व्यत्यय से सिद्ध हो सकता है। (कैयट)।

(पूर्व-सवर्ण-दीर्घ), आ, आत् ज्ञे, या, डा, ड्या, या आत् [शे=ए। या, याच्, ड्या=या। डा, आत्, आ, (आत्)=आ] इन प्रत्ययों का आदेश होता है।^१ नाम-विभक्तियोंमें व्यत्यय होने के उदाहरण—

ऋजवः सन्तु पन्थाः (पन्थानः)। परमे व्योमन् (व्योमनि)। लोहिते चर्मन् (चर्मणि)। आर्द्रे चर्मन् (चर्मणि)। धीती (धीत्या), मती (मत्या)। या सुरथा रथी-तमा दिविस्पृशा अश्विना (यौ सुरथौ दिविस्पृशौ अश्विनौ)। नताद् ब्राह्मणम् (नतंब्राह्मणम्)। यादेव (यमेव) विद्म तात्त्वा (तंत्वा)। युष्मे। (युष्मासु)। अस्मे (अस्मभ्यम्) इन्द्रावृहस्पती। उरुया (उरुणा), धृष्णुया (धृष्णुना) नाभा (नाभौ) पृथिव्याः। साधुया (साधु)। वसन्ता यजेत (वसन्ते यजेत)।

उर्विया (उरुणा), दार्विया (दारुणा), सुचेत्रिया (सुचेत्रिणा-इति)। सुगात्रिया (सुगात्रेण)। दृतिं नशुष्कं सरसी शयानम् (सप्तमी एक वचन के स्थान में ईकार का आदेश)।

प्र वाहवा (वाहुना)। स्वप्रया (स्वप्नेन)। नावया (नावा)।

(महाभाष्य—सिद्धान्त-कौमुदी)

काल तथा लकार की स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में काल तथा लकार के प्रयोग में बड़ा अनियम था। एक-एक क्रिया-पद के लिए कितने अधिक रूप व्यवहृत होते थे, उसे देख कर माथा चकरा जाता है। जैसे:—

^१इया, डियाच्, (इया, डियाच्=इया), ईकार भी आदेश होते हैं। तृतीया एक वचन में अयाच्, अयार (=अया) भी आदेश होते हैं।

(महाभाष्य)

छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः ।३।४।६

धात्वर्थानां सम्बन्धे सर्वकालेषु एते वास्युः ।

लुङ्-लङ्-लिट् का प्रयोग सभी काल में हो सकता है।

देवो देवेभिः आगमत् (आगच्छतु) ।

अद्य ममार (म्रियते) ।

लिङ्-अर्थे लेट् ३।४।७ उपवादऽऽशङ्कयोश्च ३।४।८। लेट् । सिब्-बहुलं
लेटि ३।१।३।४। सिब्-बहुलं सिद्-वक्तव्यः । इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३।४।६।७।
लेटोऽङ्-आटौ ३।४।६।४। आगमौ स्तः स उत्तमस्य ३।४।९।८। लोपो वा
स्यात् ।

लेट् का धातुरूप

प्रथम पुरुष एक वचन में

भवति, भवाति । भवत्, भवात् । भवते, भवाते । भविषति, भाविषति ।
भविषत्, भाविषत् । भविषाति, भाविषाति । भविषात्, भाविषात् ।
भविषते, भाविषते, भविषाते, भाविषाते ।

इस तरह, प्रथम तथा मध्यम पुरुष में ५८।५४ रूप, एवं उत्तम पुरुष में २७ +
१२ (व, म) कुल १४७ रूप होंगे ।

पताति विद्युत् (विद्युत् पतेत्) । प्रियःसूर्ये प्रियो अग्ना भवाति
(भवेत्) ।

लेट् लकार (Subjunctive mood) ऋग्वेद और अथर्व-वेद में बहुतायत
से आता है। विधि लिङ् (optative) की अपेक्षा यह तिगुणा अथवा चारगुणा
अधिक प्रयुक्त हुआ है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

निमित्तार्थक (तुं-प्रत्यय प्रत्यय के स्थान में) वैदिक भाषा में विभिन्न
प्रत्यय पाये जाते हैं, परन्तु संस्कृत भाषा में केवल तुं-प्रत्यय का प्रयोग
होता है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

तुमर्थक प्रत्यय	वैदिक उदाहरण ^१	ऋक तथा यजुर्वेद में प्रत्यय-प्रयोग-संख्या ^२
तुं	कत्तु, गन्तु, दातु	२६
से ^३ , असे ^३	चक्षसे, जीवसे, बक्षे	१८३
ध्यै ^३ , अध्यै ^३	पृणध्यै, पिवध्यै, यजध्यै	१०१
अः ^३ तोः ^३	निमिपः, गन्तोः, हन्तोः, } कर्त्तोः, विलिखः }	३३
अं ^३	शुभं, प्रतिधा, समिधं	७२
ए ^३	दृशे, भुवे, परादै, ग्रभे	३४८
तये	पीतवे, सातये,	३३६
वने, मने	शामणे, दावने, विद्मने	५२
त्यै	इत्यै	८
तवै ^३ , तवै ^३	कर्त्तवै, गन्तवै दातवै, } मन्तवै, पातवै, दातवै, }	२८४
अये	चितये युद्धये	५५
इ, सनि	दृशि, वृधि, नेपणि, } अभिभूषणि, गृणीपणि }	२८

^१ 'A.A. Macdonell's Vedic Grammar for Students' से उद्धृत ।

^२ E.V. Arnold's Historical Vedic Grammar' से संकलित ।

^३ तुमर्थे से-सेन्-असे-असेन्-कसे-कसेन्-अध्यै-अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन्-शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवैङ्-तवेनः ३।४।९..... ३।४।१३

(अष्टाध्यायी)

कृत्य

उसी तरह, 'कृत्य' प्रत्यय भी वैदिक भाषा में 'तवै', 'केन', 'केन्य', 'त्वेन' यह चार व्यवहृत होते थे। जैसे :—

कृत्यार्थे तवै—केन—केन्य—त्वेन: ३।४।१४ न म्लेच्छित्तवै (=न म्लेच्छित्त व्यम्)। अन्नगाहे (अवगाहितव्यम्, अवगाढ्यम्)। दिदृक्षेण्यः (=द्रष्टव्यः)। कर्त्वम् (=कृत्यम्)। अवचक्षे (=अवख्यातव्यम्)।

प्रयोगों की विभिन्नता का कारण

ऊपर के उदाहरणों में हमने जो वैदिक भाषा में स्वच्छन्दता, अनियमितता, तथा प्रयोगों की विभिन्नता देखी है, उसका कारण भाषा बोलने वालों के प्रान्त तथा समाज की विपमता ही हो सकती है। यों तो कहने के लिए आज हम कह देते हैं कि बिहार तथा युक्तप्रान्त की भाषा हिन्दी है; किन्तु, यदि इन प्रान्तों की भिन्न भिन्न जगहों की सच्ची बोलचाल की भाषाओं को देखें, तो उसके अनेक रूप मिलेंगे। एक ही शब्द के उच्चारण के कई भेद मिलेंगे। 'मै जाता हूँ', इसी एक वाक्य के रूप मगध में 'हम जा ही', मिथिला में 'हम जाई छी', तथा भोजपुर में 'हम जात बानी, जातानि, जातणि' आदि होंगे। भाषा मूलतः एक ही है, किन्तु प्रान्त तथा समाज के भेद से उसके इतने रूप हो गए। ठीक उसी तरह, वैदिक भाषा मूलतः एक होने पर भी, प्रान्त-भेद से उसमें इतने व्यत्यय, तथा एकार्थक विभिन्न प्रत्यय दीखते हैं।

व्याकरण से मँजी 'खड़ी बोली' की तरह उस समय कोई एक भाषा नहीं बनी थी; अतः, सभी तरह के प्रयोग भाषा में मिलते जाते थे। धीरे धीरे एक एक प्रत्यय के लिए—जैसे हमने अभी ऊपर देखा है—चार चार पाँच पाँच प्रत्यय व्यवहृत होने लगे। सभी के उदाहरण वेद में मिलते हैं।

भाषा में इतनी अधिक विभिन्नता होने का एक और प्रबल कारण रहा। जब आर्य लोग सिन्धु देश में फैल रहे थे, तब उनका समागम वहाँ के मूल-निवासियों से हुआ। एक जगह साथ रहने से उनकी भाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर कुछ न कुछ अवश्य पड़ा; ठीक उसी तरह, जैसे अँगरेजी साहित्य में लाठी, लूट, राजा, जनाना, पर्दा, आदि बहुत शब्द प्रयुक्त होने लगे हैं। यदि अँगरेजी भाषा का

केन्द्र (इंग्लैण्ड) बाहर नहीं होता, तो निश्चय है कि अंगरेजी भाषा का रूप आज बिल्कुल दूसरा ही हो गया होता। वैदिक भाषा का केन्द्र कहीं बाहर नहीं, किन्तु यहीं था; इसलिए इस भाषा पर यहाँ की मूल भाषा का प्रभाव अत्यन्त अधिक पड़ा होगा, जिससे इसमें इतनी विभिन्नता आ गई।

जब बाहर से भारतवर्ष में मुसलमान आए और यहीं रहने लगे, तो उनकी भाषा और यहाँ की भाषा मिल कर एक तीसरी भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ। यदि वही लोग इस देश में वसु न जा कर, अपने देश ही से यहाँ का शासन करते, तो एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म न हो कर, उनकी भाषा फ़ारसी ही में संस्कृत के कुछ शब्द आ कर रह जाते, जैसा अंगरेजी में हुआ।

उच्चारण में परिवर्तन

उसी तरह, जब आर्य लोग यहाँ बाहर से आए और यहीं बस गए, तो वैदिक भाषा और यहाँ की मूल भाषाओं के मिलने से कई छोटी मोटी भाषाओं की उत्पत्ति हुई। आर्य लोग विजयी, और यहाँ वाले विजित थे; इसलिए, इन भाषाओं में प्राधान्य वैदिक भाषा का ही रहा। यहाँ वाले वैदिक भाषा के क्लिष्ट शब्दों को सरल तथा मुलायम करके बोलने लगे। 'अग्नि' का 'अग्नि', 'रश्मि' का 'रसि', 'भार्या' का 'भरिया', 'कृत्य' का 'किच्च', 'सिंह' का 'सीह', 'व्याघ्र' का 'व्यग्घ', 'संस्थान' का 'संठान' आदि आदि रूप हो गए। यह विकास किन्हीं खास नियमों के आधार पर नहीं हुआ। जहाँ जिनको जैसा सरल प्रतीत हुआ बोलते गए।

वैदिक भाषा के शब्द किस तरह बदल कर बोले जाने लगे उसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

१. 'ऋ' कहीं-कहीं 'अ' कर दिया गया। जैसे:—

ऋतं—कतं। घृतं—घतं। ऋक्षः—अच्छो। नृत्यं—नच्चं।

२. 'ऋ' कहीं-कहीं 'इ' कर दिया गया। जैसे:—

ऋणं—इणं। कृत्यं—किच्चं। वृष्टं—दिट्ठं।

३. 'ऋ' कहीं-कहीं 'उ' कर दिया गया। जैसे:—

ऋतु—उतु। ऋजु—उजु। वृष्टि—बुट्टि।

४. 'ऐ' का 'ए', 'इ', तथा 'ई' हो गया। जैसे—**कैमानिकः—वैशानिको**।
ऐश्वर्य—

इस्सरिथं। श्रैवेद्यं—गोवेद्यं।

५. 'औ' का 'ओ' तथा 'उ' हो गया। जैसे—

पौरः—पोरो; भौद्वल्लायनः—सोव्पलायनो। औद्वत्यं—उद्वच्चं;

औद्देशिकः—उद्देशिको।

६. 'घ' तथा 'प' के बदले 'स' का ही व्यवहार होने लगा। जैसे:—

शिष्यः—सिस्सो। श्रमणः—सखणो।

७. शब्द के अन्तस्थित व्यञ्जन को लोप कर देने लगे। जैसे:—

गुणवान्—गुणवा। कश्चित्—कोचि। यावत्—याव। तावत्—

तव।

८. अकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का 'ओ', तथा इकारान्त या उकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का लोप होने लगा। जैसे:—

देवः—देवो। कः—को। अग्निः—अगि। धेनुः—धेनु।

९. विसर्ग से परे यदि स, श, या प हुआ तो विसर्ग के स्थान में 'स' हो गया।
 जैसे:—

दुःसह—दुस्तहो। निःशोकः—निस्तोको।

१०. संयुक्त वर्ण से पूर्व दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो गया। जैसे:—

माद्वं—मद्वं। तीर्थ—तित्थं। धार्मिकः—धम्मिको। शून्यं—सुञ्जं।

११. रेफ का लोप हो गया; तथा रेफ वाले वर्ण का द्वित्व हो गया। जैसे:—

कर्म—कम्मं। निजलः—निज्जलो। सर्वः—सव्वो। वर्गः—वग्गो।

१२. 'ह' के साथ रेफ का 'र' हो गया। जैसे:—

तरहि—तररि। एतहि—एतररि।

१३. पद के आदि वर्ण में संयुक्त 'र' का लोप हो गया। जैसे:—

कीतः—कीतो। क्रुध्यति—कुञ्जति। ग्रामः—गामो। त्रिपिटकं—

त्तिपिटकं। श्रावकः—सावको।

१४. पद के मध्य में किसी व्यञ्जन के साथ संयुक्त 'र' का लोप हो गया, तथा कहीं-कहीं उस व्यञ्जन का द्वित्व हो गया। जैसे:—

प्रक्रमः—पक्कमो । सूत्रं—सुत्रं । समुद्रः—समुद्रो । इन्द्रः—इन्द्रो ।

१५. 'य' का कही-कहीं 'रिय' हो गया । जैसे:—

कार्य—करियं । कदर्य—कदरियं ।

१६. पद के आदिस्थित 'क्ष' का 'ख' हो गया । जैसे:—

क्षीरं—खीरं । क्षेमः—खेमो ।

१७. पद के मध्य में 'क्ष' का कही-कहीं 'क्ख' या 'च्छ' हो गया । जैसे:—

दक्षिणः—दक्खिणो । मोक्षः—मोक्खो । पक्षः—पच्छो । अक्षि—अक्खि,
अक्खि ।

१८. पद के आदिस्थित 'द्य' का 'ज', तथा मध्यस्थित का 'ज्ज' हो गया ।

जैसे:—

द्युतिः—जुति । अद्य—अज्ज । दिद्यते—बिज्जते ।

१९. पद के आदिस्थित 'ध्य' का 'भ', तथा मध्यस्थित का 'ज्भ' हो गया ।

जैसे:—

ध्यानं—भानं । बुध्यते—बुज्भते ।

२०. पद के आदिस्थित 'त्य' का 'च', तथा मध्यस्थित का 'च्च' हो गया ।

जैसे:—

त्यजति—चजति । प्रत्ययः—पच्चयो । नृत्यं—तच्चं । सत्यं—सच्चं ।

अत्ययः—अच्चयो ।

२१. 'न्य' तथा 'ण्य' का 'ञ्ज' हो गया । जैसे:—

धान्यं—धञ्जं । शून्यं—सुञ्जं । हीरण्यं—हिरञ्जं ।

२२. पद के आदिस्थित 'ज्ञ' का 'ज', तथा मध्यस्थित का 'ज्ज' हो गया ।

जैसे:—

ज्ञातिः—जाति । ज्ञानं—जाणं । संज्ञा—सञ्जा । प्रज्ञा—पञ्जा ।

२३. 'ष्ट' या 'ष्ठ' के स्थान में 'ट्ट' ; 'स्त' के स्थान में 'थ' या 'त्थ', या 'त्त'
हो गया । जैसे:—

तुष्टः—तुट्टो । षष्ठः—छट्टो । स्तम्भः—थम्भो । हस्ती—हत्थी ।
दुस्तरं—दुत्तरं ।

२४. कुछ गौण परिवर्तनों के उदाहरणः—

स्थूलः—थूलो। स्थानं—ठानं। अस्थि—अट्टि। मत्स्यः—मच्छो। उल्का—
उक्का। जल्पः—जल्पो। फल्गु—फगु। ग्लानः—गिलानो। क्लेशः—किलेसो।
ज्वलति—जलति।

पक्वं—पक्क। अर्धदा—अर्द्धा। ह्रस्वः—रस्सो। जिह्वा—जिव्हा।
स्कन्धः—खन्धो। निष्क्रमः—निक्खमो। शुष्कं—सुक्खं। पश्चात्—पच्छा।
अप्सरः—अच्छरा। स्पृशति—सुसति। पुष्पं—पुप्फं। देयं—देय्यं। श्रेयः—
सेय्यो। भुक्तं—भुत्तं। लप्त—सत्त। लवण—लोणं। स्नेहः—सिनेहो।
शक्नोति—सक्कोति। चन्द्रमा—चन्दिमा। असूया—उसूया। मातृका—
मेत्तिका। गुरु—गरु। पुरुषः—पुरिसो। कीलः—खीलो। मूकः—सूगो। प्रसेन-
जित्—पसेनदि। प्रति—पटि। पृथिवी—पठवी। दहति—डहति।

व्याकरण की आवश्यकता

भिन्न-भिन्न प्रान्त तथा समाज में आ कर विकास का यह प्रवाह फूट कर कई दिशाओं में बहने लगा। कहीं-कहीं वर्णों का लोप हो गया; कहीं-कहीं उनका विपर्यास हो गया; कहीं-कहीं व्यञ्जन-वर्णों के स्थान में स्वर-वर्ण हो गया; कहीं-कहीं कुछ वर्णों का आगम हुआ इत्यादि। इस तरह, यही आगे चल कर पालि तथा प्राकृत भाषाओं के रूप में प्रकट हुआ।

बोल-चाल की भाषा में रूपों की विभिन्नता हृद से ज्यादा बढ़ गई। यहाँ तक, कि समाज को दैनिक व्यवहार में बड़ी कठिनाई पड़ने लगी। लोगों को अनुभव होने लगा कि यदि भाषा की इस उच्छृङ्खलता को रोक कर उसमें कुछ नियमन न किया गया, तो कुछ समय के बाद सामाजिक जीवन असंभव हो जायगा। यही 'संस्कृत भाषा' के निर्माण का कारण हुआ।

शब्द-शास्त्र के पण्डितों ने इधर काफी ध्यान दिया; और वे भाषा को काट-छाँट कर हलका तथा उपयोगी बनाने के फेर में पड़ गए। भाषा का व्याकरण बनने लगा। विभिन्न प्रयोगों में से अधिक प्रचलित कुछ एक-दो ही रखे गए, और बाकी छोड़ दिए गए। वैयाकरणों के कई वर्षों तक परिश्रम करते रहने के बाद लगभग ईसा-पूर्व ४०० में (बुद्ध से प्रायः ३५० वर्ष बाद) पाणिनि ने इस शास्त्र को सर्वाङ्ग-

पूर्ण बनाया। भाष्यकार पतञ्जलि, पाणिनि के सूत्र 'भ्वाद्यो धातवः' १।३।१ का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि पाणिनि के समय लोगों में—'आण्वयति' (=आज्ञा देना), वट्टति (=वर्तमान होना), वड्डयति (=बढ़ना) आदि क्रिया के रूप बोले जाते थे; तथा 'कृषि' के अर्थ में 'कसि', 'दृशि' के अर्थ में 'दसि' का प्रयोग करते थे। व्याकरण के निर्माण के समय इन प्रयोगों को गौण समझ कर छोड़ दिया।

[यह ध्यान देने लायक बात है कि ये तमाम प्रयोग पालि भाषा में व्यवहृत होने वाले बड़े ही साधारण रूप हैं]

उपयोगी समझ कर, लोगों ने व्याकरणानुकूल बोलने लिखने पर बड़ा जोर दिया। धीरे-धीरे लोगों में यह भाव बड़ा पुष्ट हो गया, और वे व्याकरण के अननुकूल किसी प्रयोग को त्याज्य और हीन समझने लगे। आज तक वह भाव पण्डितों में वैसा ही है। संस्कृत का बड़ा से बड़ा विद्वान भी संस्कृत बोलते समय डरता है कि कहीं व्याकरण की अशुद्धि न हो जाय। यदि कभी कोई अशुद्ध प्रयोग मुँह से निकल जाय तो उसके लिए उसे लज्जित होना पड़ता है।

संस्कृत भाषा के निर्माण से यह तो लाभ हुआ कि भाषा की उच्छृङ्खलता दूर हो गई, तथा उसमें नियमन आया। किंतु, साथ ही साथ यह भी हुआ कि भाषा बँध कर जकड़ी गई, और कठिन होने तथा प्रगतिशील न होने के कारण बोल-चाल की भाषा न रह सकी। बोल-चाल की भाषा न रहने पर भी इसके सम्मान में कोई अन्तर नहीं हुआ। पण्डित विद्वानों की यही भाषा रही। ग्रन्थ लिखने तथा शिष्ट व्यवहार के लिए पण्डितों ने संस्कृत का ही प्रयोग किया।

वैदिक, पालि, संस्कृत

देश तथा अवस्था के प्रभाव से वैदिक भाषा की संतान पालि तथा प्राकृत भाषाएँ हुईं। इन भाषाओं में शब्दों के उच्चारण मुलायम तो हुए, किंतु प्रत्ययों के व्यवहार वैसे ही बने रहे। इसके विपरीत, संस्कृत व्याकरण ने वैदिक शब्दों को—मुलायम न होने दे—ज्यों के त्यों ले लिया; किंतु एक ही अर्थ में आने वाले अनेक प्रत्ययों में से केवल प्रचलित एक-दो को छोड़ सभी को रद्द कर दिया।

वैदिक, पालि, तथा संस्कृत के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्न तालिका देखें:—

वैदिक

व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५

१. सुपां व्यत्ययः । वेद में सुबन्त विभक्तियों के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है । जैसे :—सप्तमी के स्थान पर षष्ठी का ; सप्तमी के स्थान पर प्रथमा का, इत्यादि ।

२. सिद्धां व्यत्ययः । वेद में तिङ्गन्त के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है । जैसे :—“चषालं ये अश्वयुपाय तक्षति ।” यहाँ ‘तक्षन्ति’ बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है ।

३. षर्णव्यत्ययः । वेद में किसी वर्ण के स्थान में कभी कभी कोई दूसरा वर्ण चला आता है । जैसे :—“शुभित्तम्” —शुधित्तम् इति प्राप्ते । “तमसो गा अहुस्तत्” —अधुक्षत् इति प्राप्ते । “गुभाय” —गुहाण इति प्राप्ते इत्यादि ।

४. काल व्यत्ययः । वेद में एक काल के स्थान में दूसरे काल का भी कहीं कहीं प्रयोग हो जाता है ।

पालि

१. पालि में भी, वेद के समान ही सुबन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है । जैसे :—“एकं समर्थ” (—एकस्मिं समर्थस्मिं) । “तेन समर्थेन” (तस्मिं समर्थेन) । “अचिरपक्कतस्य भगवतो” (अचिरपक्कते भगवति) । “तेल्लस्य पिवित्वा” (—तेल्ल पिवित्वा) । “त्तस्स पट्टियुत्वा” (—तं पट्टियुत्वा) ।

२. पालि में भी वेद के समान ही तिङ्गन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है । जैसे :—“अस्थि इयांस्मिं काये केसा लोभा नखा इत्याहिं” । यहाँ ‘सिन्ति’ बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है ।

३. पालि में भी वेद के समान ही वर्णों का व्यत्यय हो जाया करता है । जैसे :—“बुद्धेभिं” (—बुद्धेहि) । “डुक्कटं” (—डुक्कतं) । “जाणं” (—जातं) । “पलिघो” (—परिघो) इत्यादि ।

४. पालि में भी वेद के समान ही अक्सर काल का व्यत्यय देखा जाता है । जैसे :—यूतकाल के अर्थ में—पूरे अर्थस्यो दिप्पति । “अनेकं जति संसारं सन्धाबिस्सं” —भूतकाल के अर्थ में भविष्यकाल । “अति वेलं नमस्सिस्सति” —वर्तमान के अर्थ में भविष्यत्काल ।

संस्कृत

संस्कृत में ऐसे व्यत्यय नहीं होते हैं; क्योंकि इन व्यत्ययों को रोकने के लिए ही संस्कृत व्याकरण का निर्माण हुआ था ।

२. नाम

वैदिक प्रयोग	पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	वैदिक प्रत्यय	ऋक्-अथर्व वेद में प्रत्यय-प्रयोग संख्या†	पालि समानता	संस्कृत
१. देवासः	७।१।५०	असुक्	१७३८	देवासि। धम्मसि। बुद्धसि।	प्रथमा बहुवचन का यह रूप है। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप नहीं लिया गया।
२. देवेभिः	७।१।८	एभिः	६२०	देवेभिः* सदा यह रूप होता है।	समय यह रूप नहीं लिया गया।
३. गीनाम्	७।१।५७	नाम्	३६	गीनां। गुत्तां।	तृतीया बहुवचन का यह रूप है।
४. पतिना	१।४।६	टा	समान	'गो' शब्द के षष्ठी बहुवचनका रूप। संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

द्रष्टव्य—शेरछन्दसि बहुलम् ६।१।७०। छन्दसि नपुंसकस्य पुंशुद्भावो वक्तव्यः—इति महाभाष्ये। वैदिक भाषा में नपुंसक लिङ्ग के शब्द का बहुधा पुल्लिङ्ग रूप ही जाता है।

पालि में भी ऐसा होता है। 'फल' शब्द के प्रथमा बहुवचन में 'फला' और 'फलानि' दोनों रूप होते हैं। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप छोड़ दिया गया। ऋग्वेद और अथर्ववेद में ऐसे रूप २५७२ बार प्रयुक्त हुए हैं।

† E. V. Arnold's Historical Vedic Grammar से

* वैदिक प्रक्रिया के सूत्र ३।१।८४ के अनुसार 'ह' के स्थान में 'भ' हो जाता है। जैसे :- गृहण=गृभाय। पालि में भी ऐसा 'भ-ह' का परिवर्तन होता है। जैसे :- देवेहि=देवेभिः।

संस्कृत व्याकरण ने ऐसे परिवर्तन को रोक दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि २।३।६२। षष्ठ्यर्थे चतुर्थीति षष्ठ्यम् (वार्तिक)। वेद में बहुधा चतुर्थी के अर्थ में षष्ठी, तथा षष्ठी के अर्थ में चतुर्थी होती है।

पालि में चतुर्थी तथा षष्ठी के रूप प्रायः समान रहते हैं। जैसे :- ब्राह्मणस्स धनं दाति। ब्राह्मणस्स तिस्सो। संस्कृत व्याकरण ने इस अदल-बदल को रोक दिया।

३. क्रिया

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
इच्छते	३।१।८५ परस्मैपद व्यत्ययः। 'इच्छति' इति प्राप्ते।	समान सुणुहि। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।	संस्कृत व्याकरण ने इस व्यत्यय को रोक कर, धातु के पद का निवचय कर दिया।
युध्यति	" आत्मनेपद व्यत्ययः। 'युध्यते' इति प्राप्ते।		
शृणुधी	६।४।१०२ अनुज्ञा मध्यम पुरुष एक वचन का रूप है। इसी तरह, 'कृधि', 'अपान्वृधि' इत्यादि।		संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
शृणोत	७।१।४५ अनुज्ञा मध्यम पुरुष बहु-वचन का रूप है।	सुणोथ। "	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
एमसि	७।१।४६ वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।	एमसे। भवामसे।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधी	७।१।४० लुङ् लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है।	बधि। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधी	६।४।७५ लुङ् लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है। इस लकार में धातु के पहले जो 'अ' का आगम होता है, वह वेद में विकल्प से नहीं भी होता है।	पालि में यह बड़ी भारी समानता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
वर्धन्तु } वर्धयन्तु }	३।४।११७ वेद में सार्वधातुक तथा आर्धधातुक दोनों ही नियमों के अनुसार धातु-प्रत्यय जोड़े जाते हैं।	बड्ढन्तु } समान बड्ढयन्तु }	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
दाति } ददाति }	२।४।७५-७६ वेद में द्वित्व होने वाले धातुओं का द्वित्व विकल्प से होता है।	समान	संस्कृत व्याकरण ने द्वित्व न होनेवाले प्रयोग को छोड़ दिया।
भेदति } मरति }	३।१।८५ विकरण व्यत्ययः।	समान	संस्कृत व्याकरण ने 'विकरण व्यत्यय' रोक दिए।
हनति	२।४।७२-७३।	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

विशेष दृष्टव्यः—'लुङ्' का प्रयोग ब्राह्मणों में तथा Classical Sanskrit (नवीन निर्मित) संस्कृत में प्रायः लुप्त हो गया, जो सभी जानते ही हैं। वैदिक भाषा में 'लुङ्' का प्रयोग बड़ा साधारण है। 'लुङ्' का प्रयोग ऋग्वेद और अथर्ववेद में ५५१८ बार हुआ है; जो 'लिट्' तथा 'लृङ्' लकार से भी अधिक है।

E. V. Arnold's Historical eadic Grammar Page 323.

पालि में भी 'लुङ्' (==अज्जतनी=भूत) का प्रयोग वैदिक भाषा ही की तरह प्रचुरता से पाया जाता है। जैसे—
अहोसि। अकासि। अगच्छि।

नीचे E. V. Arnold के Historical Vedical Grammar से वैदिक-धातु-प्रयोग के आँकड़े दिये गये हैं, जिनसे उनके आपेक्षिक प्रयोग मालूम हो जायेंगे।

क्रिया	ऋक् तथा अथर्व वेद में धातु-प्रयोग-संख्या	विवरण
वर्तमान काल (लट्)	१३४२१	परस्मै पद ६५७६ आत्मने पद ३८४२
भूत काल (लुङ्)	५५१८	पालि में बहुत अधिक प्रयोग है।
” ” (लिट्)	७६	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भविष्यत् काल (लृट्)	७६५	पालि में भी प्रयोग।
” ” (लृट्)	०	पालि में भी नहीं। किंतु संस्कृत में प्रयोग होता है।
सप्तमी लिङ् (लेट्)	१८१७ ८६२	पालि में अधिक प्रयोग। पालि, प्राकृत, संस्कृत में प्रयोग नहीं होता है।
कालातिपत्ति (लृङ्)	०	पालि, संस्कृत में प्रयोग।
प्रेरणार्थक (आय)	२७१३	पालि में प्रयोग।
” (आप)	१४८	पालि में समान रूप से प्रयोग।
नामधातु	६३८	पालि में प्रयोग।
सनन्त (इच्छार्थक)	४३०	पालि में कम प्रयोग।
यङन्त	५२०	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भाव-कर्म वाचक (लुङ् को छोड़कर)	१७७७	पालि में प्रयोग।
निमित्तार्थक	१३४५	पालि में अधिक प्रयोग।
पूर्वकालिक	२२२७	पालि में अधिक प्रयोग।

भूतकालिक क्रियापद के आदि में 'अकार' का आगम ८१४० स्थान पर हुआ है, और १७०४ स्थान पर नहीं हुआ है। पालि तथा प्राकृत में भी अकार का आगम विकल्प से होता है। संस्कृत में ऐसा नहीं है।

४. ऋद्धन्त

- जननीस -

वैदिक प्रयोग के उदाहरण	प्रत्यय	किस ग्रंथ में	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि समानता	संस्कृत
दातवै } दातवै }	तवै } तवै }	निमित्ता- र्थक	३।४।८। वेद में निमित्ता- र्थक और १४ प्रत्यय हैं। जैसे- से, सेन, असे, असेन, कसे, कसेन, अर्ध्व, अर्ध्वैन, कर्ध्व, कर्ध्वैन, शर्ध्व, शर्ध्वैन, तवेन तुं।	पालि में 'दाहु' रूप भी होता है। किंतु, शेष प्रत्यय नहीं होते। वेद में निमित्तिार्थक प्रत्ययों की संख्या आश्चर्यजनक अधिक है। भिन्न भिन्न प्रान्तों में ये रूप व्यवहृत होते हैं।	संस्कृत व्याकरण ने केवल एक 'तु' प्रत्यय को रख कर बाकी सभी को छोड़ दिया।
परिधाप- यित्वा	त्वा	पूर्वकालिक	७।१।३८। ल्यप् के स्थान में भी 'त्वा' का प्रयोग होता है।	समान। पालि में 'ल्यप्' के स्थान में 'त्वा' का प्रयोग बहुत साधारण है।	संस्कृत में ऐसा नहीं होता है।
गत्वाय	त्वाय	"	७।१।४७। 'त्वा' से परे 'य' का आगम होता है।	गत्वान्। त्वा से परे 'न' का आगम होता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
इष्ट्वीन	स्वीन	"	७।१।४८। इष्ट + स्वीन	कात्स्न। पालि में 'स्वीन' का 'तून' हो गया	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
जनिन्त्वन	त्वन	भावार्थक	Macdonell §218। यह प्रत्यय ऋक् और अथर्व वेद में ३३ बार प्रयुक्त हुआ है।	जायत्स्न। त्वन्' का 'त्स्न' हो गया है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

वेद और अशोक-पालि

१. वेद में ह्रस्वान्त क्रिया-पदों का कभी कभी दीर्घ हो जाता है। ६।३।१३५।
जैसे:—विद्या—विद्मइति प्राप्ते । चक्रा—चक्रइति प्राप्ते ।

विद्या ते अग्ने त्रेधा त्रयास्मिं
विद्या ते धाम विभृता पुरुत्रा
विद्या ते नामं परमं गुहा यद्
विद्या तमुत्सं यत आजगंथं ।

ऋ० म० १० । सू० ४५ । मं० २

अशोक-पालि में भी इसी तरह दीर्घ होता है। जैसे:—

“पियदसि लाजा मागधं संधं अभिवादनं आहा (=आह) । अपा
वाधतं च फासु विहालतं चा” —भाब्रू शिला-लेख ।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह के प्रयोग छोड़ दिए।

निपातस्य च ६।३।१३६—यह बताता है कि वैदिक भाषा में निपात
का भी दीर्घ हो जाता है। जैसे:—

“एवा (=एव) हि ते”

अशोक-पालि में भी इस तरह निपात का दीर्घ होता है। जैसे:—

“अपावाधतं च फासु विहालतं चा” ।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह निपात का दीर्घ होना रोक दिया ।

×

×

×

ऊपर की तालिकाओं को देख कर हम इसका कुछ अनुमान कर सकते हैं,
कि भिन्न-भिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली वैदिक भाषाओं की अगाध विभिन्नताओं
को ले, उनका नियमन करने में संस्कृत व्याकरण बनाने वाले आचार्यों को कितनी
कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा । व्याकरण ऐसा होना चाहिए था, कि
जो सरल तथा उपयोगी होने के साथ-साथ तमाम वैदिक प्रयोगों को भी सिद्ध
कर सके ।

संस्कृत व्याकरण ने इस कठिनाई का सामना मुख्यतः दो प्रकार से किया:—

१. प्रयोगों की विभिन्नता के विषय में स्पष्ट उल्लेख कर, कि अमुक प्रयोग इस प्रान्त में व्यवहृत होते हैं। जैसे:—

इति प्राचाम्; इति उदीचाम् ।

२. धातु-पाठ में सभी धातुओं का संकलन कर, जो कही न कही प्रयुक्त होते थे। इसी लिए, धातु-पाठ में हम ऐसे धातु अधिक पाते हैं, जिनका उपयोग संस्कृत में बिल्कुल नहीं मिलता।

वेद में ऐसे-ऐसे मन्त्र आते हैं, जो साधारण वैदिक भाषा से बिल्कुल भिन्न भाषा में लिखे मालूम होते हैं। वह अवश्य किसी गौण प्रान्तीय भाषा का उदाहरण हैं, जो साधारण भाषा से बहुत दूर मालूम होती है।

संस्कृत-व्याकरण का ऐसा होना आवश्यक था जो इस प्रकार के सभी प्रयोगों को सिद्ध कर सके।

उदाहरण के लिए, हम नीचे ऋग्वेद के मन्त्र देते हैं, जो देखने में बड़े विलक्षण मालूम होते हैं; किंतु जिन्हें सायणाचार्य ने पाणिनीय व्याकरण से ही सिद्ध किया है।

सृण्वेव ज॒र्भरीं तु॒र्फरीं॑तू नै॒तोशेव॑ तु॒र्फरीं प॒र्फरी॑का ।
उ॒दन्य॒जेव॒ जेम॑ना म॒देरू॒ ता मे॑ ज॒राय॒वजरं॑ म॒रायं॑ ॥
प॒ज्रेव॒ चर्च॑रं जा॒रं म॒रायु॑ च॒ञ्जेवार्थे॑षु त॒र्तरीथ॑ उ॒ग्रा
ऋ॒भू ना॑र्प॒त्स्वर॑म॒ज्रा स्वर॑ज्जु॒र्वयु॑र्न प॒र्फर॑त्त्तय॒द्रदी॑घा

मं० १०।अ० ६।सू० १०६

तीसरा खण्ड

पालि के विकृत रूप

धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न प्रान्तों में वहाँ की अपनी बोली का प्रभाव शुद्ध पालि पर पड़ने लगा, और अशोक के काल तक एक ही पालि के अनेक विकृत रूप हो गए। इन्हीं विकृत रूपों को हम अशोक के भिन्न-भिन्न शिला-लेखों में पाते हैं। किसी एक ही लेख के कई पाठों को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि वे एक ही भाषा के भिन्न रूप हैं, जो वहाँ-वहाँ की प्रान्तीय बोली के प्रभाव के कारण विकृत हो गई हैं। वितु, सभी उसे साधारण रूप से समझते होंगे। ठीक वैसे ही, जैसे आज भी मगही, भोजपुरी, मैथली, तथा अवधी आपस में काफी भिन्नता रखती है, तो भी सभी की समझ में आ जाती है। उदाहरण के लिए, हम अशोक के एक लेख को लें, जो तीन भिन्न-भिन्न स्थानों में मिलता है:—

क

गिरनार का प्रथम शिला-लेख

(पश्चिम)

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राज्वा लेखापिता । इध न किंवि जीवं आरभित्या प्रजूहितव्यं । न च समाज्ये कतव्यो । बहुकं हि दोसं समाजमिह पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा । अस्ति पितु एकवा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राज्वा । पुरा महानसमिह देवानं प्रियस प्रियदसिनो राज्वा अनुदिवसं बहूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय । से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्राणा आरभरे सूपाथाय—द्वे मोरा, एको मगो । सोपि मगो न धुवो । एतेपि त्री प्राणा पद्धा न आरभिसठे ।

ख

जौगढ में उसी लेख का दूसरा पाठ

(पूर्व)

इयं धम्मलिपि खपिगलसि पवतसि देवानं पियेन लाजिना लिखा-
पिता । हिद् नो किञ्चि जीवं आलभितु पजोहितविये, नापि समाज
कटविये । बहुकं हि दोसं समाजस दखति देवानं पिये पियदसि लाजा ।
अथि चु एकतिया समाजा साधुमता देवानं पियस पियदसिने लाजिने ।
पुलुवं महानससि देवानं पियस पियदसिने लाजिने अनुदिवसं बहूनि पान-
सत सहस्रानि आलभियिसु सुपठाये । से अज अदा इयं धम्मलिपी लिखिता
तिनि येव पानानि आलभियंति—दुवे मजुला एक मिगे । से पि चु मिगे
नो ध्रुवं । एतानि पि चु तिनि पानानि पछा नो आलभियंसंति ।

ग

मनसेहर में उसी लेख का तीसरा पाठ

(उत्तर)

अयि धम्मदिपि देवन प्रियेन प्रियदृशिन राजिन लिखपित । हिद् नो
किचि जिवे आरभितु प्रयुहोतविये । नो पिच समज कटविय । बहुक हि
दोप समजस देवनं प्रिये प्रियदर्शि रज देखति । अस्ति पिचु एकतिय
समज साधुमत देवनं प्रियस प्रियदर्शिने राजिने । पुर महनससि देवनं
प्रियस प्रियदर्शिस राजिने अनुदिवसं बहुनि प्राणशत-सहस्रानि आर-
भिसु सुपथये । से इदनि यद् अपि धम्मदिपि लिखित तद् तिनि येव
प्रणानि अरभिसंति—दुवे मजर एके मिगे । से पि चु मिगे नो ध्रुवं । एतनि
पि चु तिनि प्रणानि पच नो आरभिसंति ।

पालि और गाथा-संस्कृत

पालि भाषा से बिल्कुल मिलती-जुलती, संस्कृत का कुछ स्वरूप लिए एक
सुन्दर भाषा में लिखे 'महावस्तु', 'ललित विस्तर' आदि अनेक ग्रन्थ प्राप्त होते

है, जिनके विषय तथा रंग-ढंग त्रिपिटक के ही हैं। त्रिपिटक की प्राचीनता तथा मौलिकता का प्रभाव इन ग्रन्थों पर भी वैसा ही है। त्रिपिटक के कितने सूत्र तथा गाथा इन ग्रन्थों में हूबहू वैसे ही मिलते हैं। केवल, उनकी भाषा पर थोड़ा संस्कृत का रंग चढ़ा है। इस भाषा को 'गाथा संस्कृत' कहते हैं।

गाथा-संस्कृत का उदाहरण निम्न पदों में देखिए, जो पालि धम्मपद से एकदम मिलते हैं:—

सहस्रमपि वाचानां अनर्थपदसंहिता ।
एका अर्थवती श्रेया यां श्रुत्वा उपशाम्यति ॥
यो शतानि सहस्राणां संग्रामे मनुजा जये ।
यो चैकं जये आत्मानं स वै संग्रामजित् वरः ॥
यत्किंचिदिष्टं च हुतं च लोके,
संवत्सरं यजति पुण्यप्रेक्षी ।
सर्वं पि तं न चतुर्भागमेति,
अभिवादनं उज्जुगतेषु श्रेयं ॥

(‘पेरिस’ से प्रकाशित) महावस्तु, पृष्ठ-४३४-४३५

इन्हीं गाथाओं का पालि धम्मपद में निम्न प्रकार पाठ है:—

सहससमपि चे वाचा अन्त्थपदसंहिता
एकं अत्थपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति ।८।१
यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुसे जिने
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो ॥८।४
यं किञ्चि दिट्ठं च हुतं च लोके
संवच्छरं यजेथ पुञ्जपेक्खो ।
सब्बम्मि तं न चतुर्भागमेति,
अभिवादाना उज्जुगतेसु सेय्यो ॥८।९

पालि और अर्धमागधी

जैन धर्म के ग्रन्थ अर्धमागधी में लिखे हैं, अतः उसे जैन-मागधी भी कहते हैं। जैन-मागधी त्रिपिटक पालि से भाषा और शैली दोनों में घनिष्ठ समानता रखती है।

किसी जैन सूत्र को देखने से मालूम पड़ता है, कि इसमें वही शैली वर्ती गई है जो पालि सूत्रों में है। उदाहरण के लिए—

मूल

१. सुयं मे, आबुसं । तेण भगवया एवं अक्खायं । इहं एगेसिं नो सज्जा भवति । एवं एगेसिं नो नातं भवति । तं जहाः—“के अहं आसी ? के वा इत्थो चुए पेच्चा भविस्सामि ?”

(आचारंग-सुत्ते—सत्थ परिज्जा)

२. ततो णं सक्के देविन्दे देवराया सणियं सणियं जान-विमाणं पट्टवेइ । पट्टवेत्ता सणियं सणियं जान-विमाणात्थो पच्चोतरति । पच्चोतरत्ता जेनेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छति । तेणेव उवागच्छत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आइहिणं पदाहिणं कारेति । कारेत्ता वन्दति, नमस्सति ।

३. ततो णं समणस्स भगवत्थो महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहर-माणस्स वारस वासा वितिककन्ता । तेरसमस य वासस्स परियाए वत्तमाणस्स'.....साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते,.....निव्वाणे कसिणे पडिपुणे निरावरणे अनुत्तरे समुपन्ने ।

४. से भगवं अरहा जिणे जाए सव्वन्नू सव्वभाव-दरिसी सव्वदेव-मग्गुयासुरस्स लोयस्स पज्जाये जाणती । तं जहाः—आगतिं, गतिं, ठितिं, चवणं, उववायं, आवि-कम्मं, रहोकम्मं जाणमाणे पासमाणे एवं विहरइ ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना)

५. तहा विमुक्खस्स परिज्जाणितो ।
धितीमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुणो ॥
विसुब्भती जंसि मत्तं पुरे कडं ।
समीरियं रुपमत्तं व जोत्तिणा ॥१॥
इमम्मि लोए परतो य दोसु वि ।
न विज्जती वन्धणं जस्स किंचि वि ॥

सेहृ निरालम्बणे अप्पतिट्टिते ।
कलं-कली-भाव-पहं विमुच्चइ ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ती)

मूलकी पालि-द्वया

१. सुतं मे (मया), आदुसो ! तेन भगवता एवं अक्खातं । इह एकेसं नो सञ्जा भवति । एवं एकेसं नो जातं भवति । तं यथा :—“को अहं आसिं ? को वा इतो जुतो पेच्चा भविस्सामि ?

(आचारंग-सुत्ते—सत्थपरिञ्जा)

२. ततो णं सक्को देविन्दो देवराजा सनिकं सनिकं यान-विशानं पटुपेति । पटुपेत्वा, सनिकं सनिकं यान-विशानतो पच्चोलरति । पच्चो तरित्वा, येनेव समणो भगवं महावीरो, तेनेव उपागच्छति । तेनेव उपागच्छित्वा समणं भगवत्तं महावीरं तिक्खत्तुं आदाहिणं पदाहिणं (पदक्खिणं) कारेति । कारेत्वा वंदति, नमस्सति ।

३. ततो णं समणस्स भगवतो महावीरस्स एतेन विहारेण विहरमानस्स, बारस वस्सा वितिकन्ता । तेरसमस्स च वस्सस्स परियायो वत्तमान—साल-ख्खस्स अदूर-सामन्ते, निब्बाणं कसिणं परिपुण्णं निरावरणं अनुत्तरं समुत्तं ।

४. सो भगवं अरहा जिनो जातो, सब्बञ्जू सब्बभाव-वस्सी सब्ब-देव-मनुज-असुरस्स लोकस्स पञ्जाय जानाति । तं यथा :—‘आर्गातिं, गतिं, ठितिं, चवनं, उपपादं, आविकम्मं, रहोकम्मं जानमानो पस्समानो एवं विहरति ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना ।)

५. तथा विमुत्तस्स परिञ्ज-चारिणो ।

धीतिमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुनो ॥

विसुज्झति यास्मिं (येन) मलं पुरे कतं ।

समीरितं हप्प-मलं व जोतिना ॥१॥

- अइतीस -

इमस्मिह लोके परतो च द्वेषु पि ।
न विज्जति बन्धनं यस्स किं चि पि ॥
सो हि निरालम्बने अण्णतिट्ठिते ।
कथं-कथी-भाव-पहं विमुच्चति ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ति)

चौथा खण्ड

साहित्य

बुद्ध के अपने सारे उपदेश मौखिक ही थे। उनके शिष्य उन उपदेशों को याद कर लेते थे। जब किसी को कुछ शंका होती थी तो स्वयं बुद्ध के पास जा कर उसका निवारण कर लेता था।

त्रिपिटक

बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त कर लेने पर महाकाश्यप, आनन्द आदि उनके प्रमुख शिष्यों ने आपस में तै किया कि सभी बड़े-बड़े स्थविर भिक्षुओं की एक सभा बुलाई जाय और भगवान् के सारे उपदेशों का संग्रह कर लिया जाय। उस सभा के लिए पाँच सौ अर्हत् स्थविर चुने गए। सभा के लिए राजगृह की सप्तपर्णी गुहा ठीक की गई। प्रथम मास में स्थान की मरम्मत आदि सारी तैयारियाँ कर ली गई; और दूसरे मास में बैठक शुरू हुई। यही बैठक प्रथम संगीति के नाम से प्रसिद्ध है। सौ वर्ष बाद वैशाली में इसी तरह की दूसरी, और अशोक की प्रेरणा से पाटलिपुत्र में तीसरी संगीति हुई।

भगवान् के सारे उपदेश संग्रह कर लिए गए। इस संग्रह का नाम 'त्रिपिटक', अर्थात् तीन पिटारी हैं:—१. सुत्तपिटक, २. विनयपिटक, ३. अभिधम्म पिटक। जब सम्राट् अशोक के पुत्र कुमार महेन्द्र भिक्षु बन कर प्रचार के उद्देश्य से लंका गए तो उन्होंने वहाँ इसी त्रिपिटक का उपदेश दिया। लंका के विख्यात राजा वट्टगामनी के संरक्षण में त्रिपिटक के सारे ग्रन्थ लिख लिए गए।

लंका, वर्मा, स्याम आदि बौद्ध राष्ट्रों में त्रिपिटक का स्थान सर्वोच्च है। वहाँ इन ग्रन्थों का प्रचार तथा आदर उतना ही अधिक है जितना भारतवर्ष में आज रामायण-महाभारत का है। उन देशों ने त्रिपिटक के मूल पालि-ग्रन्थों को

अपनी-अपनी लिपि में कर लिया है। त्रिपिटक के प्रति बौद्ध राष्ट्रों की श्रद्धा का अन्दाजा तब लगता है, जब हम देखते हैं कि वर्मा के राजा मैण्डुम ने महाभारत से तिगुने बड़े त्रिपिटक के सारे ग्रन्थों को पत्थल की पट्टियों पर खुदवा कर सुरक्षित रख दिया है।

पश्चिम देशों में भी आज-कल इन ग्रन्थों का प्रचार खूब हो रहा है। रायस डेविड्स जैसे पालि-विद्वानों की प्रेरणा से लन्दन में एक समिति स्थापित की गई थी, जिसका नाम 'पालि-टेक्स्ट सोसाइटी' है। इस सोसाइटी ने त्रिपिटक के प्रायः सारे ग्रन्थों को रोमन लिपि में प्रकाशित कर दिया है। पालि-भाषा के और भी अनेक ग्रन्थ तथा अंगरेजी अनुवाद मुद्रित कर इस सोसाइटी ने पालि-पाण्डित्य की बड़ी सेवा की है।

आज संसार के प्रायः सभी बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में पालि-भाषा की पढ़ाई होती है। अमेरिका के हरवर्ट विश्वविद्यालय से पालि-ग्रन्थों के मूल तथा अनुवाद का सुन्दर प्रकाशन हो रहा है। हौलेण्ड के विश्वविद्यालय से पालि की एक पाण्डित्यपूर्ण डिक्शनरी निकाली जा रही है। पेरिस, बर्लिन, मास्को आदि सभी विश्वविद्यालयों में पालि भाषा की ऊँचे दर्जे की पढ़ाई है।

भारतवर्ष में, पालि-भाषा की पढ़ाई केवल कलकत्ता तथा बम्बई विश्वविद्यालयों में है। बिहार तथा युक्त-प्रान्त के—ठीक वहीं जहाँ पालि भाषा का जन्म तथा विकास हुआ—विश्वविद्यालयों में पालि की पढ़ाई नहीं के बराबर है। किमाश्चर्य्य अतः परं!

नव अङ्क

त्रिपिटक में जगह-जगह पर साहित्य के नव अङ्कों का जिक्र आता है। (१) सूत्र—भगवान् के दिए हुए धार्मिक उपदेश, जो गद्य में संग्रह किए गए हैं। (२) गेय्य—उपदेश जो गद्य-पद्य में संग्रह किए गए हैं। (३) वेय्याकरण—व्याख्या, भाष्य। (४) गाथा—पद-बद्ध संग्रह। (५) उदान—भावातिरेक के कारण सन्तों के मुँह से अनायास निकले वाक्य। (६) इतिवुत्तक—छोटी-छोटी भगवान् की उक्तियों का संग्रह। (७) जातक—भगवान् के पूर्व-जन्म की कथाएँ। (८) अवभुतधम्म—यौगिक सिद्धियों का वर्णन। (९) वेदल्ल—प्रश्न-उत्तर के ढंग पर लिखे गए।

इन नव अंगों का जिक्र आने से पता चलता है कि त्रिपिटक के निर्माण के समय यह सारे अंग मौजूद थे। ये सभी नव अङ्ग 'सूत्र पिटक' ही में मिलते हैं।

१. सुत्त पिटक

सूत्र पिटक में पाँच निकाय हैं—१. दीघ निकाय, २. मज्झिम निकाय, ३. संयुत्त निकाय, ४. अङ्गुत्तर निकाय, और ५. खुद्दक निकाय। खुद्दक निकाय में पन्द्रह ग्रन्थ हैं—१. खुद्दक पाठ, २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देश, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस, १५. चरियापिटक।

सूत्रों की शैली

सूत्र-पिटक के प्रायः सभी सूत्र भगवान् के दिए उपदेश हैं। सारिपुत्र, मोगल्लान आदि भगवान् के प्रधान शिष्यों के द्वारा भी उपदिष्ट कुछ सूत्र शामिल कर लिए गए हैं, जिनका अनुमोदन भगवान् ने अंत में कर दिया है। प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में उस स्थान का नाम दे दिया जाता है, जहाँ भगवान् ने उसका उपदेश दिया; जैसे—“एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे।” धर्म्मोपदेश शुरू करने के पूर्व, इस बात का सविस्तार वर्णन रहता है कि किस अवसर पर किस सिलसिले में वह उपदेश दिया गया था। उपदेश के समय जो प्रश्नोत्तर होते थे उनका भी पूरा-पूरा हवाला मिलता है। उपदेश के अन्त में श्रद्धा से गद्गद हो कर श्रावक जो संतोष प्रकट करता था उसके बारे में भी बड़े सुन्दर वाक्य आते हैं; जैसे—

“अभिकन्तं भो गोतम, अभिकन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम निक्कु-जितं वा उक्कुज्जेय्य, पतिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळहस्स वा मग्गं आचिकखेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य, चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति।

अर्थात्—हे गौतम ! आप ने खूब कहा ! जैसे उल्टे को सीधा कर दे, ढके को खोल दे, भटके को राह दिखा दे, अन्धकार में तेल-प्रदीप जला दे कि आँख वाले रूपों को देख लें।

कुछ सूत्रों के अन्त में ऐसा भी आता है—“इदमवोच भगवा । अत्तमना ते

भिक्षू भगवतो भासितं अभिनन्दंति ।” अर्थात्—भगवान् ने यह कहा । संतुष्ट हो कर उन भिक्षुओं ने भगवान् के कहे का अभिनन्दन किया ।

सूत्रों की भाषा

साधारणतः सभी सूत्र गद्य में हैं, किंतु कहीं-कहीं गाथाएँ भी काफी आती हैं । कितने सूत्र तो पद्य ही में हैं । भाषा बड़ी सजीव और प्रभावपूर्ण है ।

‘धम्मचक्क पवत्तन सूत्र’ में भोगवाद की निन्दा करते हुए भगवान् कहते हैं—
“...यो चायं भिक्खवे ! कामेसु कामसु सुखल्लिकानुयोगो हीनो, गम्मो, पोथु ज्जनिको, अनरियो, अनत्थसंहितो...।” अर्थात्—भिक्षुओ ! जो यह खाओ-पीओ-मौज करो का सिद्धान्त है वह हीन है, ग्राम्य है, अनार्य, अनर्थकर है...।

सतिपट्टान सूत्र उपदेश करते हुए भगवान् कहते हैं—“एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो, सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिद्वानं समतिक्कमाय, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, जाणस्स अधिगमाय, निब्बाणस्स सच्छिकिरियाय, यदिदं चत्तारो सतिपट्टाना” ।

अर्थात्, भिक्षुओ ! यही अकेला एक मार्ग है—जीवों की विशुद्धि के लिए, शोक और व्याकुलता के समतिक्रमण के लिए, दुःख और दौर्मनस्य को अस्त करने के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए, तथा निर्वाण को साक्षात्कार करने के लिए—जो यह चार स्मृति-उपस्थान हैं ।

राजा से, एक साधारण सिपाही से, वेश्या से, डाकू से, विद्यार्थी से, तर्क करने के लिए आए बड़े-बड़े पण्डितों से, अपनी जाति के अभिमान में चूर ब्राह्मणों से, भिखमंगे कोढ़ी से, मुक्ति के लिए लालायित सत्यगवेषकों से, सभी से जो बुद्ध की बात-चीत हुई है उसे पढ़ने से उसमें बड़ी जान मालूम होती है, भाषा इतनी सरल और सहज है कि कृत्रिमता की उसमें गन्ध तक नहीं आती ।

ऊपर कहा जा चुका है कि ये ग्रन्थ लिखे नहीं जाते थे । आचार्य-शिष्य परम्परा से निकाय के निकाय भिक्षुओं को कण्ठ रहते थे । भाषा की सब से बड़ी विशेषता यह है कि सूत्रों को कण्ठ करना बड़ा आसान है । मिलने, विदा लेने, कुशल क्षेम पूछने, बिगड़ने, आश्चर्य करने, परिताप करने, लोगों से सम्मानित होने, आदि साधारण-साधारण अवसरों पर जो वाक्य या वाक्यावली आती हैं वह सभी जगहों पर एक ही ढंग की होती हैं । वही वाक्य बार-बार आने से अना-

यास ही जीभ पर चढ़ जाता है। जैसे सूत के गोले को फेकने से वह उधरता हुआ बढ़ता जाता है, वैसे ही पाली के सूत्रों को पढ़ने से आगे के वाक्य स्वयं जीभ पर आने लगते हैं। शायद इसी लिए इस भाषा-शैली को “तन्त्रि” = तन्त्री = सूत कहते हैं।

पेय्यालं

प्रायः, किसी एक ही वाक्य के बार-बार आने पर सरलता के लिए एक दो शब्द लिखने के बाद “पेय्यालं” लिख कर छोड़ देते हैं, जिससे समझ लिया जात है कि इसका पाठ ऊपर बार-बार आए वाक्य के समान ही होगा। ‘पेय्यालं’ का अर्थ लंका में करते हैं, “पातुं अलं”—अर्थात्, इतने से वाक्य समझ लिया जा सकता है, और यह पाठ को बचाए रखने के लिए पर्याप्त है।

रायस डेविड्स अपनी डिक्शनरी में इस शब्द का अर्थ लिखते हुए कहते हैं—
“ ‘परियाय’ शब्द का मागधी स्वरूप”। हमने ‘पालि’ शब्द की जो उत्पत्ति बताई है उससे रायस डेविड्स का अर्थ विलकुल मिल जाता है। ‘पालि’ और ‘पेय्यालं’ एक ही चीज है जो मूल बुद्ध-वचन को बोध करता है।

पाँच निकाय

सूत्र-पिटक के ग्रन्थों को पाँच निकायों में विभक्त करने में सूत्रों के विषय का नहीं, किंतु उनके आकार-प्रकार का विचार किया गया है। लम्बे-लम्बे सूत्रों का संग्रह करके उसका नाम ‘दीर्घनिकाय’ रक्खा गया। उसी तरह, मध्यम प्रमाण के सूत्रों के संग्रह को ‘मज्झिम निकाय’, तथा छोटे-छोटे सूत्रों के संग्रह को ‘खुद्दक निकाय’ कहा। कुछ छोटे बड़े दोनों प्रकार के सूत्रों के संग्रह का नाम ‘संयुक्त निकाय’ रक्खा गया। संयुक्त निकाय में पाँच वर्ग हैं; १. सगाथ वर्ग, २. निदान वर्ग, ३. स्कन्ध वर्ग, ४. षडायतन वर्ग, ५. महावर्ग। इसी निकाय के भीतर वर्गों का विभाजन विषय की दृष्टि से किया गया है। दूसरे निकायों में भाग या वर्ग का विभाजन विषय की नहीं, किंतु सूत्रों के आकार की ही दृष्टि से किया गया है।

एकक निपात, द्विक निपात, तिक निपात आदि अद्भुत्तर निकाय में ग्यारह निपात हैं। एक-एक धर्म बताने वाले सूत्र एकक निपात में, दो-दो धर्म बताने

वाले सूत्र द्विक निपात में—तथा ग्यारह-ग्यारह धर्म बताने वाले सूत्र एकादस निपात में हैं। जैसे:—

एकक निपात—

नाहं भिक्खवे अञ्जं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि, यो एवं महतो अनत्थाय संबत्तति, यदिदं भिक्खवे पापमित्तता। पापमित्तता भिक्खवे महतो अनत्थाय संबत्तति।”

अर्थात्—भिक्षुओ ! मैं किसी भी दूसरी चीज को नहीं देखता हूँ, जो इतनी ज्यादा अनर्थकर हो, जितनी ‘पाप मित्रता’। भिक्षुओ ! पापमित्रता बहुत अनर्थकारी है।

द्विक निपात—

“द्वे मे भिक्खवे, असनिया फलन्तिया न सन्तसन्ति। कतमे द्वे ? भिक्खु च खीणासवो, सीहो च भिगराजा। इमे० खो भिक्खवे, द्वे असनिया फलन्तिया न सन्तसन्तीति।”

अर्थात्—भिक्षुओ ! बिजली कड़कने पर दो ही प्राणी चौंक नहीं पड़ते हैं। कौन से दो ? क्षीणाश्रव भिक्षु और मृगराज सिंह। भिक्षुओ ! यही दो बिजली कड़कने पर चौंक नहीं पड़ते^१।

२. विनय-पिटक

विनय-पिटक में भगवान् की उन शिक्षाओं का संग्रह है जो उन्होंने समय-समय पर संघ-संचालन को नियमित करने के लिए दी थीं। प्रव्रज्या की दीक्षा कैसे देनी चाहिए, शिष्य तथा आचार्य का परस्पर व्यवहार कैसा होना चाहिए, भिक्षुओं को कैसे रहना चाहिए, कैसे भिक्षाटन के लिए गाँव में जाना चाहिए, कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना चाहिए, क्या दोष करने से भिक्षु को क्या दण्ड देना चाहिए,

^१ क्षीणाश्रव भिक्षु नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका ‘अहं-भाव’ बिलकुल निरुद्ध हुआ रहता है। मृगराज सिंह नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका ‘अहं-भाव’ अत्यन्त प्रबल होता है; चौंकने के बदले वह और गरज उठता है कि कौन दूसरा उसकी बराबरी करने आ रहा है।

किन-किन चीजों का व्यवहार भिक्षु को विहित है और किन-किन चीजों का निषिद्ध, आदि-आदि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातों तक के विषय में भगवान् की शिक्षाएँ इस पिटक में मिलती हैं। जैसे राज्य के शासन के लिए 'पेनल कोड' है, वैसे ही सघ-शासन के लिए यह विनय-पिटक है। किस किस अवसर पर तथा परिस्थिति में ये शिक्षाएँ वनी, रद्द की गई, या संशोधित की गई—इसका भी विशद वर्णन किया गया है।]

विनय-पिटक में निम्नलिखित ग्रन्थ हैं:—

१. महावग्ग
२. चुल्लवग्ग
३. पाचित्तिय
४. पाराजिक
५. परिवार

प्रकरणों को छोड़, इन ग्रन्थों से केवल मूल शिक्षापदों का भी एक संग्रह कर दिया गया है, जिसका नाम 'पातिमोक्ख' है। भिक्षुओं के लिए उपदिष्ट शिक्षापदों का संग्रह 'भिक्षु-पातिमोक्ख', तथा भिक्षुणियों के लिए उपदिष्ट शिक्षापदों का संग्रह 'भिक्षुनी पातिमोक्ख' कहा जाता है। शिक्षापदों की संख्या कुल २२७ है।

३. अभिधम्म पिटक

अभिधम्म पिटक में सात ग्रन्थ हैं:—

१. धम्मसङ्गणी, २. विभङ्ग, ३. धातुकथा, ४. पुगलपञ्जत्ति,
५. कथावत्थु, ६. यमक, ७. पट्टान।

अभिधम्म-पिटक में चित्त, चैतसिक, आदि धर्मों का विशद विश्लेषण किया गया है। विज्ञान क्या है, संस्कार क्या है, वेदना क्या है, संज्ञा क्या है आदि आध्यात्मिक विषयों पर दार्शनिक गवेषणा की गई है, और आश्रवहीन निर्वाण की प्राप्ति का साधन बताया गया है। सूत्र-पिटक में भगवान् ने जो धर्म बताया है उसी का यह दर्शन-शास्त्र है।

त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ

अट्टकथा :—जैसे, वेदों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए सायणाचार्य ने वृहद् भाष्य लिखा है, वैसे ही आचार्य बुद्धघोष तथा दूसरे आचार्यों ने सारे त्रिपिटक पर सुन्दर भाष्य लिखे हैं जिन्हें 'अट्टकथा' कहते हैं। भिन्न-भिन्न ग्रन्थों की अट्टकथा के नाम भिन्न-भिन्न हैं। जैसे:—

सूत्रपिटक—दीघनिकाय—सुमङ्गल विलासिनी
मज्झिम निकाय—पपच सूदिनी
अंगुत्तर निकाय—मनोरथ पूरणी
संयुक्त निकाय—सारत्थपकासिनी

खुद्दक निकाय के ग्रन्थों पर भी अट्टकथा लिखी है।

विनय-पिटक—समन्तपासादिका

पातिमोक्ख—कड्खावितरणी
धम्मसंगणी—अट्टसालिनी
विभङ्ग—सम्मोह विनोदिनी
धातुकथा—धातुकथाप्पकरण अट्टकथा
पुग्गलपञ्चत्ति—पकरण-अट्टकथा
कथावत्थु—कथावत्थुप्पकरण अट्टकथा
यमक—यमकप्पकरण अट्टकथा
पट्टान—पट्टानप्पकरण अट्टकथा

बौद्ध देशों में अट्टकथा को भी उसी गौरव की दृष्टि से देखते हैं जिससे पालि को। अट्टकथा की भाषा अत्यन्त सुन्दर तथा सरल है। तत्कालीन भारतीय संस्कृति, राजनीति, समाज आदि ऐतिहासिक बातों की खोज के लिए त्रिपिटक तथा अट्टकथा दोनों में प्रचुर सामग्री है। हमारे गुरुभाई भिक्षु नागार्जुन ने त्रिपिटक-युग की आर्थिक अवस्था पर एक खोज-पूर्ण लेख महाबोधि सभा, सारनाथ से प्रकाशित होने वाले बौद्ध मासिक पत्र 'धर्मदूत' के ३१ अंक में लिखा है।

विसुद्धिमग्गो :—यह ग्रन्थ भी आचार्य बुद्धघोष द्वारा लिखा गया है। लंका के स्थविरों ने इनकी परीक्षा लेने के लिए इनको संयुक्त निकाय की दो गाथाएँ

दीं, और उन्ही पर एक ग्रन्थ लिखने के लिए कहा। वे दो गाथाएँ यह थीं—

प्रश्न—अन्तो जटा बहि जटा,
जटाय जटिता पजा।
तं तं गोतम पुच्छामि,
को इमं विजटये जटन्ति ?

अर्थात्—भीतर भी जटा है, बाहर भी जटा है, जटा से मनुष्य बेतरह जकड़ा हुआ है। अतः, हे गौतम ! मैं आप से पूछता हूँ—कौन इस जटा को सुलभा सकता है ?

भगवान् का उत्तर—

सीले पतिट्टाय नरो सपञ्जो,
चित्तं पञ्जञ्च भावयं,
आतापी निपको भिक्खु
सो इमं विजटये जटन्ति ॥

अर्थात्—शील पर प्रतिष्ठित हो, अपने चित्त के क्लेशों को तपाने वाला, पण्डित भिक्षु चित्त और प्रज्ञा की भावना करते हुए इस जटा को सुलभा सकता है।

इन्हीं दो गाथाओं पर आचार्य बुद्धघोष ने 'विसुद्धिमग्गो' लिखा है। ग्रन्थ का विषय योगाभ्यास है। योगाभ्यास की तैयारी से ले कर सिद्धि तक की सारी बातें सुन्दर ढंग से समझाई गई हैं। पातञ्जल योग सूत्र में योग विषयक सिद्धान्त भर दिए हैं; अभ्यास कैसे शुरू करना चाहिए और उसे धीरे-धीरे कैसे बढ़ाना चाहिए यह नहीं बताया गया है। 'विसुद्धिमग्गो' प्रथम तैयारी के दिन से ले कर सिद्धि तक गुरु के ऐसा निर्देश करता जाता है।

बौद्ध देशों में इस ग्रन्थ का सम्मान उतना ही है जितना त्रिपिटक का।

मिलिन्द पञ्चो :—

बौद्ध धर्म का अध्ययन करने वालों के मन में जिस प्रकार की शंकायें उठती हैं, कुछ वैसी शंकायें आज से कोई डेढ़ हजार वर्ष पहले ग्रीस (यवन देश) के राजा 'मिलिन्द' के मन में उठी थीं। राजा को अपनी बुद्धि का बड़ा अभिमान था। वह अपने समय के विद्वानों से बहुत चकरा देने वाले प्रश्न किया करता था।

इस ग्रंथ में महा स्थविर 'नागसेन' ने उस राजा के प्रश्नों के मुंहतोड़ उत्तर दिये हैं। सिंहल, वरमा, श्याम आदि बौद्ध देशों में यह ग्रंथ बुद्ध के अपने उपदेशों की तरह मान्य है।

अन्य ग्रन्थ :—पालि भाषा में जितने ग्रन्थ मिलते हैं, सभी का सीधे, या घुमा फिरा कर बौद्ध धर्म से सम्बन्ध है। लंका के इतिहास पर स्थविर महानाम-कृत 'महावंस' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ मिलता है, जो पद्य-मय है। लंका के इतिहास के साथ-साथ इसमें भारतवर्ष के इतिहास का भी वह अंश चला आया है, जो बौद्ध सम्राटों से सम्बन्ध रखता है।

काशी, विद्यापीठ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'विद्यापीठ' के १९९३ आश्विन पौष-चैत्र अंक में 'पालि वाङ्मय की अनुक्रमिका' शीर्षक एक सुन्दर लेख हमारे ज्येष्ठ गुरुभाई पूज्य भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी ने लिखा है। उसमें उनसे पालि वाङ्मय के ग्रन्थों का सुन्दर परिचय दिया है।

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण

(क)

जिस तरह ऐन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि संस्कृत भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं, वैसे ही कच्चान, मोग्गलान, सद्नीति आदि पालि भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं। संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, तथा अधिकार—इन छः प्रकार के सूत्रों से जैसे संस्कृत व्याकरण रचे गये हैं, वैसे ही पालि-व्याकरण भी।

पालि सरल तथा उस समय की बोल-चाल की भाषा होने के कारण, उसके व्याकरण में उतने अधिक सूत्र नहीं हैं जितने संस्कृत व्याकरण में। पालि भाषा के कच्चान व्याकरण में ६७५ सूत्र, मोग्गलान में ८१७ सूत्र, तथा सद्नीति में १३६१ सूत्र हैं।

पालि-व्याकरण का क्षेत्र

पालि भाषा, वैदिक भाषा की तरह, जीवित बोलचाल की भाषा थी। वैदिक भाषा के सभी प्रयोगों को पाणिनि ने अपने व्याकरण के सूत्रों में संगृहीत करने का प्रयत्न किया; किंतु जीवित भाषा होने के कारण इतने अधिक अपवाद निकल आते थे कि सूत्र उनको नियम में न ला सके। अतः, 'बहुलं', 'नाम-व्यत्यय', 'क्रिया व्यत्यय' करके छोड़ दिया। ठीक उसी तरह, पालि व्याकरण में भी 'क्वचि', 'बहुलं', 'वा', तथा 'विभाषा' से अधिक काम लिया गया है। व्याकरण ही अधिक पढ़ कर कोई यदि पालि-भाषा के सभी प्रयोगों से परिचित होना चाहे तो यह सम्भव नहीं।

'सरो लोपो सरे १.२६—इस सूत्र से पर्व स्वर का लोप होता है; जैसे—

सद्वा + इध = सद् + इध = सद्धिध । ठीक उसके बाद आने वाले सूत्र 'परो वञ्चि' १.२७ से पर स्वर का लोप होता है; जैसे:—सो + एव = सो'व ।

अब, कोई प्रश्न कर सकता है कि—किन-किन स्थानों में पूर्व स्वर का, और किन-किन स्थानों में पर स्वर का लोप होता है ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि इसका ज्ञान साहित्य-अवलोकन से होगा । व्याकरण, भाषा के गठन तथा आकृति भर को बताता है । उसमें प्रवेश करने के लिए, साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है ।

व्याकरणकार

ऐसा जिक्र आता है कि भगवान् बुद्ध के प्रधान शिष्य महाकच्चान ने भी एक व्याकरण बनाया था; किंतु वह नहीं मिलता है । बोधिसत्त और सब्बगुणाकर नाम के भी दो प्राचीन व्याकरण थे, जो आजकल उपलब्ध नहीं हैं । आज-कल, कच्चान, मोग्गल्लान, और सद्दनीति—इन्हीं तीन व्याकरणों का अधिक प्रचार है । इन तीनों में अधिक प्राचीन 'कच्चान' व्याकरण है, जो शायद लंका ही में लिखा गया था । यह व्याकरण बड़े सरल ढंग से लिखा गया है ।

पालि व्याकरण के कुछ और ग्रन्थों के नाम ये हैं:—रूपसिद्धि । बालाव-तार । महानिरुत्ति । चूलनिरुत्ति । निरुत्ति पिटक । सम्बन्ध चिन्ता । सद्दसारत्थ-जालिनी । कच्चान भेद । सद्दत्थ भेद चिन्ता । कारिका । कारिका-वृत्ति । विभ-त्यत्थ । गन्धत्थी । वाचकोपदेस । नयलक्खण विभावनी । निरुत्तिसंगह । सद्द-वृत्ति । कारकपुप्फ मञ्जरी । गूलत्थदीपनी । मुखमत्तसार । सद्दबिन्दु । सद्दकलिका । सद्दविनिच्छिय इत्यादि ।

मोग्गल्लान

मोग्गल्लान व्याकरण आज से प्रायः ७५० वर्ष पहले, प्रथम पराक्रम बाहु के समय लंका में लिखा गया था । व्याकरण-कर्ता मोग्गल्लान महाथेर अपने समय के संघ-राज थे । वे अनुराधपुर के थूपाराम विहार में रहते थे, जहाँ ही सम्भवतः यह व्याकरण लिखा गया होगा । मोग्गल्लान की गिनती पाणिनि, चान्द्र, कात्यायन आदि महान् वैयाकरणों में है ।

पालि-व्याकरणों में, 'मोग्गल्लान' व्याकरण पूर्णता तथा गम्भीरता में श्रेष्ठ है ।

इस व्याकरण का प्रचार लंका और बर्मा दोनों जगह समान रूप से है। मोग्गल्लान व्याकरण के इर्द-गिर्द आगे चल कर कई ग्रन्थ लिखे गए—जैसे, पियदस्सी महाथेर-कृत 'पद-साधन'; संघराज श्री सारिपुत्र-कृत 'पदावतार'; संघराज संघरक्खित महाथेर-कृत 'सुसद्धसिद्धि'; 'सम्बन्ध चिन्ता' और 'सारथविलासनी'; संघराज वनरत्न महाथेर-कृत 'पयोगसिद्धि'; संघराज श्री राहुल-कृत 'बुद्धिप्प-सादनी टीका'; और 'पञ्जिका प्रदीप' इत्यादि।

साधारणतः, वैयाकरण सूत्र ही लिख कर छोड़ देते थे; बाद में कोई दूसरा उन पर वृत्ति लिखा करता था। किंतु, मोग्गल्लान महा थेर ने स्वयं सूत्र लिख कर उन पर वृत्ति भी लिखी, और फिर उस वृत्ति पर 'पञ्चिका' (=व्याख्या) भी। इसी से मोग्गल्लान व्याकरण इतना पुष्ट तथा पूर्ण है।

अभी हाल तक 'मोग्गल्लान व्याकरण सूत्र-वृत्ति' तो मिलता था, किंतु 'पञ्चिका' लुप्त थी। हमारे दादा-गुरु आचार्य श्री धम्मराम नायक महाथेर ने १८९६ ई० में 'पञ्चिका प्रदीप' का सम्पादन करते हुए भूमिका में लिखा था, "मोग्गल्लान व्याकरण के अध्ययन करने में जो विद्यार्थियों का उत्साह इतना बढ़ रहा है उसमें 'पञ्चिका' का खो जाना बड़ा बाधक हो रहा है।" सौभाग्य से हमारे गुरु परमपूज्य विट्ठद्वर श्री धर्मानन्द नायक महास्थविर को ताल-पत्र पर लिखी 'पञ्चिका' की एक पुरानी पुस्तक लंका के किसी विहार में मिल गई। उन्होंने उसे सम्पादित कर विद्यालंकार परिवेण, लंका से प्रकाशित कराया। बड़े परिश्रम से उनने इसमें गण-पाठ, ण्वादिपाठ (उणादि पाठ) आदि सुन्दर ढंग से दिया है। पालि-व्याकरण का पाण्डित्य-पूर्ण अध्ययन करने के लिए यह ग्रन्थ परम आवश्यक है।

मोग्गल्लान व्याकरण में इन विशेषताओं को देख कर ही, मैंने अपनी इस पुस्तक में उसीका अनुसरण किया है। हर एक नियम के साथ, उसका सूत्र दे दिया है, तथा सूत्र की संख्या भी लिख दी है।

मोग्गल्लान व्याकरण के अन्तिम पृष्ठ पर एक गाथा आती है:—

सुत्त-धातु-गणो-ण्वादि
नामलिङ्गानुसानं ।
यस्स तिट्ठति जिह्वग्गे
सो व्याकरणकेसरी ॥

अर्थात्—जिसकी जीभ के अग्र भाग पर सूत्र-पाठ, धातु-पाठ, गण-पाठ,

‘ण्वादि-पाठ’, तथा कोष उपस्थित रहता है वही व्याकरण-केशरी है ।

‘सूत्र पाठ’, ‘धातु पाठ’, ‘गण पाठ’, तथा ‘ण्वादि पाठ’ हमने पुस्तक के अन्त में दे दिए हैं ।

कोष के लिए, सब से उत्तम ग्रन्थ ‘अभिधानपदीपिका’ है जो बम्बई से नागरी अक्षरों में प्रकाशित हो गया है ।

(ख)

अभ्रादयो तितालीस वण्णा १.१ :—पालि मे ‘अ’ आदि ४३ वर्ण है ।

दसावो सरा १.२ :—आदि के १० स्वर हैं

अ आ, इ ई, उ ऊ, एँ (ह्रस्व) ए, ओँ (ह्रस्व) ओ ।

द्वे द्वे सवण्णा १.३ :—दो दो स्वर सवर्ण कहे जाते हैं ।

पुब्बो रस्सो १.४ :—उनके (=सवर्णों के) पूर्व वर्ण ह्रस्व हैं । जैसे:—
अ, इ, उ, एँ, ओँ ।

“संयुक्त अक्षर के पूर्व आने वाले ‘ए’ तथा ‘ओ’ ह्रस्व होते हैं ।” मोगलान परो दीघो १.५ :—उनके (=सवर्णों के) दूसरे वर्ण दीर्घ होते हैं । जैसे:—

आ, ई, ऊ, ए, ओ ।

कादयो व्यञ्जना १.६ :—‘क’ आदि ३३ वर्ण व्यञ्जन हैं । जैसे:—

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अँ ।

नवीन संस्कृत ने ‘ळ’ वर्ण को छोड़ दिया ।

पञ्च पञ्चका वग्गा १.७ :—पाँच-पाँच के पाँच वर्ण हैं । जैसे:—
कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग ।

विन्दु निग्गहीतं १.८ :—‘अँ’ को निग्गहीत कहते हैं ।

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा मम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

विषय-सूची

वस्तु कथा

पहला खण्ड

अपनी अपनी भाषा मे धर्म सीखने की आज्ञा				पृष्ठ
'पालि' नाम कैसे पड़ा ?	पाँच
पालि=पडवित	छः
परियाय	सात
पलियाय	नव
पालियाय =पालि	नव
				ग्यारह

दूसरा खण्ड

'पालि' और वैदिक भाषा	तेरह
वैदिक भाषा की स्वतंत्रता	तेरह
'नाम-विभक्तियों' के प्रयोग में स्वच्छन्दता	चौदह
काल तथा लकार की स्वच्छन्दता	पंद्रह
निमित्तार्थक प्रत्यय	सोलह
कृत्य	अट्ठारह
प्रयोगों की विभिन्नता का कारण	अट्ठारह
उच्चारण में परिवर्तन	उन्नीस
व्याकरण की आवश्यकता	बाइस
वैदिक, पालि, संस्कृत	तेइस

तालिका				
१ व्यत्यय	चौबीस
२ नाम	पच्चीस
३ क्रिया	छब्बीस
४ कृदन्त	उनतीस
'वेद' और अशोक-पालि	तीस

तीसरा खण्ड

'पालि' के विकृत रूप	तैंतीस
'पालि' और 'गाथा-संस्कृत'	चौतीस
'पालि' और 'अर्ध-मागधी'	पैंतीस

चौथा खण्ड

साहित्य

त्रिपिटक	उनतालीस
नव अङ्ग	चालीस
सूत्रों की शैली				इकतालीस
सूत्रों की भाषा		.		बयालीस
पेय्यालं	.			तैंतालीस
पाँच निकाय	.		.	तैंतालीस
विनय—अभिधम्म	..	.		चवालीस, पैतालीस
त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ	छियालीस

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण

'पालि' व्याकरण का क्षेत्र	उनचास
व्याकरण-कार	पचास
मोगल्लान	पचास

(३)

पहला काण्ड

१ पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

	पृष्ठ
अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'बुद्ध'	२
अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—'फल'	४
इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'मुनि'	५
इकारान्त नपुं० लिङ्ग शब्द—'अट्टि'	६
उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'भिक्षु'	७
उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—'आयु'	८
विशेषण	८

२ पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—'लता'	१३
इकारान्त " " 'रत्ति'	१४
ईकारान्त " " 'इत्थी'	१५
उकारान्त " " 'धेनु'	१६
ऊकारान्त " " 'वधू'	१७

३ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

'सर्व' शब्द—पुल्लिङ्ग	२०
-----------------------	----

		पृष्ठ
नपुंसक लिङ्ग	..	२१
स्त्री लिङ्ग		२१
'कि' शब्द—पुल्लिङ्ग		२२
नपुंसक लिङ्ग		२३
स्त्री लिङ्ग		२३
'त-त्य' शब्द—पुल्लिङ्ग		२४
नपुंसक लिङ्ग		२५
स्त्री लिङ्ग	..	२५

४ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

'पठमा' विभक्ति	२६
'द्वितीया' विभक्ति	२६
'तृतीया' विभक्ति	.	.	.	३०
'चतुर्थी' विभक्ति	.	.	.	३०
'पञ्चमी' विभक्ति	३१
'छट्ठी' विभक्ति	३१
'सप्तमी' विभक्ति	३२

५ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

उपसर्ग	३६
निमित्तार्थक	३७
पूर्वकालिक	३७
तद्धितान्त	३७
रूढ़ि	३७

(५)

दूसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

	पृष्ठ
गण	४५
'पच' धातु—परस्स पद	४६
अत्तनो पद	४७
वर्तमान काल की धातु-रूप-तालिका	५०-५१

२ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(द्वितीया भाग)

'अस्मह' शब्द	५४
'तुम्ह' शब्द	५६
'एत' शब्द—पुल्लिङ्ग	५७
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	५८
'इम' शब्द—पुल्लिङ्ग	५८
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	५९
'अमु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६०
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	६१

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(द्वितीया भाग—भविष्यत्काल)

'पच' धातु—परस्स पद	६३
अत्तनो पद	६४

भविष्यत्काल में कुछ विशेष क्रियाओं के रूप ..	पृष्ठ ६४
भविष्यत्काल की धातु-रूप-तालिका ..	६७

४ पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'दण्डी'	७०
„ नपुं० लिङ्ग शब्द—'सुखकारी'	७१
ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'सव्वञ्जू'	७२
„ नपुं० लिङ्ग शब्द—'सयम्भू'	७३
ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'गो'	७३
„ नपुं० लिङ्ग शब्द—'चित्तगो'	७४
शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द	
'अत्त'	७५
'ब्रह्म'	७५
'राज'	७६
'पुम'	७८
'सा'	७८
'युव'	७९
'वन्तु-मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द—'गुणवन्तु'	८०

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत)

'पच' धातु—परस्सपद ..	८४
अत्तनोपद ..	८५
कुछ विशेष धातुओं के रूप ..	८६
परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल की धातु-रूप-तालिका ..	८८-८९

६ पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

'न्त-मान' प्रत्ययान्त शब्द	पृष्ठ
'गच्छन्त' शब्द—पुल्लिङ्ग; नपुं० लिङ्ग	६२
'तु' प्रत्ययान्त शब्द	६३
'दातु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६४
'पितु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६५
'मातु' शब्द—स्त्रीलिङ्ग	६६
'सत्थु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६७
'सख' शब्द—पुल्लिङ्ग	६८
'मन' शब्द—नपुंसक लिङ्ग	६९
'कम्म', 'पद', 'कोध', 'दिव' शब्द	१००
'एकच्च', 'अम्मा', 'सभा', 'अग्नि', 'इसि', 'दण्डपाणि' शब्द	१०१
'अरियवुत्ति', 'नदी', 'हेतु', 'अम्बु', 'जन्तु' शब्द	१०२

७ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

'प' उपसर्ग	१०५
'परा-नि-नी' उपसर्ग	१०६
'उ-डु-स' उपसर्ग	१०७
'वि' उपसर्ग	१०८
'अव-अन्तु' उपसर्ग	१०९
'परि-अभि-अधि' उपसर्ग	११०
'पति' उपसर्ग	१११
'सु-आ-अति-अन्धि-अप' उपसर्ग	११२
'उप' उपसर्ग	११३

तीसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

	पृष्ठ
१—भ्वादि गण	११५
'भवति'	११५
'घम्मति', 'वज्जति', 'इज्जति', 'गच्छति', 'यच्छति' 'इच्छति',	
'अच्छति', 'दिच्छति', 'गच्छरे', 'गभिस्सरे', 'सन्ति', 'सन्तु', 'सिया',	
'सन्तो', 'समानो'	११६
'तिट्ति', 'पिवति', 'डहति', 'अदेन्ति', 'जीयति', 'मीयति', 'जीरति',	
'निसीदति', 'उट्टहति'	११७
'समादियति', 'निक्खमति', 'पस्सति'	११८
२—रधादि गण	११८
रधादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—घेष्पति, गण्हाति, ..	११९
३—दिवादि गण	११९
४—तुदादि गण	१२०
५—ज्यादि गण	१२१
जानाति, नायति	१२१
धुनाति, किणाति	१२२
६—क्यादि गण	१२२
७—स्त्रादि गण	१२२
सक्कुणोति	१२३
८—तनादि गण	१२३
तनुति, तनुते, कुव्वति, कथिरति, करोति	१२३
कुम्मि, कुम्म, संखरियति, पुरेक्खति	१२४
९—चुरादि गण	१२४

(६)

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग, अनुज्ञा)

विधिलिङ्ग—'पच' धातु—परस्सपद	पृष्ठ
अत्तनोपद	१२८
'विधि' में कुछ विशेष धातु के रूप	१२९
अनुज्ञा—'पच' धातु—परस्सपद	१३०
अत्तनोपद	१३१
'विधिलिङ्ग' की 'धातु-रूप'-तालिका	१३२
'अनुज्ञा' की 'धातु-रूप'-तालिका	१३३

३ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

'पठमा' विभक्ति	१३५
'द्वितीया' विभक्ति	१३५
'तृतीया' विभक्ति	१३७
'पञ्चमी' विभक्ति	१३७
'छट्ठी' विभक्ति	१३८
'सप्तमी' विभक्ति	१३८

४ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

'क्तवन्तु', 'क्तावी', 'क्त'	१४२
कुछ विशेष धातु के रूप	१४४

५ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्व, तुं, त्वा)

	पृष्ठ
‘तव्व’, ‘अनीय’, ‘ध्यन्’	१५०
कुछ विशेष धातु के रूप	१५१
‘तु’, ‘ताये’, ‘तवे’ ..	१५२
‘तु’ प्रत्यय के भिन्न भिन्न प्रयोग-स्थान	१५३
‘तून’, ‘क्त्वान’, ‘क्त्वा’, ‘प्य’ ..	१५४

६ पाठ

विशेषण-प्रकरण

‘गुण-वाचक’ विशेषण ..	१५७
‘संख्या-वाचक’ विशेषण ..	१५८
‘कृदन्त’ विशेषण	
‘न्त’, ‘मान’, ‘क्त’, ‘क्तवन्तु’, ‘तावी’	१६०
‘तव्व’, ‘अनीय’, ‘य’ ..	१६१
‘सद्वितान्त’ विशेषण	
‘रति’, ‘रीवतक’, ‘रित्तक’, ‘कतर’, ‘कतम’, ‘णैय्य’ ..	१६१
‘णिक’, ‘तन’, ‘इम’	१६२

७ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

‘एक’ शब्द—पुल्लिङ्ग	१६४
नपुं० लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग ..	१६५
‘द्वि’ शब्द ..	१६५
‘उभ’ शब्द ..	१६६

	पृष्ठ
'ति' शब्द—तीनों लिङ्ग	१६६
'चतु' शब्द— ,,	१६७
'पञ्च'—'अट्टारस'	१६८
'पञ्च' शब्द	१६९
'एकूनवीसति' शब्द	१६९
'बीसति'—'अट्टनवुति'	१७०-१७२
'एकून सत' शब्द	१७२
'ड' प्रत्यय ..	१७३
'सौ' से ऊपर की संख्यायें	१७३
'कति' शब्द ..	१७४
पूरणवाची शब्द ..	१७५

चौथा काण्ड

१ पाठ

वाच्य-प्रकरण

कर्तृवाच्य, भाववाच्य	१७८
कर्मवाच्य ..	१७९
निष्ठा	
'क्तवन्तु', 'क्तावी' (कर्तृवाच्य)	१७९
'क्त' ('कर्तृ', 'कर्म', 'भाव'वाच्य)	१८०
'क्य' प्रत्यय	१८०

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत	
'पच' धातु—परस्सपद	१८४

		पृष्ठ
अत्तनोपद	१८५
'अनद्यतन भूत' मे कुछ विशेष धातु के रूप	.. .	१८५
परोक्ष भूत		
'पञ्च' धातु—परस्सपद	..	१८५
अत्तनोपद	१८६
'परोक्ष भूत' मे कुछ विशेष धातु के रूप	..	१८७
हेतुहेतुमद्भूत		
परस्सपद, अत्तनोपद	..	१८८
हेतु० भूत मे कुछ विशेष धातु के रूप	..	१८८

३ पाठ

'वाला'-वाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—तीसरा भाग)

'लु', 'णक' प्रत्यय	१९१
'आदी', 'अक', 'णन', 'कू' प्रत्यय	..	१९२
'अण', 'रू', 'णी' प्रत्यय	१९३

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—पहला भाग)

'मन्तु', 'वन्तु', 'इक', 'ई' प्रत्यय		१९४
'स्सी', 'र', 'भ' प्रत्यय	..	१९५
'अ', 'ण', 'आलु', 'इल' प्रत्यय	..	१९६
'व', 'वी', 'आमी', 'उवामी', 'ण', 'न' प्रत्यय	..	१९७
'सो', 'इम', 'इय' प्रत्यय	..	१९८

(१३)

४ पाठ

भाववाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—चौथा भाग)

	पृष्ठ
'अ', 'घण' प्रत्यय	२००
'इ', 'अथु', 'क्वि', 'अ', 'ण', 'क्ति', 'क', 'यक्', 'य' प्रत्यय ..	२०१
'अन' प्रत्यय	२०२
'नि', 'इ', 'कि', 'ति' प्रत्यय	२०३

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—दूसरा भाग)

'त्त', 'ता' प्रत्यय .. .	२०३
'त्तन', 'ण्य' प्रत्यय	२०४
'ण्य्य', 'ण', 'इय', 'णिय' प्रत्यय	२०५
'व्य', 'नण्', 'इम' प्रत्यय	२०६

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

'णि', 'णापि', 'आपि' प्रत्यय	२०६
भ्वादि गण .. .	२०६
रुधादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि गण	२११

(ख)

(विभक्ति-प्रकरण—तीसरा भाग)

प्रेरणार्थक नियम	२१२
----------------------------	-----

(१४)

६ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

(तद्धित प्रकरण—तीसरा भाग)

	पृष्ठ
'तो' प्रत्यय	२१५
'त्र', 'त्थ', 'धि' प्रत्यय	२१६
'हि', 'हं', 'दा' प्रत्यय	२१७
'था', 'धा' प्रत्यय .. .	२१८
'एधा', 'ज्झं', 'क्खत्तुं' प्रत्यय	२१९
'सो', 'ची' प्रत्यय	२२०

पाँचवाँ काण्ड

१ पाठ

सन्धि-प्रकरण

स्वर सन्धि	२२२
व्यञ्जन सन्धि .. .	२२५
निर्गमहीत सन्धि .. .	२२६

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सतन्त)

'ख', 'स', 'छ' प्रत्यय .. .	२३२
द्वित्व करने के नियम .. .	२३३

	पृष्ठ
'त्तक', 'आवन्तु' प्रत्यय	२४६
'रति', 'रीव', 'रीवतक', 'रित्तक', 'इत', 'मत्त', 'तग्वो' प्रत्यय.. .	२४७
'ण', 'अय', 'क', 'आकी', 'रतर', 'रतम', 'इस्सिक', 'इय', 'इट्ट'..	२४८
द्वितीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'क', 'णिक' प्रत्यय .	२४९
'णिक', 'ल्ल', 'ण्य्य' प्रत्यय .	२५०
तृतीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण' प्रत्यय	२५१
'ल', 'इ', 'इम' प्रत्यय .. .	२५२
चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय	
'णिक' प्रत्यय	२५३
पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय	
'णिक' प्रत्यय	२५३

२ पाठ

(ख)

तद्धित-प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'णान', 'णायन' 'ण्य्य' 'णेर' प्रत्यय	२५४
'ण्य' प्रत्यय	२५५
'णि', 'ञ्जो', 'य', 'इय', 'स्स', 'सण' प्रत्यय	२५६
'ण', 'ण्य', 'णिक' प्रत्यय	२५७
'ण', 'य', 'रेय्यण', 'छ' प्रत्यय	२५८
'अमह', 'रेय्यण', 'तर', 'ण', 'णिक', 'ण्य्य', 'मय', 'स्सण' प्रत्यय	२५९
'कण्ण', 'णिक', 'ता', 'स्स', 'जातिय' प्रत्यय	२६०
सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'तन', 'अच्च' प्रत्यय	२६१

‘इम’, ‘कण’, ‘णैय्य’, ‘णैय्यक’, ‘य’, ‘इय’, ‘णिक’ प्रत्यय	पृष्ठ २६२
‘ण्य’, ‘निय’, ‘ञ्ज’, ‘इक’, ‘णैय्य’, अन्य प्रत्यय	२६३

३ पाठ

समास-प्रकरण

अव्ययीभाव (असंख्य)	..	२६७
बहुव्रीहि (अञ्जत्थ)	..	२६९
बहुव्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण		२७०
तत्पुरुष (अमादि)	..	२७२
तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण		२७३
कर्मधारय (एकाधिकरण)	..	२७४
कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण		२७५
क्रियार्थ समास	..	२७६
द्वन्द (क) समाहार	..	२७८
(ख) समाहार—इतरेतर	..	२७९
(ग) इतरेतर	..	२८०

४ पाठ

समासान्त-प्रत्यय

‘अ’ प्रत्यय	..	२८४
निपात	..	२८५
‘चि’ प्रत्यय	..	२८५
‘क’ प्रत्यय	..	२८६
‘ण्वादि’ वृत्ति (उणादि)	..	२८७
पहला परिशिष्ट—सूत्र-पाठ		३३७
दूसरा परिशिष्ट—धातु-पाठ		३६७
तीसरा परिशिष्ट—गण-पाठ		४१५

	पृष्ठ
चौथा परिशिष्ट—समास, स्त्री प्रत्यय, समासान्त प्रत्यय ..	४३१
पाँचवाँ परिशिष्ट—तद्धित	४३६
छठा परिशिष्ट—कृदन्त	४४७
सातवाँ परिशिष्ट—सूत्र-सूची	४५७
आठवाँ परिशिष्ट—ण्वादि वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका	४७३
नवाँ परिशिष्ट—उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका ..	५११
अभ्यासों के लिए संकेत	५६७

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

पहला काण्ड

पहला पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

§ १. जैसे, हिन्दी में कारक प्रकट करने के लिए, शब्द के आगे 'ने', 'को', 'से', 'के लिए' इत्यादि, कारक के चिन्ह व्यवहृत होते हैं, उसी तरह, पालि में—कारक तथा वचन प्रकट करने के लिए—शब्द के परे 'सि', 'यो', 'अं' इत्यादि विभक्तियाँ लगती हैं। विभक्तियों के लगने से शब्द के जो रूप बनते हैं, उन्हें 'पद' कहते हैं।

साधारणतः, 'पठमा' विभक्ति कर्ता में, 'द्वितीया' कर्म में, 'तृतीया' करण में, 'चतुर्थी' सम्प्रदान में, 'पञ्चमी' अपादान में, 'छट्ठी' सम्बन्ध में, 'सप्तमी' अधिकरण में, तथा 'आलपन' सम्बोधन में प्रयुक्त होती है।

विभक्तियों के लगने से शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं:—

१२. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द^१

बुद्ध

	ए क व च न	अनेक व च न
पठमा	बुद्धो ^१ (बुद्धे ^१)	बुद्धा ^१
डुति या	बुद्धं	बुद्धे ^१
तति या	बुद्धेन ^१	बुद्धेहि, ^१ बुद्धेभि ^१
चतुर्थी	बुद्धाय, ^१ बुद्धस्स ^१	बुद्धानं ^{१०}
पञ्चमी	बुद्धा, ^{११} बुद्धम्हा, ^{१२} बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धानं
सप्तमी	बुद्धे ^{१३} बुद्धम्हि, ^{१४} बुद्धस्मि	बुद्धेषु ^{१५}
आलपन	बुद्ध, ^{१६} बुद्धा ^{१७}	बुद्धा

१. द्वे द्वे कानेकेसु नामस्मा सियो अंयो नाहि सनं स्माहि सनं स्मि सु २.१—नाममे परे, ये विभक्तियाँ होती हैं। जैसे:—

	ए क व च न	अनेक व च न
पठमा } आलपन }	सि (ग)	यो
डुति या	अं	यो
तति या	ना	हि
चतुर्थी	स	नं
पञ्चमी	स्मा	हि
छट्ठी	स	नं
सप्तमी	स्मि	सु

२. सिस्सो २.१११—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'ओ' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध + सि = बुद्ध + ओ = बुद्धो।

३. व्वच्चे वा २.११२—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का कही कही विकल्पसे 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे:—“वनप्पगुम्मे यथा फुस्सितग्गे” ('बुद्धक-पाठ', 'रतन' सूत्र)।

४. अतो योनं टाटे २.४३—अकारान्त नाम से परे, पठमा की 'यो' विभक्ति का 'टा' (= 'आ'), तथा दुतिया की 'यो' विभक्ति का 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—पठमा—बुद्ध+यो=बुद्ध+आ=बुद्धा। दुतिया—बुद्ध+यो=बुद्ध+ए=बुद्धे।

५. अतेन २.११०—अकारान्त नाम से परे, 'ना' विभक्ति का 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+ना=बुद्ध+एन=बुद्धेन।

६. सु हि स्व स्से २.१००—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+सु=बुद्धेसु। बुद्ध+हि=बुद्धेहि।

७. स्मा हि स्मि चं म्हा भि म्हि २.९९—नाम से परे, 'स्मा', 'हि', तथा 'स्मि' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'म्हा', 'भि', तथा 'म्हि' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्धम्हा=बुद्धस्मा। बुद्धेहि=बुद्धेभि। बुद्धम्हि=बुद्धस्मि।

८. स स्ता थ च तु स्थि या २.४६—'चतुर्थी' में, अकारान्त नाम से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'आय' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स=बुद्ध+आय=बुद्धाय; बुद्धस्स।

९. सुञ् स स्स २.५३—नाम से परे, 'स' विभक्ति का 'स्स' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स=बुद्धस्स।

१०. सुनं हि सु २.९१—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का कहीं कहीं दीर्घ होता है। जैसे:—मुनीसु। मुनीनं; बुद्धानं। अग्गीहि।

११. स्मा स्मि चं २.४५—अकारान्त नाम से परे, 'स्मा' तथा 'स्मि' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'टा' (= 'आ') तथा 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स्मा=बुद्ध+आ=बुद्धा; बुद्धस्मा। बुद्ध+स्मि=बुद्ध+ए=बुद्धे; बुद्धस्मि।

१२. ग सी नं २.११९—यदि और कोई दूसरी विधि न की गई हो, तो 'ग' तथा 'सि' विभक्तियों का लोप होता है। जैसे:—

बुद्ध+सि (=ग) =बुद्ध ! दण्डी+सि =दण्डी।

१३. अयू नं वा दी घो २.६१—तीनों लिङ्गों में, अकारान्त, इकारान्त, तथा उकारान्त नाम से परे, 'ग' (=सि) विभक्ति आने पर, नामका अन्त्य स्वर विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+ग=बुद्धा; बुद्ध ! हे मुनी; मुनि ! हे भिक्खू; भिक्खु !

शब्दावली :—सुर, असुर, नर, उरग, नाग, यक्ख (=यक्ष), गन्धब्ब (=गन्धर्व), किल्लर, मनुस्स, पिसाच्च, पेत्त, मातङ्ग (=हाथी), तुरङ्ग, वराह, सीह (=सिंह), व्यग्घ (=वाघ), अच्च (=भालू), कच्चप, सोत्त (=कुत्ता), आलोक, लोक, निलय, चाग, (=त्याग), योग, वायाम (=व्यायाम), गाम (=गाँव), निगम (=कस्वा), धम्म (=धर्म), संघ, ओघ (=वाढ़), पटिघ (=ट्रेष), सारम्भ (=भगड़ा), थम्म (=स्तम्भ), पमाद (=प्रमाद), मक्ख (=कंजूसी), रुक्ख (=वृक्ष), इत्यादि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान होते हैं ।

§ ३. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द—फल

	ए क व च न ।	अ ने क व च न
पठमा	फल ^{१४}	फला, ^{१५} फलानि ^{१६}
दुतिया	फलं	फले, ^{१५} फलानि ^{१६}
आलोपन	फल, फला	फलानि

शेष रूप 'बुद्ध' शब्द के समान

शब्दावली—चित्त, पुञ्जा (=पुण्य), पाप, रूप, सोत्त (=कान), घाण (=घ्राण), सुख, दुक्ख, कारण, दात्त, सील, धन, भान (=ध्यान), लोचन, मूल,

१४. अं नपुंसक के २.११३—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'अं' आदेश हो जाता है । जैसे—फल + सि = फलं ।

१५. नी नं वा २.४४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'नि' का 'टा' (= 'आ'), तथा 'दुतिया' के 'नि' का 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है । जैसे—फल + नि = फल + आ = फला । फल + नि = फल + ए = फले ।

१६. यो नं नि २.११४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्ति का 'नि' आदेश हो जाता है । जैसे—फल + यो = फलानि ।

यो लोपनि सु दीघो २.६०—'यो' विभक्ति के लोप होने, अथवा 'नि' परे होने से, नाम का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है । जैसे—मुनि + यो = मुनी । फलानि । अट्ठानि । अयूनि ।

कुल, बल, जाल, मङ्गल, लिङ्ग, मुख, अङ्ग, जल, पुलिन, धञ्ज (= धान), हिरञ्ज (= सोना), अमृत (= अमृत), पद्म (= कमल), पण (= पत्ता), सुसान (= स्मशान), वन, अयुध (= अस्त्रशस्त्र), हृदय (= हृदय), जीवर (= कापाय वस्त्र), वस्त्र (= वस्त्र), इन्द्रिय, नयन, वदन, यान (= रथ), शोदन (= भात), सोषान (= सीढ़ी), पाण (= प्राण), भवन, भुवन, लुण्ड (= चोच), अण्ड, पीठ (= पीढ़ा), मरण, ज्ञान, आरम्भण (= आलम्बन), अरञ्ज (= जगल), नगर, तगर (= एक सुगन्ध), छत्त (= छाता), छिद् (= छेद), उद्क (= पानी), इत्यादि अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप 'फल' शब्द के समान होते हैं ।

§ ४. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि (= साधु)

ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ सा मुनि	मुनी, ^{१०} मुनयो ^{१८}
डु ति धा मुनि	मुनी, मुनयो
त ति धा मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
च तु त्थी मुनिनो, ^{११} मुनिस्त	मुनीनं
प ञ्च मी मुनिना, ^{१०} मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि, ^{११} मुनीभि
छ ट्ठी मुनिनो, मुनिस्त	मुनीनं ^{११}
स त्त मी मुनिम्हि, मुनिस्मि	मुनिसु, मुनीसु ^{११}
आ ल प न मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

१७. लोपो २.११६—'भ' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का लोप होजाता है। जैसे :—मुनि + यो = मुनी। अट्ठी। दण्डी। आयू।

१८. यो सु भि स्त पु मे २.९५—'यो' विभक्ति आने में, पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य 'इ' का विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे :—मुनि + यो = मुनयो।

१९. भ ला स स्स नो २.८३—'भ' तथा 'ल' से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'नो', आदेश हो जाता है। जैसे :—मुनिनो। दण्डिनो। भिक्कुनो। सयम्भुनो।

शब्दावली—पाणि (=प्राणी), गण्ठ (=गाँठ), मुट्ठि (=मुक्का), कुच्छि (=पेट), सालि (=एक चावल), वीहि (=धान), व्याधि (=रोग), सन्धि (=जोड़), रासि (=राशि), दीपि (=वाघ), इसि (=ऋषि), मणि, धनि, गिरि, रवि, कवि, कपि, असि, भसि (=राख), निधि, विधि, अहि (=साँप), किमि (=कीड़ा), पति, हरि, अरि, कलि (=काला), बलि, जल-निधि, गह्वरि (=गृहपति), वरमत्ति (=श्रेष्ठ बुद्धि वाला), अधिपति, इत्यादि इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'मुनि' शब्द के समान होते हैं।

§ ५. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्ठि (=हड्डी)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	अट्ठि	अट्ठीनि, ^{२२} अट्ठी
दुत्ति या	अट्ठि	अट्ठीनि, ^{२२} अट्ठी
आलपन	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी

शेष रूप 'मुनि' शब्द के समान

२०. ना स्मा स्स २.८४—'भ' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मा' विभक्ति का विकल्प से 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे:—मुनि +स्मा =मुनिना। दण्डिना, दण्डिस्मा। भिक्खुना, भिक्खुस्मा। सयम्भुना, सयम्भुस्मा।

२१. सु नं हि सु २.९१—'सु', 'न' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे:—मुनीसु। मुनीनं। मुनीहि।

२२. भला वा २.११५—नपुंसक लिङ्गमें, 'भ' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे:—अट्ठि +यो =अट्ठीनि; अट्ठी। आयूनि; आयू।

लोपो २.११६—'भ' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे:—अट्ठी, दण्डी, आयू, अग्गी, भिक्खू।

शब्दावली—दधि (=दही), वारि (=पानी), अक्खि (=आँख), अच्चि (=आँच) आदि इकारान्त नपुसक लिङ्ग शब्द के रूप 'अट्ठि' शब्द के समान होते हैं।

§ ६. उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिक्षु (=भिक्षु)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	भिक्षु	भिक्षू, भिक्षवो ^{२३} *
दु ति या	भिक्षुं	भिक्षू, भिक्षवो
त ति या	भिक्षुना	भिक्षूहि, भिक्षूभि
च तु त्थी	भिक्षुनो, भिक्षुस्त	भिक्षूनं
प ञ्च मी	भिक्षुना, भिक्षुस्मा, भिक्षुम्हा	भिक्षूहि, भिक्षूभि
छ ट्ठी	भिक्षुनो, भिक्षुस्त	भिक्षूनं
स त्त मी	भिक्षुस्मि, भिक्षुम्हि	भिक्षुसु, भिक्षूसु
आ ल प न	भिक्षु	भिक्षू, भिक्षवे, भिक्षवो ^{२४} *

शब्दावली—सेत्तु (=पुल), केत्तु (=पताका), भानु (=सूर्य), राहु, उच्छु (=ईश), वेत्तु (=वाँस), मच्चु (=मार, मृत्यु), सिन्धु (=समुद्र), मधु, मेरु (=पहाड़), सत्तु (=शत्रु), कारु (=विश्वकर्मा), हेत्तु, जन्तु, पट्टु, आदि उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'भिक्षु' शब्द के समान होते हैं।

२३. ला योनं वो पु मे २.८५—पुल्लिङ्ग 'ल' (=‘उ’, ‘ऊ’) से परे, ‘यो’ विभक्ति का विकल्प से ‘वो’ आदेश होता है। जैसे:—भिक्षु + यो = भिक्षवो, भिक्षू। सयम्भूवो, सयम्भू।

२४. पु मा ल प ने वे वो २.९८—यदि आलपन में ‘यो’ विभक्ति आवे, तो पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, उसका ‘वे’ तथा ‘वो’ आदेश होता है। जैसे:—हे भिक्षवे, भिक्षवो !

* वे वो सु लु स्स २.९६—पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, यदि ‘वे’ या ‘वो’ आवे, तो उसके ‘उ’ का ‘अ’ हो जाता है। जैसे:—भिक्षवे, भिक्षवो !

§ ७. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आयु

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	आयु	आयूनि, आयू
दु ति या	आयुं	आयूनि, आयू
आ ल ष न	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिक्षु' शब्द के समान

शब्दावली—अश्वत्थु (=आँख), वसु (=धन), धनु (=तीर), दाह (=लकड़ी), तिषु (=सीसा), मधु, वत्थु (=कहानी), जत्तु (=लाह), अम्बु (=पानी), अस्सु (=आँसू) आदि उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप 'आयु' शब्द के समान होते हैं।

§ ८. विशेषण

विशेष्यमें जो लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं, वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन उसके विशेषणमें भी होते हैं। जैसे :—

लिङ्ग में

पु ल्लि ङ्ग	इ तिथि लि ङ्ग	न पुं स क लि ङ्ग
सुन्दरो बालको	सुन्दरी बालिका	सुन्दरं फलं

विभक्ति में

पठ मा	सुन्दरो बालको
दु ति या	सुन्दरं बालकं
त ति या	सुन्दरेन बालकेन
च तु त्थी	सुन्दराय बालकाय इत्यादि

वचन में

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सुन्दरो बालको	सुन्दरा बालका
दु ति या	सुन्दरं बालकं	सुन्दरे बालके इत्यादि

विशेषण—शब्दावली—अखिल (=सारा), अगाध, अटल, अतीत (=बीता हुआ), अद्भुत (=अद्भुत), अधम (=नीच), अनुत्तर (=सर्वोत्तम), अनुरक्त (=राग में पड़ा हुआ), अन्ध (=अन्धा), अलस (=आलसी), अप्प (=अल्प), अड्ड (=धनी), अजभक्तिक (=आध्यात्मिक), उग (=उग्र), उच्च (=ऊँचा), उस्सुक (=उत्सुक), उम्भस्त (=पागल), उण्ह (=गमं), उजु (=सीधा), एकच्च (=कोई), कटुक (=कड़ुआ), काण (=काना), कन्त (=प्रिय), कुटिल (=टेढ़ा), कपण (=कृपण), गभीर या गम्भीर (=गहरा), गर (=भारी), गोल (=गोला), धोर (=भयङ्कर), चञ्चल, चपल, चार (=सुन्दर), जटिल (=जटाधारी, उलझा), दारुण, दिब्ब (=दिव्य), दुग्गम (=दुर्गम), दुब्बल (=दुर्बल), दुक्कर (=दुष्कर), धम्मिक (=धार्मिक), धुत्त (=व्यसनी), नग (=नंगा), नव-नवीन (=नया), तिच्च (=नित्य), निस्सित (=तेज), नूल (=नया), पक्क (=पका हुआ), पटु (=चालाक), पोरण (=पुराना), पुथु (=फैला हुआ), पेटिक (=पैतृक), पगम्भ (=प्रगल्भ), पहूत (=अधिक), पाकट (=प्रसिद्ध), पिय (=प्रिय), फरस (=कठोर), बधिर (=बहरा), बहु (=बहुत), भस्सर (=चमकीला), भीर (=डरपोक), भुस (=बहुत), सत (=मृत), मनञ्जू (=मनोज्ञ), मलिन, (=मैला), महं (=बड़ा), मह्ध (=कीमती), मूग (=गूँगा), मुटु (=मूटु), रम्भ (=रम्य), रस्स (=ह्रस्व), रिक्त (=रिक्त), रुण (=रुग्ण), लहु (=हलका), विचक्खण (=होशियार), विचित्त (=विचित्र), विनीत, विसाल, वित्थत (=विस्तृत), सन्त (=शान्त), सीतल (=शीतल), सुक्क (=उजला), सुच्चि (=पवित्र), सुभ (=शुभ), सुक्ख (=सूखा), सुञ्ज (=शून्य), सेत (=उजला), सकल (=सभी), सफल, समान, सित (=उजला), सुगम, हट्ठ (=प्रसन्न) इत्यादि विशेषण हैं।

पुल्लिङ्ग सँ—अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'भिक्षु' शब्द के समान होंगे। नपुंसक लिङ्ग सँ—अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'अटिठ' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'आयु' शब्द के समान होंगे। जैसे :—

पु ल्लिङ्गः—अतीतो भूपो; अतीता भूपा । सुचि कूपो, सुचयो कूपा ।
मुदु बालको, मुदवो बालका ।

नपुंसकः—अतीतं नगरं, अतीतानि नगरानि । सुचि जलं, सुचीनि जलानि ।
मुदु फलं, मुदूनि फलानि ।

[स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्द के रूप के लिए देखिए—पृ० १५८]

१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) बुद्धानं सासनं । बुद्धानं धम्मो । बुद्धस्स सावको । देवानं इन्दो । बुद्धस्स सरणं । धम्मस्स सरणं । सङ्घस्स सरणं । बुद्धो देवानं च मनुस्सानं च नायको । ब्राह्मणानं गाम्भो । बुद्धस्स सावका । सङ्घाय दानं । निब्बाणाय धम्मो । देवानं भानानि ।
- (ख) मुनयो बुद्धस्स सावका । भिक्खूनं सङ्घो । इसीनं भानं । अट्ठीनं संघातो । आयुनो खयो । भिक्खुस्स दानं । भाना निब्बाणं । आयुनो संहानि ।
- (ग) बुद्धो विहरति (=विहार करते हैं) । देवा नन्दन्ति (=आनन्द करते हैं) । भिक्खू भायन्ति (=ध्यान करते हैं) । मनुस्सा पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । सवको देवानं इन्दो बुद्धं नमस्सति (=प्रणाम करता है) । मुनयो वदन्ति (=बोलते हैं) । फलानि पतन्ति (= गिरते हैं) । भिक्खवो सज्भायन्ति (=पाठ करते हैं) ।
- (घ) बुद्धो भिक्खूनं धम्म देसेति (=उपदेश करते हैं) । देवा बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं) । बुद्धो धम्मं पकासेति (=प्रकाशित करते हैं) । भिक्खू अरञ्जे भायन्ति (=ध्यान करते हैं) । बुद्धो निब्बाणाय भिक्खूनं धम्मं देसेति (=उपदेश करते हैं) । भिक्खवो सङ्घे वसन्ति (=वास करते हैं) । मुनयो बुद्धं नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । सावका बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं) । देवा देवे पस्सन्ति (=देखते हैं) । मनुस्सा फलानि खादन्ति (=खाते हैं) । देवा सगं गच्छन्ति (=जाते हैं) । भिक्खू भानं भावेन्ति (=भावना करते हैं) । सावका भिक्खुना सह गच्छन्ति (=जाते हैं) ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूप पठमा, ततिया तथा छट्ठी विभक्ति में लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्धों का धर्म । देवों का ध्यान । बुद्धों की शरण । भिक्खुओं का नायक । देवों का सङ्घ । ऋषियों का ध्यान । बुद्ध के श्रावकों का ग्राम । भिक्खुओं के

लिए दान । सङ्घ के लिए दान । निर्वाण के लिए बुद्धों का शासन । देवों के लिए बुद्ध का धर्म । ग्राम से ग्राम को । विहार से विहार को । बुद्धों के शासन में लगन (=योगो) ।

भिक्षु लोग ध्यान करते हैं (=भायन्ति) । मनुष्य लोग बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति) । बुद्ध धर्म को प्रकाशित करते हैं (=पकासति) । ऋषि लोग स्वर्ग के लिए ध्यान करते हैं (=भायन्ति) । मुनि लोग बुद्धों के धर्म की प्रशंसा करते हैं (=पसंसन्ति) । देवता बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति) । बुद्ध के साथ भिक्षु लोग जाते हैं (=गच्छन्ति) ।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों की विभक्ति बताइए—

ब्राह्मणानं गाम्ना । भिक्खु गाम्ना आगच्छति (=आता है) । देवो देवेहि आगच्छति (=आता है) । भिक्खू देवे पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । भिक्खू विहारे वसन्ति (=वास करते हैं) । मनुस्सा विहारे पससन्ति (=देखते हैं) । देवा सग्गा आगच्छन्ति (=आते हैं) । भिक्खू भिक्खू नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । मुनी मुनी पससन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । भानं भानं वडेदति (=बढ़ाता है) । भिक्खूनं दान देति (=देता है) । भिक्खूनं भानं ।

५. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के षष्ठमा तथा दुतिया विभक्ति से रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

६. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—बुद्धो, धम्मं, भिक्खूनं सङ्घे, देवा, देवानं लोकेसु, सावका, मनुस्सानं लोके, सरणं, निब्बाणाय भानं, सग्गाय दानं ।

क्रिया-पदानि—देसेति (=उपदेश करता है), पकासेति (=प्रकाशित करता है), गच्छन्ति (=जाते हैं), करोन्ति (=करते हैं), देन्ति (=देते हैं), भावेति-न्ति (=भावना करना) ।

पहला काण्ड

दूसरा पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

§ ६. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	लता ^१	लता, ^२ लतायो
बुतिया	लतं	लता, ^३ लतायो
ततिया	लताय ^३	लताहि, लताभि
चतुत्थी	लताय ^३	लतानं
पञ्चमी	लताय ^३	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय ^३	लतानं

१. ग स्त्री नं २.११६—यदि कोई दूसरी विधि न हो, तो 'ग' तथा 'सि' का लोप हो जाता है। जैसे:—लता + सि = लता। भुनि। दण्डी। भिक्वु। बधू। गो।

२. ज न्दु हे त्वी घ पे हि वा २.११७—'जन्तु', 'हेतु', ईकारान्त शब्द, तथा 'घ' (= 'आ') और 'प' (= 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप होता है। जैसे—जन्तू, जन्तुयो। हेतू, हेतुयो। दण्डी, दण्डियो। लता, लतायो। रत्ती, रत्तियो। इत्थी, इत्थियो। धेनू, धेनुयो। बधू, बधुयो।

३. घ ष ते क स्मि ना दी नं य या २.४७—'घ' (= 'आ') तथा 'प' (= 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का क्रमशः 'य' तथा 'या' आदेश हो जाता है। जैसे:—लताय। रत्तिया। इत्थिया। धेनुया। बधुया।

स त्त मी	लतायं ^४ , लताय ^३	लतासु
आ ल प न	लते ^५	लता, लतायो

शब्दावली—अग्रगता (= अग्रता), अच्छरा (= अग्रसरा), अज्जा (= परमज्ञान), अनुदया (= अनुकम्पा), अभिज्झा (= लोभ), अम्मा (= माता), अविज्जा (= अविद्या), आणा (= फरमान), आसा (= इच्छा), ईहा (= चेष्टा), उक्का (= उल्का), उपदा (= वैना), उम्मा (= अतसी), एजा (= कंपन), कच्छा (= कांख), कन्धरा (= कथा), करका (= ओला), कण्णा (= कण्णा), कुच्छा (= वृणा), कुण्णा (= ढोंग), वाथा (= श्लोक), चन्दिमा (= चन्द्रमा), छाया जटा, जिगुच्छा (= वृणा), तण्हा (= तृष्णा), दयिता (= प्यारी), नावा (= नौका), पटिपदा (= मार्ग), पिच्छिला (= पछला), पुच्छा (= हालचाल पछना), बाहा (= बाहु), ब्रहा (= वृद्धि), सेत्ता (= मित्रता), सुणिक्षा (= पतोह), सभा, आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लता' के समान होते हैं ।

§ १०. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (= रात्रि)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्त्यो ^६
डु ति या	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्त्यो ^६

४. यं २.१०५—'घ' (= 'आ') तथा 'प' ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है । जैसे:—लतायं, लताय । रत्तियं, रत्तिया । वधुयं, वधुया । सब्बायं, सब्बाय । अमुयं, अमुया ।

५. घ ब्रह्मादितो ए २.६२—'घ' (= 'आ') तथा 'ब्रह्म' आदि शब्दों से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है । जैसे:—हे लते, लता ! भो ब्रह्मे, ब्रह्म ! भो कत्ते, कत्त ! भो इस्से, इस्सि ! भो सखे, सख ! [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]

	ए क व च न]	अ ने क व च न
त ति या]	रत्तिया, रत्या ^१	रत्तीहि, रत्तीभि
च तु त्थी	रत्तिया, रत्या,	रत्तीनं
प ङ्च मी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छ ट्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
स त्त मी	रत्तियं, रत्त्यं, ^२ रत्या, रत्ति, रत्तो, ^३ रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आ ल प न	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

शब्दावली—युक्ति (= युक्ति), वुक्ति (= खबर), किति (= कीर्ति), मुक्ति (= मुक्ति), तित्ति (= तृप्ति), खन्ति (= सहनशीलता), सन्ति (= शान्ति), सिद्धि, सुद्धि, इद्धि (= ऋद्धि), बुद्धि (= वृद्धि), बुद्धि, बोधि (= ज्ञान), भूमि, जाति, पीति (= प्रीति), नन्दि (= तृष्णा), सन्धि, कोटि (= करोड), दिद्धि (= मत), वुद्धि (= वृष्टि), तुद्धि (= संतोष), यद्धि (= लाठी), पालि (= पंक्ति), सति (= स्मृति), धूलि, आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होते हैं ।

§ ११. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (= स्त्री)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
डु ति या	इत्थियं, इत्थि ^४	इत्थी, इत्थियो

६. ये प स्सि व ण्ण स्स २.११८:—यकार परे हो, तो स्त्रीलिङ्ग नाम के अनन्त्य 'इ' तथा 'ई' का विकल्प से लोप होता है । जैसे:—

रत्ति + यो = रत्तयो । रत्ति + ना (घपतेर्काम्मि नादीनं यया २.४७) = रत्ति + या = रत्या । रत्ति + स्मि = (यं २.१०५) = रत्ति + यं = रत्त्यं ।

७. रत्या दी हि टो स्मिनो २.५७—'रत्ति' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है । जैसे:—
रत्ति + स्मि = रत्तो, रत्तियं । आदो, आदिस्मि ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
च लु त्थी	इत्थिया	इत्थीनं
प ञ्च मी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीनं
स त्त मी	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीसु
आ ल ष न	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

शब्दावली—नदी, मही (=पृथ्वी), वेतरणी, वापी (=कूआ), पाटली, कदली, नारी, कुमारी, तरुणी, वारुणी, ब्राह्मणी, सखी, गन्धब्बी (=गन्धर्व स्त्री), किल्लरी, नागी, देवी, यक्खी (=यक्ष स्त्री), अजी (=वकरी), मिगी (=मृगी), वानरी, सूकरी, सीही (=सिही), हंसी, कुक्कुटी (=मुर्गी) इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'इत्थी' शब्दके समान होते हैं ।

§ १२. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=गाय)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	धेनु	धेनू, धेनुयो
डु ति या	धेनुं	धेनू, धेनुयो
त ति या	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
च लु त्थी	धेनुया	धेनूनं
प ञ्च मी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि

द. धं पी तो २.७५—स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अ' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है । जैसे:—इत्थी+अं=इत्थियं; इत्थि ।

ए क व च न यो सु अ घो नं २.६६—तीनों लिङ्गों के एक वचन में, तथा 'यो' विभक्ति आने से, 'घ' और ओकारान्त शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है । जैसे:—दण्डिनं, दण्डि, दण्डिनो, दण्डिना, दण्डिस्मा । इत्थिं, इत्थिया, इत्थियो । वधुं, वधुया, वधुयो । सयम्भुं, सयम्भुना, सयम्भुवो ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
छट्ठी	धेनुया	धेनूनं
सत्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनु, धेनुयो

शब्दावली—धातु, यागु (=यवागु), कासु (=गड्डा), ददु (=दाद), कच्छु (=खाज), रंजु (=रस्सी), आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'धेनु' शब्द के समान होते हैं ।

§ १३. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (=बहू)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	वधू	वधू, वधुयो
दुत्तिया	वधुं	वधू, वधुयो
तत्तिया	वधुया	वधूहि, वधूभि
चतुत्थी	वधुया	वधूनं
पञ्चमी	वधुया	वधूहि, वधूभि
छट्ठी	वधुया	वधूनं
सत्तमी	वधुयं, वधुया	वधूसु
आलपन	वधु	वध, वधुयो

शब्दावली—जम्बू (=जामुन), सरभू (=नदीका नाम, छिपकिली), सुतनू (=सुन्दरी), चमू (=सेना), वामोरू (=स्त्री) इत्यादि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'वधू' शब्द के समान होते हैं ।

२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धानं गाथा । भिक्खूनं सद्धा । मेत्ताय भानं । वाचाय संवरो । छायाय इच्छा । बुद्धस्स पूजा । मनुस्सानं देवता । देवानं परिसा । मनुस्सानं सभा ।

बुद्धानं कथाय विज्जा उप्पज्जति (= उत्पन्न होती है) । बुद्धानं गाथाय सद्धा उप्पज्जति (= उत्पन्न होती है) । गज्जायं देवता नहायति (= नहाता है) । कज्जायो बुद्धं नमस्सन्ति (= प्रणाम करते हैं) । इत्थियो देवताय मन्दिरं गच्छन्ति (= जाते हैं) । भिक्खुनी सद्धाय सङ्घां नमस्सन्ति (= प्रणाम करती हैं) । गाथासु देवतानं परिसाय कथा विज्जति (= है) । भिक्खवो परिसायं निसीदन्ति (= बैठते हैं) । कज्जायो भिक्खुनीसु सद्धं संठपेन्ति (= स्थापित करते हैं) । सद्धाय च पञ्जाय च बुद्धस्स पूजा होति । मेत्ताय भावनाय देवानं तुट्ठि होति । पञ्जाय भावनाय विमुत्ति होति । नदिया दिसायं धेनू चरन्ति ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के दुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

देवता की विद्या । प्रज्ञा की इच्छा । मैत्री की भावना । कन्या की श्रद्धा । देवता के लिए माला । भूमि में वास । लड़कियों की श्रद्धा बुद्ध की पूजा में है । पृथ्वी पर छाया है । देवता की पूजा से लोगों (पजा) की श्रद्धा बढ़ती है ।

४. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ बताइए—

विज्जाय पञ्जा वड्ढति (= बढ़ती है) । विज्जाय इच्छा पञ्जं वड्ढति (= बढ़ाती है) । भिक्खुनियो कज्जायो वाचेन्ति (= पढ़ाती हैं) । कज्जायो मालायो इच्छन्ति (= चाहती है) । इत्थियो भिक्खुनिया सह गच्छन्ति (= जाती हैं) । भिक्खुनिया दानं देन्ति (= देते हैं) । भिक्खुनिया धम्मदेसना होति । भिक्खुनिया (भिक्खुनियं) इत्थियो पसन्नायो होन्ति ।

५. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-मदानि—कज्जायो, भिक्खुनिया गार्थं, पीतिया, पालियं, देवता, मेत्ताय, पञ्जाय भावना, विमुत्तिया, पठवियं ।

क्रिया-पदानि—गायन्ति (=गाते हैं) । नच्चन्ति (=नाचते हैं), भासन्ति (=कहते हैं) । भावेति (=भावना करती है) । होति (=होता है) । कीळति-न्ति (=खेलना) । लभति-न्ति । पठति-न्ति । निपज्जन्ति (=लेटती हैं) ।

६. (क) अकारान्त पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

(ख) इकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग, तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

(ग) उकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

पहला काण्ड

तीसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

§ १. सब्ब^१ (=सभी)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सब्बो	सब्बे ^२
दु ति या	सब्बं	सब्बे
त ति या	सब्बेन	सब्बेहि, सब्बेभि

अथवाद

१. न अञ्जञ्ज नान्पधाना २.१४१—‘सब्ब’ आदि कोई शब्द यदि नाम के ऐसा प्रयुक्त हो, या अप्रधान हो, तो उसके रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होंगे। जैसे—ते सब्बा=वे ‘सब्ब’ लोग। ते पियसब्बा=वे सभी के प्रिय (यहाँ ‘सब्ब’ अप्रधान है)। ते अतिसब्बा।

त ति घ त्थ यो गे २.१४२—तृतीयार्थ के योग में, ‘सब्ब’ आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—मासेन पुब्बानं—मासपुब्बानं (यहाँ सर्वनाम शब्द के समान ‘पुब्बेसं या पुब्बेसानं’ नहीं हुआ)।

च त्थ स मा से २.१४३—द्वन्द्व समास (=चत्थ) होने पर भी, ‘सब्ब’ आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—दक्खिणुत्तरपुब्बानं (यहाँ भी, सर्वनाम शब्द के समान ‘पुब्बेसं’ नहीं हुआ)।

२. यो न भे द् २.१४०—अकारान्त ‘सब्ब’ आदि शब्दों से परे, ‘यो’ विभक्ति का ‘ए’ आदेश होता है। जैसे—सब्बे तिट्ठन्ति। सब्बे पत्स।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं ^३
प ङ्च मी	सब्बम्हा, सब्बस्मा	सब्बेहि, सब्बेभि ^३
छ ट्ठी	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
त त्त मी	सब्बम्हि, सब्बस्मि	सब्बेसु ^३
आ ल प न	सब्ब, सब्बा	सब्बे

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ भा	सब्बं	सब्बानि ^३
दु ति या	सब्बं	सब्बे, सब्बानि
आ ल प न	सब्ब, सब्बा	सब्बानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्री लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ भा	सब्बा	सब्बा, सब्बायो
दु ति या	सब्बं	सब्बा, सब्बायो
त ति या	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि

वेद २.१४४—जो 'सब्ब' आदि शब्दों से परे 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश किया गया है, वह द्वन्द्व समास होने पर विकल्प से होता है। जैसे—पुब्बुत्तरे; पुब्बुत्तरा ।

३. सब्बा दी न न्हि च २.१०१—'नं', 'सु', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, अकारान्त 'सब्ब' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'ए' हो जाता है। जैसे—सब्बेसं । सब्बेसु । सब्बेहि ।

सं सानं २.१०२—'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'नं' विभक्ति का 'सं' तथा 'सानं' आदेश हो जाता है। जैसे—सब्बेसं, सब्बेसानं ।

४. शब्बा दी हि २.१३६—'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'नि' का 'आ' आदेश नहीं होता है। जैसे—सब्ब + नि = सब्बानि । पुब्बानि । ['सब्बा' नहीं होगा]

	ए क व च न	अ ने क व च न
च॒तु॒त्थी	सब्बस्सा, ^५ सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
पुं॒ञ्च॒मी	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि
छ॒ट्ठी ^६	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
स॒त्त॒मी	सब्बस्सं, ^५ सब्बायं	सब्बासु
आ॒ल॒पुं॒न	सब्बे	सब्बा, सब्बायो

कत्तर, कत्तम, उभय, इतर, अञ्जा, अञ्जातर, तथा अञ्जात्तम शब्दों के रूप 'सब्ब' शब्द के समान होंगे।

§ २. पुं॒ब्बा॒दी॒हि॒ छ॒हि २.१४५—पुब्ब (=पहला), पर, अपर, दक्षिण (=दक्षिण), उत्तर, तथा अधर (=नीचा), इन छ शब्दों के रूप 'सब्ब' शब्द के समान ही होंगे; किंतु, पठमा अनेक वचन में इनके दो दो रूप होंगे। जैसे—पुब्बे, पुब्बा। परे, परा। अपरे, अपरा। दक्षिणे, दक्षिणा। उत्तरे, उत्तरा। अधरे, अधरा।

§ ३. किं^७ (=कौन)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प॒ठ॒मा	को	के
डु॒ति॒या	कं	के
त॒ति॒या ^८	केन	केहि, केभि

५. घ॒पु॒पा॒ स॒स्स॒ स्सा॒ वा २.१०३—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्सा' आदेश होता है। जैसे—सब्बा + स = सब्बस्सा। सब्बाय।

६. स्मि॒ नो॒ स्सं २.१०४—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'स्सं' आदेश होता है। जैसे—सब्बस्सं; सब्बायं। अमुस्सं, अमुया।

७. कि॒ स्स॒ को॒ सब्बा॒ सु २.२००—सभी विभक्तियों में, 'किं' शब्द का 'क' आदेश हो जाता है। जैसे—को, के। का, कायो। कं, कानि।

	ए॒क व च न	अ ने क व च न
च॒तु॒त्थी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
प॒ञ्च मी	कम्हा, कस्मा, किस्मा	केहि, केभि
छ॒ट्ठी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
स॒त्त मी	कम्हि, किम्हि, कस्मिं, किस्मिं	केसु

नपुंसक लिङ्ग

	ए॒क व च न	अ ने॒क व च न
प॒ठ मा	किं, कं	के, कानि
दु॒ति या	किं, कं	के, कानि

स्त्रीलिङ्ग

	ए॒क व च॒न	अ ने॒क व च न
प॒ठ मा	का	का, कायो
दु॒ति या	कं	का, कायो
त॒ति॒या	काय	काहि, काभि
च॒तु॒त्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
प॒ञ्च मी	काय	काहि, काभि
छ॒ट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
स॒त्त मी	कस्सं, कायं	कासु

§ ४. 'य' (=जो) शब्द के रूप, तीनों लिङ्गों में, 'क' शब्द के समान ही होते हैं। जैसे :—

पुल्लिङ्ग—यो, ये; यं, ये; येन, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हा यस्सा, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हि यस्मिं, येसु ।

८. किं सस्मिं सु बा॒ति स्थि यं २.२०१—पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में, 'स' तथा 'स्मिं' विभक्तियों के आने से, 'किं' शब्द का विकल्प से 'किं' आदेश होता है। जैसे—कस्स; किस्स । कस्मिं; किस्मिं ।

९. किं सस्मिं सु स ह न पुंस के २.२०२—नपुंसक लिङ्ग में, 'अ' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'किं' शब्द का रूप 'किं' होता है ।

नपुंसक—यं, ये यानि; यं, ये यानि—शेष पुल्लिङ्ग के समान ।

स्त्रीलिङ्ग—या, या यायो; यं, या यायो; याय, याहि याभि; यस्सा
याय, यासं यासानं; याय, याहि याभि; यस्सा याय, यासं यासानं; यस्सं
यायं, यासु ।

§ ५. त, त्य (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एक व च न	अनेक व च न
पठमा	सो, स्यो ^{१०}	ते, ने ^{११}
द्वितीया	तं, नं	ते, ने
तृतीया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुर्थी	तस्स, नस्स, अस्स ^{१२}	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा, नस्मा, अस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छठ्ठी	तस्स, नस्स, अस्स ^{१३}	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
सप्तमी	तस्मिह, अस्मिह, नस्मिह, तस्मि, नस्मि, अस्मि	तेसु, नेसु

१०. त्य ते तानं तस्स सो २.१३०—‘सि’ विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में, ‘त्य’, ‘त’ तथा ‘एत’ शब्दों के तकार का सकार हो जाता है। जैसे—स्यो पुरिसो । स्या इत्थी । सो पुरिसो । सा इत्थी । एसो । एसा ।

११. त तस्स नो सब्बासु २.१३३—सभी विभक्तियों में, ‘त’ शब्द के तकार का विकल्प से नकार हो जाता है। जैसे—ते ने । तेन नेन । तेहि नेहि ।

१२. ढ सस्मा स्मि स्साय स्सं स्सा स्सं म्हा म्हि स्मि मस्स च २.१३४—‘स’, ‘स्मा’, ‘स्मि’, ‘स्साय’, ‘स्सं’, ‘स्सा’, ‘सं’, ‘म्हा’, तथा ‘म्हि’ परे हो, तो ‘त’ तथा ‘इम’ शब्दों का विकल्प से ‘अ’ आदेश होता है। जैसे—तस्स, अस्स । तस्मा, अस्मा । तस्मि, अस्मि । तस्साय, अस्साय । तस्सं, अस्सं । तस्सा अस्सा । तासं, आसं । तम्हा, अम्हा । तस्मिह, अस्मिह ।

इम—इमस्स, अस्स । इमस्सा, अस्सा । इमस्मि, अस्मि । इमिस्साय, अस्साय इत्यादि ।

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि
डु ति या	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सा, स्या	ता, ना, तायो, नायो
डु ति या	तं, नं	ता, ना, तायो, नायो
त ति या	ताय, नाय, तस्सा, ^{१३} तिस्सा ^{१४}	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
च तु त्थी	तिस्साय, तस्साय ^{१५} अस्साय तिस्सा, तस्सा, ^{१३} ताय	तासं, आसं, तासानं

१३. स्सा वा ते ति मा मू हि २.४८—स्त्रीलिङ्ग 'ता', 'एता', 'इमा', तथा 'अमू' शब्दों से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का विकल्प से 'स्सा' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सा कतं। तस्सा दीयते। तस्सा निस्सरणं। तस्सा परिग्गहो। तस्सा पतिट्ठितं। विकल्प से 'ताय' भी होता है।

एतिस्सा। एताय।

इमिस्सा। इमाय।

अमुस्सा। अमुया।

१४. ताय वा २.५५—'स्सं', 'स्सा, तथा 'स्साय' से पूर्व, 'ता' शब्द का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सं, तिस्सं। तस्सा, तिस्सा। तिस्साय, तस्साय।

१५. ते ति मा तो स स्स स्सा य २.५६—'ता', 'एता', तथा 'इमा' शब्दों से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्साय' आदेश होता है। जैसे—तस्साय, ताय। एतिस्साय, एताय। इमिस्साय, इमाय।

घो स्सं स्सा स्सा यं तिं सु २.६५—'स्सं' आदि आने से, 'घ' (= 'आ') ह्रस्व हो जाता है। जैसे—तस्सं, तस्सा, तस्साय, तं, सभति, परिसति।

एक व च न	अनेक व च न
पञ्चमी ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी तिस्साय, तस्साय, अस्साय	
तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
सप्तमी तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं, तस्सा, तिस्सा	तासु

§ ६. सर्वनाम २७ हैं—सब्ब (=सर्व), कतर (=कौन), कतम (=कौन), उभय (=दोनों), इतर (=दूसरा), अञ्जा (=अन्य), अञ्जातर (=कोई), अञ्जातम (=अन्यतम), पुब्ब (=पूर्व), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, अधर (=अधः), य (=जो), त—त्थ (=वह), एत (=यह), इम (=यह), किं (=कौन), एक, उभ, द्वि, ति (=तीन), चतु (=चार), तुम्ह (=तू), अम्ह (मैं) ।

संख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य (=कोई कोई)—इतने अर्थों में 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है । जैसे—एको बालको = एक लड़का । बुद्धो एको व लोके = लोक में बुद्ध अतुल्य हैं । अहं एको व अरञ्जे विहरामि = मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ । एके एवं वदन्ति = कोई कोई लोग ऐसा कहते हैं ।

संख्या के अर्थ में, 'एक' शब्द एकवचन में ही होता है । तीनों लिङ्गों में इसके रूप 'सब्ब' शब्द के समान होते हैं ।]

[संख्या वाचक शब्दों के लिए देखिए—पृ० १६४]

३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

सबसे सङ्खारा दुक्खा । सबसे धम्मा अनत्ता सन्ति (=हैं) । सबसे पाणा दण्डस्स तसन्ति (=डरते हैं) । बुद्धो सब्बानि भानानि जानाति (=जानता है) । सबसे देवा सग्गे विचरन्ति (=विचरण करते हैं) । सब्बायो भिक्खुनियो बुद्धं वन्दन्ति (=प्रणाम करते हैं) । सब्बासु दिसासु भिक्खु भेत्तं भावेति (=भावना करता है) ।

केन ज्ञाणेन, कस्स भिक्खुस्स, कस्मिं ठाने, किं भानं होति ? का भिक्खुनी, काय भावनाय, काय पत्तिया, कायं कुटिकायं विहरति (=विहार करती है) ? कानि भानानि भिक्खु लभति (=प्राप्त करता है) ? कानि भानानि भिक्खुस्स होन्ति ? यो सीलं रक्खति सो भानं लभति (=लाभ करता है) । येहि धम्महि सम्बोधिधा पत्ति होति, ते धम्मा अनुत्तरा होन्ति ।^१

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के ततिया छट्ठी तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सव मनुष्य मरण-धर्मा है (=सन्ति) । सव देवता स्वर्ग में विचरण करते हैं (=विचरन्ति) । सभी भिक्षुओं का शरण बुद्ध है (=अत्थि) । जो दान देता है (=देति), वह स्वर्ग को जाता है (=गच्छति) । जिसकी प्रज्ञा नहीं है (=नत्थि), उसकी विद्या अल्प होती है (=होति) । कौन देवता, किस मनुस्स को, किस फल के लिए, किस धर्म का उपदेश करता है (=देसति) ?

३. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन तथा विभक्तियाँ बताइए—

सब्बाय विज्जाय वायामो । सब्बाय देवताय विचारो । सब्बाय दिसार भिक्खु भेत्तं भावेति (=भावना करता है) । सबसे देवा सबसे बुद्धे नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । काय विज्जाय काय पञ्जाय पत्ति होति ?

४. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सर्वनाम-पदानि—सबसे देवा, सबसे मनुस्से, सब्बानि फलानि, सबसे दारका, सब्बानि पोत्थकानि, सब्बेसु धम्मेषु ।

क्रिया-पदानि—नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं), वदन्ति (=बोलते हैं), खादन्ति (=खाते हैं), पठन्ति (=पढ़ते हैं), विहरति (=विहार करता है)।

५. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

सब्बेन सब्बं, सब्बथा सब्बं (=सब प्रकार से) । अञ्जमञ्जं (=एक दूसरे को) । येन भगवा तेन (=जहाँ भगवान थे वहाँ) । तेन, तस्मा (=तिस कारण से) । येन, यस्मा (=जिस कारण से) ।

६. (क) अकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

(ख) आकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

पहला काण्ड

चौथा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

१. पठमा विभक्ति

§ १. पठमा त्थ मत्ते २.३६—कर्तृवाच्य के कर्ता मे, या केवल अर्थ प्रगट करने में, 'पठमा विभक्ति' होती है। जैसे—समणो भायति = धमण ध्यान लगाता है। अग्नि । कञ्जायो । फलानि ।

§ २. आमन्तणे २.४०—आमन्त्रण करने के अर्थ में, 'आलपन विभक्ति' होती है। 'आलपन' मे भी, 'पठमा' ही की विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे—
आबुसो सुमन सामणेर ! रे धुत्ता ! हे कञ्जे ! जे अय्ये !

२. दुतिया विभक्ति

§ ३. कुम्भे दुतिया २.२—कर्तृवाच्य के कर्म में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—सूदो ओदनं पचति । सप्यो जने दंसति ।

§ ४. कालद्धानमच्चन्तसंयोगे २.३—क्रिया, गुण, तथा द्रव्य के लगातार होने से, समय तथा दूरी वाचक शब्द में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—समय में—सामणरो मासं विनयं पठति = सामणेर महीना भर (लगातार) विनय पढ़ता है। दिवसं गेहो सुञ्जो तिद्वति = दिन भर घर सूना रहता है। मासं गुळधाना = महीने भर गुड़-धान की मिठाई चलती रही।

दूरी में—भच्चो कोसं गच्छति = भृत्य कोस भर जाता है। कोसं कुटिला नदी = कोस भर नदी टेढ़ी-मेढ़ी है। कोसं पब्बतो = कोस भर पहाड़ ही पहाड़ है।

§ ५. 'धि' (= धिक्कार), 'अन्तरा' (= बीच), 'पति' (= प्रति), तथा 'विना' शब्दों के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—

धि अलसं सिस्सं = आलसी शिष्य को धिक्कार है। अन्तरा च राजगहं
अन्तरा च नाळन्दं = राजगृह और नालन्दा के बीच। लोका पसन्ना बुद्धं पति =
लोग बुद्ध के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं। न सिञ्ज्भति धम्मो विरियं विना =
विना वीर्य के धर्म सफल नहीं होता है।

३. ततिया विभक्ति

§ ६. क तु क र णे सु त ति या २.१८—भाववाच्य तथा कर्म-वाच्य के कर्त्ता में, करण कारक में, तथा क्रियाविशेषण में, 'ततिया विभक्ति' होती है।

जैसे—पुरिसेन गम्मति = पुरुष के द्वारा चला जाता है। बालकेन चन्दो
दिस्सति = बालक के द्वारा चाँद देखा जाता है (देखिए—पृ० १७८)।

करणा कारक में—दण्डेन सप्पं पहरति = लाठी से साँप मारता है।

क्रियाविशेषण में—गोत्तेन गौतमो = गोत्र से गौतम है। सुमेधो नाम
नामेन = नाम से सुमेध। इसी तरह—विसमेन धावति, समेन धावति, द्विदोणेन
धञ्जं किणाति, पञ्चकेन पसवो किणाति। इत्यादि

§ ७. स ह त्थे न २.१९—साथ होने के अर्थ में 'ततिया विभक्ति' होती है।

जैसे—सिस्सेहि सह = सार्द्ध = समं आगच्छति आचरियो = शिष्यों के
साथ आचार्य आता है।

§ ८. तु ल्य त्थे न वा त ति या २.४२—तुल्य के अर्थ में 'ततिया विभक्ति'
होती है, और छट्ठी भी।

जैसे—आचरियेन सदिसो सिस्सो = आचार्य के सदृश ही शिष्य है। जनकेन
तुल्यो पुत्तो = पिता के तुल्य ही पुत्र है। आचरियस्स सदिसो सिस्सो। जन-
कस्स तुल्यो पुत्तो।

४. चतुर्थी विभक्ति

§ ९. च तु त्थी स म्भ दाने २.२६—सम्प्रदान में 'चतुर्थी विभक्ति'
होती है।

जैसे—याचकस्स भिक्खं ददाति = भिखसंगे को भीख देता है। ब्राह्मणानं
भोजनं ददाति = ब्राह्मणों को भोजन देता है।

§ १०. ता द ल्थ्ये २.२७—'उसके लिए', इस अर्थ में 'चतुर्थी विभक्ति'
होती है।

जैसे—लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति—लोक के हित के लिए, बुद्ध धर्म का उपदेश करते हैं। न समत्थो दारभरणाय—स्त्री के पालन करने में समर्थ नहीं है। सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति—रसोइया पकाने के लिए भोजन-गृह जा रहा है। माणवकानं अनञ्जायो रञ्जति—विद्यार्थियों को अनध्याय अच्छा लगता है। भच्चो अमच्चस्स सत्तं धारेति—भृत्य अमात्य को सौ रूपए धारता हैं। पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्मेन किं—पापी को धर्म से क्या दरकार? जीवितं तिणाय अपि न मञ्जति—जीवन को तृण भर भी नहीं समझता है।

५. पञ्चमी विभक्ति

§ ११. पञ्चम्य व धिस्मा २.२८—अवधि-वाचक शब्द में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है।

जैसे—गामस्मा गच्छति—गाँव से जाता है। चोरस्मा भायति—चोर से डरता है। चोरस्मा रक्खति—चोर से बचाता है।

६. छट्ठी विभक्ति

§ १२. छट्ठी सम्बन्धे २.४१—सम्बन्ध में 'छट्ठी विभक्ति' होती है।

जैसे—आचारियस्स पुत्तो—आचार्य का पुत्र। गामस्स मनुस्सा—गाँव के मनुष्य। पहरतो पिण्डं ददाति—मारने वाले की ओर पीठ फेर देता है। दिवसस्स तिक्खत्तुं—दिन में तीन बार।

कृदन्त शब्दों के साथ भी बहुधा छट्ठी विभक्ति होती है। जैसे—साधु सम्मतो बहुजनस्स—बहुत लोगों का मान्य। तिट्ठन्ति धम्मस्स जातारो—धर्म के जानने वाले मौजूद हैं।

§ १३. य तो निद्धारणं २.३८—जाति, गुण, तथा क्रिया से, जहाँ बहुतों में से एक का निर्धारण किया जाय, वहाँ 'छट्ठी विभक्ति' होती है, और 'सत्तमी' भी।

जैसे—मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा खत्तियो सेट्ठो—मनुष्यों में, क्षत्रिय (जाति) श्रेष्ठ है। कण्हा गावीलं, गावीसु वा सम्पन्नखीरतमा—काली गौवों में अधिक दूध देने वाली होती है। दानानं, दानेसु वा धम्मदानं सेट्ठं—दानों में, धर्मदान श्रेष्ठ है।

§ ७. सत्तमी विभक्ति

§ १४. सत्त म्या धा रे २.३४—क्रिया के आधार में 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—पर्वते तिष्ठति = पर्वत पर रहता है। कुम्भे ओदनं पचति = हांडी में भात पकाता है। आकासे सकुणा विचरन्ति = आकाश में पक्षी विचरण करते हैं। तिलेसु तेलं वत्तसि = तिल में तेल है।

§ १५. नि मि त्ते २.३५—निमित्त के अर्थ में 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—अजिनम्हि मिंगं हञ्जति = चर्म के निमित्त से मृग को मारता है। मुसावादे पाचित्तिर्यं = मृपा-वाद से 'पाचित्तिर्यं' अपराध होता है।

§ १६. य व्भा वो भा व ल क्ख णं २.३६—जहाँ, एक काम के होने पर दूसरे काम का होना जाना जाता है, वहाँ 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—आचारिये आगते सिस्सा उट्टहन्ति = आचार्य के आने पर शिष्य खड़े हो जाते हैं।

§ १७. छट्ठी चा ना द रे २.३७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि अनादर का भाव मालूम हो, तो 'छट्ठी विभक्ति' भी होती है।

जैसे—“आकोटयन्तो सो नेति शिविराजस्स पेक्खतो” = शिविराज के देखते ही देखते, वह उसे पीटते हुए ले जाता है। “मच्चु गच्छति आदाय पेक्खमाने महाजने” = इतने लोगों के देखते ही देखते, मृत्यु ले कर चली जाती है।

[ऊपर के उदाहरणों में, शिविराज तथा महाजन के प्रति अनादर का भाव प्रगट होता है ।]

४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

सक-पन्ह-सुतं

एकं समयं भगवा (भगवान्) मगधेमु विहरति इन्दसाल-गुहायं । तेन खो पन सक्के न, सक्कस्स देवान इन्दस्स उस्सुक्कं उदपादि (= उत्पन्न हुआ) भगवन्तं दस्सनाय । अथ खो (= तव) सक्को देवानं इन्दो देवेहि तावतिसेहि परिजुतो भगवन्तं दस्सनाय अगमासि (= गया) । पञ्चसिखो पि खो गन्धर्व-पुत्तो वीणं आदाय (= लेकर) सक्कस्स अनुचरियं उपागमि (= आया) । अथ खो (= तव) सक्को इन्दसाल-गुहं पविसित्वा (= प्रवेश करके) भगवन्तं अभिवादेत्वा (= प्रणाम करके) एकमन्तं (= एक किनारे) अट्टासि । देवा पि एकमन्तं अट्ठंमु (= खड़े हो गए) । तेन खो पन समयेन, अन्धकारगुहायं आलोको उदपादि (= उत्पन्न हुआ), यथा तं देवानं देवानुभावेन ।

अथ खो सक्को देवानं इन्दो भगवन्तस्स धम्म-देसनं सुत्वा (= सुन कर), वेद-पटिलाभं सोमनस्स-पटिलाभं च पत्तो (= प्राप्त कर) भगवन्तं आह—

“अभिजानामि (= याद करता हूँ), भन्ते ! इतो (= इसमें) पुब्बे एव-रूपं सोमनस्स-पटिलाभं” ति ।

“भूत-पुब्बं भन्ते ! देवासुर-सङ्गामो अहोसि (= हुआ था) । तस्मि सङ्गामे देवा जिनिसु (= जीत गए), असुरा पराजिसु (= हार गए) । ‘या च दिब्बा ओजा या च असुर-ओजा—उभयं एतं देवा परिभुञ्जिस्सन्ती’ति चिन्तेत्वा, (= भोग करेगे, ऐसा विचार कर) सोमनस्स-पटिलाभो मे जातो । यो खो पन मे भन्ते ! सो वेद-पटिलाभो सोमनस्स-पटिलाभो, सो न निव्विदाय न संबोधाय न निव्विदाय संबत्तति । यो खो पन मे अयं भन्ते ! भगवन्तस्स धम्मं सुत्वा, वेद-पटिलाभो सोमनस्स-पटिलाभो, सो एकन्त-निव्विदाय संबोधाय, निव्विदाय संबत्तती”ति ।

अथ खो सक्को देवानं इन्दो पाणिना पठवि परामसित्वा (= छ कर) तिक्खत्तु (= तीन बार) उदानं उदानेसि—

“नमो तस्स भगवतो (= भगवन्तस्स) अरहतो (= अरहन्तस्स) सम्मा-
सम्बुद्धस्सा”ति । इमस्मि च पन वेय्याकरणस्मि भञ्जमाने (= कहे जाने पर)
सक्कस्स देवानं इन्दस्स धम्म-चक्खु उदपादि (= उत्पन्न हुआ)—‘यं किं चि
समुदय-धम्मं सब्बं तं निरोध-धम्मं’ति ।

२. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए; तथा, काले अक्षरों
में छपे पदों के कारक बताइए—

कायस्स भेदा, परं मरणा; सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति (= उत्पन्न होता है) ।
भिक्खु रतिया पच्छिमं यामं पच्चुट्ठाया (= उठ कर) चङ्कमेन आवरणेहि धम्मैहि
चित्तं परिसोधेति (= शुद्ध करता है) । सिक्खपदेसु सिक्खति । सुजाता तस्सा
दासिया वचनं सुत्वा (= सुनकर), पुण्णं दासिं सब्बं अलङ्कारं अदासि (= दे
दिया) । तस्मि समये मारो देव-पुत्तो मार-घोसनं घोसापेत्वा (= घोषित करा
के) मारवलं आदाय (= लेकर) निक्खमि (= निकल गया) । मारबले पन
बोधिमण्ड उपसङ्कमन्ते उपसङ्कमन्ते, (= पास जाते हुए), तेसं एको पि ठातुं
नासक्खि (= ठहर नहीं सका) । सुद्धोदन-पुत्तेन सिद्धत्थेन सदिसो (= सदृश)
अञ्जो पुरिसो नाम नत्थि । जातिया खो सति (= होने पर) जरा-मरणं होति ।
विञ्जाणे खो सति (= होने पर), नाम-रूपं होति । आसवेहि चित्तं विमुच्चि
(= मुक्त हो गया) ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु लोग एक वन-खण्ड (= वन-सण्ड) में विहार करते थे (= विहरिंसु) ।
वे भगवान् के दर्शन के लिए श्रावस्ती (सावत्थी) गये (= अगमिसु) । उन
के साथ एक परिव्राजक संन्यासी भी गया (= अगमि) ।

जो मनुष्य शील की रक्षा करता है (= रक्खति), वह मर जाने के
बाद देह छूट जाने पर स्वर्ग लोक में उत्पन्न होता है (= उप्पज्जति) । उस
भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है । चित्त के आस्रव (मल) क्षय होने
पर चित्त विमुक्त हो जाता है (= विमुच्चति) । सङ्घ को दान देने से,
बहुत पुण्य होता है (= बहु पुञ्जं पसवति) । शील से ध्यान उत्पन्न होता है ।
(= उप्पज्जति) । ध्यान से प्रज्ञा उत्पन्न होती है (= उप्पज्जति) । प्रज्ञा से
विमुक्ति होती है (= होति) ।

पहला काण्ड

पाँचवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

§ १. अव्यय शब्द सदा 'एक-रूप' रहते हैं। लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति के कारण, उनमें कोई अन्तर नहीं होता है। भोगललानाचार्य ने 'अव्यय' का नाम 'असंख्य' रक्खा है; क्योंकि, उसमें संख्या नहीं होती है। "न विज्जते संख्या धरुस तं असंख्यं" भोगलान पञ्जिका ३.२. ।

साधारणतः अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग, (२) निमित्तार्थक, (३) पूर्वकालिक, (४) तद्धितान्त, और (५) ऋद्धि।

१. उपसर्ग

§ २. उपसर्ग दोस हैं—प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अव, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप। उपसर्ग के लगने पर, क्रिया के अर्थ में कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न, और कभी बिल्कुल उल्टा ही अर्थ हो जाता है। [देखिए—दूसरा काण्ड, सातवाँ पाठ] जैसे—

जहति = छोड़ता है पजहति = एकदम छोड़ देता है
किरति = बिखेरता है बिप्किरति = चारों ओर बिखेर डालता है
हरति = हरण करता है पहरति = मारता है
गच्छति = जाता है आगच्छति = आता है

१. असंख्ये हि स ब्बा सं २.१२०—'असंख्य' शब्दों से परे, सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—च, वा, एव, एवं।

२. निमित्तार्थक

§ ३. 'यह करने के लिए', इस अर्थ में निमित्तार्थक अव्यय होता है। जैसे—
भोक्तुं गच्छति=भोजन करने के लिए जाता है। कर्तुं=करने के लिए।
स्रोतुं=सुनने के लिए। द्दृष्टुं=देखने के लिये। युञ्जितुं=युद्ध करने के लिए।
वक्तुं=बोलने के लिए। रुञ्जितुं=रोकने के लिए [दिखाए—पृ० १५२]।

३. पूर्वकालिक

§ ४. 'इस काम को करके', इस अर्थ में पूर्वकालिक अव्यय होता है। जैसे—
विहारं गत्वा बुद्धं वन्दति=विहार जा कर बुद्ध को प्रणाम करता है।
कत्वा=करके। सुत्वा=सुन कर। पस्सित्वा=देख कर [दिखाए—पृ० १५४]।

४. तद्धितान्त

§ ५. नाम तथा सर्वनाम से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से, अव्यय बन जाता है। जैसे—सब्व=सब्वत्थ=सभी जगह। य=ग्रहिं=जहाँ। कि=कदा=कब। सत्तं=सत्तसो=शनसः [दिखाए पृ० २१५-२२०]।

५. रूढ़ि

§ ६. रूढ़ि अव्यय प्रधानतः तीन प्रकार के हैं—(क) क्रियाविशेषण,
(ख) संयोजकादि, (ग) विस्मयादिबोधक।

(क) क्रियाविशेषण—कभी कभी क्रियाविशेषण द्वितीया या तृतीया
विभक्ति के एकवचन में रहता है। जैसे—

वेगं गच्छति; वेगेन गच्छति=तेज जा रहा है।

निम्न लिखित अव्यय क्रियाविशेषण की भाँति व्यवहृत होते हैं—

अगतो=सामने

अत्थ=यहाँ

अज्ज=आज

अत्थं=विनाश, अदर्शन

अञ्जदत्थु=निश्चय से

अत्र=यहाँ

अतीव=अत्यधिक

अद्धा=निश्चय से

अधुना = इस समय	एत्थ = यहाँ
अथो = नीचे	एव = निश्चय से
अन्तरा = मध्य में	एवं = ऐसे
अन्तरेण = मध्य में, बिना	एवस्मि = ऐसे भी
अन्तो = मध्य में	कच्चि = क्या
अप्पेव = शायद	कत्थ = कहाँ
अप्पेव नाम = शायद	कथं = कैसे
अभिकखणं = बार बार	कथञ्चि = किसी प्रकार
अभिण्हं = बार बार	कदा = कब
अमा = साथ	कदाचि = शायद
अमुत्र = परलोक में	कहं = कहाँ
अलं = बस	कामं = निश्चय से
अवस्सं = जरूर	किं = क्यों
आम = हाँ	किञ्चि = कुछ कुछ
आरका = दूर	किंसु = कैसे
आरा = दूर	कितावता = कब तक
आवि = प्रकट	कोव = कब तक, कितना
इध = यहाँ	कुत्थ = कहाँ
इंध = प्रेरणा करना	कुदाचनं = कभी
इति = ऐसा	कुंह = कहाँ
इत्थं = ऐसा	कुहिञ्चनं = कही
इदानि = इस समय	कुत्र = कहाँ
इह = यहाँ	क्व = कहाँ
ईसं = थोड़ा	चन = कुछ
उच्चं = ऊँचा	चि = कुछ
उद्धं = ऊपर	चिरं = दीर्घकाल
उपरि = ऊपर	चिरेण = विलम्ब से
एतरहि = अब	चिररत्ताय = दीर्घ काल तक
एत्तावता = अब तक	चिरस्सं = चिरकाल

जालु = कभी, निश्चय से
 तं = उस हेतु से
 तद्य = निश्चित रूप से
 ततो = उस हेतु से
 तत्थ = वहाँ
 तत्र = वहाँ
 तथरिद्व = तथैव, वैसे ही
 तथा = वैसे
 तथेव = वैसे ही
 तदा = तब
 तदानि = तब
 तर्हि = वहाँ
 तहं = वहाँ
 ताव = तब तक
 तावता = तब तक
 तिरियं = तिरिच्छा
 तिरो = छिपा हुआ, उस पार
 तुण्ही = चुप
 तेन = उस हेतु से
 दिट्ठा = प्रसन्नता से, भाग्य से
 दिवा = दिन में
 बुट्ठु = बुरा, बुरी तरह
 दूरा = दूर
 दोसो = रात में
 धुवं = स्थिर, निश्चय
 न = नहीं
 ननु = विरोध सूचक अव्यय, क्यों
 नमो = नमस्कार
 नहि = नहीं

नाना = भिन्न
 नीचं = थोड़ा, नीचा
 नु = शायद, क्यों
 नून = निश्चय से
 नो = नहीं
 पगे = प्रातःकाल
 पतिरूपं = ठीक
 परम्मुखा = पीछे की ओर
 परसुवे = परसों
 परितो = चारों ओर
 यसट्ठ = बलात्कार से
 पातु = प्रकट, सामने
 पातो = प्रातःकाल
 पायो = प्रायः
 पुथु = विना
 पुनप्पुनं = बार बार
 पुरतो = सामने
 पुरे = सामने
 पेच्च = परलोक में
 बलवं = प्रबल रूप से
 बहिद्धा = बाहर
 बही = बाहर
 बाहिरा = बाहर
 बाहिरं = बाहर
 मनं = थोड़ा
 मा = नहीं
 मिच्छा = भूठ
 मुधा = बेकार
 मुसा = भूठ

मुहुं = बार बार
 थं = जिस कारण से
 यत्ते = जिस हेतु से
 यत्थ = जिस स्थान पर
 यत्र = जहाँ
 यथस्सं = ऐसा ही
 यथरिद्ध = जैसे, यथैव
 यथा = जैसे
 यथाच्च = जैसे
 यथात्तथं = ऐसा ही
 यथापि = जैसे
 यथाहि = जैसे
 यथेव = जैसे
 यहि = जहाँ
 याव = जब तक, जितना
 यावता = जब तक, जितना
 येन = जिस हेतु से
 रत्तं = रात्रि में
 रहो = गुप्त
 रिदे = विना
 लहु = जल्द
 विना = विना
 विय = सदृश
 वे = निश्चय से
 सकिं = एक बार
 सच्छि = प्रत्यक्ष
 सज्जु = शीघ्र, तत्काल
 सदा = सर्वदा

सद्धं = अनुकूल
 सद्धि = साथ
 सन्नं = सर्वदा
 सनिकं = शीघ्र
 सपदि = शीघ्र, तत्काल
 सब्बतो = चारो ओर
 सम्भन्ततो = चारो ओर
 सम्भन्ता = चारो ओर
 सम्मं = साथ
 सम्पति = इस समय
 सम्मा = अच्छी तरह
 सयं = स्वयं
 सं = प्रसन्नतापूर्वक
 सह = साथ
 सहसा = अकस्मात्
 स्वे = आगामी कल
 साधु = ठीक
 सामं = स्वयं
 साहु = साधु
 सायं = सायंकाल
 सु = अथवा
 सुट्टु = अच्छी तरह
 सुवत्थि = कल्याण
 सुवे = कल (आगामी)
 सेय्यथापि = जैसे
 सेय्यथापि नाम = जैसे
 हिथ्यो = कल (बीता हुआ)
 हेक्का = नीचे

(ख) संयोजकादि

‘उद’ = किन्तु बुद्धं सरणं गच्छसि, उद अञ्जं सरणं ?

‘उदाहु’ = किन्तु बुद्धं सरणं गच्छसि, उदाहु अञ्जं सरणं ?

‘किमु’ = जीवितकाले पत्ने किन्तु खीरभोजनं ?

‘किमुत’ = जीवितकाले पत्ने किमुत खीरभोजनं ?

च = समणो बुद्धं वन्दति च सीलं रक्खति च ।

चे = बुद्धो भवेद्य चे, मारं जेस्सति ।

यदि = यदि बुद्धो भवेद्य, मारं जेस्सति ।

स चे = सचे बुद्धो भवेद्य, मारं जेस्सति ।

(ग) विस्मयादिवोधक

निम्नलिखित विस्मयादि-बोधक अव्यय है—अङ्ग = हे । अत्थु = ऐसा हो, ईर्ष्या का निर्देशक । एवं = हाँ । अद्धा = निश्चय से । अम्भो = हे । अरे । अहो = आश्चर्य है । जे = स्त्रियों को सम्बोधन करने में (आजकल गया-पटना जिले में इसका रूप ‘गे’ हो गया है । जैसे गे मैय्या ! गे अय्या ! गे ढीदी ! गे दाई !) । धि = धिक्कार । भो = हे । रे । बे = निश्चय से । सधु = स्वीकार करने के अर्थ में । हंहो = हे । हन्द = प्रेरणा द्योतक । हा = शोक द्योतक । हि = आः । हे = हे ।

द्रष्टव्यः—निम्नलिखित अव्ययों का अपना कोई अर्थ नहीं है, किंतु वे वाक्यालंकार या पादपूर्ति में आते हैं । जैसे—

अस्तु । खो । चे । पन । यधे । सुवं । ह

तयो अस्तु धम्मा ज्जहिता भवन्ति ! तेन खो पन समयेन ?

५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

दीपङ्करो नाम जिनो पुरा अहोसि (=थे) । तस्स अपर-भागो कोण्डञ्जो नाम बुद्धो उदपादि (=उत्पन्न हुए) । को नु हासो किं आनन्दो, निच्चं पज्जलिते सति (=होने पर) । यो च पुब्बे पमज्जित्वा (=प्रमाद करके), पच्छा सो न पमज्जति (=प्रमाद करता है) ; सो इमं लोकं अब्भा मुत्तो चन्दिमा विष पभासेति (=प्रकाशित होता है) । पापं चे पुरिसो कथिरा (=करे), न तं कथिरा (=करे) पुनप्पुनं । पापो पि पस्सति (=देखता है) भद्रं, याब्ब पापं न पच्चति (=फलता है) । यदा च पच्चति (=फलता है) पापं, अथ पापो पापानि पस्सति (=देखता है) । कच्चि ते आवुसो ! खमनीयं ? कच्चि यापनीयं ? कच्चि न किञ्चि दुक्खं ति ? खमनीयं मे आवुसो ! यापनीयं मे आवुसो ! अपि च मे सीसे थोकं दुक्खं ति । लाभा वत मे ! सुलद्धं वत मे ! सत्था च मे भगवा अरहं सम्मा-सम्बुद्धो ति ।

“एवं देव” ति खो, भिक्खवे ! सारथि विपस्सिस्स कुमारस्स पटिस्सुत्वा (=उत्तर दे कर) भद्धानि यानानि योजापेत्वा (=जुतवा कर) पटि-वेदेसि (=सूचित किया)—“युत्तानि (=जोत लिए गए हैं) खो ते देव ! यानानि, यस्स दानि काल मञ्जसी” ति (=समभते हैं) । अथ खो विपस्सी कुमारो भद्दं यानं अभिरुहित्वा (=चढ़ कर) भद्देहि यानेहि उय्यान-भूमि निय्यासि (=गये) ।

“अयं पन, सम्म सारथि ! पुरिसो किं कतो, केसा पि’ स्स न यथा अञ्जेसं, कायो पि’ स्स न यथा अञ्जेसं” ति ? ‘एसो खो, देव ! जिण्णो नाम’ ; न दानि तेन चिरं जीवितव्वं भविस्सती ति (=जीना होगा) ।’

“तेन हि सम्म सारथि ! अलं दानि अज्ज उय्यान-भूमिया, इतो, व अन्ते-पुरं पच्चनियाहीति (=लौटा ले चलो) । धिरत्थु किर भो जाति नाम, यत्र हि नाम जातस्स जरा पञ्जायिस्सतीति (=अनुभव करना पड़ता है) ।

“किन्नु खो सो सम्म सारथि ! महाजन-कायो ति ?” ‘एसो खो, देव ! काल-कतो नामा ति । त्वञ्च देवो मयं च’म्हा सब्बे मरण-धम्मा मरणं अनतीता ति ।

“नहि नून सो ओरको धम्म-विनयो, यत्थ विपस्सी कुमारो पव्वजितो (= प्रव्रजित हुए हैं) । विपस्सी कुमारो पि नाम पव्वजिस्सति, किं अङ्ग पन मयं ति ?” महाजन-कायो विपस्सि बोधिसत्तं अनुपव्वजिसु (= उनके साथ प्रव्रजित हो गए) । ताय सुदं परिसाय परिवुतो (= घिरा रह) बोधिसत्तो चारिकं चरति (= रमत लगाते थे) ।

“न खो भे'तं पतिरूपं, यो'ह आकिण्णो (= भीड़-भड़कके में) विहरामि । अन्नूनाहं एको गणस्मा वूपकट्ठो (= अलग) विहरेय्यं ति (= विहार करूँ)” —चित्तेत्वा (= विचार कर), बोधिसत्तो अपरेण समयेण तथरिव विहासि (= विहार करने लगे) । “किच्छं वत अयं लोको आपन्नो जिय्यति च मिय्यति च (= जन्म लेता है और मरता है) । अथ च पन इमस्स दुक्खस्स निस्सरणं नप्प. जानाति (= नहीं जानता है) । कुदा स्सु नाम तं पञ्चायिस्सती ति (= जाना जायगा) ?”

अथ खो भगवा कारुञ्जतं पटिच्च बुद्ध-चक्खुना लोकं विलोकेसि (= देखा) । अद्दसा खो भगवा सत्ते सेय्यथापि नाम उप्पलिनियं वा पदुमिनियं वा पुण्डरीकिनिय वा अप्पेकच्चानि उप्पलानि उदके, जातानि अन्तोनिमुग्गपोसीनि, अप्पेकच्चानि समोदकं ठितानि, अप्पेकच्चानि उदका अच्चुग्गम्म ठन्ति अनुपलित्तानि उदकेन । एवमेव खो भगवा अद्दस (= देखे) सत्ते अप्परजक्खे महारजक्खे ति ।

२. निम्नलिखित अव्ययों के अर्थ लिखिए, और उनको वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए—

- (क) चिरस्सं, चिरं, चिरेण, चिररत्ताय
 (ख) कदाचि, ईसं, मनं, चन, चि
 (ग) सह, सद्धिं, समं, अमा
 (घ) विना, नाना, अन्तरेण, रित्ते, पुथु
 (ङ) सुदं, खो, अस्सु, यग्घ, वे, ह
 (च) यथा, तथा, यथानाम, तथाहि, सेय्यथापि नाम, सेय्यथीदं, एवमेवं, यथरिव, तथरिव, विय
 (छ) आम, साहु, लहु
 (ज) न, नो, अलं, मा

- (भ) अधुना, इदानि, दानि, सम्पति
 (ज) तदानि, तदा, चरहि
 (ट) सायं, अज्ज, सुवे, स्वे, हिय्यो, पातो, पगे
 (ठ) उद्धं, उपरि, हेट्ठा, अधो
 (ड) सन्तिके, सच्छि, आरा, दूरा, आरका
 (ढ) सम्मुखा, परम्मुखा, सं, सामं, सयं, पुरे, अगगतो, पुरतो
 (ण) सदा, पुनप्पुनं, अभिण्हं, म्हु, अभिक्खणं
-

दूसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

§ १. क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु (=क्रियत्थ) कहते हैं । जैसे—भू, पठ्, गम्, चञ् इत्यादि ।

रूप बनाने की सुविधा के लिए, सभी धातु ९ श्रेणियों में विभक्त किए गए हैं । प्रत्येक श्रेणी को 'गण' कहते हैं । जैसे—(१) भ्वादि गण, (२) रुधादि गण, (३) दिवादि गण, (४) तुदादि गण, (५) ज्यादि गण, (६) क्यादि गण, (७) स्वादि गण, (८) तनादि गण, और (९) चुरादि गण । [कौन धातु किस गण में है, इसके लिए देखिए—२. परिशिष्ट]

'ति' आदि प्रत्ययों के लगने पर, धातु के रूप में, अपने अपने गण के अनुसार प्रायः कुछ न कुछ परिवर्तन हो जाता है । जैसे—

भ्वादि—पठ—पठति = पढ़ता है । पच—पचति = पकाता है ।

रुधादि—रुध—रुधति = रोकता है । मुच—मुञ्चति = छोड़ता है ।

दिवादि—दिव—दिबति = खेलता है । भिद—भिज्जति = टूटता है ।

भा—भायति = ध्यान करता है ।

तुदादि—तुद—तुदति = दुःखता है । लिख—लिखति ।

ज्यादि—जि—जिनाति = जीतता है । जा—जानाति = जानता है ।

क्यादि—की—किणाति = खरीदता है । सु—सुणाति = सुनता है ।

स्वादि—सु—मुणोति = सुनता है । वु—वुणोति = ढक लेता है ।

तनादि—तन—तनोति = फँलाता है । कर—करोति ।

चुरादि—चुर—चोरेति=चोरी करता है। अचञ्च—अचञ्चयति=पूजा करता है।
[देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

सभी काल में, धातु के रूप—‘परस्म पद’ और ‘अत्तनो पद’—दो तरह के होते हैं। साधारणतः, किसी भी जगह, विकल्प से परस्म पद या अत्तनो पद के रूप प्रयुक्त हो सकते हैं; किंतु, व्यवहार में अत्तनो पद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं।

वर्तमान काल^१

पञ्च (=पकाना)

परस्म पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स (वह)	पचति	(वे) पचन्ति
म जिभ म पु रि स (तू)	पचसि	(तुम) पचथ
उ त्त म पु रि स (मैं)	पचामि ^१	(हम) पचाम ^१

१. व त्त भाने ति अन्ति, सि थ, मि स; ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे ६.१—
वर्तमान काल में, (सभी गण के) धातु से परे ये प्रत्यय आते हैं—

परस्म पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	ति	अन्ति
म जिभ म पु रि स	सि	थ
उ त्त म पु रि स	मि	स

अत्तनो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	ते	अन्ते
म जिभ म पु रि स	से	व्हे
उ त्त म पु रि स	ए	म्हे

अत्तनो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	पचते	पचन्ते
म जिभ म पु रि स	पचसे	पचदहे
उ त्त म पु रि स	पचे	पचामहे

भ्वादि गण के कुछ धातु—अच्च (अच्चति) = पूजना । अज्ज (अज्जति) = कमाना । अट (अटति) = घूमना । अद (अदति) = खाना । अव (अवति) = बचाना । अस (अत्थि)^३ = होना । इक्ख (इक्खति) = देखना । एस (एसति)

२. हि मि मे स्व स्स ६.५७—‘हि’, ‘मि’ तथा ‘म’ विभक्तियों के परे होने से, पूर्वस्थित अकार का आकार हो जाता है । जैसे—पच + हि = पचाहि । पच + मि = पचामि । पच + म = पचाम ।

३. ‘अस’ धातु के रूप निम्न प्रकार होंगे—

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म	*अत्थि	सन्ति†
म जिभ म	‡असि	अत्थ
उ त्त म	ॴअस्मि, अम्हि	अम्ह, अस्म

*त स्स थो ६.५२—‘अस’ धातु से परे, ‘त’ का ‘थ’ होता है । जैसे—अस + ति = अस + थि = (पररूपमयकारे व्यञ्जने ५.९५—‘थ’ को छोड़, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु का अन्त्य व्यञ्जन भी वही हो जाता है) अत्थि = (चतुर्थ्ये द्वितीयेस्वेसं ततियपठमा १.३५—देखिए) अत्थि ।

† न्त मा ना न्ति थि युं स्वा दि लो पो ५.१३०—‘न्त’, ‘मान’, ‘अन्ति’, ‘अन्तु’, ‘इय’, तथा ‘इयु’ प्रत्ययों के आने से, ‘अस’ धातु का केवल ‘स’ रह जाता है । जैसे—सन्तो । समानो । अस + अन्ति = सन्ति । सन्तु । सिया । सियुं ।

‡ सि हि स्व ट् ६.५३—‘सि’ तथा ‘हि’ प्रत्ययों के आने से, ‘अस’ धातु का ‘अ’ आदेश हो जाता है । जैसे—

अस + सि = अ + सि = असि । अहि ।

==खोजना । कंख (कंखति) ==चाहना । कड्ढ (कड्ढति) ==काढना । कन्द (कन्दति) ==रोना । कम्प (कम्पति) ==कांपना । कीळ (कीळति) ==खेलना । गस (गसति, घम्भति) ==जाना । चज (चजति) ==छोड़ना । जर (जीरति, जीयति) ==पुराना होना । जल (जलति) ==जलना । जि (जयति) ==जीतना । जीव (जीवति) ==जीना । ठा (तिट्ठति) ==ठहरना । तर (तरति) ==पार करना । बह (बहति, डहति) ==जलाना । बंस (बंसति) ==डसना । दा^५ (दाति) ==देना । दिस्स (पस्सति) ==देखना । पा (पिपति) ==पीना । ब्रू^६ (ब्रवीति, ब्रूति, ब्राह) ==बोलना । भू (भवति) ==होना ।

४. दास्स दं वा मि मे स्व द्वि त्ते ६.२२—द्वित्व न होने पर, 'दा' धातु का—उससे परे 'मि' तथा 'म' विभक्तियों के आने से—विकल्प से 'दं' आदेश हो जाता है । जैसे—दा + मि = दं + मि = दस्मि । इम्म ।

५. ब्रू तो ति स्सी ङ् ६.३६—'ति' प्रत्यय आने से, 'ब्रू' धातु से परे, विकल्प से 'ई' का आगम होता है । जैसे—ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रवीति । ब्रूति ।

यु ब ण्णा न मे ओ प्प च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'ङ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है । जैसे—

ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रवीति ।

ए ओ न ञ् य वा स रे ५.८६—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है । जैसे—

ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रव + ई + ति = ब्रवीति

६. त्यन्ती नं टट्टु ६.२०—'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है; और उससे परे, 'ति' तथा 'अन्ति' का क्रमशः 'अ' तथा 'उ' आदेश होता है । जैसे—

ई मि ष्ठा नं वा भिह ष्हा च ६.५४—'अस' धातु से परे, 'मि' तथा 'म' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'भिह' तथा 'मह' आदेश हो जाता है ; और, 'अस' धातु का 'अ' रह जाता है । जैसे— अस + मि = अ + मि = अ + मिह = अमिह; अस्मि । अस + म = अ + म्ह = अम्ह; अस्म ।

ब्रू + ति = आह + ति = आह + अ = आह । ब्रू + अन्ति = आह + अन्ति =
आह + उ = आह ।

यु व ण्णा न मि ङु व ङ् सरे ५.१३६—स्वर परे होने से, धातु के अन्त्य 'इ'
तथा 'उ' का कहीं कहीं क्रमशः 'इय' तथा 'उव' हो जाता है ।

जैसे—वेदि + अ + ति = वेदियति । ब्रू + अन्ति = ब्रूयन्ति ।

वर्तमान काल में नवों गणों के धातु के रूप

धातु	गण	पठम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन
१. भू (=होना)	भ्वादि	भवति	भवन्ति
हू (=होना)	„	होति	होन्ति
नी (=ले जाना)	„	नेति, नयति	नेन्ति, नयन्ति
या (=जाना)	„	याति	यन्ति
पच (=पकाना)	„	पचति	पचन्ति
२. रुध (=रोकना)	रुधादि	रुधति	रुधन्ति
३. दिव (=खेलना)	दिवादि	दिब्वति	दिब्वन्ति
भा (=ध्यान करना)	„	भायति	भायन्ति
४. तुद (=पीडा देना)	तुदादि	तुदति	तुदन्ति
५. जि (=जीतना)	ज्यादि	जिनाति	जिनन्ति
६. की (=खरीदना)	क्यादि	किणाति	किणन्ति
७. सु (=सुनना)	स्वादि	सुणोति	सुणोन्ति
८. तन (=फैलाना)	तनादि	तनोति	तनोन्ति
९. चुर (=चोरी करना)	चुरादि	चोरेति, चोरयति	चोरेन्ति, चोरयन्ति
कथ (=कहना)	„	कथेति, कथयति	कथेन्ति, कथयन्ति
भाप (=जलाना)	„	भापेति, भापयति	भापेन्ति, भापयन्ति

नोट—बहुत से ऐसे धातु हैं, जिनके रूप 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि जाते हैं। जैसे—गम—घम्मन्तो, घम्मनो, घम्मति। कर—करोति, कथिरति,

कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा—

मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
भवसि	भवथ	भवामि	भवाम
होसि	होथ	होमि	होम
नेसि, नयसि	नेथ, नयथ	नेमि, नयामि	नेम, नयाम
यासि	याथ	यामि	याम
पचसि	पचथ	पचामि	पचाम
रुन्धसि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
दिब्बसि	दिब्बथ	दिब्बामि	दिब्बाम
भायसि	भायथ	भायामि	भायाम
तुदसि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
जिनासि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
किणसि	किणाथ	किणामि	किणाम
सुणोसि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तनोसि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चोरेसि, चोरयसि	चोरेथ, चोरयथ	चोरेमि, चोरयामि	चोरेम, चोरयाम
कथेसि, कथयसि	कथेथ, कथयथ	कथेमि, कथयामि	कथेम, कथयाम
भापेसि, भापयसि	भापेथ, भापयथ,	भापेमि, भापयामि	भापेम, भापयाम

प्रत्ययों के आने से कुछ बदल जाते हैं। कभी कभी उनके बिल्कुल नए रूप भी हो
कुब्बति, करते इत्यादि। [देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

वेरेन वेरानि न सम्मस्ति । वातो दुव्वल रुक्खं वसहति । पापकारी सोचति । पुञ्जकारी मोदति । पापकारी तप्पति । पुञ्जकारी नन्दति । धीरा निव्वाणं फुत्तन्ति । भायी विपुलं सुखं वप्पोति । पण्डिता पमादं सुदस्ति । देवा अप्पमादं पत्तंसन्ति । भानेन पञ्जा परिपूरति । मारो जग्गं न विन्दति । भिक्खु धम्मं विजानाति । बालो निच्छा मञ्जति । बालस्स इच्छा वड्ढति । बुद्धस्स सावको सक्कार न अभिनन्दति । सप्पुरिसा सब्बत्थ वज्जन्ति । पण्डिता कल्याणे मित्ते भजन्ति । विसोकस्स परिच्छाहो न विज्जति । तापसो अग्गि वने परिचरति । भिक्खु धम्म-पदं भासति । मनो पापस्सि न रसते । सब्बे दण्डस्स तत्तन्ति । सब्बे मच्चुनो भायन्ति । यो भूतानि विहिंसति सो सुखं न लभते । यो अञ्ज दुस्सति, सो दुक्खं निगच्छति । इदं रूपं भिज्जति । सरीरं जर उपेति । राजरथा जीरन्ति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु निर्वाण चाहता है । लड़के लोग धर्म सुनते हैं । ध्यानी लोग ध्यान करते हैं । हम लोग धर्म जानते हैं । भगवान विहरते हैं । तुम लोग हँस रहे हो । सूर्य चमक रहा है । लड़के किताब पढ़ रहे हैं । अबैर से वैरी को जीतता है । अक्रोध से क्रोध को जीतता है । धर्म से अधर्म को जीतता है । धर्म से पाप को छोड़ता है । ध्यान में प्रयत्न करता है । दुःख छोड़ता है । बुद्ध में श्रद्धा करता है । मैं धर्म को सुनता हूँ । सङ्घ के शरण जाता हूँ । चैतन्य (= सति) को बढ़ाता है । प्रमाद को छोड़ता हूँ । प्रश्न पूछता हूँ । ब्रह्मा आते हैं । तू भगवान को नमस्कार करता है । भगवान धर्म-चक्र घमाते हैं (पदत्तेति ।) बुद्ध देवताओं को धर्म उपदेश करते हैं । ब्राह्मण लोग पाप नहीं करते हैं । सज्जन कुशल धर्मों का संग्रह करते हैं (उपसम्पादेन्ति) । स्वर्ग को चले जाते हैं । बुद्ध निर्वाण प्राप्त करते हैं (निव्वायति) । श्रावक लोग रोते हैं, चिल्लाते हैं, कलपते हैं । बुद्ध की पूजा करते हैं । मरते हैं । स्वर्ग को चले जाते हैं ।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-यदानि—गहपति, वन-सण्डो, रुक्खो, फलं, गामो, दारको, तापसो, तपं ।

क्रिया-पदानि—पटिवसति-न्ति, चरति-न्ति, पतति-पतन्ति, आरोहति-न्ति, खादति-न्ति । [जैसे, रुक्खा फलानि पतन्ति । दारका रुक्खं आरोहन्ति । गहपतयो गामे पटिवसन्ति ।]

४. निम्नलिखित क्रिया-पदों से वाक्य बनाइए—

विहरति=प्रज्ञा तथा चैतन्य की भावना में रहता है, विचरता है ।

उपसङ्गमति=पास जाता है ।

अभिवादेति=प्रणाम करता है ।

निसीदति=बैठता है ।

सन्मोदति=कुशल क्षेम पूछता है ।

वीतिसारेति=व्यतीत करता है ।

अधिवासेति=स्वीकार करता है ।

समादियति=ग्रहण करता है ।

बट्टति=(उञ्चित) होता है ।

संवत्तति=(समर्थ) होता है ।

पटिपज्जति=लग जाता है ।

पच्चस्सुणाति=जवाब देता है ।

पटिभाति (मं)=मुझे भान होता है ।

दूसरा काण्ड

दूसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

‘अम्ह’ (=मैं) और ‘तुम्ह’ (=तू) शब्दों के रूप, तीनों लिङ्गों में, एक ही समान होते हैं। जैसे—अहं बुद्धिपियो नाम माणवको। अहं धम्मदिन्ना नाम माणविका। त्वं मम पियो भाता। त्वं मम पिया नारी इत्यादि।

§ ७. अम्ह (=मैं)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	अहं ^१	मयं, अस्मा, अम्हे ^२ , नो ^३
दुतिया	मं, ममं ^४	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे ^५ , नो
ततिया	मया, मे ^६	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया ^६	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
सप्तमी	मयि ^७	अस्मासु ^८ अम्हेसु

१. सि म्हं २.२१३—‘सि’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘अहं’ होता है।

२. म य म स्मा म्ह स्स २.२११—‘यो’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मयं, अस्मा, अम्हे’ होते हैं।

३. यो नं हि स्व पञ्चम्या वो नो २.२३५—पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी तथा छट्ठी के बहुवचन में, ‘अम्ह’ शब्द का लघुरूप ‘नो’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का ‘वो’ होता है।

अ पा दा दो प द ते क वा क्ये २.२३४—किसी गाथा के पाद के आदि में लघुरूप का प्रयोग नहीं होता है। वाक्य में, किसी पद के बाद ही, (अर्थात्, वाक्य के आदि में नहीं) ये रूप प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे—

तिष्ठत बो । तिष्ठाम नो । पस्सति बो—वह तुमको देखता है। **पस्सति नो**—वह हम लोगो को देखता है। **दीयते बो**—तुम लोगो को दिया जाता है। **दीयते नो**। **धनं बो**—तुम लोगों का धन है। **धनं नो**। **कतं बो**—तुम लोगो के द्वारा किया गया है। **कतं नो**।

ते मे ना से २.२३६—‘ना’ तथा ‘स’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का लघुरूप ‘मे’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का ‘ते’ होता है। जैसे—

कतं ते—तेरे द्वारा किया गया है। **कतं मे**। **दीयते ते**—तुम्हें दिया जा रहा है। **दीयते मे**। **धनं ते**—धन तेरा है। **धनं मे**।

अ न्वा दे से २.२३७—एक वार ‘अम्ह’ या ‘तुम्ह’ शब्द का प्रयोग कर, उसे उसी सिलसिले में (=अन्वादेश में) फिर भी कहना हो, तो लघु-रूप का ही प्रयोग होता है। जैसे—**गामो तुम्हं परिग्गहो, अथ जनपदो बो परिग्गहो**—गाँव तुम्हारी मिलकियत है, और जनपद भी तुम्हारी मिलकियत है।

स पु ब्बा प ठ म न्ता वा २.२३८—यदि पूर्व में कोई प्रथमान्त शब्द विद्यमान हो, तो अन्वादेश में प्रयुक्त ‘अम्ह’ या ‘तुम्ह’ शब्दों का लघुरूप विकल्प से होता है। जैसे—**गामे पटो अम्हाकं, अथो नगरे कम्बलो नो**—अथो नगरे कम्बलो अम्हाकं—गाँव में हम लोगों के लिए कपड़ा है, और नगर में कम्बल।

न च वा हा हे व यो गे २.२३९—‘न’, ‘च’, ‘वा’, ‘हा’, ‘हिं’, तथा ‘एव’ शब्दों के योग में, ये लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—**गामो तव च परिग्गहो**।

द स्स न त्थे ना लो च ने २.२४०—‘आलोचन’ शब्द को छोड़, दूसरे दर्शनार्थ शब्दों के योग में लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—**गामो तुम्हे**—अम्हे उद्दिस्ता-गतो—गाँव तुम्हें—हमें देखने आया है।

आलोचन शब्द के साथ लघुरूप होता है—**गामो बो**—नो आलोचेत्ति ।

आ म न्त णं पु ब्ब म स न्तं व २.२४१—सम्बोधन के बाद, ‘तुम्ह’ या ‘अम्ह’ शब्दों का प्रयोग, ‘अन्वादेश’ नहीं समझा जाता है। अतः, वहाँ लघुरूप नहीं होता है। जैसे—**देवदत्त ! तव परिग्गहो**।

§ ८. तुम्ह (= तू)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	त्वं, तुवं ^{१२}	तुम्हे, बो
डु ति या	तं, तवं, तुवं, त्वं	तुम्हं तुम्हाकं, तुम्हे, बो

बहु सु वा २.२४३—बहुत जगह, विकल्प से लघुरूप होता भी है। जैसे—
ब्राह्मणा गुणवन्तो ! तुम्हाकं परिग्गहो—बो परिग्गहो ।

४. अ स्मि तं मं त्वं ममं २.२२९—‘अं’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मं, ममं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तं, तवं’ होते हैं ।

५. डु ति ये यो स्मि च २.२३३—‘डुतिया’ में, ‘यो’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘अम्हं, अम्हाकं, अम्हे’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे’ होते हैं ।

६. ना स्मा सु त या म या २.२३०—‘ना’ तथा ‘स्मा’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘मया’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का रूप ‘तया’ हो जाता है ।

७. त व म म तु य्हं म य्हं से २.२३१—‘स’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मम, मय्हं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तव, तुय्हं’ होते हैं ।

८. नं से स्व स्मा कं म मं २.२१२—‘नं’ तथा ‘स’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप क्रमशः ‘अस्माकं, अम्हाकं; तथा ममं, मम’ होंगे ।

९. ङं डा कं न्मिह २.२३२—‘नं’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘अम्हं, अम्हाकं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तुम्हं, तुम्हाकं’ होते हैं ।

१०. स्मि स्मि तु स्हा स्हानं त यि म यि २.२२८—‘स्मि’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘मयि’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का रूप ‘तयि’ होता है ।

११. सु स्हा स्ह स्सा स्मा २.२०५—‘सु’ विभक्ति आने से, ‘अम्ह’ शब्द का विकल्प से ‘अस्मा’ आदेश होता है। जैसे—अस्मासु। अम्हेसु। भत्तिरस्मासु सा तव’।

१२. तु म्ह स्स तु वं त्व म मि च २.२१४—‘सि’ तथा ‘अं’ विभक्तियों के साथ, ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘त्वं, तुवं’ होते हैं ।

त ति या	त्वया, ^{१३} तथा, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, ^१ वो
च तु त्थी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
प ञ्च मी	त्वया, तथा, त्वम्हा ^{१४}	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छ ट्ठी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
स त्त मी	त्वयि, तयि]	तुम्हेसु

§ ६. एत (=यह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	एसो	एते
डु ति या	एतं, एनं ^{१५}	एते, एने
त ति या	एतेन	एतेहि, एतेभि
च लु त्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
प ञ्च मी	एतम्हा, एतस्मा]	एतेहि, एतेभि
छ ट्ठी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
स त्त मी	एतम्हि, एतस्मि	एतेसु

१३. त या त यी नं त्व वा त स्स २.२१५—‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तया’ तथा ‘तयि’ के तकार का विकल्प से ‘त्व’ हो जाता है। जैसे—त्वया, तथा। त्वयि, तयि।

१४. स्मा म्हि त्व म्हा २.२१६—‘स्मा’ विभक्ति के साथ, ‘तुम्ह’ शब्द का रूप विकल्प से ‘त्वम्हा’ होता है।

१५. इ मे ता न मे ना न्वा वे से डु ति या थं २.१६६—‘दुतिया’ विभक्ति में, ‘इम’ तथा ‘एत’ शब्दों का, कथितानुकथित होने से, ‘एन’ आदेश हो जाता है। जैसे—इमं भिक्खुं विनयमज्जापय, अथो एनं धम्ममज्जापय। इमे भिक्खू विनयमज्जापय, अथो एने धम्ममज्जापय। एतं भिक्खुं विनयमज्जापय, अथो एनं धम्ममज्जापय। एते भिक्खू विनयमज्जापय अथो एने धम्ममज्जापय।

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एतं	एते, एतानि
दु ति या	एतं	एते, एतानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एसा	एता, एतायो
दु ति या	एतं	एता, एतायो
त ति या	एताय	एताहि, एताभि
च तु स्थी	एतिस्साय, ^{१६} एतिस्सा, ^{१६} एताय	एतासं, एतासानं
पञ्च मी	एताय	एताहि, एताभि
छ द्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
स त्त मी	एतिस्सं, ^{१६} एतस्सं, एतासं	एतासु

§ १०. इम (= यह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	अयं ^{१७}	इमे
दु ति या	इमं	इमे

१६. स्सं स्सा स्सा ये स्वि त रे कञ्जेति मा न मि २.५४—‘स्सं’, ‘स्सा’ तथा ‘स्साय’ से पूर्व, ‘इतर’, ‘एक’, ‘अञ्ज’, ‘एत’ तथा ‘इम’ शब्दों के अन्त्य स्वर का ‘इ’ होता है। जैसे—

इतरिस्सं, इतरिस्सा । एकिस्सं, एकिस्सा । अञ्जिस्सं, अञ्जिस्सा । एतिस्सं, एतिस्सा, एतिस्साय । इमिस्सं, इमिस्सा, इमिस्साय ।

१७. सि म्ह न पुंस क स्सा यं २.१२६—पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘सि’

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	अनेन, ^{१८} इमिना	एहि, ^{१९} एभि, इमेहि, इमेभि
चतुर्थी	अस्स, इमस्स	एसं, ^{१९} एसानं, इमेसं, इमेसानं
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छद्ठी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
सप्तमी	अस्मिं, इमस्मिह, इमस्मिं	एसु, इमेसु

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	इदं, ^{२०} इमं	इमे, इमानि
द्वितीया	इदं, इमं	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	अयं ^{२०}	इमा, इमायो
द्वितीया	इमं	इमा, इमायो

विभक्ति के साथ, 'इम' शब्द का रूप 'अय' होता है। जैसे—अयं पुरिसो। अयं इत्थी।

१८. ना म्हा नि मि २.१२८—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ना' विभक्ति आने से, 'इम' शब्द का 'अन' तथा 'इमि' आदेश हो जाता है। जैसे—अनेन। इमिना।

१९. इ म स्सा नि त्थियं टे २.१२७—'सु', 'न' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'इम' शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—एसु, इमेसु। एसं, इमेसं। एहि, इमेहि।

२०. इ म स्सि दं वा २.२०३—'अं' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'इम' शब्द का रूप विकल्प से 'इदं' होता है।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	इमाय	इमाहि, इमाभि
च तु त्थी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
प ञ्च मी	इमाय	इमाहि, इमाभि
छ ट्ठी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
स त्त्त मी	अस्तं, इभिसं, इमायं	इमासु

§ ११. अस्तु (= वह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	असु, ^{२१} अमुको	अमू, ^{२२} अमुयो
वु ति या	अमुं	अमू, अमुयो
त ति या	अमुना	अमूहि, अमूभि
च तु त्थी	अमुस्सं ^{२३}	अमूसं, अमूसानं
प ञ्च मी	अमुना, अमुन्हा, अमुस्मा	अमूहि, अमूभि
छ ट्ठी	अमुस्स	अमूसं, अमूसानं
सत्त्त मी	अमुम्हि, अमुस्मिं	अमूसु

२१. म स्सा मु स्स २.१३१—पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, 'सि' विभक्ति आने से, 'अमु' शब्द के 'म' का 'स' हो जाता है। जैसे—असु पुरिसो। असु इत्थी।

के वा २.१३२—'क' का आगम होने से भी, 'अमु' शब्द के 'म' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—असुको, अमुको। असुका, अमुका। असुकं, अमुकं। असुकानि, अमुकानि।

२२. लो पो मुंस्सा २.८८—पुल्लिङ्ग में, 'अमु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—अमू पुरिसा आगच्छन्ति। अमू पुरिसे पस्स।

२३. न नो सस्स २.८९—'अमु' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का 'नो' आदेश नहीं होता है। जैसे—अमुस्स ['अमुनो' नहीं होगा]।

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	अद् ^{२४} , अम्	अम्, अमूनि
दु ति या	अद् ^{२४} , अमं	अम्, अमूनि
	शेष पुल्लिङ्ग के समान	

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	असु, अम्	अम्, असुयो
दु ति या	असुं	अम्, असुयो
त ति या	असुया	अमूहि, अमूभि
च तु त्थी	असुस्ता, असुया	अमूसं, अमूसानं
ष ष्व मी	असुया	अमूहि, अमूभि
छ ट्ठी	अनुस्ता, असुया	अमूसं, अमूसानं
स त्त मी	अनुत्सं, असुयं	अमूसु

२४. अमु स्ता दं २.२०४—नपुंसक लिङ्ग में, 'अ' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'अम्' शब्द का रूप विकल्प से 'अद्' हो जाता है ।

७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अम्हे बुद्धं सरण गच्छाम। अम्हाकं बुद्धो, अम्हाक धम्मो, अम्हाक सङ्घो। तुम्हे कल्याणे मित्ते भजथ। इमे धम्मा होन्ति। इमस्स भिक्खुनो इमं अप्पमाद-फलं होति। तुम्हे एवं आजानाथ। तुम्हेहि कुलेसु चारित्तं न आपज्जितब्बं। इमेहि अङ्गेहि समन्नागतो भद्रो होति। एतं अत्थ विजानाति। एतदवोच (एतं + अबोच)। अयं भिक्खु अमुस्मि अरञ्जे विहरति। इमिस्सा भिक्खुनिया अमूहि भिक्खुनीहि साद्धं सयनासनो अत्थि। अद्दु कम्म, अमूनि कम्मामि न्न, सब्बानि तानि पहातब्बानि। अमुया पञ्जाय एसो विपाको होति। असु भिक्खु, असु सामणेरो च, अद्दु अरञ्जं गच्छन्ति। असु गहपतानी अद्दु कम्म करोति। इमेसानं धम्मान अयं विपाको होति। अम्हे च तुम्हे च, अद्दु अरञ्जं गत्त्वा, एताय भावनाय, विहरथ। अम्हाकं च तुम्हाकं च चित्तं, इमस्मि अमुस्मि वा भाने पतिट्ठापेत्तु वट्टति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

हम लोग प्राण नहीं मारते हैं। तुम लोगो के आचरण को हमारे आचार्य (आचरियो) पसन्द करते हैं। हमारी किताब तुम्हारे घर में है। इन भिक्षुओं का विहार उन मनुष्यों के ग्राम में है। बुद्ध इन भिक्षुओं से पूजित हैं। हमारा बुद्ध, हमारा धर्म, हमारा सच है। उन ब्राह्मणों के द्वारा बुद्ध के वे सब धर्म-उपदेश (धम्मदेसनायो) सुने गए हैं (सुतायो)। उनका धर्म तथा हमारा धर्म एक ही है। किसका धर्म अच्छा है? बुद्धो का शासन ही हमारा धर्म है। सब बुद्धो का एक ही धर्म होता है। इन धर्मों का एक ही निदान होता है।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सब्बनाम-पदानि—अम्हाकं, तुम्हाकं, अम्हेहि, तुम्हेहि, एसो, इमानि, असु, अद्दु, इमिस्सा, इमासु, अमूसानं, एतानि।

नाम-पदानि—पोत्थकं, गामो, पुत्तो, रुक्खो, दारको, दारिका, धम्मो।

धातु—पठ=पढ़ना, गम=जाना, आ + रुह=चढ़ना, ओ + रुह=उतरना।

४. निम्नलिखित उदाहरणों में, 'ते', 'वो', 'नो' का प्रयोग क्यों नहीं होता ?

अम्हाकं भगवा अम्हे च तुम्हे च धम्मं देसेति अम्हाकं मेव हिताय सुखाय।
अम्हाकं हि भगवा सत्था धम्म-राजा।

दूसरा काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल^१)

परस्सपद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	पचिस्सति ^३	पचिस्सन्ति
म जिभ्म म पु रि स	पचिस्ससि	पचिस्ससथ
उत्त म पु रि स	पचिस्सामि	पचिस्साम

१. भ वि स्स ति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम; स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे ६.२—भविष्यत्काल में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचिस्सति, पचिस्सन्ति इत्यादि।

ना मे ग र हा वि म्ह थे सु ६.३—यदि निन्दा या विस्मय के अर्थ में 'नाम' शब्द प्रयुक्त हो, तो भी धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—निन्दा में—“इमे हि नाम कल्याणधम्मा पटिजानिस्सन्ति” = ये अपने को बड़ा कल्याण-कर धर्म वाले बताते हैं! “न हि नाम भिक्खवे! तस्स मोघपुरिसस्स पाणेषु अनुद्वया भविस्सति” भिक्षुओ! उस निकम्मे आदमी को जीवों के प्रति तनिक भी दया नहीं है! “कथं हि नाम सो भिक्खवे! मोघपुरिसो सब्बमत्तिकामयं कुटिकं करिस्सति” = भिक्षुओ! वह निकम्मा आदमी, बिलकुल मिट्टी की कुटिया क्यों बनाता है! “तत्थ नाम त्वं मोघपुरिस! मया विरागाय धम्मे देसिते सरागाय च्चेतेस्ससि” = अरे निकम्मा आदमी! जो मैं विराग के लिए धर्म का उपदेश करता हूँ, उसे तू राग वाला समझता है!

अत्तनोपद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	पच्चिस्सते	पच्चिस्सन्ते
मज्झिम पुरिस	पच्चिस्ससे	पच्चिस्सन्हे
उत्तम पुरिस	पच्चिस्सं	पच्चिस्साम्हे

§ २. भविष्यत्काल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—कर—करिस्सति; काहति^३।
हा—हायिस्सति; हाहति^४। लभ—लभिस्सति, लच्छति^५। भुज—भुज्जिस्सति;

विस्मय में—अच्छरियं ! अन्धो नाम पब्वतं आरोहिस्सति = आश्चर्य है, अन्धा भी पर्वत पर चढ़ आया !

२. अ ई स्स आ दी नं व्यञ्जनस्सिज् ६.३५—धातु से परे, परोक्ष भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतुमद्भूत, तथा भविष्यत्काल में, व्यञ्जन-विभक्ति से पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे—अपचित्थ, अपचिरे। अपचित्थ, अपचिस्सा। अपचिस्सु। पच्चिस्सति, पच्चिस्सन्ति।

३. हा स्स चा ह ड् स्से न ६.२५—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, अपने विकरण 'ओ' के साथ 'कर' धातु, तथा 'हा' धातु के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—अकाहा, अकरिस्सा। काहति, करिस्सति। अहाहा, अहायिस्सा। हाहति, हायिस्सति।

४. ल भ व स च्छि द भि द रु दानं च्छि ड् ६.२६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, 'लभ' आदि धातुओं के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'च्छिड्' आदेश हो जाता है। जैसे—लभ—अलच्छा, अलभिस्सा; लच्छति, लभिस्सति। वस—अवच्छा, अवसिस्सा; वच्छति, वसिस्सति। छिद—अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा; छेच्छति, छिन्दिस्सति। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा; भेच्छति, भिन्दिस्सति। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा; रुच्छति, रोदिस्सति।

दूसरी जगहों पर भी, 'छिद' धातु के अन्त्य वर्ण का विकल्प से 'छ' आदेश होता है—अच्छेच्छुं (साधारण भूत, पठम पुरिस, अनेक वचन), अच्छिन्दिनु। दूसरे धातु के साथ भी कभी कभी—गच्छं, गच्छिस्सं।

भोक्वति^१ । हु—हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति^१ । सक—सक्खिस्सति, सक्कु-
णिस्सति^१ । सु—सोस्सति, सुणिस्सति^१ । ज्ञा—जास्सति, जानिस्सति^१ ।
इ—एस्सति, एहिति^१ । हन—हञ्छेति, हनिस्सति । पटिहंखति, पटिहनिस्सति^१ ।

५. भुज मु च व च वि सा नं क्व ड् ६.२७—‘स्स’ के साथ, ‘भुज’ आदि
धातुओं के अन्त्य वर्ण का, विकल्प से ‘क्व’ आदेश होता है । जैसे—

भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा : भोक्खति, भुञ्जिस्सति । मुच—असोक्खा,
अमुञ्चिस्सा : भोक्खति, मुञ्चिस्सति । वच्च—अवक्खा, अवचिस्सा : वक्खति,
वचिस्सति । पा+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा : पवेक्खति, पविसिस्सति ।

‘विस’ धातु के अन्त्य वर्ण का, अन्यत्र भी विकल्प से ‘क्व’ होता है जैसे—
पावेक्खि, पाविसि [परिसमाप्त्यर्थक भूत—पठम पुरिस, एकवचन] ।

६. हु स्स हे हेहि होही स्स च्चा दो ६.३१—भविष्यत्काल में, ‘हू’ धातु
का ‘हे’, ‘हेहि’, तथा ‘होहि’ आदेश हो जाता है । जैसे—हेस्सति, हेहिस्सति,
होहिस्सति ।

७. स्से वा ६.५६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, ‘सक’ धातु से परे,
उसके विकरण ‘क्णा’ का विकल्प से ‘ख’ आदेश हो जाता है । जैसे—

सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा : सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति ।

८. ते सु सु तो ळ्णो ळ्णानं रोट् ६.६०—परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतु-
मद्भूत, तथा भविष्यत्काल में, ‘सु’ धातु से परे, उसके विकरण ‘क्णो’ तथा ‘क्णा’
का विकल्प से ‘रोट्’ आदेश हो जाता है । जैसे—अस्सोसि, असुणि । अस्सोस्सा,
असुणिस्सा । सोस्सति, सुणिस्सति ।

९. ई स्स च्चा दि सु क्ना लो पो ६.६४—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा
भविष्यत्काल में, ‘जा’ धातु से परे, उसके विकरण ‘क्ना’ का विकल्प से लोप हो
जाता है । जैसे—अञ्जासि, अजानि । जस्सति, जानिस्सति ।

१०. ए ति स्सा ६.६६—‘ई’ धातु से परे, ‘स्स’ का विकल्प से ‘हि’ आदेश हो
जाता है । जैसे—एहिति; एस्सति ।

११. ह ना छे खा ६.६७—‘हन’ धातु से परे, ‘स्स’ का विकल्प से ‘छे’ तथा
‘ख’ आदेश हो जाता है । जैसे—हञ्छेम, हनिस्साम । पटिहंखामि, पटिहनिस्सामि ।

हा—हाहति, जहिस्सति^{१२} । दक्ख—दक्खति, दक्खिस्सति^{१३} । गम—गमिस्सन्ति, गमिस्सन्ते, गमिस्सरे^{१४} । अस—भविस्सति^{१५} ।

१२. हातो ह ६.६८—‘हा’ धातु से परे, ‘स्स’ का विकल्प से ‘ह’ आदेश हो जाता है । जैसे—हाहति, जहिस्सति ।

१३. दक्ख ख हेहि होही हि लो पो ६.६९—‘दक्ख’, ‘ख’, ‘हेहि’, तथा ‘होहि’ आदेश होने पर, उससे परे, ‘स्स’ का विकल्प से लोप हो जाता है । जैसे—दक्खति, दक्खिस्सति । सक्खति, सक्खिस्सति । हेहिति, हेहिस्सति । होहिति, होहिस्सति ।

१४. गु ह पु ब्बा र स्सा रे न्ते न्ती नं ६.७४—गुरु-पूर्व ह्रस्व स्वर से परे, ‘न्ते’ तथा ‘न्ति’ प्रत्ययों का विकल्प से ‘रे’ आदेश हो जाता है । जैसे—गम + अन्ति = गच्छन्ति, गच्छरे । गम + अन्ते = गच्छन्ते, गच्छरे । गमिस्सरे ।

१५. अ आ स्स आ दि सु ५.१२९—परोक्ष-भूत, अनद्यतन-भूत, हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, ‘अस’ धातु का ‘भू’ आदेश हो जाता है । जैसे—

अस—बभूव (परोक्ष) । अभवा (अनद्यतन) । अभविस्सा (हेतुहेतुमद्भूत) । भविस्सति (भविष्यत्काल) ।

भविष्यत्काल में, नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		महिम्न पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भविस्सति	भविस्सन्ति	भविस्सति	भविस्सथ	भविस्साथि	भविस्साथ
हू	"	हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति	हेहिस्सन्ति	हेस्सन्ति	हेस्सथ०	हेस्साथि०	हेस्साथ०
नी	"	नेस्सति	नेस्सन्ति	नेस्सति	नेस्सथ	नेस्साथि	नेस्साथ
या	"	यास्सति	यास्सन्ति	यास्सति	यास्सथ	यास्साथि	यास्साथ
पच	"	पचिस्सति	पचिस्सन्ति	पचिस्सति	पचिस्सथ	पचिस्साथि	पचिस्साथ
रुध	रुधादि	रुन्धिस्सति	रुन्धिस्सन्ति	रुन्धिस्सति	रुन्धिस्सथ	रुन्धिस्साथि	रुन्धिस्साथ
दिव	दिव्यादि	दिन्धिस्सति	दिन्धिस्सन्ति	दिन्धिस्सति	दिन्धिस्सथ	दिन्धिस्साथि	दिन्धिस्साथ
भा	"	भाथिस्सति	भाथिस्सन्ति	भाथिस्सति	भाथिस्सथ	भाथिस्साथि	भाथिस्साथ
४. बुद्ध	तुहादि	तुद्दिस्सति	तुद्दिस्सन्ति	तुद्दिस्सति	तुद्दिस्सथ	तुद्दिस्साथि	तुद्दिस्साथ
५. जि	ज्यादि	जिन्निस्सति	जिन्निस्सन्ति	जिन्निस्सति	जिन्निस्सथ	जिन्निस्साथि	जिन्निस्साथ
६. को	क्यादि	किणिस्सति	किणिस्सन्ति	किणिस्सति	किणिस्सथ	किणिस्साथि	किणिस्साथ
७. सु	स्वादि	सुणिस्सति	सुणिस्सन्ति	सुणिस्सति	सुणिस्सथ	सुणिस्साथि	सुणिस्साथ
८. लन	तनादि	तनिस्सति	तनिस्सन्ति	तनिस्सति	तनिस्सथ	तनिस्साथि	तनिस्साथ
९. चुर	चुरादि	चोरेस्सति, चोरथिस्सति	चोरेस्सन्ति	चोरेस्सति	चोरेस्सथ०	चोरेस्साथि०	चोरेस्साथ०
कथ	"	कथथिस्सति	कथथिस्सन्ति	कथथिस्सति	कथथिस्सथ	कथथिस्साथि	कथथिस्साथ
रूप	"	रूपेस्सति	रूपेस्सन्ति	रूपेस्सति	रूपेस्सथ	रूपेस्साथि	रूपेस्साथ

८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सामि । धम्मं सरणं गच्छिस्सति । सङ्घं सरणं गमिस्सथ । भानं भावेस्सामि । पञ्चं भावेस्सन्ति । काये उदयं च वयं च पस्सिस्सामि । निब्बाणं सच्छिक्खिस्सामि । अनागते (= भविष्यत्काल मे) बुद्धो भविस्सामि । अञ्जे' पि बुद्ध-धम्मा भविस्सरे (भविस्सन्ति) । संबोधिं पापुणिस्सति । भिक्खु सुखं विहरिस्सति । तथागतो न चिरं परिनिब्बायिस्सति । पानीयं पिविस्सामि । गत्तानि सीतं करिस्सति । निब्बाणस्स मग्गो हेहिति । सम्मुखा हेस्साम । गहकारक ! त्वं पुन गेहं न काहसि । सब्बे सत्ता मरिस्सन्ति । सब्बे पाणा मरिस्सन्ति । अयं कायो अचिरं पठवि अधिसेस्सति । सच्चं भणिस्सामि । न कुञ्जिभस्सामि । अक्कोधेन कोधं जिनिस्सामि । असाधुं साधुना जेस्सामि । सुचरितं धम्मं चरिस्सामि, दुच्चरितं न चरिस्सामि । यो धम्मं चरिस्सति सो सुखं सेस्सति, अस्मि लोके च परमिहं च । मुनी मारस्स बन्धना मोक्खन्ति । सद्धं लभिस्सथ । अविज्जाय बन्धनं छिन्दिस्सामि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्ध की शरण जाता हूँ । बालक लोग सङ्घ की शरण जाते हैं । स्वर्ग लोक में (सगं लोकं) उत्पन्न हूँगा । धम्म-चक्र को घुमाऊँगा (पवत्तिस्सामि) । सङ्घ को दान दूँगा (दस्साम=दज्जिस्साम) । भिक्खु वन में ध्यान करेगा । वन में जाऊँगा । बुद्ध को नमस्कार करूँगा । पाप को छोड़ूँगा । त्रिपिटक (तिपिटकं) पढ़ूँगा । बुद्धो के धम्म को जानूँगा । बुद्ध में चित्त प्रसन्न रखूँगा (पसादेस्सामि) । तथागत की पूजा करूँगा । भिक्खु लोग एकान्तवास (पन्त-सयनासनं) करेगे (कप्पेस्सन्ति) । ग्राम को जाएगा । धम्मोपदेश (धम्म-देसना) सुनेगा । धम्म-ग्रन्थ पढ़ूँगा । बालक लोग सूर्य को देखेगे । पण्डित लोग धम्म को जानेगे । मूर्ख (वाला) लोग न देखेगे, न जानेंगे । ब्राह्मण लोग धम्म-दान दूँगे । ब्राह्मण लोग तपस्या करेगे । ब्राह्मण लोग क्रोध नहीं करेगे, चोरी नहीं करेगे, तपस्या करेगे, ध्यान करेगे ।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-*पदानि*—धनं, दानं, कपणो, माता, भ्राता, माणवको ।

धातु—लभ, पच, हस, भास, चल, कस (=खेती; करना), दा ।

४. निम्नलिखित धातुओं के भविष्यत्काल, प्रथम पुरुष, दोनों वचन में रूप लिखिए—

गम, हर, कर, भू, हृ, दिस्स, भुज, वद, सर, मर, सु (सुनना) । भा (भायति), मन ।

दूसरा काण्ड

चौथा पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

§ १४. ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=मन्यासी)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	दण्डी ^१	दण्डी, दण्डिनो ^२
दुतिया	दण्डिनं, ^३ दण्डिं	दण्डी, दण्डिनो*, दण्डिने ^३
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि

१. सि सिमं या न धुं स क रल २.६८—'सि' विभक्ति आने से, नपुंसक लिए को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व नहीं होता है। जैसे—दण्डी, इत्थी, सयम्भू, वधू।

[नपुंसक लिङ्ग शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—सुखकारि, सयम्भु]

२. योनं नोने पुमे २.७७—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'यो' का 'नो', तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनो, दण्डिने, दण्डी।

३. नं भ्रीतो २.७६—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अं' विभक्ति का विकल्प से 'नं' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनं, दण्डिं।

*नो २.७८—विकल्प से, 'दुतिया' में भी, 'यो' का 'नो' होता है। जैसे—दण्डिनो एस्स।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
पञ्च मी	दण्डिना, दण्डिस्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
सत्त मी	दण्डिनि, दण्डिस्मि, दण्डिस्सिं	दण्डिसु, दण्डीसु
आ ल प न	दण्डि, दण्डी	दण्डी, दण्डिनो

‘दण्डी’ शब्द का अर्थ है ‘दण्ड वाला’। इसी तरह, दूसरे शब्दों के साथ भी ‘ई’ प्रत्यय लगा देने से, ‘उसका वाला’ अर्थ हो जाता है। इस तरह बने, तथा दूसरे भी सभी ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप ‘दण्डी’ के समान होते हैं। जैसे—

करी (=हार्थी), कामी, कुट्ठी (=कुष्ठ रोग वाला), कुसली, गणी (=गण वाला), चक्रो (=चक्र वाला), चामी (=त्याग करने वाला), जटी (=जटा वाला), जार्णी (=ज्ञानी), बन्ती (=हार्थी), दाठी (=दाघ), दीघजीवी (=दीर्घ जीवी), धम्मवादी (=धर्मवादी), धम्मी (=धर्मी), पक्खी (=पांख वाला=पक्षी), पापकारी, बली (=बल वाला), भागी (=भाग वाला), भोगी (=भोग करने वाला), माली (=माला बनाने वाला), मूसली (=वलराम=मूसल धारण करने वाला), योगी, वम्मो (=वस्त्रर वाला=सिपाही), संघी (=संघ वाला), सामी (=स्वामी), सिखी (=शिखा वाला=मोर), सीघयायी (=शीघ्र जाने वाला), सुखी (=सुख से रहने वाला) इत्यादि।

§ १५. ईकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

सुखकारी (=सुख देने वाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

४. स्मि नो नि २.७६—ईकारान्त शब्द से परे, ‘स्मिं’ विभक्ति का विकल्प से ‘नि’ आदेश होता है। जैसे—दण्डिनि, दण्डिस्सिं।

५. गो वा २.६७—तीनों लिङ्गों में, ‘ग’ विभक्ति आने से, ‘घ’ तथा ओकारान्त

	ए क व च न	अ ने क व च न
डु ति या	सुखकारिं	सुखकारीनि, सुखकारी
आ ल प न	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

शेष 'दण्डी' शब्द के समान

§ १६. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सब्बञ्जू (=सर्वज्ञ)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सब्बञ्जू	सब्बञ्जू, सब्बञ्जुनो ^६
डु ति या	सब्बञ्जुं	सब्बञ्जू, सब्बञ्जुनो
त ति या	सब्बञ्जुना	सब्बञ्जूहि, सब्बञ्जूभि
च तु त्थी	सब्बञ्जुनो, सब्बञ्जुस्स	सब्बञ्जुतं
प ञ्च मी	सब्बञ्जुना, सब्बञ्जुस्सा, सब्बञ्जुम्हा	सब्बञ्जूहि, सब्बञ्जूभि
छ द्ढी	सब्बञ्जुनो, सब्बञ्जुस्स	सब्बञ्जुतं
स त्त मी	सब्बञ्जुम्हि, सब्बञ्जुस्मिं	सब्बञ्जुसु
आ ल प न	सब्बञ्जू	सब्बञ्जू, सब्बञ्जुनो

शब्दावली—मग्गञ्जू (=मार्गज्ञ), धम्मञ्जू (=धर्मज्ञ), अत्थञ्जू (=अर्थज्ञ), कालञ्जू (=कालज्ञ), रत्तञ्जू (=पुराना परिचित), मत्तञ्जू (=मात्रा को जानने वाला), क्तञ्जू (=कृतज्ञ), तत्तञ्जू (=तत्वज्ञ), विदू (=जानने वाला), वेदगू (=वेदनाओं के पार जाने वाला, अर्हत्), पारगू (=पार जाने वाला), इत्यादि ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'सब्बञ्जू' शब्द के समान होंगे।

शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। जैसे—दण्डि, दण्डी। इत्थि, इत्थी। वधु, वधू। सयम्भु, सयम्भू।

६. कू तो २.८७—'कू' प्रत्ययान्त शब्दों [देखिए—पृ० १६२.] से परे, पुल्लिङ्ग में—'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश—होता है। जैसे—

सब्बञ्जुनो, सब्बञ्जू। विदुनो, विदू।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	गावस्स, गवस्स, गवं ^{११}	गवं, गुब्बं, ^{१२} गोनं
प ञ्च सी	गवा, गावा, ^{१०} गावस्सा, गावस्सा ^{१०} ; गवस्सा, गवस्सा	गोहि, गोभि
छ ट्ठी	गावस्स, गवस्स, ^९ गवं ^{११}	गवं, गुब्बं, ^{१२} गोनं
स त्त सी	गावे, गवे, ^९ गावन्धि, गवन्धि, गावस्सिं, गवस्सिं	गावेसु, गवेसु, ^{११} गोसु
आ ल प न	गो	गावो, गवो

पालि भाषा में, एकारान्त शब्द नहीं मिलते हैं। ओकारान्त शब्द भी, 'गो' को छोड़ कर और नहीं मिलते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में भी, 'गो' शब्द के रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होते हैं।

§ १६. ओकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौओं वाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ षा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
डु ति था	चित्तगुं	चित्तगू, चित्तगूनि
आ ल प न	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष 'आयु' शब्द के समान

११. गवं से न २.७१—'स' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द का रूप विकल्प से 'गवं' होता है। जैसे—गो + स = गवं।

१२. गुब्बं च नूना २.७२—'नं' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द के रूप विकल्प से 'गुब्बं' तथा 'गवं' होते हैं। जैसे—गो + नं = गुब्बं, गवं। गोनं।

१३. सुन्धि वा २.७०—'सु' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो + सु = गावेसु, गवेसु, गोसु।

‘गो’ शब्द के स्थान में, सभी विभक्तियों में, विकल्प से ‘गोण’ आदेश हो जाता है; और उसके रूप पुल्लिङ्ग अकारान्त ‘वुद्ध’ शब्द के समान होते हैं।

शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

§ २०. अत्त (=आत्मा)

ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा अत्ता	अत्ता, अत्तानो
दु ति या अत्तानं, अत्तं	अत्तानो, अत्ते
त ति या अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि ^{१४}
च लु त्थी अत्तनो, ^{१५} अत्तस्स	अत्तानं
प ञ्च भी अत्तना, ^{१६} अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि ^{१४}
छ द्ढी अत्तनो, ^{१५} अत्तस्स	अत्तानं
सं ल ली अत्तनि, अत्तस्मि, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु, ^{१४} अत्तेसु
आ ल प न अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

§ २१. ब्रह्म (=ब्रह्मा)

ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
दु ति या ब्रह्माणं, ब्रह्मं	ब्रह्मानो

१४. सु हि सु न क् २.१९७—‘सु’ तथा ‘हि’ विभक्तियों के आने से, ‘अत्त’ तथा ‘आतुम’ शब्दों का विकल्प से क्रमशः ‘अत्तन’ तथा ‘आतुमन’ आदेश हो जाता है। जैसे—अत्त + सु = अत्तनेसु, अत्तेसु। आतुमनेसु, आतुमेसु। अत्तनेहि, अत्तेहि। आतुमनेहि, आतुमेहि।

कभी कभी, दूसरी जगह भी, ‘न’ का आगम होता है। जैसे—वेरिनेसु = वैरी लोगो में।

१५. नो ता तु मा २.१९६—‘अत्त’ तथा ‘आतुम’ शब्दों से परे, ‘स’ विभक्ति

ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या ब्रह्मना, ब्रह्मना ^{१६}	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
च तु स्त्री ब्रह्मनो, ^{१६} ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मनं ^{१६}
पञ्च मी ब्रह्मना, ब्रह्मना ^{१७}	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
छ द्ठी ब्रह्मनो, ^{१६} ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मनं ^{१६}
स त्त मी ब्रह्मे, ब्रह्मन्ति, ब्रह्मास्मि, ब्रह्महि	ब्रह्मेसु
आ ल प न ब्रह्मे	ब्रह्मा, ब्रह्मानो

§ २२. राज (=राजा)

ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा राजा ^{१८}	राजा, राजानो ^{१९}
डु ति या राजानं, ^{२०} राजं	राजानो ^{१९}

का विकल्प से 'नो' होता है। जैसे—अत्तनो, अत्तस्स । आतुमनो, आतुमस्स ।

१६. ब्रह्म स्तु वा २.१६२—नाम्हि २.१६३—'स', 'नं', तथा 'ना' विभक्तियों के आने से, 'ब्रह्म' शब्द का विकल्प से 'ब्रह्म' आदेश हो जाता है। जैसे—

ब्रह्मनो । ब्रह्मनं । ब्रह्मना ।

१७. स्मा स्स ना ब्रह्मा च २.१६८—'ब्रह्म', 'अत्त', तथा 'आतुम' शब्दों से परे, 'स्मा' विभक्ति का 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे—ब्रह्म + स्मा = ब्रह्मना । अत्तना । आतुमना ।

१८. राजा दि यु वा दि त्वा २.१५६—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'सि' विभक्ति का 'आ' आदेश होता है। जैसे—

राज + सि = राजा । युवा ।

१९. यो न मा नो २.१५८—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आन' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज + यो = राजानो । युवानो ।

२०. वा ह्मान इ २.१५७—'अं' विभक्ति आने पर, 'राज' आदि, तथा 'युव'

ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या रञ्जा, ^{२१} राजेन, राजिना ^{२२}	राजेहि, राजूहि, राजेभि, राजूभि ^{२३}
च तु त्थी रञ्जो, रञ्जस्स, राजिनो, राजस्स ^{२४}	रञ्जं, ^{२५} राजूनं, राजानं
प ङ्च मी रञ्जा, ^{२६} राजस्था, राजस्मा	राजेहि, राजेभि, राजूहि, राजूभि
छ्ठ्ठी रञ्जो, रञ्जस्स, राजिनो, राजस्स ^{२७}	रञ्जं, ^{२८} राजूनं, ^{२९} राजानं
स त्त मी रञ्जे, राजिनि, ^{३०} राजस्मि, राजस्मिह	राजूसु, ^{३१} राजेसु
आ ल प न राज, राजा	राजानो, राजा

आदि शब्दों का विकल्प से क्रमशः 'राजान' तथा 'युवान' आदेश हो जाता है ।
जैसे—

राज + अं = राजानं । युवानं ।

२१. नास्मा सु रञ्जा २.२२४—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियों के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्जा' होता है ।

२२. राजस्मि नाम्हि २.१२५—'ना' विभक्ति आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजि' आदेश हो जाता है । जैसे—राजिना ।

२३. सु नं हि सु २.१२६—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजू' आदेश हो जाता है । जैसे—

राजूसु । राजूनं । राजूहि ।

२४. रञ्जो रञ्जस्स राजिनो से २.२२५—'स' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्जो, रञ्जस्स, राजिनो' होते हैं ।

२५. राजस्स रञ्जं २.२२३—'नं' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्जं' होता है ।

२६. स्मिह्मि रञ्जे राजिनि २.२२६—'स्मि' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्जे, राजिनि' होते हैं ।

द्रष्टव्य—समासे वा २.२२७—'राज' शब्द के साथ समास होने पर, ऊपर कहे गए आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे—

कासिरञ्जा, कासिराजेन । कासिरञ्जा, कासिराजस्मा । कासिरञ्जो, कासिराजस्स । कासिरञ्जे, कासिराजे ।

§ २३. पुम (= मनुष्य)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	पुमा, पुमो	पुमो, पुमानो
दु ति या	पुमानं, पुमं	पुमानो, पुमाने, पुमे
त ति या	पुमाना, पुमुना ^{२७} , पुमेन ^{२८}	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
च तु त्थी	पुमुनो, ^{२९} पुमस्स	पुमानं
पञ्च मी	पुमाता, पुमुना, ^{३०} पुमा, पुमस्सा, पुमस्हा	पुमानेहि, पुमेहि, पुमानेभि, पुमेभि
छ द्ठी	पुमुनो, ^{३१} पुमस्स	पुमानं
स त्त मी	पुमाने, ^{३२} पुमे, पुमस्सिं, पुमस्सिह	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु ^{३३}
आ ल प न	पुमं, ^{३४} पुम	पुमानो, पुमा

§ २४. सा (= कुत्ता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सा	सा, सानो
दु ति या	सं, सानं ^{३५}	से, साने

२७. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च २.१६४—‘स’, ‘स्मा’ तथा ‘ना’ विभक्तियों के आने से, ‘पुम’, ‘कम्म’ (= कर्म), ‘थाम’ (= धैर्य), तथा ‘अद्द’ (= मार्ग) शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ‘उ’ हो जाता है । जैसे—पुमुनो, पुमुना । कम्मनुनो, कम्मनुना । थामुनो, थामुना । अद्दुनो, अद्दुना ।

२८. नास्सिह २.१८७—‘पुम’ शब्द से परे, ‘ना’ विभक्ति आने से ये रूप बनते हैं—पुमाना । पुमेन ।

२९. पुमो २.१८६—‘पुम’ शब्द से परे, ‘स्सिं’ विभक्ति का विकल्प से ‘ने’ आदेश होता है । जैसे—पुमाने, पुमे ।

३०. सुस्सा च २.१८८—‘पुम’ शब्द से परे ‘सु’ विभक्ति आने से, ये रूप बनते हैं—पुमानेसु, पुमेसु, पुमासु ।

३१. गस्सं २.१८९—‘पुम’ शब्द से परे, ‘ग’ विभक्ति का विकल्प से ‘अ’ आदेश हो जाता है । जैसे—पुमं । पुम ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
च तु त्थी	सस्स, साय, सानस्स ^{३२}	सानं
प ञ्च मी	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छ ट्ठी	सस्स, सानस्स ^{३२}	सानं
स त्त मी	से, सस्मिं, सम्हि, साने	सामु
आ ल प न	स, सान	सा, सानो

§ २५. युव (=युवक)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	युवा	युवा, युवानो, ^{३३} युवाना
डु ति या	युवानं, युवं	युवाने, ^{३३} युवे
त ति या	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
च तु त्थी	युवानस्स, युवस्स, युविनो ^{३४}	युवानानं, युवानं
प ञ्च मी	युवाना, ^{३४} युवानस्मा, युवानम्हा	युवानेहि, ^{३४} युवानेभि, युवेहि, युवेभि
छ ट्ठी	युवानस्स, युवस्स, युविनो ^{३४}	युवानानं, युवानं
स त्त मी	युवाने, ^{३४} युवानस्मिं, युवस्मिं	युवानेसु, ^{३४} युवासु, युवेसु
	युवानम्हि, युवम्हि, युवे	
आ ल प न	युव, युवा, युवाना, युवान	युवानो, युवाना

‘मघद’ (=इन्द्र) शब्द के रूप भी ‘युव’ के समान होंगे ।

३२. सा स्सं से चान इ २.१६०—‘अं’, ‘स’ तथा ‘ग’ विभक्तियों के आने से, ‘सा’ शब्द का ‘सान’ आदेश हो जाता है। जैसे—सानं । सानस्स । भो सान !

३३. योनं नो ने वा २.१८३—‘युव’ आदि शब्दों में परे, ‘यो’ विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः ‘नो’ तथा ‘ने’ आदेश होता है। जैसे—युवानो । युवाने ।

३४. यु वा स स्सि नो २.१६५—‘युव’ शब्द से परे, ‘न’ विभक्ति का विकल्प से ‘इनो’ आदेश होता है। जैसे—युविनो; युवस्स ।

३५. स्मा स्मि त्तं ना ने २.१८२—‘युव’ आदि शब्दों से परे, ‘स्मा’ तथा ‘स्मि’

§ २६. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ में, नाम के आगे 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त या आकारान्त शब्दों के आगे 'वन्तु', तथा भिन्न स्वरान्त शब्दों के आगे 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। जैसे—गुणवन्तु = गुण वाला। गतिमन्तु = गतिवाला

पुल्लिङ्ग

गुणवन्तु (=गुणवाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	गुणवा ^{३७}	गुणवन्तो, ^{३८} गुणवन्ता ^{३९}
दुति या	गुणवन्त ^{३९}	गुणवन्ते ^{३९}
तति या	गुणवत्ता, गुणवन्तेन ^{३९}	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि ^{३९}

विभक्तियों का क्रमशः 'ना' तथा 'ने' आदेश होता है। युव + स्मा = युवाना। युव + स्मि = युवाने।

३६. युवादीनं सुहिस्वानङ् २.१८०—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आन' आदेश होता है। जैसे—युव + सु = युवानेसु। युव + हि = युवानेहि।

नो नानेस्वा २.१८१—'नो', 'ना' तथा 'ने' से पूर्व, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—युवानो, युवाना, युवाने।

३७. न्तुस्स २.१५३—'सि' विभक्ति आने से, 'न्तु' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवा।

३८. न्तन्तूनं न्तो योस्मि पठमे २.२१७—'पठमा' के अनेक वचन में, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से—विभक्ति के साथ—'न्तो' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तो, गुणवन्ता। गच्छन्तो, गच्छन्ता।

३९. ध्वाद्धो न्तुस्स २.६३—'यो' आदि विभक्तियाँ आने से, 'न्तु' का 'न्त' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + यो = गुणवन्त + यो = (अतो योनं टाटे २.४३) गुणवन्ता, गुणवन्ते। गुणवन्तं। गुणवन्तेन इत्यादि।

ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी- गुणवतो, ^{४०} गुणवन्तस्स ^{४१}	गुणवतं, ^{४२} गुणवन्तानं ^{४३}
प उ च मी गुणवता, गुणवन्तस्सा, गुणवन्तम्हा ^{४४}	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
छ ट्ठी गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
स त्त मी गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तस्सि ^{४५}	गुणवन्तेसु ^{४६}
गुणवन्तम्हि	
आ ल प न गुणवं, गुणव, गुणवा ^{४७}	गुणवन्तो, गुणवन्तां ^{४८}

शब्दावली—कुलवन्तु (=अच्छा कुल वाला), धनवन्तु (=धन वाला), पञ्जवन्तु (=प्रजा वाला), फलवन्तु (=फल वाला), बलवन्तु (=बल वाला), भगवन्तु (=तेज वाला), सघवन्तु (=इन्द्र), यसवन्तु (=यश वाला), शीलवन्तु (=शीलवान्), सुतवन्तु (=श्रुतवान्), हिमवन्तु (=हिमालय) — कलिमन्तु (=कालिमा-युक्त), कस्मिन्तु (कृपि वाला =कृपक), केतुमन्तु (=केतुवाला), गतिमन्तु (=गति वाला), चक्खुमन्तु (=आँख वाला), जुतिमन्तु (=चमक वाला), धीतिमन्तु (=धृतिमान्), बुद्धिमन्तु (=बुद्धिमान्), बन्धुमन्तु (=बन्धुओ वाला), भानुमन्तु (=प्रकाश वाला), सतिमन्तु (=मतिमान्), सतिमन्तु (=स्मृतियुक्त), तिरीमन्तु (=श्री सम्पन्न), सुचिमन्तु

४०. तो ता ति ता स स्था स्मि ना सु २.२१६—'न्त' तथा 'न्तु' का—'स', 'स्मा', 'स्मि' तथा 'ना' विभक्तियों के साथ, विकल्प से क्रमशः 'तो', 'ता', 'ति' तथा 'ता' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + स = गुणवतो। गच्छतो। गुणवन्तु + ना = गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु + स्मा = गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु + स्मिं = गुणवति। गच्छति।

४१. तं न म्हि २.२१८—'न्त' तथा 'न्तु' का, 'न' विभक्ति से साथ, विकल्प से 'तं' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + नं = गुणवतं। गच्छतं।

४२. ट्हा अं गो २.२२०—आलपन एक वचन में, विभक्ति के साथ, 'न्त' तथा 'न्तु' का 'अ', 'आ' तथा 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—ओ गुणव, गुणव, गुणवं। ओ गच्छ, गच्छा, गच्छं।

(=पवित्रता वाला), हिमवन्तु^३ (=हिमालय), हेतुमन्तु (=हेतु वाला) इत्यादि 'वन्तु', 'क्तवन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान होंगे।

§ २७. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, नपुसक लिङ्ग में भी, वैसे ही होंगे जैसे पुल्लिङ्ग में। केवल, पठया एकवचन में, 'गुणवं' तथा 'गुणवन्तं' ऐसे दो रूप होंगे; तथा पठया और दुतिया के अनेक वचन में 'गुणवन्तानि' ऐसा भी एक रूप होगा।^४

स्त्रीलिङ्ग में, 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती'; और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है। जैसे—गुणवती—गुणवन्ती; सिरीमती, सिरीमन्ती। इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे (देखिए—पृ० २४०)।

§ २८. न्त स्स च ट वं से २.६४—'अं' तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का बहुधा 'अं' हो जाता है। जैसे—

“यं यं हि राज भजति, सतं वा यदि वा असं”—यहाँ, असन्त + अं = 'असं' हुआ है।

“किञ्चानि कुब्बस्स करेय्य किच्चं”—यहाँ, कुब्बन्त + स = 'कुब्बस्स' हुआ है।

“हिमवं व पव्वत्तं”—यहाँ, हिमवन्तु + अं = 'हिमव' हुआ है।

“सुजातिमस्सो षि अजातिमस्स”—यहाँ, अजातिमन्तु + स = 'अजातिमस्स' हुआ है।

कही कहीं, दूसरी विभक्तियों के आने से भी—

“चक्खुमा अन्धिता होन्ति”—यहाँ, चक्खुमन्तु + यो = चक्खुमा। “वग्गु-मुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति”—यहाँ, वण्णवन्तु + यो = वण्णवा।

४३. हिमवतो वा ओ २.१५५—'सि' विभक्ति आने से, 'हिमवन्तु' शब्द के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे—हिमवन्तो। हिमवा।

४४. अं डं न पुं स के २.१५४—'सि' विभक्ति आने से, नपुसक लिङ्ग में, 'न्तु' का 'अं' तथा 'न्त' हो जाता है। जैसे—गुणवं कुलं, गुणवन्तं कुलं।

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) निच्वं भायिनो धीरा निव्वाणं फुसन्ति । उट्टानवतो मतिमतो धम्म-जीविनो अप्पमत्तस्स यसो अभिवद्दन्ति । यो भिक्खु भेत्ता-विहारी बुद्ध-सासने पसन्नो, सो मन्त मुख पद अधिगच्छन्ति । यो भिक्खु अत्तना अत्तानं चोदयन्ति, अत्तना अत्तं पटिवासेति, सो सत्तिमा भिक्खु मुख विहाहिमि (विहरिस्समि) ।

(ख) अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति ।
तस्मा मञ्जमयेत्तानं, अस्स भद्र व वाणिजो ॥१॥

भगवतो धम्मो विञ्जूहि वेदितव्वो ! मव्वञ्जुतो भगवतो लम्मा-सम्बुद्धस्स सावका अरहन्तो होन्ति । ब्रम्हुना याचितो मत्तो भगवा धम्म-चक्क पवत्तेसि । यो को चि भाय्यो काये कायानुपस्सी विहरित, सो अत्तापो सम्पजानो मतिमा हेति ।

(ग) राजानो राजूहि सिद्धि सन्धव कारिनो होन्ति । गुणदन्तो सव्वञ्जुतो सत्थुनो सासन-करा ति । गुणवन्ते साने' पि पुमानं ममायन्ति । सानो सेहि सिद्धि सन्धव न करोन्ति । एस सभावो मानं सासु । पुमानो पुमेहि (पुसा-नेहि) सिद्धि मेत्तायन्ति । एस धम्मता पुमानं पुमानेसु । युवसानमेव युवानो युवा-नेहि सिद्धि कीळन्ति, युवानेस्वे व (युवानेसु एव) पमीदन्ति । लाभात्थाय कम्मं करोन्तो अभिपस्सन्ना होन्ति ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों के रूप दुतिदा तथा मत्तरी विभक्ति में लिखिए; और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सर्वज्ञ बुद्धों को ब्रह्मा भी नमस्कार करता है, राजा लोग भी बन्दना करते हैं। गुणवान पुरुष से कौन भेल (सन्धव) करना नहीं चाहेगा? आप ही अपना मालिक है, अपने को (अत्तान) छोड़कर हमारा कौन मालिक होगा ?

दूसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत^१)

परस्म पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ ण पु रि स	अपचो, ^० पची, अपचि, ^१ पचि	अपचुं, पचुं, अपचिसु, ^४ अप- चंसु, पचंसु ^५ पचिसु ^५
म जिभ म पु रि स	अपचो, पचो, अपचि, पचि ^६	अपचित्थ, ^३ अपचुत्थ ^३ , पचित्थ, पचुत्थ ^३
उ त्त म पु रि स	अपचिं, पचिं ^७	अपचिम्हा, ^३ पचिम्हा ^३ अपचिम्हा, पचिम्हा, अपचुम्हा, ^४ पचुम्हा ^४

१. भूते इ उं, ओ त्थ, इं म्हा; आ ऊ, से व्हं, अ म्हे ६.४—परिसमाप्त हो जाने के अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पची पचुं, पचो पचित्थ, पचि पचिम्हा इत्यादि।

मा यो ने ई आ आ दि ६.१३—'मा' (=नहीं) शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन-भूत होते हैं। जैसे—मास्तु पुनपि एवरूपम-कासि—वह फिर भी ऐसा न करे। मा भवं अगमा इवं—आप वन मत जायें।

२. आ ई स्सा दि स्त्र ज् वा ६.१५—अनद्यत-भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—अपचा, पचा (अनद्यत)। अपचो, पचो (परि० भूत)। अपचिस्सा, पचिस्सा (हेतु०)।

अत्तनो पद

ए क व च न	अ दै क व च न
प ठ म पु रि स अ पच्चा, पच्चा, अपचित्थं	अपचू, पचू
म जिभ म पु रि स अपचसे, पचसे	अपचव्हं, पचव्हं
उ त्त म पु रि स अपचं, अपच, पचं, पच	अपचव्है, पचव्है

३. आ ई ऊ स्था स्ता स्स स्थानं वा ६.३३—'आ, ई, ऊ, स्था, स्मा, स्मस्था'—इतका विकल्प से लम्ब हो जाता है। जैसे—अश्चा, अश्च। अश्चो, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिस्था, अपचिस्थ। अपचिस्ता, अपचिस्त। अपचिस्तस्था, अपचिस्तस्थ।

महा तथा न मुञ् ६.४५—'महा' तथा 'त्थ' प्रत्ययों में पूर्व, विकल्प से 'उ' का आगम होता है। जैसे—अपचिस्था, अपचुस्था। अपचित्थ, अपचुत्थ।

४. इं स्न च सिञ् ६.४६—'इ' 'महा', तथा 'त्थ' प्रत्ययों के आने में, धातु में परे कहीं कहीं, विकल्प में 'मि' का आगम होता है। जैसे—

कर + इ = कर + सि + इ = अकासि अकरि। अकासिस्था, अकरिस्था। अकासित्थ, अकरित्थ।

५. उं स्ति स्त्वं सु ६.३६—'उ' प्रत्यय का, विकल्प में 'इमु' तथा 'अमु' आदेग होता है। जैसे—अपचिसु, अपचंसु।

६. ओ स्त अ इ त्थ त्थो ६.४२—'ओ' प्रत्यय का, विकल्प में 'अ', 'इ', 'त्थ' तथा 'त्थो' आदेग होता है। जैसे—त्वं अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो।

सि. ६.४३—'ओ' प्रत्यय का कहीं कहीं विकल्प से 'मि' आदेग हो जाता है। जैसे—भू + ओ = अहोसि अभुवो।

७. ए प्या थ स्ते अ आ ई थानं ओ अ अं त्थ त्थो व्हो क् ६.३८—'एप्याथ' आदि प्रत्ययों के बाद, क्रमशः 'ओ' आदि होता है। जैसे—तुम्हें पचेप्याथो, पचेप्याथ। त्वं अपचिस्त, अपचिस्ते। अहं अपचं, अपच। सो अपचित्थ, अपचा। सो अपचित्थो, अपचो। तुम्हें पचथव्हो, पचथ।

§ ३. परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल मे कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच^१ । कर—अकासि^२ । हर—अहासि^३ । गम—अगा^४ ।
 डंस—अडच्छि^५ । कुस—अक्कोच्छि^६ । नि—नेसु^७ । सु—अस्सोसु^८ ।
 हु—अहेसु^९ । दा—अदासि, अदा^{१०} । अस—आसि^{११} । सक—असक्खि^{१२} ।
 लभ—अलभत्थ^{१३} ।

८. ई आ दो व च स्सो स् ६.२१—‘ई’ आदि प्रत्ययो के आने से, ‘वच’ धातु का ‘वोच’ आदेश हो जाता है। जैसे—वच + ई = वोच + इ = अवोच ।

९. का ई आ दि सु ६.२४—‘ई’ आदि प्रत्ययो के आने से, विकल्प से ‘कर’ धातु का ‘का’ आदेश हो जाता है। जैसे—अकासि, अका । अकरि ।

दी घा ई स्स ६.४४—दीर्घ स्वर से परे, ‘ई’ प्रत्यय का विकल्प से ‘सि’ आदेश हो जाता है। जैसे—अकासि, अका । अदासि, अदा ।

१०. आ ई आ दि सु हर स्सा ६.२८—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, ‘हर’ धातु का विकल्प से ‘हा’ आदेश हो जाता है। जैसे—हर + ई = अहासि, अहरि । अहा, अहरा ।

११. ग सि स्स ६.२९—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, ‘गम’ धातु का विकल्प से ‘गा’ आदेश हो जाता है। जैसे—गम + ई = अगा, अगमि । अगा अगमा ।

१२. डंस स्स च च्छि ड् ६.३०—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, ‘गम’ तथा ‘डंस’ धातुओं का विकल्प से क्रमशः ‘गच्छ’ तथा ‘डच्छ’ आदेश हो जाता है। जैसे—अगच्छि, अगच्छि । अडच्छि, अडंसि ।

१३. कु स रु हे हि स्स छि ६.३४—‘कुस’ तथा ‘रुह’ धातु से परे, ‘ई’ का विकल्प से ‘छि’ आदेश हो जाता है। जैसे—कुस + ई = अक्कोच्छि, अक्कोसि । अभिरुच्छि, अभिरुहि ।

१४. ए ओ ता सुं ६.४०—आदिष्ट ‘ए’ तथा ‘ओ’ से परे, ‘उ’ विभक्ति का विकल्प से ‘सु’ आदेश होता है। जैसे—नि + उं = ने + उं = नेसुं, न्धिंसु । अस्सोसुं, अस्सुं ।

१५. हु तो रे सुं ६.४१—‘हु’ धातु से परे, ‘उ’ प्रत्यय का विकल्प से ‘रेसुं’ आदेश होता है। जैसे—हु + उ = अहेसुं, अहउं।

१६. ई आ दो दी घो ६.५६—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, ‘अस्त’ धातु का ‘आस’ आदेश हो जाता है। जैसे—

आसि,	आसुं
आसि,	आसित्थ
आसि,	आसिम्हा

१७. स का णा स्स ख इ आ दो ६.५८—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, ‘सक’ धातु से परे, उसके विकरण ‘कणा’ का ‘ख’ आदेश होता है। जैसे—असक्खि, असक्खिसु।

ते सु सु तो क्णो क्णानं रोट् ६.६०—‘ई’ आदि विभक्तियों के, तथा ‘स्स’ के आने से, ‘सु’ धातु से परे, उसके विकरण ‘क्णो’ तथा ‘क्णा’ का ‘रोट्’ आदेश हो जाता है। जैसे—अस्सोसि, असुण्णि। अस्सोस्सा, असुणिस्सा। सोस्सति, सुणिस्सति।

१८. ल भा इ ई नं थंथा वा ६.७३—‘लभ’ धातु से परे, ‘इ’ तथा ‘ई’ का विकल्प से क्रमशः ‘थं’ तथा ‘थ’ हो जाता है। जैसे—अहं अलत्थं, अलभिं। सो अलत्थ, अलभि।

परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में नवों गणों के धातु के

धातु	गण	पठम पुरिस		सञ्ज्ञम्
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन
१. भू	भ्वादि	अभदि, भदि, अभवी, भवी	अभदुं, भदुं, अभदिसुं, भदिसु, अभवंसु, भवंसु	अभदो, भवो, अभवि, भवि
हू	„	अहोसि, अहु	अहेसुं	अहोसि
नी	„	नयि	नयिसु	नयि
या	„	यायि	यायिसु	यायि
पच	„	अपचि	अपचुं	अपचो
२. रुध	रुधादि	अरुन्धि, रुन्धि	अरुन्धिसु, रुन्धिसु	अरुन्धि, रुन्धि,
३. दिव	दिवादि	अदिब्बि, दिब्बि	अदिब्बिसु, दिब्बिसु	अदिब्बि, दिब्बि
भा	„	अभायि, भायि	अभायिसु, भायिसु	अभायो
४. तुद	तुदादि	अतुदि, तुदि	अतुदुं, तुदुं, अतुदिसु, तुदिसु, अतुदंसु, तुदंसु	अतुदो, तुदो, अतुदि, तुदि
५. जि	ज्यादि	अजिनि, जिनि	जिनिसु, अजिनिसु	अजिनि, जिनि
६. की	क्यादि	अकिणि, किणि	अकिणिसु, किणिसु	अकिणि, किणि
७. सु	स्वादि	सुणि, अस्सोसि	सुणिसु	सुणि
८. तन	तनादि	तनि	तनिसु	तनि
९. चुर	चुरादि	अचोरयि, चोरयि	अचोरयिसु	अचोरयि
कथ	„	कथयि	कथयिसु	कथयि
भप	„	भापयि	भापयिसु	भापयि

रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

पुरिस	उत्तम पुरिस	
	एक वचन	अनेक वचन
अभवित्थ, भवित्थ, अभ- वुत्थ, भवुत्थ	अभवि, भवि	अभविम्हा, भविम्हा, अभ- विम्हा, भविम्हा, अभवुम्हा, भवुम्हा
अहोसित्थ नयित्थ यायित्थ अपचित्थ	अहोसि नयि यायि अपचि	अहोसिम्हा नयिम्हा यायिम्हा अपचिम्हा
अरन्धित्थ, रन्धित्थ अदिड्वित्थ, दिड्वित्थ अभायित्थ, भायित्थ	अरन्धिं, रन्धिं अदिड्विं, दिड्विं अभायिं, भायिं	अरन्धिम्हा, रन्धिम्हा अदिड्विम्हा, दिड्विम्हा अभायिम्हा, भायिम्हा
अतुदित्थ, तुदित्थ	अतुदिं, तुदिं	अतुदिम्हा
अजिनित्थ, जिनित्थ	अजिनिं, जिनिं	अजनिम्हा
अकिणित्थ, किणित्थ सुणित्थ तनित्थ चोरयित्थ कथयित्थ भापयित्थ	अकिणिं, किणिं सुणिं तनिं चोरयि कथयि भापयि	अकिणिम्हा, किणिम्हा सुणिम्हा तनिम्हा चोरयिम्हा कथयिम्हा भापयिम्हा

१०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

महामाया' पि देवी दस मासे कुच्छिना बोधि-सत्तं परिहरि । जाति-धरं गन्तु-कामा महाराजस्स आरोचेसि । राजा 'साधू' ति सम्पटिच्छि । कपिलवत्थुतो याव देवदह-नगरा मगं समं कारेसि । उभय-नगर-वासीने' पि लुम्बिनी-वनं नाम मङ्गल-वनं अहोसि । देवी साल-वनं पाविसि । सा साल-साखं गण्ह । तावदेव च'स्सा कम्मज-वाता च्चलिमु । अथ'स्सा साणि परिक्विप्पिसु । महाजनो पटिक्कमि । महाब्राह्माणो सुवण्ण-जालेन बोधि-सत्तं सम्पटिच्छिसु । देविया पुरतो ठपेत्वा, 'अत्तमना, देवि ! होहि । महेसक्खो ते पुत्तो उप्पन्नो' ति आहंसु । बोधि-सत्तो धम्मागसनतो धम्म-कथिको विय निक्खमि । दस पि दिसा अनुदिसा विलोकेसि । उत्तरायं दिसायं सत्तपद-वीतिहारेन अगमासि । ततो सत्तम-पदे अट्ठसि । 'अगो' हमस्मि लोकस्सा'ति आदिकं आसभि वाचं निच्छारेसि । सीहनादं नदि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे क्रियापदों के रूप 'मज्झिम पुरिस' तथा 'उत्तम पुरिस' में लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बोधिसत्व प्रकट हुए । सात पग चले । ब्रह्मा लोग आए । देवता लोग आए । सब लोगों ने नमस्कार किया । सब प्रसन्न हुए । विपुल आलोक हुआ । बोधि-सत्व ने सिंह-नाद किया । देवों ने कहा । देवताओं ने उसको देखा ।

कुमार अपने उद्यान-भूमि में गए । दुःखित मनुष्य को देखा । सारथि को बुलाया । सारथि रथ को उधर ही ले गया । बोधि-सत्व घर से निकला । काषाय वस्त्र पहन लिया । घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ । बहुत लोगों ने सुना ।

बोधिसत्व ने तपस्या की । अकेला होकर (ऊपकट्टो) विहार किया, ध्यान किया । उसके चित्त में वितर्क उत्पन्न हुआ । धर्म-चक्षु उत्पन्न हुआ । बुद्ध ने धर्म-चक्र चलाया ।

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप भूतकाल में लिखिए—

खाद् (=खाना) । घट् (=प्रयत्न करना) । आ चिक्ख् (=कहना) ।

जल् (=जलना) । दा (=देना) । पा (=पीना) । सु (=सुनना) । हा (=त्याग करना) । कर् (=करना) । सक् (=सकना) । आ (=जानना) । युज् (=मिलना=लग जाना), हु (=होना) । गम् (=जाना) । भा (=ध्यान करना) ।

५. निम्नलिखित नामपद तथा धातुओं से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—दारका, फलानि, अग्नि, पापानि, भिक्खू, मुनयो, पठन, गमनं, भावना, भानानि ।

धातु-सदा—खाद् । डह । वि + नुद् (=हटाना) । भा (=ध्यान करना) । कर् । हू ।

दूसरा काण्ड

छठा पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

§ २६. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययान्त शब्द

न्तो कत्तरि वत्तमाने ५.६४—वर्तमान काल में, 'करता हुआ' इस अर्थ में, धातु से परे 'न्त' प्रत्यय लगता है। जैसे—तिट्ठन्तो, गच्छन्तो=खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है।

मानो ५.६५—वर्तमान काल में, 'न्त' के स्थान में 'मान' प्रत्यय भी आता है। जैसे—तिट्ठमानो, गच्छमानो=खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'मान' प्रत्ययान्त शब्द भी कर्त्ता का विशेषण होता है।

ते स्स पुब्बानागते ५.६७—भविष्यत्काल में, 'न्त' और 'मान' प्रत्ययों से पूर्व, 'स्स' का आगम होता है। जैसे—हसिस्सन्तो, हसिस्समानो वा सो इध आगमिस्सति=हँसते हुए वह यहाँ आवेगा।

मानस्स भस्स ५.१६२—कहीं कहीं, धातु से परे, 'मान' प्रत्यय के 'म' का लोप होता है। जैसे—करामो=करने हुए।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिंग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग में, 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

गच्छन्त (= जाता हुआ)

पुंलिङ्ग

ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा गच्छं, गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता
द्वुति या गच्छन्तं	गच्छन्ते
तति या गच्छन्ता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुर्थी गच्छन्तो, गच्छन्तस्स	गच्छन्तं, गच्छन्तानं
पञ्चमी गच्छन्ता, गच्छन्तम्हा, गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
छट्ठी गच्छन्ते, गच्छन्तस्स	गच्छन्तं, गच्छन्तानं
सप्तमी गच्छन्ति, गच्छन्तस्मिं, गच्छन्तम्हि,	गच्छन्तेषु
गच्छन्ते	
आलपन गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसक लिङ्ग

ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
द्वुति या गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
आलपन गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति

शेष पुल्लिङ्ग के समान

§ ३०. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययों के लगने से, धातु के साथ अपने गण का विकरण भी युक्त होता है। जैसे—

भवादि गण—अचन्त (= पूजा करता हुआ), अज्जन्त (= कमाता हुआ), अटन्त (= धमता हुआ), अदन्त (= खाता हुआ), कम्पन्त (= काँपता हुआ),

१. न्त स्सं २.१५०—'सि' विभक्ति आने से, 'न्त' का विकल्प से 'अं' आदेश होता है। जैसे—गच्छन्त + सि = गच्छं । गच्छन्तो ।

कीलन्त (=खेलता हुआ), गज्जन्त (=गरजता हुआ), चजन्त (=छोड़ता हुआ), चरन्त (=चलता हुआ), जीवन्त (=जीता हुआ), तिट्ठन्त (=खड़ा होता हुआ), भवन्ति (=आप), सन्ति ।

रुधादि गण—रुधन्त (=रोकता हुआ), गणहन्त (=पकड़ता हुआ), भुञ्जन्त (=खाता हुआ), सिञ्चन्त (=सींचता हुआ) ।

दिवादि गण—कुञ्भन्त (=क्रोध करता हुआ), युञ्जन्त (=युद्ध करता हुआ), सुस्सन्त (=सूखता हुआ) इत्यादि ।

§ ३१. महन्तारहन्तानं टा वा २.१५२—‘सि’ विभक्ति आने से, ‘महन्त’ तथा ‘अरहन्त’ शब्दों के ‘न्त’ का विकल्प से ‘आ’ आदेश हो जाता है । जैसे—महन्त + सि =महा, महं । अरहा (=अर्हत्), अरहं ।

§ ३२. ‘तु’ प्रत्ययान्त शब्द

क त्तरि ल्त्तु ण का ५.३३—‘करने वाला’ इस अर्थ में, धातु से परे ‘तु’ तथा ‘णक’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—दातु =देने वाला । दायक =देने वाला । ‘तु’ तथा ‘णक’ प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है । [देखिए—पृ० १६१]

‘णक’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसकलिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, और स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होंगे ।

‘तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होंगे—

२. भूतो २.१५१—‘सि’ विभक्ति आने से, ‘भू’ धातु से परे ‘न्त’ प्रत्यय का नित्य ‘आ’ आदेश होता है ।

जैसे—भवं । [‘भवन्त’ नहीं होगा]

भवतो वा भोन्तो गघोतासे २.१४८—‘ग’, ‘यो’, ‘ना’ तथा ‘स’ विभक्तियों के आने से, ‘भवन्त’ शब्द का विकल्प से ‘भोन्त’ आदेश हो जाता है । जैसे—भोन्त, भवं । भोन्तो, भवन्तो । भोता, भवता । भोतो, भवतो ।

३. सतो सव्भे २.१४७—भकार से पूर्व, ‘सन्त’ शब्द का ‘सव्भ’ आदेश हो जाता है । जैसे—

सन्त + भि =सव्भि ।

दातु (=दाता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	दाता ^१	दातारो ^१
दु ति या	दातारं	दातारे, दातारो
त ति या	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि
च तु त्थी	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं ^१

४. ल्तु पि ता दी न मा सि म्हि २.५६—'सि' विभक्ति आने से, 'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' हो जाता है। जैसे—
दातु + सि = दाता । कता । पिता ।

'पिता' आदि शब्द ये हैं—पितु, मातु, भ्रातु, धीतु, वृहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु ।

५. ल्तु पि ता दी न म से २.१६४—'स' को छोड़, दूसरी विभक्तियों के आने से, 'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातु + यो = दातारो । पितरो । दातारं; पितरं । दातारा; पितरा । दातरि; पितरि ।

आ र ङ स्मा २.१७३—'आर' आदेश होने के बाद, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—दातु + यो = दातारो । सखारो । पितरो ।

दो टे वा २.१७४—'आर' आदेश होने के बाद, 'द्वितीया' के 'यो' का 'ओ' तथा 'ए' आदेश होता है। जैसे—दातारो, दातारे । सखारो, सखारे ।

टा ना स्मानं २.१७५—'आर' आदेश होने के बाद, 'ना' तथा 'स्मा' का कहीं कहीं 'आ' आदेश होता है। जैसे—दातु + ना, स्मा = दातारा ।

टि स्मि नो २.१७६—'आर' आदेश होने के बाद, 'स्मि' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—दातरि, पितरि ।

र स्ता र ङ् २.१७८—'स्मि' विभक्ति आने से, 'आर' का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—दातरि, नत्तरि ।

६. स लो षो २.१६७—'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'स' विभक्ति का लोप होता है। जैसे—दातु + स = दातु । पितु ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ञ्च मी	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि ^१
छ ट्ठी	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं
स त्त मी	दातरि	दातारेसु, दातुसु ^२
आ ल प न	दात, दाता ^३	दातारो

इसी तरह, वत्तु (=वक्ता), भत्तु (=भर्ता), नेत्तु (=नेता), सोत्तु (=श्रोता), जातु (=ज्ञाता), जेतु (=जेता), छेतु (=छेदने वाला), कत्तु (=कर्ता), बोद्धु (=जानने वाला) इत्यादि शब्दों के रूप भी होंगे।

§ ३३. पितु (=पिता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	पिता	पितरो ^०
दु त्ति या	पितरं	पितरे, पितरो

७. न स्मिं वा २.१६५—'न' विभक्ति आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' होता है। जैसे—दातारानं, दातानं। पितरानं, पितुन्नं।

आ २.१६६—'न' विभक्ति आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आ' होता है। जैसे—दातानं, दातूनं। पितानं, पितुन्नं।

८. सु हि स्वा र ड् २.१६८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातारेनु, दातुसु। पितरेसु, पितुसु। दातारेहि, दातूहि। पितरेहि, पितूहि।

९. गे अ च २.६०—आलपन एक वचन (=ग) में, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अ' तथा 'आ' आदेश होता है। जैसे—भो दात, दाता। भो पित, पिता।

ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
च तु त्थी पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
प ङ्च मी पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छ ट्ठी पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
स त्त मी पितरि	पितरेसु, पितूसु
आ ल प न पित, पिता	पितरो

'भातु' (=भाई), जामातु (=दामाद) शब्द के रूप भी 'पितु' शब्द के समान होते हैं।

§ ३४. मातु (=माता)

ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा माता	मातरौ
डु ति या मातरं	मातरे, मातरौ
त ति या मातुया	मातरेहि, मातरेभि
च तु त्थी मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
प ङ्च मी मातुया	मातरेहि, मातरेभि
छ ट्ठी मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
स त्त मी मातरि	मातरेसु, मातूसु
आ ल प न मात, माता	मातरौ

धीतु (=बेटी), डुहितु (=पतोह) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'मातु' शब्द के समान होते हैं।

१०. पि ता दी न म न त्वा दी नं २.१७६—'नत्तु' आदि शब्दों को छोड़, 'पिता' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों के अन्त्य स्वर का, सभी विभक्तियों में, 'अर' आदेश होता है। जैसे—पितरो, पितरं।

§ ३५. सत्थु (= शास्ता, बुद्ध)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सत्था	सत्था, सत्थारो
डु ति या	सत्थारं, सत्थरं	सत्थारो, सत्थारे
त ति या	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
च तु त्थी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
प ञ्च मी	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
छ द्ठी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
स त्त मी	सत्थरि	सत्थारेसु, सत्थूसु
आ ल प न	सत्थ, सत्था	सत्था, सत्थारो

§ ३६. सख (= मित्र)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा ^{११}
डु ति या	सखानं, सखं, सखारं, सखायं	”
त ति या	सखिना ^{१२}	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
च तु त्थी	सखिनो, सखिस्स	सखीनं, ^{१३} सखारानं, सखानं

११. आ यो नो च स खा २.१५६—‘सख’ शब्द से परे, ‘यो’ विभक्ति का विकल्प से ‘आयो’, ‘नो’ तथा ‘आनो’ आदेश होता है। जैसे—सख + यो = सखायो । सखिनो । सखानो । सखा ।

१२. नो ना से खि २.१६१—‘नो’, ‘ना’, तथा ‘स’ विभक्तियों के आने से, ‘सख’ शब्द का ‘सखि’ आदेश होता है। जैसे—सखिनो । सखिना । सखिस्स ।

१३. स्मा नं सु वा २.१६२—‘स्मा’ तथा ‘नं’ विभक्तियों के आने से, ‘सख’ शब्द का विकल्प से ‘सखि’ आदेश होता है। जैसे—सखिस्मा, सखस्मा । सखीनं, सखानं ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
पञ्चमी	सखिना, सखारा, सखारस्मा, सखिस्मा, सखस्मा	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
छट्ठी	सखिनो, सखिस्त	सखीनं, सखारानं, सखानं
सप्तमी	सखे ^१	सखारेषु, ^२ सखेसु
आलपन	सख, सखा, सखि, सखे	सखानो, सखिनो, सखा

§ ३७. वत्तहा सलक्षं नोनानं २.१६१—‘वत्तह’ (=वृत्तघ्न) शब्द के रूप, छट्ठी एक वचन में ‘वत्तहानो’, तथा अनेक वचन में ‘वत्तहानानं’ होते हैं ।

§ ३८. मन

(नपुंसक लिङ्ग)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	मनो	मना, मनानि
द्वितीया	मनं, मनो	मने, मनानि
तृतीया	मनशा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुर्थी	मनसो, मनस्त	मनानं
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्त	मनानं
सप्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आलपन	मन, मना	मनानि

१४. टे स्मि नो २.१६०—‘सख’ शब्द से परे, ‘स्मि’ विभक्ति का ‘ए’ आदेश होता है । जैसे—सख + स्मि = सखे ।

१५. ओ स्वं हि सु चा र ड् २.१६३—‘यो’, ‘सु’, ‘अ’, ‘हि’, ‘सु’, ‘स्मा’ तथा ‘नं’ विभक्तियों के आने से, ‘सख’ शब्द का विकल्प से ‘सखार’ आदेश हो जाता है । जैसे—

सखारो, सखायो । सखारेसु, सखेसु । सखारं, सखं । सखारेहि, सखेहि ।
सखारा, सखारस्मा । सखारानं, सखानं ।

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, ग्गोज, रज, यस, पय—इन शब्दों के रूप 'मन' शब्द के समान होंगे ।

म ना दी हि स्मि सं ना स्मानं सि सो ओ सा सा २.१४६—'मन' आदि शब्दों से परे, 'स्मि, स, अं, ना, तथा स्मा' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'सि, सो, ओ, सा, सा' आदेश हो जाता है । जैसे—मनसि, मनस्मि । मनसो, मनस्स । मनो, मनं । मनसा, मनेन । मनसा, मनस्सा ।

§ ३६. कम्म (= कर्म)

क म्मा दि तो २.८१—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है । जैसे—कम्मनि, कम्मे । चम्मनि, चम्मे ।

ना स्से नो २.८२—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'एन' आदेश हो जाता है । जैसे—कम्मेन, कम्मना । चम्मेन, चम्मना ।

§ ४०. पद (= पैर)

प दा दी हि सि २.१०७—'पद' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'सि' आदेश होता है । जैसे—पद + स्मि = पदसि, पदस्मि ।

ना स्स सा २.१०८—'पद' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है । जैसे—पद + ना = पदसा, पदेन ।

§ ४१. कोध (= क्रोध)

को धा दी हि २.१०९—'कोध' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है । जैसे—कोध + ना = कोधसा, कोधेन ।

§ ४२. दिव (= स्वर्ग)

दि वा दि तो २.१७७—'दिव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है । जैसे—

दिव + स्मि = दिवि । भुवि ।

§ ४३. एकच्च (= कोई)

ए क च्चा दी ह तो २.१३७—अकारान्त 'एकच्च' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एकच्च + यो = एकच्चे = कोई कोई।

न नि स्स टा २.१३८—'एकच्च' आदि [देहिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'नि' विभक्ति का 'आ' नहीं होता है। जैसे—एकच्चानि।

§ ४४. अम्मा (= माँ)

ता म्मा दी हि २.६३—'अम्मा' आदि शब्दों से परे, 'ग' का 'ए' आदेश नहीं होता है। जैसे—भोति अम्मा। भोति अम्मा। भोति अम्मा।

र स्सो वा २.६४—'ग' विभक्ति आने से, 'अम्मा' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—भोति अम्म, अम्मा।

§ ४५. सभा

ति स भा परि सा य २.१०६—'सभा' तथा 'परिसा' शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—सभति, सभाय। परिसति, परिसाय।

§ ४६. अग्गि (= आग)

सि स्सा ग्गि तो नि २.१४९—'अग्गि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—अग्गि + सि = अग्गिनि। अग्गि।

§ ४७. इसि (= ऋषि)

टे सि स्सि सि स्सा २.१३५—'इसि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—इसे, इसि।

डु ति य स्स यो स्स २.१३६—'इसि' शब्द से परे, 'दुतिया' के 'यो' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे इसे।

§ ४८. दण्डपाणि (अन्यार्थ समास)

इ तो अ ज्ज त्थे पु मे २.१८४—अन्यार्थ समास (= बहुव्रीहि) हो, तो

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द से परे, 'पठमा' के 'यो' का नो, तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डपाणिनो (पठमा), दण्डपाणिने (दुतिया)। विकल्प से—दण्डपाणयो।

§ ४६. अरियवृत्ति (अन्यार्थ समास)

ने स्मि नो क्व चि २.१८५—अन्यार्थ समास हो, तो इकारान्त नाम से परे, कही कही 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—अरिय-वृत्ति + स्मि = अरियवृत्तिने = आर्य वृत्ति वाले में। विकल्प से—अरियवृत्तिमिह।
“कतञ्जुमिह च पोसमिह सीलवन्ते अरियवृत्तिने”

§ ५०. नदी

नज्जा यो स्वाम् २.१६६—'यो' विभक्तियों के आने से, 'नदी' शब्द से परे 'आ' का आगम होता है। जैसे—नदी + यो = नदी + आ + यो = (यवा सरे १.३०.) नद्या + यो = (तवग्गवरणानं ये चवग्गवयजा १.४८.) नज्या + यो = (वग्गलसेहि ते १.४६.) नज्जा + यो = नज्जायो। नदियो।

§ ५१. हेतु

यो मिह वा क्व चि २.६७—'यो' विभक्ति आने से, कही कही विकल्प से पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द के 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसे—हेतु + यो = हेतयो। कुरयो।

§ ५२. अम्बु (= पानी)

अम्बवा दी हि २.८०—'अम्बु' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—फलं पतति अम्बुनि = फल पानी में गिरता है। पडुमं यथा पंसुनि आतपे कतं = मानो कमल का फूल धूप में धूल पर फेक दिया गया हो।

§ ५३. जन्तु

५. जत्त्वा दि तो नो च २.८६—पुल्लिङ्ग 'जन्तु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसे—जन्तुनो, जन्तवो, जन्तुयो।

११. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा एतद्बोधः—जानतो अह, भिक्खवे ! पस्सतो आसवानं खय वढामि, नो अजानतो नो अपस्सतो। अयोनिंसो मनसि-करोतो आसवा उव्वज्जन्ति। योनिंसो मनसि-करोतो आसवा पहीयन्ति। भगवा हि जानं जानाति, पस्सं पस्सति। सत्था देव-मनुस्सान बुद्धो भगवा ति। मातु पितु च उपट्ठानं करोन्तो दारका मङ्गल लभन्ति। भिक्खु नज्जा तीरे विहरति।

* काले अक्षरों में छपे क्रिया-पदों से 'न्तु' तथा 'मान' प्रत्ययान्त पद बनाइए, और उनका वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए।

(ख) पितरानं होतु वा मातरानं होतु वा भातरानं होतु वा, मातुन्न धीतरेहि पितुन्न पुत्तेहि मातरो पि पितरो पि भातरो पि पटिजगित्त्वा। मातरानं धीतूनं भत्तारो। पितरानं जातूनं भातरो। धम्मस्स दातारो, पदातारो, तण्हाय छेतारो, मार-स्स जेतारो भगवन्तो अरहन्ता नमस्सित्त्वा (प्रणाम करने के योग्य हैं)।

* ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के दुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।

३. निम्न लिखित वाक्यों को याद कर लीजिए—

करोन्तो पि कुसमानो पि करानो पि कुव्वन्तो पि कुशल कम्मं एव कातव्वं। चरन्तेन वा चरता वा चरमानेन वा चरानेन वा भिक्खुना धम्मं एव चरितव्वं। पितरा वा, मातरा वा, भातरेहि वा, भगिनीहि वा सद्धि विहारं (वीढ-मन्दिर) गच्छमानो अह भायमाने च भावेन्ते च भिक्खु पस्सामि।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के सरल रूप लिखिए—

(जैसे—नज्जा=नदिया। सखारेहि=सखेहि)

न जञ्चा होति ब्राह्मणो। सखारानं नज्जं ओकास ददन्तो पक्कामि। मातरा च पितरा च सद्धि विहारं गच्छति। रञ्जे रज्जं कारेन्ते मागधे अजात-सत्तुस्मि, भगवा परिनिव्वायि।

५. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान के धर्म को सुनते हुए भिक्षु लोग चुपचाप (तुण्ही) बैठे रहे । नदी में स्नान करने वाले मनुष्यों को भय होता है । भगवान देखते हुए देखते हैं, जानते हुए जानते हैं । भगवान श्रावकों के चित्त को जानते हुए धर्म-देसना करते हैं । फल खाने वाले लड़कों में यही मेरे साथ आने वाला लड़का पढ़ने वाला है । सूर्य को नमस्कार करते हुए मनुष्यों की आँखे बन्द हैं । भात (भोजन) पकाते हुए मेरा हाथ जल गया । लिखते हुए उसका चित्त विरक्त हो गया ।]

दूसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

§ ७. उपसर्ग बीस हैं। यथा—(१) प, (२) परा, (३) नि, (४) नी, (५) उ, (६) दु, (७) सं, (८) वि, (९) अत्र, (१०) अन्तु, (११) परि, (१२) अभि, (१३) अधि, (१४) पानि, (१५) सु, (१६) आ, (१७) अति, (१८) अपि, (१९) अप, (२०) उप। धातु के पूर्व उपसर्ग आने से, उसका अर्थ प्रायः बदल जाता है। जैसे—

हरति = हरण करता है

विहरति = विहार करता है

पहरति = प्रहार करता है

संहरति = संहार करता है

आहरति = लाता है। इत्यादि

१. “प” उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है:—

पत = गिरना

पपतति = सामने गिरता है

नी = लाना

पनेति = सामने लाता है

गह = पकड़ना

पगग्रहाति = सामने पकड़ता है

थर = पसारना

पत्थरति = सामने पसारता है

धाव = दौड़ना

पधावति = दौड़ कर आगे निकल जाता है

वज्र = जाना

पवज्रति = घर से निकल जाता है

सर = गत्यर्थ]

पसारेति = फैलाता है

कुप = कुपित होना

पकोपेति = अत्यन्त कुपित होता है

छिन्द = काटना	पच्छिन्दति = काट डालता है
भञ्ज = तोड़ना	पभञ्जति = तोड़-फोड़ देता है
चि = चुनना	पचिनति = ढेर करता है
कीर = बिखेरना	पकिण्णति = बिखेर देता है
नद = नाद करना	पनदति = शोर करता है
भा = चमकना	पभाति = खूब चमकता है
हा = छोड़ना	पजहति = बिलकुल छोड़ देता है
जल = जलना	पज्जलति = प्रज्वलित होता है
वा = जानना	पजानाति = अच्छी तरह जानता है
ठा = खड़ा होना	पट्ठाय = उसके आगे
वत्त = होना	पवत्तति = आगे चलना
	पपुत्त = पुत्र का पुत्र इत्यादि

२. 'परा' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

जि = जीतना	पराजयति = हरा देता है
भू = होना	पराभवति = हानि को प्राप्त होता है
इ = जाना	पलेति = भागता है
कम = चलना	परक्कमति = पराक्रम करता है
मस = छूना	पराम्भसति = परामर्श करता है ।
	इत्यादि

३ : ४. 'नि'—'नी' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं—

कम = जाना	निकलमति = निकलता है
कर = करना	निक्करोति = नीचा दिखाता है
गम = जाना	निग्गच्छति
पत = गिरना	निप्पतति
सर = निकलना	निससरति
वत्त = होना	निब्बत्तति = सिद्ध होता है
विस = प्रवेश करना	निविसति = बिलकुल पैठता है

चि = चुनना	निच्छिनोति = निश्चय करता है
सम = शान्त होना	निसामेति = गौर से सुनना
ठापि = रखना	निठ्ठापेति = समाप्त करता है
पद = होना	नियज्जति = सोता है
वा = वहना	निव्वसति = बुझ जाता है
खिप = फेकना	निखिपति = धरोहर रखता है

५. 'उ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

गम = जाना	उगच्छति = ऊपर उठता है
भू = होना	उद्भवति = पैदा होता है ।
सद = जाना, नष्ट करना	{ उस्सादेति = दूर करता है, उठाता है { उस्सापेति = ऊपर उठाता है
सर = खिसकना	उससारेति = दूर करता है
लुप = विनाश करना	उल्लुम्पति = बचा लेता है
युज = जोड़ना	उय्युज्जति = छोड़ कर निकल जाता है
मूल = प्रतिष्ठित होना	उम्मूलेति = जड़ से उखाड़ देता है
भुज = खाना	उव्वभुजति = भुक्ता है, बल पूर्वक उठाता है,
ठा = खड़ा होना	उट्ठहति = उठता है इत्यादि

६. 'दु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर = करना	दुक्कर = दुष्कर
गम = जाना	दुग्गत = दुर्गत
	दुग्गन्ध = दुर्गन्ध
	दुच्चरित्त = दुश्चरित्र इत्यादि

७. 'सं' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

युज = जोड़ना	संयुज्जति = आपस में मिला देना है
वद = बोलना	संबदति = एक राय होता है

वर = स्वीकार करना
 वस = रहना
 सद = नष्ट होना, जाना
 आ = जानना
 पत = गिरना
 इ = जाना

दा = देना
 कर = करना

८. 'वि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प = काँपना
 दल = तोड़ना
 चर = चलना
 किर = बिखेरना
 भज = भाग करना
 सु = सुनना
 की = खरीदना
 जट = उलभाना
 कर = करना
 सर = स्मरण करना
 पच = पकाना
 रज्ज = राग करना
 रम = क्रीड़ा करना
 तर = तैरना
 नी = ले जाना
 लिख = लिखना
 वत्त = होना
 वण्ण = प्रशंसा करना

संवरति = ढकता है
 संवसति = साथ रहता है
 संसीदति = डूब जाता है
 संजानाति = पहचानता है
 संञ्जियति = जमा होता है
 समेति = मिलना, आपस में मेल खाना, सहमत होना

सभादिद्यति = ग्रहण करता है
 सङ्खरियति = तैयार करवाता है

विकम्पति = अत्यन्त काँपता है
 विदालेति = नष्ट भ्रष्ट कर देता है
 विचरति = इधर उधर घूमता है
 विप्पकिरति = चारों ओर बिखेर डालता है
 विभजति = अच्छी तरह व्याख्या करता है
 विस्सुत = विख्यात
 विक्किणाति = बेचता है
 विजटेति = सुलभाता है
 विकरोति = विकृत करता है
 विसरति = भूल जाता है
 विपच्चति = फल देता है
 विरज्जति = विरक्त होता है
 विरमति = रुकता है
 वितरति = बाँटता है
 विनेति = शिक्षा देता है
 विल्लिखति = जोतता है
 विवट्टति = पीछे घुमाता है
 विवण्णति = निन्दा करता है

वर = वृकना	विवरति = उधारता है
वद = बोलना	विवदति = भगड़ा करता है
सस = साँस लेना	विससति = विश्वास करना है
हर = हरण करना	विहरति = निवास करता है, ध्यानस्थ रहता है

९. 'अव' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम = जाना	अवकमति = निकट आता है
खिप = फेंकना	अवखिपति = नीचे फेंकता है
आ = जानना	अवजानाति = निन्दा करता है, अस्वीकार करता है
मन = जानना	अवमञ्जति = तिरस्कार करता है
सर = चलना	अवसरति = हट जाता है
सज्ज = लगना	अवसज्जति = छोड़ना है

१०. 'अनु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प = काँपना	अनुकम्पति = अनुकम्पा करता है
कर = करना	अनुकरोति = नकल करता है
कम = चलना	अनुकमति = पीछा करता है
गम = जाना	अनुगच्छति = पीछे जाता है
गा = गाना	अनुगायति = साथ साथ गाता है
गणह = ग्रहण करना	अनुगण्हाति = दया करता है
चर = चलना	अनुचरति = पीछे पीछे चलता है
आ = जानना	अनुजानाति = स्वीकृति देता है
ठा = खड़ा होना	अनुद्वहति = सेवा-उहल करता है, अनुष्ठान करता है
तप = ताप देना	अनुतप्पति = दुःखित होता है
दा = देना	अनुददाति = स्वीकार करता है
नी = ले जाना	अनुनेति = खुसामद करता है
बन्ध = बाँधना	अनुबन्धति = पीछा करता है
भू = होना	अनुभवति = अनुभव करता है

मुद = प्रसन्न होना
वद = बोलना

अनुमोदति = अनुमोदन करता है
अनुवदति = निन्दा करता है

११. 'परि' उपसर्ग निम्न अर्थों से प्रयुक्त होता है—

कत = काटना
कर = करना

परिकन्तति = चारों ओर से काट देता है
परिकरोति = चारों ओर से घेर लेता है,
सेवा-टहल करता है

इक्ख = देखना
चर = चलना

परिक्खति = परीक्षा लेता है
परिचरति = देख-भाल करता है, पूजा करता
है, सेवा करता है

नम = भुक्ता
पत = गिरना
भू = होना
भास = कहना
सह = सहना
हर = हरण करना

परिनमति = परिणाम को प्राप्त होता है
परिपतति = विनष्ट होता है
परिभवति = अनादर करता है
परिभासति = निन्दा करता है
परिसहति = हरा देता है, दे मारता है
परिहरति = बचाता है, खबरगिरी करना है

१२. 'अभि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

आ = जानना
धाव = दौड़ना
नन्द = प्रसन्न होना
भू = होना
वद = बोलना
सज्ज = लगना
सन्द = बहना
हर = लाना

अभिजानति = पहचानता है
अभिधावति = किसी ओर दौड़ता है
अभिनन्दति = किसी बात पर प्रसन्न होता है
अभिभवति = हरा कर मालिक बन बैठता है
अभिवदति = अभिवादन करता है
अभिसज्जति = क्रुद्ध होता है
अभिसन्दति = बिलकुल भर देता है
अभिहरति = लाता है, या समर्पण करता है

१३. 'अधि' उपसर्ग निम्न अर्थों से प्रयुक्त होता है—

गम = जाना

अधिगच्छति = अधिकार कर लेता है, समझता है

१५. 'सु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

सुगन्ध	सुकत = सुकृत
सुघर	सुकर
सुचरित	सुकुम्भार इत्यादि

१६. 'आ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है— /

कस = जोतना	आकस्सति = आकर्षण करता है
गम = जाना	आगच्छति = आता है
चि = चुनना	आचिनाति = ढेर लगाता है
दा = देना	आदाति (आददाति) = लेता है
दिस = बताना	आदिसति = आज्ञा देता है
नी = ले जाना	आनेति = ले आता है
पुच्छ = पूछना	आपुच्छति = जाँचता है
वत = होना	आवत्तति = घूम आता है ।

१७. 'अति' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम = जाना	अतिक्कमति = पार कर जाता है
धाव = दौड़ना	अतिधावति = आगे दौड़ जाता है
पात = गिराना	अतिपातेति = नष्ट करता है
भुज = खाना	अतिभुञ्जति = खूब खा लेता है

१८. 'अपि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

धा = धारण करना	अपिधान = ढकना
लप = बात करना	अपिलपेति = डींग हाँकता है

१९. 'अप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

इ = जाना	अपेति = हट जाता है
कम = जाना	अपक्कमति = निकल जाता है
गम = जाना	अपगच्छति = चला जाता है

धा = धारण करना
नी = ले जाना
हर = हरण करना
कर = करना
चि = चुनना
ठापि = रखना
नम = भुक्ना
राध = सिद्ध होना
वद = बोलना
वह = वहन करना

अपनिधाति = उतार कर रख देता है
अपनेति = बाहर कर देता है
अपहरति = चोरी करता है
अपकरोति = अपकार करता है
अपचायति = सत्कार करता है
अपट्टपेति = अलग रख देता है
अपनमति = निकल जाता है
अपरज्भति = अपराध करता है
अपवदति = निन्दा करता है
अपवहति = भगा देता है

२०. 'उप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर = करना
कम = जाना
गम = जाना
चर = चलना
ठा = ठहरना
धा = दौड़ना
निसीद = बैठना
सेव = सेवा करना
नी = ले जाना]
रम = क्रीड़ा करना
वस = रहना]
विस = धुसना
इक्ख = देखना
पद = जाना
पत = गिरना

उपकरोति = उपकार करता है
उपक्कमति = चढ़ाई करता है, शुरू करता है
उपगच्छति = पास में जाता है
उपचरति = सेवा करता है, व्यवहार में लाता है
उपट्टुहति = सेवा-टहल करता है
उपधावति = पास में दौड़ जाता है
उपनिसीदति = पास में बैठता है
उपनिसेवति = पीछा करता है
उपनेति = समीप ले जाता है
उपरमति = हटता है
उपवसति = पास में रहता है, उपवास करता है
उपविसति = पास आता है
उपेक्खति = उपेक्षा करता है
उपज्जति = उत्पन्न होता है
उप्पतति = उड़ता है, ऊपर उठता है

१२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

- (क) घरम्हा निक्खमित्वा पब्बजि । कथ साराणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि । पठविं परामसित्वा उदान उदानेसि । विहारे सन्निसिन्नानं सन्निसिन्नानं भिक्खून् पुब्बे-निवास-पटिसंयुत्ता कथा उदपादि । उपसङ्कमित्वा पञ्चत्ते आसने निसीदि । यथा च मे भगवा व्याकरोति, तं साधुकं उग्ग-हेत्वा तुवं आरोचेय्यामि । अट्ट-विमोक्खे अनुलोमं पि पटिलोमं पि समापज्जति, आसदान च खया चेतोविमुत्ति सयं अभिञ्जा (-य) सच्छिक्त्वा उपसम्पज्ज विहरतीति । अभिजानामि इतो पुब्बे एवं नामधेय्यं (नाम) सुत्वा ति ।
- (ख) पापानि कम्मानि विवज्जयाथ, धम्मनुयोगञ्च अधिट्टुहाथा ति । अच्छरानं गणेन परिवारितो अनेकचित्तं विमान आरुह् देवता मोदति । अभिक्कन्तेन वण्णेन ओसधी तारका विय दिसा सब्बा ओभासेन्तो तिट्ठसि । पादे पक्खालयित्वान (= धोकर) एकमन्ते उपाविसि, (उत्तरा थेरी) पुब्बजाति अनुस्सरि, दिब्बचक्खु विसोधयि । रत्तिया पच्छिमे यामे तमोक्खन्धं पदालयि । तेविज्जा (हुत्वा) अथ उट्ठासि कता ते (तथागतस्स) अनुसासनी ति ।
- (ग) जयं वेर पसवति, दुक्ख सेति पराजितो ।
उपसन्तो सुखं सेति, हित्वा जय-पराजयं ॥.॥
तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता ।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, ऋयिनो मारबन्धना ॥.॥

२. पालि में अनुवाद कीजिए:—

प्रातःकाल निद्रा से जागता हूँ । उठकर बैठता हूँ । हाथ मुँह धोता हूँ । पैर धो कर बैठ जाता हूँ । तब याद करते हुए, श्वास लेता हूँ (= अस्ससति) । स्मरण रखते (सतो'व) श्वास फेकता हूँ (पस्ससति) । लोक में लोभ को छोड़ कर ध्यान करता हूँ ।

श्रावस्ती में कुछ लड़के डण्डे से साँप मार रहे थे (प+हर) । भगवान् ने उनको उपदेश दिया । शील पालन करने वाला भिक्षु मृत्यु को हरा देना है (परा+जि) । हम लोग कल वहाँ गए थे, आज आ रहे हैं । आनन्द ने भगवान् की टहल की (उप+ठा) । कुमार सिद्धार्थ राज-महल से निकल गए (= नि+कम्) ।

तीसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

१—भ्वादि गण

§ ४. नवों गणों में भ्वादि-गण सबसे बड़ा है। मोगल्लान धातु-पाठ के अनुसार, इस गण में ३०४ धातु हैं। इन धातुओं की सूची में, सर्व प्रथम 'भू' धातु है; अतः इस गण का नाम 'भ्वादि-गण' रखा गया है।

मोगल्लान धातु-पाठ के अन्त में आता है "अग्रन्तो उच्चारणत्थो सेसा धात्वत्था"; अर्थात्, जो अकारान्त धातु हैं, उनका अन्त्य 'अ' केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए है; धातु को 'अ' से रहित समझना चाहिए। जैसे—पच = पच् ।

§ ५. भ्वादि-गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

भवति

क ल रि लो ५.१८—कर्तृवाच्य में, 'न्', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, धातु में परे 'ल' का आगम होता है। 'ल' का 'अ' रह जाता है। जैसे—

पच + ति = पच + अ + ति = पचति । जि + ति = जे + ति = जे + अ + ति = जयति । भू + ति = भो + ति = भो + अ + ति = भवति ।

यु व ण्णा न मे औ ष्य च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने में, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—नि + न्वं = नेतव्यं । सोतव्यं जि + ति = जे + ति । भू + ति = भो + ति ।

ए ओ न म य वा स रे ५.८६—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—जि + ति = जे + ति = जे + अ + ति = जयति । भू + ति = भो + ति = भो + अ + ति = भवति ।

द्रु ष्ट व्य—ल हु स्सु प न्त स्स ५.८३—प्रत्यय आने से, प्रायः धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का यथाक्रम 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

सुच + ति = सोचति । जुत—जोतति । रुद—रोदति । मुद—मोदति । सुभ—सोभति । रुच—रोचति । तिज—तेजति = तेज करना । कित—केतति ।

घम्मति । वज्जति । दज्जति

गम वद दानं घम्म वज्ज दज्जा ५.१७६—'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'गम' का 'घम्म', 'वद' का 'वज्ज', तथा 'दा' का 'दज्ज' आदेश होता है। जैसे—घम्मति, घम्मन्तो, गच्छन्तो । वज्जति, वज्जन्तो, वदन्तो । दज्जति, दज्जन्तो, ददन्तो ।

गच्छति । यच्छति । इच्छति । अच्छति । दिच्छति

ग म य मि सा स दि सानं वा च्छ ५.१७३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'गम', 'यम', 'इस', 'अस', तथा 'दिस' धातुओं का क्रमशः 'गच्छ', 'यच्छ', 'इच्छ', 'अच्छ', तथा 'दिच्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छन्तो, गच्छमानो, गच्छति इत्यादि ।

गच्छरे । गमिस्सरे

गु रु पु ष्वा र स्सा रे न्ते न्ती नं ६.७४—गुरुपूर्व ह्रस्व धातु से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' विभक्तियों का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छरे, गच्छन्ति । गच्छरे, गच्छन्ते । गमिस्सरे ।

सन्ति, सन्तु, सिया, सन्तो, समानो

न्त मा ना न्ति थि युं स्वा दि लोपो ५.१३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'इय', तथा 'इयुं' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—अस + न्त = स + न्त = सन्तो । समानो । सन्ति । सन्तु । सिया । सियुं ।

तिट्ठति । पिवति

ठा पा नं तिट्ठ पि वः ५.१७५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ठा' धातु का 'तिट्ठ', और 'पा' धातु का 'पिव' आदेश हो जाता है। जैसे—तिट्ठन्तो, तिट्ठमानो, तिट्ठति । पिवन्तो, पिवमानो, पिवति ।

डहति

द ह स्स द स्स डो ५.१२६—'दह' धातु के 'द' का विकल्प से 'ड' आदेश हो जाता है। जैसे—

दहति; डहति । दाहो; डाहो ।

अदेन्ति

जि ल स्से ५.१६३—'जि' तथा 'ल' का, कहीं कहीं 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—अद + ल + अन्ति = अदेन्ति । गह + जि + त्वा = गहेत्वा (जि व्यञ्जनस्स ५.७०)

जीयति । मीयति

ज र म राण मी य ड् ५.१७४—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'जर' तथा 'मर' धातुओं का विकल्प से क्रमशः 'जीय' तथा 'मीय' आदेश होता है। जैसे—

जीयन्तो, जीरन्तो । जीयमानो, जीरमानो । जीयति, जीरति । मीयन्तो, मरन्तो । मीयमानो, मरमानो । मीयति, मरति ।

जीरति । निसीदति

ज र स दान मी म् वा ५.१२३—'जर' तथा 'सद' धातुओं के अन्त्य स्वर से परे, कहीं कहीं 'ई' का आगम होता है। जैसे—

जीरणं, जीरति, जीरापेति । निसीदितब्बं, निसीदनं, निसीदित्तुं, निसीदनि । कहीं कहीं 'ई' का आगम नहीं भी होता है। जैसे—जरा; निसज्ज ।

उट्ठहति

पा दि तो ठा स्स वा ठ हो क्व चि ५.१३१—उपसर्ग-पूर्वक 'ठा' धातु का,

कही-कही विकल्प से 'ठहो' आदेश हो जाता है । जैसे—उट्टुहति, सण्ठहति । उन्ति-ट्टति, सन्तिट्टति ।

समादियति

दा स्सि य ड् ५.१३२—उपसर्ग-पूर्वक 'दा' धातु का 'दिय' आदेश हो जाता है । जैसे—सं + आ + दा + ति = समादियति । अनादियित्वा ।

निक्खमति

नि तो क म स्स ५.१३५—'नि' उपसर्ग-पूर्वक 'कम' धातु का, कही कही 'क्खम' आदेश हो जाता है । जैसे—निक्खमति ।

पस्सति

दि स स्स प स्स, द स्स, द स, द, द क्खा ५.१२४—'दिस' धातु के 'पस्स', 'दस्स', 'दस्', 'द', तथा 'दक्ख' आदेश होते हैं । जैसे—

पस्सति । (कर्म) दस्सेति । (भूत) अदस, अदं, अद्दा । दक्खिस्सति (भविष्यत्काल) ।

२-रुधादि गण

§ ६. मं च रुधादीनं ५.१६—'न्त', 'मान', तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, रुधादि धातु के अन्तिम स्वर से परे 'अं' का आगम होता है । जैसे—

कत् (कन्तति)	= काटना
गह् (गण्हति) *	= पकड़ना
छिद् (छिन्दति)	= छेदना
वध् (वन्धति)	= बाँधना
भिद् (भिन्दति)	= भेदन करना
भुज् (भुञ्जति)	= खाना
मुच् (मुञ्चति)	= छोड़ना
युज् (युञ्जति)	= जोड़ना

- रध् (रुन्धति) = रोकना
 लिप् (लिम्पति) = लेपना
 सिच् (सिञ्चति) = सीचना
 हिस् (हिंसति) = हिंसा करना

§ ७. रुधादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

घेप्पति

ग ह स्स घेप्पो ५.१७८—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘गह’ धातु का ‘घेप्प’ आदेश हो जाता है। जैसे—
 घेप्पन्तो । घेप्पमानो । घेप्पति ।

*गणहाति

णो नि ग्ग ही त स्स ५.१७९—‘गह’ धातु के अन्तिम स्वर से परे, जो ‘अ’ का आगम होता है, उसका ‘ण’ आदेश हो जाता है।

जैसे—गह + ति = गणहाति । गण्हतव्वं । गण्हतुं । गण्हन्तो ।

३-दिवादि गण

§ ८. दिवादीहि यक् ५.२१—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘दिव’ आदि धातु से परे, ‘य’ का आगम होता है। जैसे—

- कुध (कुज्झति*) = गुस्सा होना
 कुप (कुप्पति) = कोप करना
 गा (गायति) = गाना
 घा (घायति) = सूँघना
 छिद (छिज्जति*) = टूटना
 भा (भायति) = ध्यान करना
 दिव (दिव्वति) = खेलना
 नहा (नहायति) = नहाना
 बुध (बुज्झति*) = समझना
 युध (युज्झति*) = लड़ाई करना

रुच (रुचति) = अच्छा लगना
 लुभ (लुभति*) = लोभ करना
 सम (सम्मति) = शान्त होना
 सिव (सिब्वति) = सीना
 सुध (सुज्भति*) = शुद्ध होना
 सुस (सुस्सति) = सूखना
 हन (हञ्जति)* = मारना

§ ६. क्व चि वि कर णा नं ५.१६१—कहीं कहीं विकरण का लोप होता है। जैसे—

हन + ति = हन्ति । विकरण का लोप नहीं होने से—हन + य + ति = हञ्जति ।

उदपद + ई = उदपादि । विकरण का लोप नहीं होने से—उदपद + य + ई = उप्पज्जि ।

४-तुदादि गण

§ १०. तु दा दी हि को ५.२२—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘तुद’ आदि धातु से परे ‘अ’ का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त ‘इ’ या ‘उ’ का ‘ए’ या ‘ओ’ नहीं होता है। जैसे—

वि + किर (विकिरति) = छीटना

खिप (खिपति) = फेकना

नि + गिर (निगिरति) = निगलना

गिल (गिलति) = निगलना

तुद (तुदति) = पीड़ा करना

* कुध् + ति = कुध् + य + ति = कुध्यति = कुभ्यति (तवग्गवरणानं ये चव ग्गवयञ्जा १.४८—देखिए पृ० २२३) = कुभ्यति (वग्ग लसेहि ते १.४६—देखिए पृ० २२४) = कुज्भति (चतुत्थ द्दुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३६—देखिए पृ० २२४)। इसी तरह—युज्भति । लुभति । दिज्जति । सुज्भति । हञ्जति । इत्यादि ।

- नुद (नुदति) = प्रेरित करना
 फुर (फुरति) = फड़कना
 फुस (फुसति) = छूना
 मुस (मुसति) = चुराना
 लिख (लिखति) = लिखना
 विद (विदति) = जानना
 विस (विसति) = घुसना
 सुप (सुपति) = सोना

५-ज्यादि गण

§ ११. ज्या दी हि क्ना ५.२३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ज्यादि गण' के धातु से परे 'ना' का आगम होता है। प्रत्ययों के आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

- अस (अस्नाति) = खाना
 चि (चिनाति) = चुनना
 आ (जानाति) = जानना
 थु (थुनाति) = प्रशंसा करना
 धू (धुनाति) = धुनना
 पू (पुनाति) = पवित्र करना
 लू (लुनाति) = खोटना
 सि (सिनाति) = सीना

§ १२. ज्यादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

जानाति, नायति

आ स्स ने जा ५.१२०—'न' परे हो, तो 'आ' धातु का 'जा' आदेश हो जाता है। जैसे—

जानाति । जानितुं । जानन्तो ।

यदि 'न' परे नहीं हो, तो 'आ' का 'जा' नहीं होता है। जैसे—आ + क्ना = आतो ।

जास्स स नास्स ना यो ति ष्हि ६.६१—‘ति’ प्रत्यय आने से, ‘जा’ धातु का विकल्प से अपने विकरण ‘ना’ के साथ ‘नाय’ आदेश होता है। जैसे—नायति; जानाति ।

धुनाति, किणाति

णानासु रस्सो ६.३२—‘णा’ तथा ‘ना’ विकरण के आने से, धातु के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—धू + ना + ति = धुनाति । की + णा + ति = किणाति ।

६-क्यादि गण

§ १३. क्या दी हि क्णो ५.२४—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘क्यादि गण’ के धातु से परे, ‘णा’ का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त ‘इ’ या ‘उ’ का ‘ए’ या ‘ओ’ नहीं होता है। जैसे—

की (किणाति) = खरीदना

वि + की (विकिणाति) = बेचना

गि (गिणाति) = शब्द करना

वु (वुणाति) = ढकना

सक (सक्णाति) = सकना

सू (सुणाति) = सुनना

७-स्वादि गण

§ १४. स्वा दी हि क्णो ५.२५—‘न्त’, ‘मान’ तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘स्वादि गण’ के धातु से परे, ‘णो’ का आगम होता है। प्रत्यय आने से ०। जैसे—

सु (सुणाति) = सुनना

खी (खिणाति) = क्षय होना

वु (वुणाति) = ढकना

गि (गिणोति) = शब्द करना

सक (सक्णोति)* = सकना

प + आप (पापुणोति)* = प्राप्त करना

*सक्कुणोति

स का पानं कुक्कु णे ५.१२१—‘ण’ परे हो, तो ‘सक’ तथा ‘आप’ धातुओं के उत्तर, क्रमशः ‘कु’ तथा ‘उ’ का आगम होता है। जैसे—सक + णो + ति = सक्कुणोति । पाप + णो + ति = पापुणोति ।

८—तनादि गण

§ १५. तनादि ल्बो ५.२६—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष भूत को छोड़) ‘ति’ आदि प्रत्ययों के आने से, ‘तनादि गण’ के धातु से परे, ‘ओ’ का आगम होता है। जैसे—

तन (तनोति) = फैलाना

सक (सक्कोति) = सकना

वन (वनोति) = माँगना

मन (मनोति) = जानना

आप (अप्पोति) = पाना

कर (करोति) = करना

§ १६. तनादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

तनुति, तनुते

ओ द्वि क र ण स्सु ष र च्छ व्के ६.७६—‘अत्तनो पद’ में, ‘ओ’ विकरण का ‘उ’ आदेश होता है। जैसे—

तन + ते = तन + ओ + ते = तन + उ + ते = तनुते ।

पु ब्ब च्छ व्के वा क्व च्चि ६.७७—‘परस्सपद’ में भी, ‘ओ’ विकरण का कहीं कहीं विकल्प से ‘उ’ आदेश होता है। जैसे—

तनुति, दनोति ।

कुब्बति, कयिरति, करोति

क र स्स सो स्स कु ब्ब कु र क थि रा ५.१७७—‘न्त’, ‘मान’, तथा (परोक्ष

भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, अपने विकरण 'ओ' के साथ, 'कर' धातु के 'कुब्ब', 'कुरु' तथा 'कयिर' आदेश हो जाते हैं। जैसे—

कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो । कुब्बमानो, कुरुमानो, कयिरमानो, करानो ।
कुब्बति, कयिरति करोति । कुब्बते, कुरुते, कयिरते ।

कुम्मि, कुम्म

कर स्स सो स्स कुं ६.२३—'भि' तथा 'म' प्रत्ययो के आने से, 'कर' धातु का, अपने विकरण 'ओ' के साथ, विकल्प से 'कुं' आदेश होता है। जैसे—

कर + भि = कुम्मि । कर + म = कुम्म ।

सङ्खरियति

करो ति स्स खो ५.१३३—उपसर्ग-पूर्वक 'कर' धातु का, कही कही 'खर' आदेश हो जाता है। जैसे—सङ्खारो । सङ्खरियति ।

पुरेक्खति

पुर स्मा ५.१३४—'पुर' शब्द पूर्वक 'कर' धातु का, 'क्खर' आदेश हो जाता है। जैसे—पुरेक्खत्वा । पुरेक्खारो । पुरेक्खति ।

६-चुरादि गण

§ १७. चुरादितो णि ५.१५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'चुर' आदि धातु से परे, 'णि' का आगम होता है। 'णि' का केवल 'इ' रह जाता है; तथा, धातु के उपान्त लघु स्वर की प्रायः वृद्धि होती है। जैसे—

अज्ज (अज्जेति, अज्जयति) = कमाना

ईर (ईरेति, ईरयति) = हिलना

कण्ण (कण्णेति, कण्णयति) = सुनना

कथ (कथेति, कथयति) = कहना

कित्त (कित्तेति, कित्तयति) = कीर्तन करना

गण (गणेति, गणयति) = गिनना

गन्थ (गन्थेति, गन्थयति)	==गूथना
चिन्त (चिन्तेति, चिन्तयति)	==विचारना
चुण्ण (चुण्णेति, चुण्णयति)	==चूर चूर करना
*चुर (चोरेति, चोरयति)	==चुराना
छड्ड (छड्डेति, छड्डयति)	==फेकना
भ्रप (भ्रापेति, भ्रापयति)	==जलाना
पाल (पालेति, पालयति)	==भागना
पिण्ड (पिण्डेति, पिण्डयति)	==पिण्ड बनाना
पुस (पोसेति, पोसयति)	==पोसना
पूज (पूजेति, पूजयति)	==पूजा करना
मन्त (मन्तेति, मन्तयति)	==सलाह करना
तक्क (तक्केति, तक्कयति)	==तर्क करना
तीर (तीरेति, तीरयति)	==पूरा करना
दिस (देसेति, देसयति)	==उपदेश करना
वन्द (वन्देति, वन्दयति)	==वन्दना करना
वण्ण (वण्णेति वण्णयति)	==तारीफ करना

*क त् रि लो ५.१८—इस सूत्र से, 'अ' का आगम हुआ। जैसे—चोरि + अ + ति ।

युवण्णानसेओ ष्चचये ५.८२—इस सूत्र से, चोरे + अ + ति ।

एओनमयवा सरे ५.८६—इस सूत्रसे—चोरयति ।

परो क्वचि १.२७—इस सूत्र से—चोरेति । इसी तरह, दूसरे धातुओं का भी ।

१३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भगवन्तं ब्रह्मा याचि । भगवा धम्मचक्क पवत्तयि । वह्नं देव-मनुस्सानं अभिसमयो अहु । भगवा हि सब्बं ददाति । चतु-सच्चं पकासेति । प्राणिनं अनुकम्पति । भिक्खू भगवन्त परिवारेन्ति । पापकारी सोचति । पुञ्जकारी मोदति । भिक्खु गण्हाति ।

दारका भगवन्तं अहसासुं । भिक्खू नगरा निक्खामिमु । दारका उय्याने कीळिसु । सब्बे धम्मा अनत्ताति जानिसु । बाळ्हगिलानो अहोसि । सिक्खा-पदं समादिंयिसु । अक्कोधेन कोधं अजिनिं, असाधु साधुना अजेसि । कोधनो मनुस्सो दुब्बलो अहोसि । सब्बे पाणा जीरिस्सन्ति, मरिस्सन्ति, पुन पि जायिस्सन्ति । अहं मार-बन्धना मोक्खामि । बुद्धं सरणं गमिस्सामि । धम्मं सुणिस्सामि । पधानं पदहिस्सामि । कम्मट्टानं गणिहस्सामि । भव-सोतं छिन्दिस्सामि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे क्रियापदों को वर्तमान काल प्रथम पुरुष एक वचन में लिखिए ।

३. निम्न-लिखित क्रियापदों के रूप परिसमाप्त्यर्थक भूत काल में लिखिए—

भवामि । लिखिस्सामि । गमिस्सामि । तिट्टामि । ददासि । हेस्सति । सन्ति । रुन्दन्ति । छिन्दथ । दिब्बाम । सुणाथ । जिनिस्ससि । जानाम । काहसि । पोसेथ ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान् एक सप्ताह बैठे । सारिपुत्त ने भगवान् से पूछा । राजा ने भगवान् को अभिवादन किया, नमस्कार किया दान दिया । लड़कियाँ गा रही थी । भगवान् को ब्रह्मा ने याचना की । भगवान् ने स्वीकार किया ।

५. निम्न-लिखित क्रिया-पदों का अध्ययन कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सन्ति वा गच्छिस्सन्ति वा । धम्मं जानिस्ससि, वा जस्ससि वा । वेदं (हर्षं) सोमनस्सं च लभिस्साम वा लच्छाम वा । निब्बाणस्स पत्तिया मग्गो हेहिति वा हेस्सति वा होहिस्सति वा । दारका भिक्खु दक्खन्ति वा दक्खन्ति

वा पस्सिस्सन्ति वा । अहं सुणोमि वा सुणामि वा । धम्म-चारी सुखं पापुणाति वा पापुणोति वा पप्पोति वा । भिक्खू समण-किच्चं करोन्ति वा कुब्बन्ति वा कयीरन्ति वा करिस्सन्ति वा; काहन्ति वा काहिनति वा । यं धम्मं सुणोमि तं धारयामि । यो भानं भावेति सो सुखं पप्पोति । .

६. पालि में अनुवाद कीजिए—

होता है । खाता है । कहता है । हवा बहती है । भूमि पर बैठा । धर्म सुनता हूँ । ध्यान करता हूँ । वितर्क को रोकता हूँ । भावना कर सकता हूँ । पुस्तक खरीदता हूँ । मनुष्य बुड्ढा होता है । मैं काम करता हूँ ।

तीसरा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग : अनुज्ञा)

विधि (हेतुफल')

परस्स पद

	एक व च न	अ ने क व च न
पठ म पुरि स	पच्चे, ^३ पच्चेय्य	पच्चेय्युं, पच्चुं ^३
म जिभ्म म पुरि स	पच्चे, ^३ पच्चेय्यासि	पच्चेय्याथ
उत्त म पुरि स	पच्चे, ^३ पच्चेय्यामि	पच्चेसु, ^५ पच्चेय्याम, पच्चेय्यासु ^५

१. हेतु फले स्वेय्य, एय्युं, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि, एय्याम; एथ एरं, एथो एय्यव्हो, एय्यं एय्याम्हे ६.८—हेतु तथा फल के अर्थ में, धातु से परे, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

स चे संखारा निच्चा भवेय्युं, न निरुज्जेय्युं—यदि संस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों। (यहाँ नित्य होना हेतु है, और न निरुद्ध होना फल।)

पञ्च पत्थ ना विधि सु ६.९—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि के अर्थ में, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

प्रश्न—किमायस्मा विनयम्परियापुगेय्य, उदाहु धम्मं =आयुष्मान् विनय का अध्ययन करेंगे, या धर्म का? गच्छेय्यं वाहं उपोसथं, न वा गच्छेय्यं =मैं उपोसथ को जाऊँ या न जाऊँ?

प्रार्थना—लभेय्याहम्भन्ते! भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं =

अतनी पद

ए क व च न	अ ते क व च न
पठ म पु रि स	पच्छे
म जिह व पु रि स	पच्छेथी
उ त्त म पु रि स	पच्छेथं
	पच्छेथ्यहो
	पच्छेथ्याहे

§ १८. 'विधि' में कुछ विशेष धातु के रूप—

अस—अस्त, तिया^१। जा—जानिया, जानेय्य, जञ्जा^१। कर—कथिरा^१।

भन्ते ! मैं भगवान के पास प्रद्वज्या तथा उपसम्पदा ग्रहण करूँ। वस्सेय्यं तं वस्सतत्तं
अरोगं—उसे मैं सौ वर्ष तक नीरोग देखूँ।

विधि—अवं पुञ्जं करेय्य—आप पुण्य करे। इह अवं भुञ्जेय्य—आप
यहाँ खायें। माणवकं अवं अजभापेय्य—लड़के को आप पढ़ावें।

अनुज्ञा—एवं करेय्यासि—ऐसा करो। गाथं त्वं भणे गच्छेय्यासि—हे, तुम
गाँव जाओ।

स त्य र हे स्वे य्या वि ६.११—समर्थ होने के अर्थ में भी, धातु से परे ये प्रत्यय
होते हैं। जैसे—अवं खलु रज्जं करेय्य—आप राज्य भी कर सकते हैं।

२. ए य्ये य्या से य्य हं हे ६.७५—'एय्य', 'एय्यासि', तथा 'एय्यं' का
विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—पचे, पचेय्य। पचे, पचेय्यासि। पचे,
पचेय्यं।

३. ए य्युं ल्लुं ६.४७—'एय्युं' प्रत्यय का विकल्प से 'उं' आदेश होता है।
जैसे—पच + एय्युं = पच + उं = पचुं ; पचेय्युं।

४. ए य्या म स्से भु न ६.७८—'एय्याम' का विकल्प से 'एमु' आदेश हो
जाता है। जैसे—पचेभु, पचेय्याम, पचेय्याभु।

५. अ लिथि ते य्या वि च्छ वं स तु स त थ सं सा म ६.५०—आ दि हि न्नि मि या
इ थुं ६.५१—'प्रस' धातु से परे, इन प्रत्ययों के आने से, उसके रूप निम्न प्रकार
होते हैं—

अनुज्ञा

परस्मै पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म षु रि स	पचतु	पचन्तु
म जिह्म षु रि स	पच्च, पच्चाहिं	पच्चथ
उत्त म षु रि स	पच्चासि	पच्चास

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म षु रि स	अस्स, सिया	अस्सु, सियुं
म जिह्म षु रि स	अस्स	अस्सथ
उत्त म षु रि स	अस्सं	अस्सास

६. ए य्या स्सि या जा वा ६.६३—‘जा’ धातु से परे, ‘एय्य’ का विकल्प से ‘इया’ तथा ‘जा’ आदेश हो जाता है। जैसे—जा + एय्य = जानिया, जञ्जा। विकल्प से—जानेय्य।

जा म्हि जं ६.६२—‘एय्य’ का ‘जा’ आदेश होने पर, ‘जा’ धातु का ‘ज’ आदेश हो जाता है। जैसे—जा + एय्य = जा + जा = जं + जा = जञ्जा।

७. क यि रे य्य स्से य्यु मा दो नं ६.७०—‘कयिरा’ से परे, ‘एय्यु’ आदि के ‘एय्य’ का लोप हो जाता है। जैसे—कयिरा + एय्यु = कयिरा + उं = कयिहं। कयिरा + एय्यासि = कयिरा + आसि = कयिरासि। कयिराथ। कयिरामि। कयिराम।

टा ६.७१—‘कयिरा’ से परे, ‘एय्य’ का ‘आ’ आदेश हो जाता है। जैसे—सो कयिरा।

ए थ स्ता ६.७२—‘कयिरा’ से परे, ‘एथ’ का ‘आथ’ हो जाता है। जैसे—कयिराथ।

८. तु अन्तु, हि थ, मि म; तं अन्तं, स्सु व्हो, ए आमसे ६.१०—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि में, धातु से परे ‘तु’ आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचतु, पचन्तु इत्यादि।

आसर्ग्ये ष्ह

	ए क व च न	अ भे क ष च ल
पठस पुरिस	पचतं	पचस्तं
मज्झिम पुरिस	पचस्तु	पचदहो
उत्तम पुरिस	पचे	पचामहे

प्रश्न में—किन्तु खलु भो व्याकरणं अधीयस्सु—क्या तु व्याकरण पढ़ रहा है ?

प्रार्थना में—इदाहि से—मुझको वो ! जोदलु भवं—आप जाँदे !

विधि में—कटं करोतु भवं—आप चटाई बनावे । पुञ्जं करोतु भवं—
आप पुण्य करे ।

६. हि मि मे स्त्र स्स ६.५७—‘हि’, ‘मि’ तथा ‘म’ प्रत्ययों से पूर्व, अकार का आकार हो जाता है । जैसे—पचाहि ।

हि स्स तो लो पो ६.४८—अकार से परे, ‘हि’ का विकल्प ने लोप हो जाता है । जैसे—गच्छ, गच्छाहि ।

द्रष्टव्य—अनुज्ञा में—‘अस’ धातु के रूप इस प्रकार होंगे—

अत्थु	सन्तु
अहि	अत्थ
अस्मि	अस्म

सि हि स्व ट् ६.५३—‘सि’ तथा ‘हि’ प्रत्ययों के आने से, ‘अस’ धातु का ‘अ’ आदेश हो जाता है । जैसे—

अस् + हि = अ + हि = अहि । असि ।

विधिलिङ्ग में नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मङ्गलम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	स्वादि	भवेद्यथ, सवे	भवेद्यथं	भवेद्यासि	भवेद्यथाथ	भवेद्यथसि	भवेद्यथाम
हु	"	हेद्य	हेद्यं	हेद्यासि	हेद्याथ	हेद्यथसि	हेद्याम
नी	"	नेद्य	नेद्यं	नेद्यासि	नेद्याथ	नेद्यथसि	नेद्याम
या	"	यायेद्य	यायेद्यं	यायेद्यासि	यायेद्यथाथ	यायेद्यथसि	यायेद्याम
पच	"	पचेद्य, पचे	पचेद्यं	पचेद्यासि	पचेद्यथाथ	पचेद्यथसि	पचेद्याम
रुध	रुधादि	रुधेद्य, रुधे	रुधेद्यं	रुधेद्यासि	रुधेद्यथाथ	रुधेद्यथसि	रुधेद्याम
दिय	दिवादि	दिब्बेद्य, दिब्बे	दिब्बेद्यं	दिब्बेद्यासि	दिब्बेद्यथाथ	दिब्बेद्यथसि	दिब्बेद्याम
भा	"	भायेद्य	भायेद्यं	भायेद्यासि	भायेद्यथाथ	भायेद्यथसि	भायेद्याम
तुद	तुदादि	तुदेद्य	तुदेद्यं	तुदेद्यासि	तुदेद्यथाथ	तुदेद्यथसि	तुदेद्याम
जि	ज्यादि	जिनेद्य, जेद्य	जिनेद्यं	जिनेद्यासि	जिनेद्यथाथ	जिनेद्यथसि	जिनेद्याम
की	क्यादि	किणेद्य, किणे	किणेद्यं	किण्यथासि	किण्यथाथ	किण्यथसि	किण्यथाम
सु	स्वादि	सुणेद्य, सुणे	सुणेद्यं	सुण्यथासि	सुण्यथाथ	सुण्यथसि	सुण्यथाम
तन	तनादि	तनेद्य, तने	तनेद्यं	तनेद्यासि	तनेद्यथाथ	तनेद्यथसि	तनेद्याम
चुर	चुरादि	चोरेद्य, चोरे	चोरेद्यं	चोरेद्यासि	चोरेद्यथाथ	चोरेद्यथसि	चोरेद्याम
कथ	"	कथेद्य	कथेद्यं	कथेद्यासि	कथेद्यथाथ	कथेद्यथसि	कथेद्याम
भय	"	भायेद्य	भायेद्यं	भायेद्यासि	भायेद्यथाथ	भायेद्यथसि	भायेद्याम

अनुज्ञा से नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		अलिङ्गम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	स्वादि	भवतु	भवन्तु	भव, भवाहि	सवथ	भवामि	भवाम
हृ	"	होतु	होन्तु	होहि	होथ	होमि	होम
ती	"	नयतु	नयन्तु	नय, नयाहि	नयथ	नयामि	नयाम
या	"	यातु	यान्तु	याहि	याथ	यामि	याम
पच	"	पचतु	पचन्तु	पच, पचाहि	पचथ	पचामि	पचाम
रथ	रथादि	रथन्तु	रथन्तु	रन्थ, रन्थाहि	रन्थथ	रन्थामि	रन्थाम
दिव	दिवादि	दिबन्तु	दिबन्तु	दिट, दिव्वाहि	दिब्वथ	दिब्वामि	दिब्वाम
भा	"	भायतु	भायन्तु	भाय, भायाहि	भाधर	भायामि	भायाम
तुद	"	तुदतु	तुदन्तु	तुद, तुदाहि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
जि	ज्यादि	जितातु	जितन्तु	जित, जिनाहि	जित्नाथ	जित्नामि	जित्नाम
की	क्यादि	किणातु	किणन्तु	किण, किणाहि	किणाथ	किणांमि	किणांम
सु	स्वादि	सुणोतु	सुणन्तु	सुण, सुणाहि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तन	तनादि	तनोतु	तनोन्तु	तनोहि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चुर	चुरादि	चोरेतु, चोरयतु	चोरेन्तु	चोरोहि	चोरोथ	चोरोमि	चोरोम
कथ	"	कथेत्तु, कथयतु	कथेन्तु	कथेहि	कथेथ	कथेमि	कथेम
भाप	"	भापेत्तु, भापयतु	भापेन्तु	भापेहि	भापेथ	भापेमि	भापेम

१४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) अत्तानं चे पियं जञ्जा (जानेय्य, जानिया), तं सुरक्खितं रक्खेय्य । अत्तानं एव पठमं पटिरूपे निब्वेस्ये । ततो परं अञ्जं अनुसासेय्य । एवं सति, पण्डितो न किलिस्सेय्य । अत्ता हि अत्तनो नाथो, कोहि नाथो परो सिया । हीनं धम्मं न सेवेय्य, पमादेन न संबले (सवसेय्य), कल्याणे मित्ते भजेय्य, मिच्छा-दिट्ठि जहेय्य, लोक-वड्ढनो न सिया । उत्तिट्ठेय्य न प्पमज्जेय्य, सुचरितं धम्मं चरे (चरेय्य) । न भजे पापके मित्ते; कल्याणे मित्ते भजे । दानं चे ददेय्य, (दज्जेय्य, दज्जा वा) सीलसम्पन्नानं पञ्चावत्तानं देय्य । सन्धिरेव सप्पासेथ, बालानं (बालोहि वा) सन्धवं न करेय्य (करे, कुब्बेय्य, कुब्बेथ वा) । सरणं चे गच्छेय्य, बुद्धानं सरणं गच्छेय्य । धम्मं चे जानेय्य, खिप्पं पधानं पदहेय्य ।

* ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'अनुज्ञा' में लिखिए ।

- (ख) चारिकं चरथ, धम्मं देसेथ, धम्मं पकासेथ । एवं करोहि, एवं ब्रूहि, एव निसीदाहि । धम्मं सुणाथ, साधुकं मनसि-करोथ । तिट्ठ, तिट्ठ । एवं होहि । धि रत्थु ! भगवा धम्मं देसेतु । पटिभातु आयुस्मन्तं एतस्स भासितस्स अत्थो ति । भव-सोतं छिन्दथ । धम्मं धारेतु । कथेतु भवं गोतमो धम्मं ।

* ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'विधि लिङ्ग' में लिखिए ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

- (क) बुद्ध की शरण जाओ । धर्म का आचरण करो । पाप मत करो । सब बोलो । धर्म-ग्रन्थों को पढ़ो । भगवान् ही इस बात को कहें, सुगत ही इस कथन का अर्थ समझावें ।
- (ख) हम लोग पुस्तक पढ़ें, अथवा उद्यान में जावें ? तुम लोग त्रिपिटक पढ़ो । वे लोग जातक पढ़ें, अथवा अटुकथा । जातक ही पढ़ें । नहीं तो अटुकथा ही पढ़ें ।

तीसरा काण्ड

तीसरा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

१. षष्ठी विभक्ति

§ १८. षष्ठी मत्थ मत्ते २.३६—अर्थ-मात्र को प्रकट करने में, किसी नाम से परे, 'षष्ठी' विभक्ति होती है। जैसे—**खखो**।

पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**दोणो**। **खारी**। **अल्हकं**।

परिमाण (=वचन) भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**मनुस्सो**। **मनुस्सा**।

संख्या भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—**एको**। **द्वे**। **बहवो**।

२. द्वितीया विभक्ति

§ १९. ध्या दी हि यु त्ता २.६—धि (=धिव्कार), हा (शोक प्रकट करने के अर्थ में), अन्तरा (=बीच में), अन्तरेन (=विना, बीच में), अभितो (=दोनों ओर), परितो (=चारों ओर), सब्बतो (=सभी ओर) तथा, उभयतो (=दोनों ओर) शब्दों के योग में 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—धि अलसं सिस्सं =अलसी शिष्य को धिव्कार है। **हा पुत्तं!** =हाय बेटा! **अन्तरा च राजगहं, अन्तरा च नाळन्दं** =राजगृह और नालन्दा के बीच। **भूपं अन्तरेन पासादो न सोभति** =राजा के विना प्रासाद शोभा नहीं देता है। **तळाकं अभितो—उभयतो दीघा खखा तिट्ठन्ति** =तालाब के दोनों ओर, लम्बे लम्बे पेड़ हैं। **गामं परितो—सब्बतो पब्बतो** =ग्राम के चारों ओर पर्वत है।

§ २०. ल क्ख णि त्थ स्मू त्थी च्छा स्व भि ना २.१०—संकेत करने, इस तरह का बताने, तथा व्याप्त करने के अर्थ में, 'अभि' शब्द के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—पव्वतं अभि जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अभि = यज्जदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। ख्वं ख्वं अभि तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है।

§ २१. प ति ष री हि भा गो च्च २.११—ऊपर के ही अर्थों में, तथा हिस्सा होने के अर्थ में, 'पति' और 'परि' शब्दों के योग में 'दुतिया' विभक्ति होती है।

जैसे—पव्वतं पति (=परि) जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं पति = परि = देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। ख्वं ख्वं पति (=परि) तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो सं पति (=परि) भवति = वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§ २२. अनु ना २.१२—ऊपर के ही अर्थों में, 'अनु' शब्द के योग में, 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—पव्वतं अनु जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु = देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धायुक्त है। ख्वं ख्वं अनु तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो सं अनु भवति = वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§ २३. सह त्थे २.१३—साथ होने के अर्थ में, 'अनु' शब्द के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—आच्चरिथं अनु गच्छति सिस्सो = शिष्य आचार्य के साथ साथ जा रहा है।

§ २४. ही नेः उपे न २.१४.१५—उससे कम होने के अर्थ में, 'अनु' तथा 'उप' शब्दों के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—अनु उपालित्थेरं विनयधरा = उपालि स्थविर से दूसरे भिक्षु विनय जानने में कम थे। उप उपालित्थेरं विनयधरा।

§ २५. रि ते दु ति या चः वि ऩा च्च त ति या च्च २.३१.३२—'रिते' (=विना), 'विना', तथा 'अच्चत्र' (=अन्यत्र) शब्दों के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—सद्वर्ण रिते अञ्जो को जने रक्खति ? =सद्वर्म के बिना, अन्य कौन मनुष्यों की रक्षा कर सकता है ? जलं विना रक्खो सुखति =जल के बिना, पेड़ सूख रहा है । तथागतं अञ्जत्र को अञ्जो लोकनाथको ? =तथागत (बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोक-गुरु है ?

३. ततिया विभक्ति

§ २६. लक्खणे २.२०—लक्षण के अर्थ में, 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—तिदण्डकेन परिद्वाराजको बुज्झति =त्रिदण्ड से परिद्वाराजक वूझा जाना है । नयनेन काणो =आँख से काना । पादेन खञ्जो =पैर से लगडा ।

§ २७. हे तु भिह २.२१—हेतु के अर्थ में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—सो इध अश्सेन वसति =वह यहाँ खाने के उद्देश्य से वास करता है ; धम्ममेन यसो वड्ढति =धर्म से यश बढ़ता है ।

§ २८. वि ना अञ्जत्र त ति या च २.३२—'विना' तथा 'अञ्जत्र' शब्दों के योग में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—जलेन विना रक्खो सुखति =जल के बिना पेड़ सूख रहा है । तथा-गतेन अञ्जत्र को अञ्जो लोकनाथको ? =तथागत (=बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोकगुरु है ?

§ २९. पु थ ना ना हि २.३३—पुथ (=पृथक्), और नाना (=भिन्न) शब्दों के योग में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—पुथगेव गामेन सो अरञ्जं अधिवसति =गाँव में पृथक् ही, वह जगल में रहता है । सोगतधम्ममेन नाना तित्थियधम्मो =सुगत (=बुद्ध) के धर्म में भिन्न ही तैथिकों का धर्म है ।

५. पञ्चमी विभक्ति

§ ३०. पञ्चमी णे वा २.२२—ऋण के हेतु में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है ; और 'ततिया' भी ।

जैसे—सतस्मा बद्धो ; सतेन बद्धो =सौ रूपए के ऋण से बँधा है ।

§ ३१. गु णे २.२३—पराङ्गभूत हेतु में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है । जैसे—

सङ्खारनिरोधो विज्जाणनिरोधो—संस्कार के निरोध होने से, विज्ञान का निरोध होता है।

§ ३२. अ ष ष री हि व ऊज्ज ने २.२६—वर्जन करने के अर्थ में, 'अप' और 'परि' शब्दों के योग में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है। जैसे—अप पाटलिपुत्तस्मा बुद्धो देवो—परि पाटलिपुत्तस्मा बुद्धो देवो—पाटलिपुत्र को छोड़, दूसरे स्थानों में वृष्टि हुई।

§ ३३. ष टि नि धि ष टि द्वा ने षु प ति ना २.३०—प्रतिनिधि और प्रतिदान के अर्थ में, 'पति' शब्द के योग में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है।

जैसे—बुद्धस्मा पति सारिपुत्तो—सारिपुत्र बुद्ध के प्रतिनिधि हैं। घतं तेलस्मा पति ददाति—तेल ले कर घी देता है।

§ ३४. रि ते दु ति या च २.३१ : वि ना अज्ज त्र त ति या च २.३२ : पु थ ना ना हि २.३३—'रिते', 'विना', 'अज्जत्र', 'पुथ', तथा 'नाना' शब्दों के योग में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है।

जैसे—सद्धम्मस्मा रिते अज्जो को जने रक्खति ? —सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यों की रक्षा कर सकता है ? जलस्मा विना रक्खो सुक्खति—जल के बिना पेड़ सूख रहा है। तथागतस्मा अज्जत्र को अज्जो लोकनायको—तथागत को छोड़, दूसरा कौन लोग-गुरु है ? पुथगेव गामस्मा सो अरज्जं अधिवसति—ग्राम से पृथक्, वह जंगल में वास करता है। सोगतधम्मस्मा नाना तिथियधम्मो—सुगत (बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैथिकों का धर्म है।

६. छट्ठी

§ ३५. छट्ठी हे त्त्वत्थे हि २.२४—हेत्वर्थक शब्दों के योग में 'छट्ठी विभक्ति' होती है। जैसे—उदरस्स हेतु; उदरस्स कारणो—पेट के हेतु।

७. सत्तमी

§ ३६. सत्तम्या धि क्थे २.१६—अधिक होने के अर्थ में, 'उप' शब्द के योग में 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—उप खारियं दोणो—खारि (एक पुराना तौल का माप) से अधिक दोण है।

§ ३७. सा मि ते धि ना २.१७—स्वामी होने के अर्थ में, 'अधि' शब्द के योग में, सत्तमी विभक्ति होती है। जैसे—अधि पञ्चालेषु ब्रह्मदत्तौ = पाञ्चाल देश पर ब्रह्मदत्त का आधिपत्य है।

§ ३८. आधार की विवक्षा में, सम्प्रदान के स्थान से सप्तमी भी होती है। जैसे—संघे देति = संघ को देता है।

§ ३९. स ब्बा हि तो स ब्बा २.२५—हेत्वर्थक शब्दों के योग में, 'सब्ब' आदि शब्दों के साथ सभी विभक्तियाँ होती हैं।

जैसे—को हेतु, कं हेतुं, केन हेतुना, कस्स हेतुस्स, कस्मा हेतुस्सा, कस्स हेतुस्स, कस्मिं हेतुस्मिं ।

किं कारणं, केन कारणेन इत्यादि ।

किं निमित्तं, केन निमित्तेन इत्यादि ।

किं पयोजनं, केन पयोजनेन इत्यादि ।

१५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धा । बुद्धे । पञ्जा । कञ्जाय । रत्तिया । सब्बस्स । ब्रह्मदत्तो नाम राजा अहोसि । बुद्धघोसो नाम आचरियो अहोसि । 'बुद्धो बुद्धो' ति सुत्वा सुमेधो तुट्टहट्टो जातो । निब्बाणं नाम सब्बेसं संखारानं उपसमो । एवं बुद्धा वदन्ति । पुञ्जानि वड्ढन्ति, पापानि परिहायन्ति ।

बुद्धो धम्मं देसेति । माणवको मासं सज्भायति । भगवा सत्ताहं निसीदि । माणवो कोसं सज्भायति । रुक्खं अनुविज्जोतते चन्दो । गामं गामं अनु वस्सति देवो । अन्तरा च नाळन्दं अन्तरा च राजगहं । अभितो गामं । उपमा मं पटि-भाति । एकमन्तं निसीदि । सीघं सीघं गच्छति । फले खादि ।

रुक्खं खग्गेन छिन्दति । बुद्धेन देसितो धम्मो । तिलेहि खेत्ते वपति । कञ्जाय पच्छा माता गच्छति । केन हेतुना वसति ? अन्नेन वसति । कम्मना (कम्मना) ब्राह्मणो होति । येन भगवा तेन उपसङ्कमिसु । अक्खिना काणो । वण्णेन अभिरूपो । जातिया सत्त-वस्सिको ।

भिक्खुस्स दानं देति । नमो बुद्धस्स । देसेतु, भन्ते ! भगवा धम्मं भिक्खूनं । सग्गाय संवत्तति । अलं मे तेन धनेन । सग्गाय गच्छति । तथा तस्स फासु होति । भोगाय वजति ।

पापा चित्तं निवारति । यस्मा खेमं, ततो भयं । पेमतो जायति सोको । पञ्जाय सुगतिं यन्ति । इतो वहिद्धा । अञ्जत्र दुक्खा । उद्धं पाद-तला अधो केसमत्थका ।

भिक्खुस्स चीवरं किस्स हेतु अल्लं ति ? बुद्धो भगवा पूजितो राजानं (रञ्जं) सुमानितो च । पापस्स अकरणं सुखं । सप्पिस्स पत्तं पूरेत्वा गतो । सब्बेसं भिक्खूनं आनन्दो दस्सनीयतमो । सब्बे भायन्ति मच्चुनो (मच्चुना) । पुत्तस्स (पुत्तं) इच्छमानो देवं अच्चति ।

भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने । पसन्नो बुद्धसासने । कदलीसु गजे रक्खन्ति । सम्पटिच्छामि मत्थके (= शिरोधार्यं करता हूँ) । वज्जेसु भय-

दस्सावी । जायमाने बोधिसत्ते अयं लोकधातु संकप्पि । इमस्मिं सति इदं होति ।
दन्तेसु हञ्जते नागो ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों में कौसी विभक्तियां हैं ?

३. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के कारक बताइए—

(अनियमित विभक्तियों के कुछ उदाहरण)

बुद्धं सरणं गच्छामि । एकं समयं भगवा सावस्थियं विहरति । सो भिक्खु
इतो चुतो सगं लोकं उप्पज्जि । भिक्खुसंघं पिट्ठित्तो पिट्ठित्तो अगमासि ।

तेन खो पन समयेन । येन भगवा तेन उपसङ्कमि ।

दुक्खस्स भीतो अहं रुदन्तानं मातापितुन्नं बुद्धसासने पव्वजि । सब्बे तसन्ति
दण्डस्स ।

उपासका भिक्खूसु अभिवादेन्ति । सङ्घे दिन्नं महप्फलं होति ।

तीसरा काण्ड

बौधा पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

§ १. क्त्वरि भूते क्तवन्तु, क्तावी ५.५५—भूतकाल के अर्थ में, धातु में परे, 'क्तवन्तु' और 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है; अतः वह कर्ता के लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति को प्राप्त होता है।

जैसे—वि + जि + क्तवन्तु = विजितवन्तु । वि + जि + क्तावी = विजितावी । इनका अर्थ हुआ—“वह, जिसने विजय पा ली है” ।

§ २. पुल्लिङ्ग, तथा नपुंसकलिङ्ग में 'विजितवन्तु' शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान, और 'विजितावी' शब्द के रूप 'दण्डी' के समान होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग में, 'विजितवन्तु' का रूप 'विजितवती', या 'विजितवन्ती'; तथा 'विजितावी' का रूप 'विजिताविनी' हो जायगा : और, उनके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होंगे । जैसे—

पुंलिङ्ग में—विजितवा, विजितावी वा खत्तियो = विजय पा लिया क्षत्रिय । विजितवन्तो, विजिताविनो वा खत्तिया = विजय पा लिए क्षत्रिय लोग । विजितवन्तं, विजिताविनं वा खत्तियं = विजय पा लिए क्षत्रिय को इत्यादि ।

स्त्रीलिङ्ग में—विजितवती, विजितवन्ती, विजिताविनी वा इत्थी = विजय पाई हुई स्त्री इत्यादि ।

§ ३. क्तो भा व क म्मे सु ५.५६—भूतकाल के अर्थ में, कर्म और भाव वाच्य में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—कर + क्त = कर्तं । वि + जि + क्त = विजितं ।

‘क्त’ प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्म का विशेषण होता है। जैसे—
रज्जं विजितं रज्ज्या=राजा के द्वारा राज जीता गया। रज्जानि विजितानि
रज्ज्या=राजा के द्वारा राज्य जीते गए। इत्थी विजिता रज्ज्या=राजा के द्वारा
स्त्री जीती गई। रज्ज्या विजिते लगरे महाधनं अस्थि=राजा के द्वारा जीते
गए नगर में बहुत धन है।

भाववाच्य में, वह सदा नपुंसक लिए एक वचन रहता है। जैसे—सदा हसितं
=मेरे द्वारा हँसा गया। अम्हेहि हसितं=हम लोगों के द्वारा हँसा गया। त्वया
हसितं। तुम्हेहि हसितं। बालकेन हसितं। कञ्जाय हसितं।

§ ४. क त्ति र् च्चा र म्भे ५.५७—क्रिया-आरम्भ के अर्थ में, कर्तृवाच्य में भी,
धातु से परे ‘क्त’ प्रत्यय होता है; और यथाप्राप्त कर्म तथा भाव वाच्य में भी। जैसे—
(कर्तृ) पकतो भवं कटं=आप ने चटाई बनाना प्रारम्भ किया है। (कर्म)
पकतो भोता कटो=आप से चटाई बनाना प्रारम्भ किया गया है।

(कर्तृ) पसुतो भवं=आप नोए है। (भाव) पमुत्तं भयता=आप के
द्वारा सोया गया।

§ ५. ठास वस सिलिस ली रुह ज र ज नी हि ५.५८—कर्तृ, कर्म, और भाव-
तीनों वाच्य में, ‘ठा’ (=ठहरना) इत्यादि धातुओं से परे, ‘क्त’ प्रत्यय होता है।
जैसे—(कर्तृ) उपट्टितो गुरं भवं=आप ने गुरु का उपस्थान (=सेवा-टहल)
किया। (कर्म) उपट्टितो गुरु भोता=आप के द्वारा गुरु उपस्थान किए गए।

§ ६. ग म न तथा क म्म का धा रे च ५.५९—गमनार्थ और अकर्मक धातु से
पर, आधार के अर्थ में भी, कर्ता कर्म और भाव में ‘क्त’ प्रत्यय होता है। जैसे—

(भाव) इदं तेसं यातं। (कर्तृ) इह ते याता। (कर्म) इह तेहि यातं
=यही वह स्थान है, जहाँ वे लोग गए थे इत्यादि।

§ ७. आ हार तथा ५.६०—भोजनार्थक और पानार्थक धातुओं से परे,
आधार के अर्थ में, ‘क्त’ प्रत्यय होता है। जैसे—

इदं तेसं भुत्तं, इह तेहि भुत्तं=यही वह स्थान है, जहाँ उन लोगों ने भोजन
किया था।

§ ८. न ते कानुबन्ध ना ग मे सु ५.६५—वा क्व चि ५.६६—क्त, तथा
क्तवतु प्रत्ययों के आने से, (प्रत्यय में यदि ‘क’ अनुबन्ध हो) धातु के उपान्त ‘अ’, ‘इ’

तथा 'उ' की वृद्धि साधारणतः तो नहीं होती है; किंतु, कहीं कहीं विकल्प से हो भी जाती है। जैसे—

वृद्धि नहीं हुई—चि + क्त = चितो । सुतो । दिट्ठो । पुट्ठो । विजितं ।
वृद्धि विकल्प से हुई—मुदितो, बोदितो । रुदितं, रोदितं ।

§ ९. 'क्तवन्तु', तथा 'क्त' प्रत्ययों के लगने से, कुछ विशेष धातु के रूपः—
गम—गतवा, गतं । हन—हतवा, हतं । मन—मतवा, मतं । तन—ततवा, ततं । रम—रतवा, रतं । कर—कतवा, कतं । वच^१—उत्तवा, उत्तं । वस^१—उत्थवा उत्थं । वड्ढ^१—वड्ढवा, वड्ढं । यज^१—इड्ढवा यिड्ढवा, इट्ठं यिट्ठं ।

१. गमादिरानं लोपो 'स्तस्त' ५.१०९—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़, 'क' अनुबन्ध वाले दूसरे प्रत्ययों के आने से, 'गम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट], तथा रकारान्त धातुओं के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। जैसे—

गम + क्त = गतं । खन + क्त = खतं । हन—हतं । मतं । ततं । सञ्जतं । रतं । कर + क्त = कतं ।

[किंतु—गम + क्य + ते = गम्यते । यहाँ 'गम' के मकार का लोप नहीं हुआ; क्योंकि, 'क्य' प्रत्यय में 'क' अनुबन्ध होने पर भी उसके साथ 'तकार' नहीं है ।]

२. वच्चादीनां वस्सुट् वा ५.११०—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़, 'वच' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के 'व' का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—वच + क्त = वुत्तं, उत्तं । वस + क्त = वुत्थं, उत्थं ।

३. अस्सु ५.१११—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के अकार का उकार हो जाता है। जैसे—वस + क्त = वुत्थं ।

सास वस संस ससा थो ५.११४—'सास', 'वस', 'संस', तथा 'सस' धातुओं से परे, 'त' का 'थ' हो जाता है। जैसे—साम + क्त = सत्थं । वस + क्त = वुत्थं । प + संस + क्त = पसत्थं । सस + क्त = सत्थं ।

४. वड्ढस्स वा ५.११२—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' धातु के अकार का विकल्प से उकार होता है। जैसे—वड्ढ + क्त = वड्ढं, वुड्ढं ।

५. यजस्स थस्स टिथो ५.११३—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' धातु के 'य' का 'इ' तथा 'यि' आदेश होता है। जैसे—यज + क्त = इट्ठं, यिट्ठं ।

ठा^१—ठित्वा, ठितं । गा^२—गीतवा, गीतं । पा—पीतवा, पीतं । जनि^३—जातवा, जातं । सास^४—सिट्टवा, सिट्ठं । धा^५—निहितवा, निहितं । तुस^६—तुट्टवा तुट्ठं । कस^७—किट्टवा कट्टवा, किट्ठं कट्ठं । पुच्छ^८—पुट्टवा, पुट्ठं । बुध^९—बुद्धवा, बुद्धं । दह^{१०}—दड्ढवा, दड्ढं । वह^{११}—बुड्ढवा, बुड्ढं । आरह^{१२}

६. ठा स्ति ५.११४—‘क्त्वा’ तथा०, ‘ठा’ धातु का ‘ठि’ आदेश होता है ।
ठा + क्त = ठितं ।

७. गा पा न मी ५.११५—० ‘गा’ धातु का ‘गी’, तथा ‘पा’ धातु का ‘पी’ आदेश हो जाता है । जैसे—गा + क्त = गीतं । पा + क्त = पीतं ।

८. ज नि स्ता ५.११६—० ‘जनि’ धातु का ‘जान’ आदेश हो जाता है ।
जैसे—जातं ।

९. सा स स्त सि स्त्वा ५.११७—० ‘सास’ धातु का विकल्प में ‘सिस’ आदेश हो जाता है । जैसे—मास + क्त = सिट्ठं । सत्यं, सिस्सो, सासियो ।

१०. धा स्त हि ५.१०८—० ‘धा’ धातु का ‘हि’ आदेश हो जाता है ।
जैसे—निहितं, निहितवा ।

११. सा नन्त र स्त त स्त ठे ५.१४०—सकारान्त धातु से परे, ‘त’ का ‘ठ’ हो जाता है । जैसे—तुस + क्त = तुट्ठे । तुट्टवा । तुस + तब्बं = तुट्ठब्बं ।
तुस + क्त = तुट्ठि ।

१२. क स स्ति म् च वा ५.१४१—‘कस’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ठ’ हो जाता है । ‘कस’ का विकल्प से ‘किस’ हो जाता है । जैसे—कस + क्त = किट्ठं, कट्ठं ।

१३. पु च्छा दि तो ५.१४३—‘पुच्छ’ आदि धातुओं से परे, ‘त’ का ‘ठ’ हो जाता है । जैसे—पुच्छ + क्त = पुट्ठं । भज—भट्ठं । यज—यिट्ठं ।

१४. धो ध ह भे हि ५.१४५—धकारान्त, हकारान्त, तथा भकारान्त धातु से परे, ‘त’ का ‘ध’ हो जाता है । जैसे—बुध + क्त = बुद्धं । दुह + क्त = दुद्धं ।
लभ + क्त = लद्धं ।

१५. दहा ढो ५.१४६—‘दह’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ढ’ हो जाता है ।
जैसे—दह + क्त = दड्ढो ।

१६. बह स्तु म् च ५.१४७—‘वह’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ढ’ हो जाता है ।
‘वह’ का ‘बुह’ हो जाता है । जैसे—वह + क्त = बुड्ढो ।

—आरूहवा, आरूहं। मुह^{१८}—मूहवा, मूहं। भिद^{१९}—भिन्नवा, भिन्नं। दा^{२०}—दिन्नवा, दिन्नं। किर^{२१}—किण्णवा, किण्णं। तर^{२२}—सिण्णवा, सिण्णं।

१७. र हा दी हि हौ ङ च ५.१४८—‘रूह’ आदि धातुओं से परे, ‘त’ का ‘ह’ हो जाता है; धातु के अन्त्य वर्ण का ‘ङ’ हो जाता है। जैसे—आरूह + क्त = आरूह्यहो। गुह + क्त = गुह्यहो। वह—बूह्यहो। वह—बाह्यहो।

व ह स्तु स्स ५.१०७—‘क्त्वा’ और ‘नक्त्वा’ को छोड़, तकारादि ‘क’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, ‘वह’ धातु का ‘वूह’ आदेश हो जाता है। जैसे—

वह + क्त = बूह्यहो।

मुह वहां नं च ते कानुबन्धे त्वे ५.१०६—‘क्त्वा’ और ‘नक्त्वा’ को छोड़, तकारादि ‘क’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, ‘मुह’, ‘वह’ तथा ‘गुह’ धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है। जैसे—गुह + क्त = गूह्यहो। मुह + क्त = मूह्यहो। वह + क्त = बाह्यहो।

१८. मु हा वा ५.१४९—‘मुह’ धातु के साथ विकल्प से होता है। जैसे—मूह्यहो, मुड्यहो।

१९. भि दा दितो नो क्त क्त वल्लूनं ५.१५०—‘भिद’ आदि धातुओं से परे ‘क्त’ या ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय हो, तो उसके ‘त’ का ‘न’ हो जाता है। जैसे—भिद + क्त = भिद + त = भिद + न = भिन्नो। भिन्नवा। छिन्नो, छिन्नवा। छन्नो, छन्नवा। खिन्नो, खिन्नवा। उप्पन्नो, उप्पन्नवा। सिन्नो, सिन्नवा। सन्तो, सन्तवा। पीनो, पीनवा। सूनो, सूनवा। दीनो, दीनवा। डीनो, डीनवा। लीनो, लीनवा। लूनो, लूनवा।

२०. दा त्वि न्नो ५.१५१—‘दा’ धातु से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘इन्न’ हो जाता है। जैसे—दा + क्त = दिन्नो। दिन्नवा।

२१. कि रा दी हि णो ५.१५२—‘किर’ आदि धातुओं से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘ण’ हो जाता है। जैसे—किर + क्त = किण्णो, किण्णवा। पूर + क्त = पुण्णो, पुण्णवा। खीणो, खीणवा।

२२. त रा दी हि रि ण्णो ५.१५३—‘तर’ आदि धातुओं से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘रिण्ण’ हो जाता है। जैसे—तर + क्त = तर +

भञ्ज^{३३}—भग्वा, भग्गं । मुन^{३४}—मुद्वन्वा, मुद्वन् । पच^{३५}—पक्कवा, पक्कं ।
मुच^{३६}—मुक्कवा, मुत्तवा, मुवत्तं, मुत्तं । धंस^{३७}—धस्तो । तम—त्रस्तो ।

इष्ण = तिष्णो । तिष्णवा । जिष्णो, जिष्णवा । चिष्णो, चिष्णवा ।

२३. गो भञ्जा दी हि ५.१५४—'भञ्ज' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ग' हो जाता है । जैसे—भञ्ज + क्त = भग्गो । भग्वा । लग्गो, लग्गवा । निदुग्गो, निदुग्गवा । संजिग्गो, संजिग्गवा ।

२४. सुत्ता खो ५.१५५—'मुन' धातु से परे ० 'त' का 'व' होता है । जैसे—
मुन + क्त = मुद्वन्वो, मुद्वन्वा ।

२५. पचा को ५.१५६—'पच' धातु से परे ० 'त' का 'क' होता है । जैसे—
पच + क्त = पक्को, पक्कवा ।

२६. मुचा वा ५.१५७—'मुच' धातु से परे ० 'त' का विकल्प से 'क' होता है । जैसे—मुक्को, मुक्कवा । मुत्तो, मुत्तवा ।

२७. धस्तो त्रस्ता ५.१५२—निपात ।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्सुतवा पृथुज्जनो सप्पुरिस-धम्मो अबिनीतो सब्बं अभिनन्दति । तं किस्स हेतु ? “अपरिञ्जातं तस्सा”ति वदामि । अरहन्तानं (ब्रह्मचरियं) वुसितवन्तानं आसवा खीणा, करणीया कता, भारो ओहितो, सदत्थो अनुप्पत्तो, भवसंयोजना परिकखीणा, होन्ति । तस्सा ते किञ्चि पि नाभि-
नन्दन्ति । परिञ्जात तेसं ति वदामि ।

(ख) दिट्ठं, सुतं, मुतं, विञ्जातं—सब्बं अनिच्चतो पच्चवेक्खित्त्वं । कतं करणीयं । एवं मे सुतं । बालकेन हसित । पकतो भवं कटं । उपट्ठितो गुरु भोता । इदं तेस यातं । इह तेहि भुत्त । फलानि पक्कानि । मार-
सेना न विजितवती ऋयिसु मुनिमु । भगवा सावकेहि पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति ।

(ग) यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति ।
एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति ॥

(धम्मपद १.१३)

गतद्धिनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि ।
सब्बगन्थप्पहीणस्स परिलाहो न विज्झति ॥

(धम्म० ७.१)

सन्तं अस्स मनं होति, सन्ता वाच्चा च कम्म च ।
सम्मदञ्जविमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो ॥

(धम्म० ७.७)

२. निम्नलिखित पदार्थों को याद कीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइए—

“कथित” के अर्थ में—भासितं, लपितं, वुत्तं, अभिहितं, अख्यातं, उदीरितं, गदितं, भणितं, उदितं, कथितं ।

तीसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्व, तुं, त्वा)

तव्व, अनीय, ध्यण्

§ १०. भावकस्मेसु तव्वानीया ५.२७—भाव-वाच्य और कर्मवाच्य में, धातु से परे, बहुधा 'तव्व' और 'अनीय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

(भाव) मया हसितव्वं, हसनीयं वा—मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए। मया निसीदितव्वं निसीदनीयं वा—मेरे द्वारा बैठा जाना चाहिए।

(कर्म) मया कस्तव्वो, करणीयो वा कटो—मुझे चटाई बनानी चाहिए। मया सोतव्वानि, सवनीयानि वा तानी वचनानि—मुझे वे वचन सुनने चाहिए।

§ ११. ध्यण् ५.२८—ऊपर के हि स्थान में, धातु से परे, बहुधा 'ध्यण्' प्रत्यय आता है। 'ध्यण्' का 'य' रह जाता है। जैसे—

मया इदं न वाक्यं^१—मुझे यह नहीं कहना चाहिए। सिस्सेन पुष्फानि च्छेयानि—शिष्य को फूल चुनने चाहिए।

§ १२. आस्से च ५.२९—'ध्यण्' प्रत्यय आने से, धातु के आकार का एकार हो जाता है। जैसे—धनिकेहि दलिह्वानं दानं देय्यं—धनिकों को दरिद्रों को दान

१. कगा चजानं धानुबन्धे ५.९८—'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'च' का 'क', तथा 'ज' का 'ग' हो जाता है। जैसे—वच + ध्यण् = वाक्यं। भज + ध्यण् = भाग्यं।

देना चाहिए । अच्छानि जलानि पेथ्यानि = साफ जल पीने चाहिए ।

§ १३. 'तव्व', 'अनीय', तथा 'ध्यण्' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं । जैसे—

सिनानीयं चूर्णं = वह चूर्ण जिससे स्नान किया जाय । दानीयो ब्राह्मणो = वह ब्राह्मण जिसको दान दिया जाय । उपट्टानीयो सिस्सो = वह शिष्य जिससे उपस्थान (=सेवा-टहल) कराया जाय इत्यादि ।

§ १४. यु व ण्णाने से ओ प्प च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने से, इकारान्त और उकारान्त धातुओं के इकार का एकार, तथा उकार का ओकार हो जाता है । जैसे—

चि + तव्व = चेतव्वं । चि + अनीय = चयनीयं । चि + ध्यण = चेत्यं ।
सोतव्वं । सबनीयं ।

[न ब्रूस्सो ५.९७—'ब्रू' धातु से परे, व्यञ्जनादि प्रत्ययों के आने से, उसके 'ऊ' का 'ओ' नहीं होता है । जैसे—ब्रू + मि = ब्रूमि । स्वरादि प्रत्यय आने से 'ऊ' का 'ओ' हो जाता है । जैसे—ब्रू + इ = अब्रुवि]

§ १५. लहुस्सुपन्तस्स ५.८३—धातु के लघु उपान्त 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है । जैसे—

इस + तव्व = एसितव्वं । कुस + तव्व = कोसितव्वं ।

§ १६. म नानं निग्गहीतं ५.९६—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से उत्तर, यदि 'य' को छोड़ कोई दूसरा व्यञ्जन हो, तो 'म' या 'न' का 'निग्गहीत' (अनुस्वार) हो जाता है । जैसे—गम + तव्व = गं + तव्व = गन्तव्वं । हन + तव्व = हं + तव्व = हन्तव्वं ।

§ १७. इन प्रत्ययों के लगने से कुछ विशेष धातु के रूपः—वद + ध्यण = वज्जं^२ । कर + ध्यण = किच्चं^३ । गुह + ध्यण = गुह्यं^४ । नि + पद + तव्व = निपज्जितव्वं^५ । भिद — भेतव्वं^६ । कर — कातव्वं^७ । नि + सिद — निसीदितव्वं^८ । अस — भवितव्वं^९ ।

२. व दा दी हि यो ५.३०—भाव तथा कर्म से, 'वद' आदि धातुओं से परे, बहुधा 'य' का आगम होता है । जैसे—वद — वज्जं = निन्दनीय । मद — मज्जं । गम — गम्मं ।

तुं, ताये, तवे

(निमित्तार्थक अव्यय)

§ १८. तुं ताये तवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्थायं ५.६१—
‘इस काम के निमित्त’—इस अर्थ में, धातु से परे ‘तुं’, ‘ताये’, और ‘तवे’
प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कातुं गच्छति; कत्ताये गच्छति; कातवे^० गच्छति = करने के लिए जाता है।

३. कि च्च ध च्च भ च्च भ ब्ब ले य्या ५.३१—ये शब्द निपात हैं—कर—
किच्चं। हन—घच्चो। भर—भच्चो = भृत्य। भू—भब्बो = भव्य। लिह—
लेय्यं।

४. गु हा दी हि य क् ५.३२—भाव तथा कर्म में, ‘गुह’ आदि धातुओं से परे,
‘य’ का आगम होता है। जैसे—गुह—गुय्हं। दुह—दुय्हं। सिस—सिस्सो।

५. प दा दी नं व्व च्चि ५.६२—‘पद’ आदि धातुओं से परे, कहीं कहीं ‘य’ का
आगम होता है। जैसे—नि + पद + तव्व = निपज्जितव्वं। निपज्जितुं। निप-
ज्जनं। प + मद + तव्व = पमज्जितव्वं। पमज्जितुं। पमज्जनं।

६. प र रूप म य कारे व्यञ्जने ५.६५—यदि ‘य’ को छोड़, कोई दूसरा
व्यञ्जन परे हो, तो धातु के अन्त्य व्यञ्जन का पर-रूप हो जाता है। जैसे—
भिद + तव्वं = भेतव्वं।

७. तुं तून तव्वे सु वा ५.११६—‘तुं’, ‘तून’, तथा ‘तव्व’ प्रत्ययों के आने
से, ‘कर’ धातु का विकल्प से ‘कार’ हो जाता है। जैसे—कर + तुं = कातुं, कत्तुं।
कातून, कत्तून। कातव्वं, कत्तव्वं।

८. ज र स दान मी भू वा ५.१२३—‘जर’ तथा ‘सद’ धातुओं के अन्तिम
स्वर से परे, विकल्प से ‘ई’ का आगम होता है। जर—जीरणं। जीरति। जीरा-
पेति। जीरितव्वं। निसद—निसीदनं। निसीदितुं। निसीदति। निसीदितव्वं।

९. अ त्या दि न्ते स्व त्थि स्स भू ५.१२८—‘ति’ आदि को छोड़, दूसरे
प्रत्ययों के आने से, ‘होने’ के अर्थ में ‘अस’ धातु का ‘भू’ आदेश होता है। जैसे—
अस + तव्वं = भवितव्वं।

§ १६. निम्न स्थानों में 'तुं' प्रत्यय प्रयुक्त होता है—

- इच्छति भोत्तुं, काश्नेति भोत्तुं = भोजन करने की इच्छा करता है
- सक्कोति भोत्तुं = भोजन कर सकता है
- जानाति भोत्तुं = भोजन करना जानता है
- गिलायति भोत्तुं = भोजन के लिए दुःखित होता है
- घटते भोत्तुं = भोजन करने की कोशिश करता है
- आरभते भोत्तुं = भोजन करना आरम्भ करता है
- लभते भोत्तुं = उसे खाने को मिलता है
- पक्कमति भोत्तुं = भोजन करना आरम्भ करता है
- उस्सहति भोत्तुं = भोजन करने का उत्साह करता है
- अरहति भोत्तुं = भोजन करने के लिए योग्य है
- अत्थि भोत्तुं, विज्जति भोत्तुं = भोजन का सामान है
- कप्पति भोत्तुं = यह चीज भोजन के लिए विहित है
- पारयति भोत्तुं = भोजन कर सकता है
- पहु भोत्तुं = भोजन करने में समर्थ है
- परियत्तो भोत्तुं = भोजन करने में समर्थ है
- अलं भोत्तुं = भोजन करने में समर्थ है
- कालो भोत्तुं = भोजन करने का समय है
- भोत्तुमनो = भोजन करने के मन वाला
- सोत्तुं सोतो = सुनने के लिए कान
- दट्ठुं चक्खु = देखने के लिए आँख
- युज्झितुं धनु = युद्ध करने के लिए धनुष
- वत्तुं जळो = बोलने में जड़
- कत्तुं अलसो = करने में आलसी

१०. कर रसा त वे ५.११८—'तवे' प्रत्यय आने से, 'कर' धातु का 'कार' आदेश हो जाता है। जैसे—

कर + तवे = कातवे ।

§ २०. मं वा रुधादीनं ५.६३—‘रुध’ आदि धातुओं में, अन्तिम स्वर से परे, कहीं कहीं विकल्प से ‘अं’ का आगम होता है। जैसे—
रुन्धितुं; रुञ्जितुं।

तून, क्तवान, क्त्वा

(पूर्वकालिक अव्यय)

§ २१. पुब्बे क क्तु कानं ५.६३—जिन दो क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है, उनमें पहली क्रिया के धातु से परे, विकल्प से ‘तून’, ‘क्तवान’ और ‘क्त्वा’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सो सुणोति याति च—सो सोतून याति, सो सुत्वान याति, सो सुत्वा याति = वह सुन कर जा रहा है।

§ २२. प टि से धे ‘लं खलूनं तु न क्त्वा न क्त्वा वा ५.६२—निषेध करने के अर्थ में यदि ‘अलं’ तथा ‘खलु’ शब्द प्रयुक्त हों, तो उनके योग में विकल्प से ये प्रत्यय आते हैं। जैसे—

अलं सोतून, खलु सोतून, अलं सुत्वान, खलु सुत्वान, अलं सुत्वा, खलु सुत्वा, अलं सुतेन, खलु सुतेन = सुनना बेकार है।

प्य

§ २३. प्यो वा त्वा स्स समासे ५.१६४—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, ‘त्वा’ प्रत्यय का विकल्प से ‘प्य’ आदेश हो जाता है। ‘प्य’ का ‘य’ रह जाता है। जैसे—

प्य त्वा

अभिभूय अभिभवित्वा = तिरस्कार करके

§ २४. तुं या ना ५.१६५—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, ‘त्वा’ प्रत्यय का विकल्प से ‘तुं’ तथा ‘यान’ आदेश होता है। जैसे—

अभिहृदुं, अभिहरित्वा = ला कर

अनुमोदियान, अनुमोदित्वा = अनुमोदन करके

§ २५. ह ना र च्चो ५.१६६—समास होने पर, 'हन' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'रच्च' आदेश होता है। 'रच्च' का 'अच्च' रह जाता है। जैसे—
हन=मारना—आह्चच्च, आहनित्वा=आघात करके

§ २६. सा सा धि क रा च च रि च्चा ५.१६७—'स', 'अस', तथा 'अधि' पूर्वक 'कर' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से क्रमशः 'च', 'च', तथा 'रिच्च' आदेश होता है। जैसे—

सक्कच्च, सक्करित्वा=सत्कार करके

असक्कच्च, असक्करित्वा=असत्कार करके

अधिकिच्च, अधिकरित्वा=अधिकार करके

§ २७. इ तो च्चो ५.१६८—'इ' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'च्च' आदेश होता है। जैसे—

इ=जाना—अधिच्च, अधियित्वा=पढ़ कर

समेच्च, समेत्वा=मिल कर

§ २८. दि सा वा न वा स् च ५.१६९—'दिस' (=देखना) धातु से परे, 'त्वा' प्रत्यय आने से, उसका रूप विकल्प से 'दिस्वान' होता है। जैसे—

दिस्वान, दिस्वा, पस्सित्वा=देख कर

१७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए--

- (क) कुसलं कातब्बं, अकुसलं जहितब्बं । रमणीयानि अरञ्जानि, यत्थ वीतरागा रमिस्सन्ति । कल्याणमित्तो सेवितब्बो, पापका मित्ता न भजितब्बा । पुप्फानि विय धम्मपदानि चय्यानि । न हि कदाचि फरुसं वाक्यं । अच्छानि जलानि पेय्यानि । सोतब्बं सवनीयं, कातब्बं करणीयं । वज्जं न कातब्बं । गुय्हं गोपनीयं ।
- (ख) कातुं वट्टति । खादितुं कालो । पक्कमितुं न देति । पठितुं आरभि । सुमेध-पण्डितो इमं अत्थं चिन्तेत्वा, भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा, महादानं दत्त्वा, कामे पहाय, नगरतो निक्खमित्त्वा, हिमवन्तं अगमासि । तत्थ धम्मिकं नाम पब्बतं निस्साय अस्समं कत्त्वा, पण्ण-सालं च चङ्कमं च मापेत्त्वा (बनाकर) अभिञ्जावलं आहरितुं साटकं पजहित्त्वा, वाकचीरं (दलकल-चीवर) निवासेत्त्वा इसि-पब्बज्जं पब्बजि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए--

पण्डितों के द्वारा धर्म का आचरण करना चाहिए । अच्छे अच्छे ग्रन्थ सुनने चाहिए । गाने के योग्य गाथाओं को याद कर लो । सूरज को देखने के लिए, पहाड़ पर चढ़ कर पूरब की ओर देखो । खा कर, पी कर, हाथ धोवो । हाथ धोने के लिए कुएँ से पानी लाता है । विहार जाने के लिए, घर जा कर उदान ग्रन्थ ले आवो । स्वर्ग में उत्पन्न होने के लिए, पाप-कर्म करना छोड़ कर पुण्य कर्म करता है ।

तीसरा काण्ड

छठा पाठ

विशेषण-प्रकरण

§ १. विशेषण चार प्रकार के होते हैं—(१) गुण-वाचक, (२) संख्या-वाचक, (३) कृदन्त, (४) तद्धितान्त । जैसे—

सुन्दरो बालको । एको बालको; पठमो बालको । पठमानो बालको; दिट्ठो बालको; दस्सनीयो बालको । अन्तिमो बालको; कतमो बालको; सेट्ठो बालको ।

§ २. विशेषण में, वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होने है, जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन इसके विशेष्य में है । जैसे—

सुन्दरो बालको । सुन्दरी बालिका । सुन्दरं फलं । सुन्दरा बालका, सुन्दरियो बालिकायो, सुन्दरानि फलानि । सुन्दरेन बालकेन, सुन्दरिया बालिकाय, सुन्दरेन फलेन । इत्यादि ।

१. गुण-वाचक

गुण-वाचक विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण ऊपर (पृ० ६) दे दिए गए हैं । 'अभिधानपदीपिका' से कुछ और उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

सौंदर्य = सोभन, रुचिर, साधु, मनुञ्ज, चारु, सुन्दर, वग्गु, मनोरम, कन्त, हारि, मञ्जु, पेसल, भद्र, वाम, कल्याण, मनाप, सुभ । उत्तम = उत्तम, पवर, जेट्ठ, पसुख, अनुत्तर, वर, मुरय, पधान, पामोक्ख, वर, पणीत, सेय्य, विसिट्ठ, अरिय, नाग, पुंगव । प्रिय = इट्ठ, सुभग, हज्ज, दयित, वल्लभ, पिय । शून्य = तुच्छ, रिक्त, सुञ्ज, असार, फेगु । पवित्र = पूत, पवित्त । निक्कण्ड = निहीन, हीन, लामक, निकिट्ठ, इत्तर, कुच्छित्त, अधम, गारय्ह । बृहत् = विपुल, विसाल, पुथुल,

पुथु, गरू । मोटा = पीन, थूल, थुल्ल, वठर । सारा = सब्ब, समत्त, अखिल, निखिल, सकल, कसिण, समग्ग । प्रचुर = भूरी, पहूत, पचुर, भीय्य, संबहुल, बहु, येभुय्यं, बहुल । अल्प = परित्त, खुद्द, थोक, अप्प । सरल = उज्जु । तीक्ष्ण = तिण्हं, तिखिणं, तिब्बं । उग्र = चण्ड, उग्ग, खर । गतिशील = चर, जंगम, तस । कर्कश = कुरुर, कठिन, दळ्ह, कक्खल । उपयुक्त = पतिरूप । निष्फल = मोघ, निरत्थक । व्यक्त = फुट । असहाय = एकाकी, एकच्च, एक, एकक । सुदक्ष = कतहत्थ, कुसल, पवीण, सिक्खिव, पट्ट, दक्ख, पेसल । दिग्धत्त = ख्यात, पतीत्त, पञ्जात्, अभिञ्जात्, पथित, सुत्त, विस्सुत्त, पसिद्ध, पाकट । धनादक्ष = इब्भ, अड्ड । लोभी = गिद्ध, लुद्ध । क्रोधी = कोधन, रोसन । चमद्दहार = भस्सर, भास्सर । कृपण = थद्ध, मच्छरी, कपण । दरिद्र = अकिचन, दळ्ळिद्द, दुग्गत । तीखा = निसित । विस्तृत = विसट, वित्थत । पूजित = अपचायित, महित, पूजित, मानित, अपचित्त ।

§ ३. पुल्लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त के 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त के 'भिक्षु' शब्द के समान होंगे ।

नपुंसक लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त के 'अट्ठि' शब्द के समान, तथा उकारान्त के 'आयु' शब्द के समान होंगे । जैसे—

पुल्लिङ्ग में—अतीतो भूपो; अतीता भूपा । सुच्चि कूपो; सुचयो कूपा । मुदु बालको; मुदवो बालका ।

नपुंसक लिङ्ग में—अतीतं नगरं; अतीतानि नगरानि । सुच्चि जलं; सुचीनि जलानि । मुदु फलं; मुदुनि फलानि ।

स्त्रीलिङ्ग—विशेषण शब्दों को पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए उनसे परे 'आ', 'ई', आदि कुछ प्रत्यय लगाते हैं । [देखिए—पाँचवाँ काण्ड, चौथा पाठ] जैसे—

आ—अखिला, अधमा, अलसा, कपणा, चञ्चला, चपला, दुब्बला, पिया, बिच्चित्ता, सफला ।

ई—कुमारी, तरुणी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, तापसी ।

§ ४. इकारान्त तथा उकारान्त विशेषण शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में भी ज्यों के त्यों रहते हैं; किंतु, उनके रूप क्रमशः 'रत्ति' तथा 'धेनु' शब्द के समान होते हैं । आकारान्त, तथा ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्दों के रूप क्रमशः 'लता' तथा 'इत्थी' शब्द के समान होंगे । जैसे—

दुब्बला इत्थी, दुब्बलायो इत्थियो । कुमारी बालिका, कुमारियो बालिकायो ।
सुचि वापी, सुचियो वापी । मुदु बालिका, मुदुयो बालिकायो ।

२. संख्या-वाचक

§ ५. संख्यावाचक शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें प्रायः वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं । जैसे—

एको बालको । एका बालिका । एकं फलं । तयो बालका । तिस्सो बालिकायो । तीणि फलानि । चतुरो बालका । चतस्सो बालिकायो । चत्तारि फलानि ।

§ ६. 'द्वि' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं । 'पञ्च' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' तक सभी शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं । जैसे—द्वि, पञ्च बालका । द्वि, पञ्च बालिका ।

§ ७. 'एकूनवीसति' (=उत्तीस) से लेकर 'अट्ठनवुत्ति' (=अट्ठानवे) तक सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन रहते हैं । 'अट्ठनवुत्ति' (अट्ठानवे) तक जितने इकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'कञ्जा' शब्द के समान होंगे । जैसे—

विंसति मनुस्सा; विंसति फलानि; विंसति इत्थी । विंसति मनुस्से; विंसति फलानि । विंसति इत्थी । पञ्जासा (=पचास) मनुस्सा; पञ्जासा फलानि; पञ्जासा इत्थी ।

§ ८. 'सत' से लेकर 'सतसहस्स' तक, सभी शब्द सदा नपुंसक लिङ्ग एक वचन रहते हैं । जैसे—सतं मनुस्सा; सतेन मनुस्सेहि; सतं इत्थी; सतं फलानि ।

[विशेष देखिए—तीसरा काण्ड : सातवाँ पाठ]

§ ९. पूरणवाची शब्द भी विशेषण हैं । जैसे—पठमो बालको; पठमा बालिका; पठमं फलं । [देखिए—पृ० १७५]

३. कृदन्त

§ १०. कुछ कृदन्त शब्द विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं । जैसे—

न्त, मान

‘न्त’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में ‘गच्छन्त’ शब्द के समान होंगे। स्त्रीलिङ्ग में यह ‘गच्छन्ती’ या ‘गच्छती’ हो जायगा; और इसके रूप ‘इत्थी’ शब्द के समान होंगे। जैसे—

पठन्तो बालको । पतन्तं फलं । पठन्ती—पठती बालिका ।

‘मान’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘कञ्जा’ शब्द के समान होंगे। जैसे—

पठमानो बालको; पतमानं फलं; पठमाना बालिका । [देखिये—पृ० ६२]

क्त, क्तवन्तु, तावी

‘क्त’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

गतो बालको; गता बालिका; दिट्ठं फलं ।

‘क्तवन्तु’ तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं। पुल्लिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्तु’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘दण्डी’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

राजा रञ्जं विजित्वा; राजानो रञ्जं विजितवन्तो । राजा रञ्जं विजितावी; राजानो रञ्जं विजिताविन्वो ।

नपुंसक लिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्तु’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘सुखकारी’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवं फलं; पतितवन्तानि फलानि । पतित्तावि फलं; पतित्तावीनि फलानि ।

स्त्रीलिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्ती-गुणवती’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘पतित्ताविनी’-इत्थी शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवन्ती—पतितवती धारा; पतितवन्तियो—पतितवतियो धारायो । पतित्ताविनी धारा; पतित्ताविनियो धारायो ।

[देखिए—पृ० १४२]

तब्ब, अनीय, य

‘तब्ब’, ‘अनीय’, तथा ‘य’ प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पस्सितब्बो खखो; पस्सितब्बा त्थी; पस्सितब्बं फलं । इत्थीयो खखो ।
देय्यो ब्राह्मणो; देय्यं वादं । [देखिए—पृ० १५०]

४. तद्धितान्त

११. कुछ तद्धित-प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। जैसे—

रति, कीवतक, कित्तक

‘कि’ शब्द से परे ये प्रत्यय लगते हैं। जैसे—कति, कीवतकं, कित्तकं ।

‘कति’ शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं; तथा, वह नित्य अनेक वचनान्त रहता है। जैसे—कति मनुस्सा = कितने मनुष्य? कति फलानि? कति इत्थी? [देखिए—पृ० १७४, २४७]

‘कीवतक’ तथा ‘कित्तक’ शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

कीवतका—कित्तका बालका? कीवतकानि—कित्तकानि फलानि? कीव-
तकायो—कित्तकायो इत्थी?

कतर—कतम

जैसे—कतरो—कतमो देवदत्तो भवतं?

श्लेष्य

जैसे—“दक्खिणेश्यो भगवतो सवकसंघो” = भगवान् का श्रावक-सघ दक्षिणा देने योग्य है।

शिक

जैसे—मानसिको—सारीरिको रोगो—मन-शरीर का रोग । वातिको
 आबाधो—वायु का रोग । सोवगिको धम्मो—जो धम्मं स्वर्ग ले जाय ।
 पेतिकं धनं—बपौती धन । अरञ्जिको भिक्खु—जंगल में रहने वाला भिक्षु ।

तन

जैसे—अज्जतनी दुत्ति—आज की खबर । स्वातनी—हिय्यतनी दुत्ति ।

इम

जैसे—मज्झिमो । अन्तिमो ।

१८. अभ्यास

१. हिन्दी से अनुवाद कीजिए—

अतन्ना जानि-धम्मो समानो (मत्तो), मग्गण-धम्मो समानो तेनु धम्मेषु आदीनवं (दोष) विदित्वा योग-धम्मं निव्वाणं परियेसितव्वं । योगो कर्णीयो । पधानं पदहितव्वं । आयस्मा खो राहुलो भगवन्तं आरञ्छन्तं दिस्वान् आसन् पञ्जापेसि । भगवा पञ्जन्ते आसन्ते निमज्ज, पादे पक्कालेसि । पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कायेन कम्मं कत्तव्वं वाचाय च मत्ता च । भेत्तं भावनं भावयमानस्स (भावयतो) व्यापादो पहीयति । भगवा जानं जानाति, पस्सं पस्सति । दक्खिण्यो भगवतो सावकसथो । आरञ्जिको शिक्खु भेत्तं भावेति ।

उदित मुरिय संपस्समानेन आलोकं पि वट्टव्वं होति । आद्योर्कस्मि भवमानस्स थीन-मिद्ध (आलस्य) पहीनं होति । कतमानि भानानि भावेतव्वानि ? कतरस्मि हत्थे पुप्फं गण्हितव्वं ! भुत्ताविना भत्त-समोदनं कत्तव्वं । अञ्जाताविना धम्मो देसितव्वं ।

२. पालि से अनुवाद कीजिए—

फल खानेवाले को आलस्य नहीं होता है । वन में ध्यान करनेवाले का चित्त शान्त रहता है । किस आँख में पीड़ा है ? किन किन धर्मों को जानना चाहिए ? भगवान् के कहे किन किन भावनाओं को कर सकते हो ? स्वर्ग चाहने वालों को भगवान् के उपदिष्ट धर्मों में श्रद्धा उत्पन्न करना चाहिए । धर्म सुनकर प्रयत्न में जुट जाना चाहिए । प्रयत्न करते हुए विरति को हटाना चाहिए । दुःखितों को देखकर दया करनी चाहिए । प्राण को मारना नहीं चाहिए । सभी मत्कों में मैत्री-भावना करनी चाहिए ।

तीसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

संख्या-वाचक शब्द प्रायः विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं ।

‘एक’ शब्द की गिनती सर्वनाम शब्दों में की गई है । ‘संख्या’, ‘अतुल्य’, ‘असहाय’, तथा ‘अन्य’—इतने अर्थों में ‘एक’ शब्द प्रयुक्त होता है । संख्या के अर्थ में, ‘एक’ शब्द एक वचन ही में होता है [देखिए—पृ० २६] ।

§ १२. एक

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	एको	एके
डु ति या	एकं	एके
त ति था	एकेन	एकेहि, एकेभि
च लु र्थी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
प ञ्च मी	एकम्हा, एकस्सा	एकेहि, एकेभि
छ द्ठी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
स त्त मी	एकस्मिह, एकास्मि	एकेसु

बहुल्लङ्क लिंग

	एकवचन	द्वारेणवचन
पठमा	एकं	एके, एकानि
द्वितीया	एकं	एके, एकानि

येषु पुल्लङ्क के समान

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्वारेणवचन
पठमा	एका	एका, एकानो
द्वितीया	एकं	एका, एकानो
तृतीया	एकान	एकानि, एकानि
चतुर्थी	एकस्मा, एकाय	एकानं, एकानाम्
पञ्चमी	एकाय	एकानि, एकानि
छन्दो	एकस्मा, एकाय	एकानं, एकानाम्
सप्तमी	एकस्मि, एकायं	एकानु

७१३. 'द्वि' शब्द कदा अनेक-वचन रहता है; तथा, तीनों पुल्लङ्को से इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	द्वारेणवचन
पठमा	द्वौ, द्वौ
द्वितीया	द्वौ, द्वौ
तृतीया	द्वीहि, द्वीनि
चतुर्थी	द्विसं, द्विसि
पञ्चमी	द्वीहि, द्वीणि
छन्दो	द्विसं, द्विसि
सप्तमी	द्वीनु

§ १४. 'उभ' (=दोनों) शब्द भी, सदा अनेक-वचन रहता है; तथा तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	उभो
दुतिया	उभो
ततिया	उभोहि ^१ , उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्नं ^२
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्नं ^३
सत्तमी	उभोसु, ^४ उभेसु

§ १५. 'ति' (=तीन) शब्द भी सदा अनेक-वचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पठमा	तयो ^५	तिस्सो ^६	तीणि ^७
दुतिया	तयो ^८	तिस्सो	तीणि
ततिया	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	शेषपुल्लिङ्गके
चतुत्थी	तिण्णं, तिण्णन्नं ^९	तिस्सन्नं ^{१०}	समान
पञ्चमी	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	
छट्ठी	तिण्णं, तिण्णन्नं	तिस्सन्नं	
सत्तमी	तीसु	तीसु	

१. यो म्हि द्विं न्नुवे द्वे २.२२१—'यो' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द के रूप 'दुवे', तथा 'द्वे' होते हैं।

२. न म्हि नुक् द्वावी नं सत्तरसन्नं २.४६—'द्वि' से लेकर 'अट्ठारस' तक, शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'न्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—द्वि + नं = द्विन्नं। तिन्नं। चतुरन्नं। पञ्चन्नं। छन्नं। सत्तन्नं। अट्ठन्नं। नवन्नं। दसन्नं। एकादसन्नं। बारसन्नं। तेरसन्नं। चतुद्दसन्नं। पञ्चदसन्नं। सोळसन्नं। सत्तदसन्नं। अट्ठादसन्नं।

§ १६. 'चतु' (=चार) शब्द भी सदा अनेकवचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पु ल्लि ङ्ग	स्त्री लि ङ्ग	न पुं स क लि ङ्ग
प ठ मा	चत्तारो, चतुरो ^०	चतस्सो	चत्तारि
दु ति या	चत्तारो, चतुरो	चतस्सो	चत्तारि
त ति या	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	शेष पुल्लिङ्ग
च तु स्थी	चतुन्नं	चतस्सन्नं	के समान
प ञ्च मी	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	
छ ट्ठी	चतुन्नं	चतस्सन्नं	
स त्त मी	चतुसु	चतुसु	

दुविन्नं नम्हि वा २.२२२—'नं' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द का रूप विकल्प से 'दुविन्नं' होता है।

३. सु हि सु भस्सो २.५८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'उभ' शब्द का 'उभो' हो जाता है। जैसे—उभोहि। उभोसु।

४. उ भि न्नं २.५२—'उभ' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'इन्नं' आदेश होता है। जैसे—उभ + नं = उभिन्नं।

५. पु मे त यो च त्तारो २.२०६—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तयो' तथा 'चत्तारो' होते हैं।

६. ण्णं ण्णं चं ति तो ज्जा २.५१—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ति' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'ण्ण' तथा 'ण्णन्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—ति + नं = तिण्णं, तिण्णन्नं।

७. ति स्सो च त स्सो यो म्हि स वि भ त्ती नं २.२०७—स्त्रीलिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तिस्सो' तथा 'चतस्सो' होते हैं।

८. न म्हि ति च तु न्न मि स्थि यं ति स्स च त स्सा २.२०६—'नं' विभक्ति आने से, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों का क्रमशः 'तिस्स' तथा 'चतुस्स' आदेश हो जाता है। जैसे—तिस्सन्नं। चतस्सन्नं।

§ १७. पञ्च (=पाँच), छ, सत्त (=सात), अट्ठ (=आठ), नव, दस, एकादस^{११}—एकारस (=ग्यारह), बारस*—द्वादस,^{१२} (=वारह), तेरस^{१३}—† तेळत्त (=तेरह), चुद्दस^{१४}—चोद्दस—चतुद्दस (=चौदह), पञ्चदस^{१५}—पन्नरस (=पन्दरह), सोळस^{१६}—सोरस (=सोलह), अट्ठारस—अट्ठादस^{१७}

६. ही णि अत्ता रि न धुंस के २.२०८—नपुंसक में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तीजि' तथा 'चत्तारि' होते हैं।

१०. अत्तुरो वा अत्तुस्स २.२१०—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'चतु' शब्द का रूप विकल्प से 'चतुरो' होता है।

११. एकाद्धानमा ३.१०२—'दस' शब्द परे हो, तो 'एक' तथा 'अट्ठ' शब्दों के अल्प स्वर का 'आ' होता है। जैसे—एकादस। अट्ठादस।

२ संख्यातो वा ३.१०३—संख्या से परे, 'द' शब्द के 'द' का विकल्प में 'र' हो जाता है। जैसे—एकारस, एकादस। बारस, द्वादस। पन्नरस, पञ्चदस। सत्तरस, सप्तदस।

* 'पञ्च' का 'पन्न', तथा 'द्वि' का 'दा' आदेश होने पर, उससे परे 'दस' के 'द' का 'र' नित्य होता है। 'चतुद्दस' में 'द' का 'र' नहीं होता है।

१२. आ संख्याया सत्ता दो, नञ्जत्थे ३.११४—अन्यार्थ समास हो, तो 'सत्त' आदि को छोड़, किसी मख्या के उत्तर पद में रहने से, 'द्वि' का 'द्वा' हो जाता है। जैसे—द्वादस। द्वावीसति। द्विसस।

१३. तिससे ३.११५—अन्यार्थ समास हो, तो 'सत्त' आदि को छोड़, किसी संख्या के उत्तर पद में रहने से, 'ति' का 'ते' हो जाता है। जैसे—ति + दस = तेरस। तेवीस। तिसस।

† छतीहि लोअ ३.१०४—'छ' तथा 'ति' शब्दों से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'ळ' हो जाता है। जैसे—सोळस, सोरस। लेळस, तेरस।

१४. अत्तुस्स जुच्चो दसे ३.१००—'दस' शब्द परे हो, तो 'चतु' शब्द का 'चु' तथा 'चो' आदेश होता है। जैसे—अत्तुद्दस, चुद्दस, चोद्दस।

१५. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना ३.११६—'वीसति' तथा 'दस' शब्द परे हों, तो 'पञ्च' शब्द का विकल्प से क्रमशः 'पण्णु' तथा 'पन्न' आदेश हों

(=अट्टारह) —इतने शब्द सदा अनेकवचन रहते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठभा	पञ्च ^{१०}
बुलिया	पञ्च
तलिया	पञ्चहि, ^{११} पञ्चभि
बलुथी	पञ्चन्न ^{१२}
पञ्चमी	पञ्चहि, पञ्चभि
छट्ठी	पञ्चन्न ^{१३}
सप्तमी	पञ्चबु ^{१४}

इसी तरह, 'अट्टारस-अट्टादस' तक सभी शब्दों के रूप होंगे।

§ १८. एकवचन (=उत्तीस) से लेकर 'नवुनि' (=नव्वे) तक, सभी शब्द नित्य 'स्त्रीलिङ्ग—एकवचन' होते हैं। जैसे—

	एकवचन
पठभा	एकवचनीसति
बुलिया	एकवचनीसति
तलिया	एकवचनीसतिया

जाता है। जैसे—एकवचनीसति, पञ्चवचनीसति। पञ्चरस, पञ्चदस।

१६. छस्स सौ २.१०१—'दस' शब्द परे हो, तो उससे पूर्व 'छ' का 'स' हो जाता है। जैसे—सौस।

१७. ष पञ्चा बी हि बुद्धस हि २.१७१—'पञ्च' से लेकर 'अट्टारस' तक, शब्द से परे 'यो' विभक्ति का 'अ' आदेश होता है। जैसे—पञ्च+यो = पञ्च। दस+यो = दस।

१८. पञ्चा दी नं चुद्धस नम २.१२—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'पञ्च' से ले कर 'अट्टारस' तक, शब्द का अन्त्य स्वर 'अ' होता है। जैसे—पञ्चसु। पञ्चन्नं। पञ्चहि। छसु। छन्नं। छहि।

	ए क व च न
च तु त्थी	एकूनवीसतिया
ष ञ्च मी	एकूनवीसतिया
छ् द्ढी	एकूनवीसतिया
स त्त मी	एकूनवीसतियं

इसी तरह, निम्न शब्दों के भी रूप होंगे—

२० वीसति	३७ सत्तिसति
२१ एकवीसति	३८ अट्ठित्सति
२२ द्वेवीसति	३९ एकूनचत्ताळीसति
द्वावीसति	४० चत्ताळीसति
बावीसति	४१ एकचत्ताळीसति
२३ तेवीसति	४२ द्वाचत्ताळीसति ^{१९}
२४ चतुवीसति	द्विचत्ताळीसति
२५ पञ्चवीसति	४३ तेचत्ताळीसति ^{२०}
पण्णुवीसति	तिचत्ताळीसति
पण्णवीसति	४४ चतुचत्ताळीसति
२६ छ्द्वीसति	चोत्ताळीसति
२७ सत्तवीसति	चुत्ताळीसति
२८ अट्ठवीसति	४५ पञ्चचत्ताळीसति
२९ एकूनत्तिसति	४६ छ्चत्ताळीसति
३० त्तिसति	४७ सत्तचत्ताळीसति
३१ एकात्तिसति	४८ अट्ठचत्ताळीसति
३२ द्वत्तिसति	अट्ठचत्तारीसति
बत्तिसति	४९ एकूनपञ्जासा
३३ तेत्तिसति	५० पञ्जासा
३४ चतुत्तिसति	५१ एकपञ्जासा
३५ पञ्चत्तिसति	५२ द्वेपञ्जासा
३६ छत्तिसति	द्विपञ्जासा

५३	तेपञ्जासा	६८	अद्दसत्ति
	तिपञ्जासा	६९	एकूनसत्ति
५४	चतुपञ्जासा	७०	सत्ति
५५	पञ्चपञ्जासा	७१	एकसत्ति
५६	छपञ्जासा	७२	द्वासत्ति
५७	सत्तपञ्जासा		द्विसत्ति
५८	अद्दपञ्जासा	७३	तेसत्ति
५९	एकूनसद्दि		तिसत्ति
६०	सद्दि	७४	चनुसत्ति
६१	एकसद्दि	७५	पञ्चसत्ति
६२	द्वासद्दि,	७६	छसत्ति
	द्वेसद्दि	७७	सत्तसत्ति
	द्विसद्दि	७८	अद्दसत्ति
६३	तेसद्दि	७९	एकूनासीति
	तिसद्दि	८०	असीति
६४	चतुसद्दि	८१	एकासीति
६५	पञ्चसद्दि	८२	द्वेअसीति
६६	छसद्दि		द्वासीति
६७	सत्तसद्दि	८३	तेअसीति

१९. द्वि स्ता च ३.९७—‘चत्तालीस’ आदि शब्द परपद में हों, तो ‘द्वि’ का विकल्प से ‘द्वे’ तथा ‘द्वा’ हो जाता है। जैसे—द्वेचत्तालीस, द्वाचत्तालीस, द्विचत्तालीस। द्वेपञ्जास, द्वापञ्जास, द्विपञ्जास। द्वेसद्दि, द्वासद्दि, द्विसद्दि। द्वेसत्ति, द्वासत्ति, द्विसत्ति। द्वे असीति, द्वासीति, द्वि असीति। द्वेनवुत्ति, द्वानवुत्ति, द्विनवुत्ति।

२०. च त्ता ली सा दो वा ३.९६—‘चत्तालीस’ आदि शब्द परपद में हों, तो ‘ति’ का विकल्प से ‘ते’ हो जाता है। जैसे—तेचत्तालीस, तिचत्तालीस। तेपञ्जास, तिपञ्जास। तेसद्दि, तिसद्दि। तेसत्ति, तिसत्ति। तेअसीति, तिआसीति, तिअसीति। तेनवुत्ति, तिनवुत्ति।

८४	बबुरासीति	द्वेनबुति
८५	एञ्चासीति	द्विनबुति
८६	छासीति	६३ तेनबुति
८७	ससासीति	तिनबुति
८८	अट्टासीति	६४ बलुनबुति
८९	एकूननबुति	६५ पञ्चनबुति
९०	नबुति	६६ छन्नबुति
९१	एकनबुति	६७ सत्तनबुति
९२	द्वानबुति	६८ अट्टनबुति

§ १९. 'अट्टनबुति' तथा, जितने इकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'कञ्जा' शब्द के समान होंगे। स्मरण रहे, कि ये सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं।

§ २०. 'नत' (=सौ) शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होता है। जैसे—

६९ एकूनसत (=निदानवे)

	ए क ब ख न
प ठ दा	एकूनसतं
डु ति था	एकूनततं
त ति या	एकूनततेन
ज तु धी	एकूनसतस्स, एकूनसतथाय
प ञ्च श्री	एकूनसता, एकूनततस्सा, एकूनसतम्हा
छ ढ्ढी	एकूनततस्स
स त्त श्री	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्सि

§ २१. 'सत' शब्द से ले कर 'सतसहस्सं' (=शतसहस्र) शब्द तक, सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—सतं अनुस्सा। सहस्सं कञ्जायो। सतसहस्सं फलानि।

§ २२. 'कोटि', 'पकोटि', 'कोटिप्पकोटि', 'अक्खोहिणी'—इतने शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—कोटि अनुस्सा, कञ्जायो, फलानि वा।

§ २३. उतने उतने का वर्ग जाना जाय, तो इन शब्दों में अनेक वचन भी होता है। जैसे—द्वे वीसतियो, तीणि सतानि, चत्तारि सहस्सानि, तिस्रो कोटियो ।

‘सौ’ से ऊपर की संख्यायें—‘ड’ प्रत्यय

§ २४. संख्या वा सञ्चुती सा स ह सन्ताधिकस्मि सतसहस्ते डो ४.५०—‘इस सौ या हजार में इतना अधिक है’, इस अर्थ में पत्यन्त, उत्पन्त, ईसान्त, आसान्त, तथा दसान्त संख्याओं से परे, ‘ड’ प्रत्यय होता है। जैसे—वीसति अधिकः अस्मि सते ‘ति’—वीसं सतं, ^{११} सहस्सं, सतसहस्सं वा। तिसं सतं, एकतिसं सतं।

उत्पन्त—नवुति + ड + सत = नडुतं सतं। नडुतं सहस्सं। नडुतं सतसहस्सं।

ईसान्त—चत्तारीसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।

आसान्त—पञ्चासं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।

दसान्त—एकादसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।

§ २५. दूसरी संख्याओं के साथ, ‘अधिक’ शब्द का समास होता है। जैसे—एकाधिकं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं। द्वाधिकं सतं। त्रयाधिकं सतं।

§ २६. पालि में, सौ के ऊपर की संख्यायें निम्न प्रकार हैं—

सतं	एक पर	२	शून्य
सहस्सं	”	३	”
नडुतं	”	४	”
सतसहस्सं	”	५	”
कोटि	”	७	”
पकोटि	”	१४	”
कोटिप्पकोटि	”	२१	”
(पुन)नडुतं	”	२५	”

२१. डे सति स्स ति स्स ४.१३६—‘ड’ प्रत्यय आने से, सत्यन्त संख्या-वाचक शब्दों के ‘ति’ का लोप हो जाता है। जैसे—वीसति + ड = वीसं सतं। तिसं सतं।

निस्रहृतं	एक पर ३५	शून्य
अक्खोहिणी	,, ४२	,,
बिन्दु	,, ४६	,,
अब्बुदं	,, ५६	,,
निरब्बुदं	,, ६३	,,
अहहं	,, ७०	,,
अबवं	,, ७७	,,
अटटं	,, ८४	,,
सोगन्धिकं	,, ९१	,,
उप्पलं	,, ९८	,,
कुमुदं	,, १०५	,,
पुण्डरीकं	,, ११२	,,
पडुमं	,, ११९	,,
कथानं	,, १२६	,,
महाकथानं	,, १३३	,,
असंखेय्यं	,, १४०	,,

कति

§ २७. टि क ति स्हा २.१७०—‘कति’ (=कितना) शब्द नित्य अनेक वचन होता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान होते हैं। जैसे—

	अ ने क व च न
ष ठ मा	कति
डु ति या	कति
त ति या	कतीहि, कतीभि
च तु त्थी	कतीनं, कतिन्न ^{२२}
प ञ्च सी	कतीहि, कतीभि
छ ट्ठी	कतीनं, कतिन्नं
स त्त मी	कतीसु

§ २८. पूरण वाची शब्द

	पु ल्लि ज्ञ	स्त्री लि ज्ञ	न पुंस क लि ज्ञ
१	पठमो = पहला	पठमा = पहली	पठमं = पहला
२	दुतियो	दुतिया	दुतियं
३	ततियो	ततिया	ततियं
४	चतुत्थो	चतुत्थी, चतुत्था	चतुत्थं
	तुरीयो	तुरीया	तुरीयं
५	पञ्चमो ^{१३}	पञ्चमी	पञ्चमं
६	छद्मो ^{१४}	छद्मा, छद्मी	छद्मं
	छद्मो	छद्मी	छद्मं
७	सत्तमो	सत्तमा, सत्तमी	सत्तमं
८	अष्टमो	अष्टमा, अष्टमी	अष्टमं
९	नवमो	नवमा, नवमी	नवमं
१०	दसमो	दसमा, दसमी	दसमं
११	एकादसो, एकादसमो ^{१५}	एकादसी	एकादसं
१२	बारसो, बारसमो, द्वादसमो	द्वादसी	द्वादसं, द्वादसमं

२२. बहु कति चं २.५०—'बहु' तथा 'कति' शब्दों से परे, 'न' विभक्ति का 'न्न' आदेश हो जाता है। जैसे—बहुन्नं। कतिन्नं।

२३. म पंचादि कती हि ४.५२—'पंच' आदि, तथा 'कति' शब्द से परे पूरण के अर्थ में 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—पञ्चमो। सत्तमो। अष्टमो। कतिमो।

२४. छा दृढमा ४.५४—पूरण के अर्थ में, 'छ' शब्द से परे 'दृ' तथा 'दृम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—छद्मो, छद्मो। दुतिय, ततिय, चतुत्थ निपात हैं।

२५. तस्स पूरणे कादसोदितो वा ४.५१—पूरण के अर्थ में, 'एकादस' आदि संख्या से परे, विकल्प से 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—एकादसो, एकादसमो। द्वादसो, द्वादसमो। वीसो, वीसतिमो। तिसो, तिसतिमो। चत्तालीसो। पञ्जासो।

पु ल्लि ज्झ	स्त्री लि ज्झ	न पुं स क लि ज्झ
१३ तेरसो, तेरसमो	तेरसी	तेरससं
१४ चतुहसमो	चतुहसी, चातुहसी	चतुहससं
१५ पञ्चदसमो, षण्णरसमो	पञ्चदसी षण्णरसी	पञ्चदससं षण्णरससं
१६ सोळसमो	सोळसी	सोळससं
१७ सत्तरसमो	सत्तरसी	सत्तरससं
सत्तदसमो	सत्तदसी	सत्तदससं
१८ अट्ठारसमो	अट्ठारसी	अट्ठारससं
अट्ठादसमो	अट्ठादसी	अट्ठादससं
१९ एकूनवीसतिमो	एकूनवीसतिमा एकूनवीसतिमी	एकूनवीसतिसं

इसके आगे^{१६} के संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगा कर, उसका पूरण बना लेते हैं। जैसे—एकवीसतिमो, तिसतिमो इत्यादि।

§ २६. च तु त्थ त लि या न अ ड्ढु ड्ढ ति या ३.१०५—'अड्ढ' (=अर्ध) शब्द से परे, 'चतुत्थ' तथा 'ततिय' का क्रमशः 'उड्ढ' तथा 'तिय' आदेश हो जाता है। जैसे—

अड्ढेन चतुत्थो—अड्ढुड्ढो (=साढ़े तीन)।

अड्ढेन ततियो—अड्ढतियो (=अढ़ाई)।

§ ३०. दु ति य स्स स ह द्वि य ड्ढ दि व ड्ढा ४.१०६—'अड्ढ' शब्द के साथ, 'दुतिय' का समास होने से, 'द्वियड्ढ' तथा 'दिवड्ढ' रूप होते हैं। जैसे—अड्ढेन दुतियो—द्वियड्ढो, दिवड्ढो (=डेढ़)।

२६. स ता दी न मि अ ४.५३—पूरण के अर्थ में, 'सत' आदि संख्यावाचक शब्दों से परे, 'म' प्रत्यय होता है; तथा, शब्द के अन्त्य स्वर का इकार हो जाता है। जैसे—सतिमो। सहस्सिमो।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

एकं समयं, द्वे भिक्षू तिण्ण सञ्जोजनानं खयं पापुणिसु। चत्तारि अरिय-सुच्चानि पञ्जातब्बानि। पञ्च पञ्चका वग्गा पञ्चवीसति (=पण्णवीसति) वण्णा होन्ति। चतूसु (चतुसु) दिसासु। अट्ठसु परिसासु! सत्तन्न सति-सम्बो-ज्झानं भावनं भावेतुं सक्का। नव दारका। दस दारिकायो। एकादस फलान्नि। चतस्सो अतुपस्सनायो, चत्तारि सम्मप्पधानानि, चत्तारो इड्ढिपादा, पञ्च इन्द्रियाणि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अट्ठ मग्गोति—सत्ततिसति बोधि-पक्खिका धम्मा भावनीया, बहुली करणीया। पठमे कप्पे मनुस्सा दीघायुका भविसु। दुतियायं विभत्तियं 'अम्ह'-सद्दस्स 'मे' इति रूपं होति। एको देवो, द्वीहि देवपुत्तेहि सिद्धि, तीणि अहानि, चतस्सन्न दिसानं रट्ठेसु विचरन्तो तत्थ पापुणि। वीसति च तिसति च संकलिता पञ्जासति होति। तेपञ्जासा च द्वतिसा च समग्गा पञ्चासीति होति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

एक नगर में एक राजा रहता था। उसकी तीन रानियाँ थीं। पहली रानी को एक, दूसरी को दो, तथा तीसरी को तीन पुत्र थे। चारों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैल गई थी। सातों वृक्षों के फल पके हैं। दस लड़के और ग्यारह लड़कियाँ यहाँ रहती हैं। सौ लड़के। हजार नदियाँ। करोड़ फल।

चौथा काण्ड

पहला पाठ

वाच्य-प्रकरण

§ १. पालि भाषा में वाच्य तीन हैं—
(१) कर्तृवाच्य, (२) भाववाच्य, (३) कर्मवाच्य ।

१. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में, कर्ता में 'पठमा' विभक्ति, और कर्म में (यदि कोई हो तो) 'दुतिया' विभक्ति होती है। और, क्रिया के पुरुष तथा वचन, कर्ता के पुरुष तथा वचन के समान होते हैं। (देखिए—पृ० २९, ३०) जैसे—

अकर्मक—देवदत्तो हसति = देवदत्त हँसता है। यहाँ 'देवदत्त' कर्ता है; इसलिए, उसमें पठमा विभक्ति है। क्रिया, 'हसति' पठम पुरिस एक वचन है; क्योंकि, कर्ता 'देवदत्तो' भी पठम पुरिस एक वचन है। इसी तरह—**बालका हसन्ति । अहं हसामि । मयं हसाम । त्वं हससि । तुम्हे हसथ ।**

सकर्मक—बालको कुक्कुरं पस्सति । बालको कुक्कुरे पस्सति ।

२. भाववाच्य

भाववाच्य में, कर्ता में 'ततिया' विभक्ति होती है। 'कर्म' होता ही नहीं है; क्योंकि, भाववाच्य केवल अकर्मक धातु से ही बनता है। क्रिया, सदैव 'पठम पुरिस', 'एकवचन' रहती है। विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे, 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। (देखिए—पृ० १८०) जैसे—

बालकेन अत्र भूयते = लड़का यहाँ मौजूद है। **बालाकेहि अत्र भूयते** = लड़के यहाँ मौजूद हैं। **मया अत्र भूयते** = मैं यहाँ मौजूद हूँ। **त्वया अत्र भूयते** = तुम

यहाँ मौजूद हो। मया अत्र भूयिस्सते—मैं यहाँ मौजूद रहूँगा। तत्रथा अत्र भूयि—
तुम यहाँ मौजूद थे। सब्बेहिं अत्र भूयेय्य—सबों को यहाँ मौजूद रहना चाहिए।
इत्यादि

३. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में, कर्ता में 'ततिया' विभक्ति, और कर्म में 'पठमा' विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन, कर्म के पुरुष और वचन के समान होते हैं, तथा, विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है (देखिए—पृ० १८०)। जैसे—

रञ्जा धनं दीयते—राजा के द्वारा धन दिया जाता है। रञ्जा धनानि दीयन्ति—राजा के द्वारा धन दिए जाते हैं। पितरा त्वं (भक्तुनो) दीयामि—पिता के द्वारा तुम (पति को) दी जा रही हो। पितरा तुम्हे (भक्तुनो) दीयव्हे—पिता के द्वारा तुम लोग (पति को) दी जा रही हो। पितरा अहं (भक्तुनो) दीयामि—पिता के द्वारा मैं (पति को) दी जा रही हूँ। पितरा मयं (पतिनो) दीयामि—पिता के द्वारा हम लोग (पति को) दी जा रही हैं। इत्यादि।

द्रष्टव्य—जिस कर्मवाच्य में कर्तृपद उक्त न हो, तथा उसका वहाँ कोई प्राधान्य भी न हो, उसे "कर्म-कर्तृ वाच्य" कहते हैं। वहाँ, कर्म ही कर्ता के ऐसा जान पड़ता है। जैसे—ओदनं पचति (=मनुस्सो ओदनं पचति)।

सौकर्य तथा संक्षेप के लिए, अन्य कारक भी कर्ता के तौर पर प्रयुक्त होता है। जैसे—असि छिन्दति (=असिना छिन्दति)। थालि पचति (=थालियं पचति) ओदनं पचति।

निष्ठा

क्तवन्तु, क्तावी

(कर्तृवाच्य)

§ २. कर्तृवाच्य में, भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे 'क्तवन्तु' तथा 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनना है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

राजा रञ्जं विजितवा—विजितावी । राजानो रञ्जं विजितवन्तो—
विजिताविनो ।

(देखिए—पृ० १४२ : १६०)

क्त

(कर्मवाच्य; भाववाच्य)

कर्म और भाववाच्य में, भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है । प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्मवाच्य में कर्म का विशेषण होता है; और भाववाच्य में सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचन रहता है । जैसे—

कर्म—रञ्जा रञ्जं विजितं; रञ्जा रञ्जानि विजितानि ।

भाव—मया हसितं; अस्हेहि हसितं; दया हसितं; तुम्हेहि हसितं; तेन हसितं; तेहि हसितं ।

क्त

(कर्तृवाच्य)

कुछ अवस्थाओं में, कर्तृवाच्य में भी, भूतकाल के अर्थ में धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है । प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है । जैसे—
पनुत्तो बालको । पसुत्ता बालिका । गामं बालको गतो । गामं बालिका गता । खखा फलानि पतितानि । (देखिए—पृ० १४२ : १४३ : १६०)

क्य

§ ३. क्यो भा व क म्मे स्व प रो क्खे सु भा न न्था दि सु ५.१७—भाव-वाच्य तथा कर्मवाच्य में, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने पर, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय होता है । 'क्य' का 'य' रह जाता है । जैसे—

ठीयमानं । ठीयते । सूयमानं । सूयते, सूयन्ते, सूयिस्सति इत्यादि ।

§ ४. क्य स्स ६.३७—'क्य' प्रत्यय आने से, धातु से परे विकल्प से 'ई' का आगम होता है । जैसे—

पच + क्य + ति = पच + ई + क्य + ति = पचीयति ।

§ ५. क्य स्स स्से ६.४६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल मे, विकल्प से 'क्य' का लोप होता है । जैसे—

अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा । अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति ।

§ ६. अ ङ्गा दि स्सा स्सी क्ये ५.१३७—'क्य' प्रत्यय आने से, 'जा' आदि को छोड़, दूसरे आकारान्त धातु के आकार का ईकार हो जाता है । जैसे—

ठा + क्य + ते = ठीयते । दा + क्य + ते = दीयते । पा + क्य + ते = पीयते । ['अ' आदि—तीसरा परिशिष्ट]

§ ७. त न स्सा वा ५.१३८—'क्य' प्रत्यय आने से, 'तन' धातु का विकल्प से 'ता' आदेश होता है । जैसे—तन + क्य + ते = तायते, (या) तञ्जते ।

§ ८. दी घो स र स्स ५.१३९—'क्य' प्रत्यय आने से, स्वरान्त धातु दीर्घ हो जाता है । जैसे—चि + क्य + ते = चीयते । सु + क्य + ते = सूयते ।

२०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) भगवा विहरति । भगवा निसीदति । भगवा समाधिम्हा उट्ठाति । भगवा मनसि-करोति । भगवा उदानं उदानेति । ब्राह्मणा भायन्ति । धम्मा पातु-भवन्ति । ब्राह्मणो सहेतु-धम्म पजानाति ।
- (ख) भगवता विहरीयति । भगवता सिहज्जते । भगवता समाधिम्हा उट्ठीयते । भगवता मनसि-करीयति । भगवता उदानं उदानीयति । ब्राह्मणेहि भायते धम्मेहि पातु-भूयते । ब्राह्मणेहि सहेतु-धम्मो पञ्जायते । देवेहि सक्को पुच्छीयते ।
- (ग) फस्स-पच्चया, वेदना सम्भवति । जाति-पच्चया, जरा-मरणं सम्भवति । तण्हा वड्ढति । असि छिन्दति । थाली पचति । देवो वस्सति ।
- (घ) दीयमानं दानं भिक्खूहि आदीयते । अदिन्नादाना अम्हेहि विरमितब्बं । बुद्धस्स सरण सावकेहि गच्छीयते । हीयमानेहि अकुशलेहि धम्मेहि, न पुन पच्चा-गच्छीयति । तिट्ठमानेन वा, चरन्तेन वा, निल्लिन्नेन वा, सायानेन वा भिक्खुना सति अधिट्ठातब्बा, ब्रह्म-विहारेण विहरितब्बं । भुत्ताविना भिक्खुना न पुन भत्तं भुज्जितब्बं ।
- (ङ) ब्रह्मणा याचितो सन्तो, भगवा धम्म-चक्क पवत्तयि । पञ्हे पुच्छीय-माने वा, धम्मे देसीयमाने वा, बुद्ध-धातुस्सि दस्सीयमाने वा, साधुक सनिकं सनिकं मनसि करिय्यति सति उपट्ठपेन्तेन भिक्खुना । सुरियो दिस्सति (पस्सीयति, दक्खीयति) । धम्मो पि तथागतेन देसितो दिस्सति चक्खु-मन्तेहि विञ्जूहि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूढ़ प्रथम-पुरुष एकवचन में लिखिए; और वाक्यों में उनका प्रयोग करके दिखाइए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

- (क) आकाश में सूर्य दिखाई दे रहा है । सूर्य देखते हुए मुझसे प्रकाश भी

देखा गया । धर्म समझते हुए भिक्खु लोगों से लोक-हित कार्य भी हुआ करता है । पालि-व्याकरण पढ़ा भी जाता है, पढ़ाया भी जाता है । पालि-व्याकरण पढ़ा जाना चाहिए, पढ़ा जा कर अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए ।

(ख) धर्म-दायाद होना चाहिए । धर्म-दायक होना चाहिए । माता-पिता का आज्ञा-पालन करना चाहिए । बुद्धों का शासन मानना चाहिए । तीन वेदों का पारङ्गत (पारगू) होना चाहिए । ब्राह्मण होना चाहिए । ब्राह्मण होने की इच्छा करने वाले मनुष्यों को बुद्ध भगवान् के उपदिष्ट धर्मों को सुनना चाहिए । सुनते हुए अच्छी तरह समझना चाहिए । समझते हुए आचरण करना चाहिए । धर्म ही करना योग्य है । धर्म ही से लोक का कल्याण होता है । कल्याण धर्म सुनते, करते, देखते हुए चित्त आस्रवों से मुक्त करना चाहिए ।

४. निम्नलिखित नाम-पद और धातुओं से कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य में वाक्य बनाइए—

(१)—बुद्धो-धम्मो-देस । (२)—दारको-पोत्थकं-पठ । (३)—कञ्जा-सुरियो-पस्स ।

(४)—भिक्खु-बुद्धो-वन्द । (५)—मुनि-धम्मो-चर । (६)—मनुस्सो-फलं-खाद ।

५. निम्नलिखित कर्तृ-वाच्य वाक्यों का कर्म-वाच्य बनाइए—

ब्रह्मदत्तो रज्जं कारेसि । राम-पण्डितो अनिच्चतं पकासेति । वासुदेवो कंसं हनति । सीता-देवी राम-पण्डितं अनुगच्छति । लक्षण-कुमारो राम-पण्डितं वन्दति । बुद्धो भगवा धम्मं देसेति । भगवा उदानं उदानेसि ।

चौथा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत^१

जो काम आज से पहले हुआ हो, उसमें किसी धातु के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पुरि स	पचा, अपचा, ^२ अपच ^३	अपचु, ^३ अपचू
म जिभ म पुरि स	अपचो ^४	अपचित्थ, अपचुत्थ
उत्त म पुरि स	अपच	अपचुम्हा, अपचित्म्हा, अपचिम्ह ^४

१. अ न ज्ज त ने आ ऊ, ओ त्य, अ म्हा : त्य त्थुं, से व्हं, इं म्हा से ६.५—
अनद्यतन अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं ।

मा यो गे ई आ आ दि ६.१३—‘मा’ शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक-भूत, तथा अनद्यतन भूत होते हैं । जैसे—

मास्सु पुनपि एवरूपमकासि । मा भवं अगमा वदं=आप वन मत जायें ।

२. आ ई स्सा दि स्व ङ् वा ६.१५—अनद्यतन भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से ‘अ’ का आगम होता है । जैसे—
अपचा, पचा ।

३. आ ई ऊ म्हा स्सा स्स म्हां न वा ६.३३—‘आ’, ‘ई’, ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा—इतका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है । जैसे—

अत्तनो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	अपचत्थ	अपचत्थुं
म जिभ्र म पु रि स	अपचसे	अपचव्हं
उ ल्ल म पु रि स	अपचिं	अपचाम्हसे

§ १६. अनद्यतन भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अबोच, अबोचु । कर—अका । गम—अगा । गम—अगञ्छा ।

डंस—अडञ्छा । (देखिए—पृ० ८६)

दिस—अहस, अहा । (देखिए—पृ० ११८)

परोक्ष भूत

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	पपच ^१	पपचु
म जिभ्र म पु रि स	पपचे	पपचित्थ
उ ल्ल म पु रि स	पपच	पपचिम्ह

अपचा, अपच । अपची, अपचि । अपचू, अपचु । अपचिम्हा, अपचिम्ह ।
अपचिस्सा, अपचिस्स । अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह ।

४. ओ स्स अ इ त्थ त्थो ६.४२—‘ओ’ का विकल्प से ‘अ’, ‘इ’, ‘त्थ’ तथा ‘त्थो’ आदेश होता है । जैसे—

त्वं अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो ।

५. प रो ऋत्वे अ उ, ए त्थ, अ म्ह; त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे ६.६—जो काम आज से पहले हुआ हो, तथा प्रत्यक्ष न हो, उस अर्थ में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं । जैसे—पपच, पपचु इत्यादि ।

परोक्ष = जो अपनी इन्द्रियों से अनुभूत न हो । स्वप्न, उन्माद, तथा विष-

अत्तनो पद्

ए क व च न		अ ते क व च न
ष ठ म पृ रि स	पपच्चित्थ	पपच्चिरे
म जिभ म पृ रि स	पपच्चित्थो	पपच्चिह्वो
उ त्त म पृ रि स	पपच्चि	पपच्चिम्हे

यान्तर में लगे हुए होने की स्थिति में, अपनी इन्द्रियों से अनुभूत क्रिया भी परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष में, उत्तम-पुरुष में भी परोक्ष-भूत का प्रयोग होता है। जैसे—मुत्तोन्वहं विललाप । मत्तोन्वहं विललाप । अत्तनो हं पठविं पपत् ।

६. प रोक्खाय उच्च ५.७०—परोक्ष भूत में भी, प्रथम एक स्वर शब्द रूप का द्वित्व हो जाता है। जैसे—पच + अ = पपच । पच + उ = पपचु । इत्यादि पाँचवाँ काण्ड-दूसरा पाठ में, द्वित्व होने के जो नियम आए हैं, सभी यहाँ लागू होंगे।

द्वित्व होने वाले धातु

परोक्ष भूत को छोड़, अन्य स्थानों में भी धातु का द्वित्व होता है। जैसे—हा—जहाति = छोड़ता है। जल—इद्वलति = खूब प्रज्वलित होता है। कम—चङ्गमति = बार बार घूमता है। कित—तिकिच्छति = चिकित्सा करता है। धा—इदति। तिज—तितिकखति = क्षमा करता है। मन—वीमंसति = मीमांसा करता है। गुप—जिगुच्छति। दा—इदति = देता है।

तिज मा ने हि ख सा ख मा वी मं सा सु ५.१—यदि 'तिज' धातु क्षमा के अर्थ में, और 'मान' धातु मीमांसा करने के अर्थ में हो, तो उनके साथ 'ख' तथा 'स' प्रत्यय होते हैं। जैसे—तिज—तितिकखति। मान—वीमंसति।

मान सस वी पर सस च मं ५.८०—'मान' धातु के द्वित्व होने से, पहले भाग का 'वी', तथा दूसरे भाग का 'मं' होता है। जैसे—वीमंसति।

कि ता ति कि च्छा सं स ये सु छो ५.२—चिकित्सा तथा शंसय करने के अर्थ में, 'कित' धातु से परे 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—तिकिच्छति = चिकित्सा करता है। विचिकिच्छति = संशय करता है।

कालातिपत्तिं (हेतुहेतुमद्भूत)

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ म प उ रि स	अपचिस्सा	अपचिस्संभु
म ङ्गि म प उ रि स	अपचिस्से	अपचिस्सथ
उ त्त म प उ रि स	अपचिस्सं	अपचिस्सम्हा

अत्तलो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ म प उ रि स	अपचिस्सथ	अपचिस्सिभु
म ङ्गि म प उ रि स	अपचिस्ससे	अपचिस्सव्हे
उ त्त म प उ रि स	अपचिस्सं	अपचिस्साम्हासे

§ २१. हेतुहेतुमद्भूत में कुछ विशेष धातु के रूप—

कर—अकाहा, अकरिस्सा । हा—अहाहा, अहायिस्सा । लभ—अलच्छा, अलभिस्सा । वस—अवच्छा, अबसिस्सा । छिद—अच्छेच्छा, अछिन्दिस्सा । भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा । रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा । भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा । मुच—अभोक्खा, अमुञ्चिस्सा । वच—अवक्खा, अवचिस्सा । प + विस—पावेक्खा, पाविस्सिस्सा । सक—सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा । सु—अस्सोस्सा, असुणिस्सा । अस—अभविस्सा । (देखिए—पृ० ६४-६६)

६. ए प्या दो वा ति ष त्ति थं स्सा स्सं भु, स्से स्स थ, स्सं स्स म्हा; स्स थ स्ति भु, स्स से स्स व्हे, स्सं स्सा म्हा से ६.७—हेतुहेतुमद्भूत में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सचे पठमवये पब्बज्जं अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा—यदि वह प्रथम आयु में प्रब्रज्या पाए होता, तो अर्हत् हो गया होता ।

२१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अट्टवा मेव मयं पुढ्वे, न नाट्टवम्हाति ? अकरा मेव मय पुढ्वे, पापं कम्म न नाकरम्हा ति ? अलत्थ पढ्वजं, अलत्थ उपमपद व ।

ब्रह्मा भगवन्त अयाचथ । भगवा तिपाट्टिहीरे (तीम्पु पाट्टिहारियेसु) वमी अट्टु । लोक-धातु पकम्पथ । म्हा ओभासो अरिषि । सो अगम्मा । ते अगम्पु । भगवा एतदवोच । मयं एवं अदच्चम्हा । सो अका । मय न अकरम्हा । मय एव कात्तु न दम्हा (अददम्हा) ।

(ख) अतीति मन्धाता नाम चक्कवत्ती राजा बभूव । भूत-पुढ्व जनको नाम राजा बभूव । राम-पण्डितो वनं जगाम ।

(ग) दुक्खस्स अन्तं चे नाभविस्स, निब्बान नो पञ्जायिस्स । कुशल कम्म चे नाकरिस्सं सुख-विपाक नालभिस्सं । बुद्धस्म सरणं चे नागच्छिस्सम्हा, भानसुखं नानुभविस्सम्हा । पालिया वियाकरण चे नापठिस्से, तेपिटकं साधुक ना वुज्झिस्से । दानानि चे नादीयिस्संसु पुञ्ज-विपाका नाभविस्संसु ।

अहं चे पुञ्जानि नाकरिस्सं, सगं लोकं नालभिस्सं । अहं चे तथरिव अभिजानिस्सं, यथरिव भगवा “अनेक-जाति-संसारं सन्धाविस्सं ति” अब्भञ्जासि । अहं पि तिस्सो चेव विज्जायो सच्छिक्त्वा अनेकजाति-संसारं न सन्धाविस्सं ।

(घ) चङ्कमे चङ्कमि जिने । भगवा हि सुवण्ण-वण्णो सुरियो विय दादल्लति (ददल्लति) । लोलुपा, मोमुहा मनुस्सा सगं लोकं नुप्पज्जन्ति । सिरंसपेहि विभेति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) (अनद्यतन भूत का प्रयोग कीजिए—)

भगवान ने भिक्षुओं को देखा । मैंने बुद्ध-मन्दिर देखा । मैं बुद्ध के शरण

गया। इसीलिए तुमको मद्यपान करने नहीं दिया। मैंने बुरा (अक्रुशल) काम नहीं किया।

(ख) (परोक्ख भूत का प्रयोग कीजिए—)

पूर्व काल में विदुर (विधुरो) नामक पण्डित था। युधिष्ठिर (युधिष्ठिलो) नामक राजा था। वासुदेव कृष्ण (वासुदेव-कृष्णो) ने चक्र से कंस को मारा। लक्ष्मण (लक्ष्मण-कुमारो) अपने भाई के साथ वन को गये।

(ग) फल खाते, तो शरीर हल्का (लहुक) होता। पालि-व्याकरण अच्छी तरह पढ़ते, तो त्रिपिटक को अच्छी प्रकार समझते। उपासक लोग संघ को दान देते, तो संघ की बढ़ती होती। दायक लोग त्रिपिटक के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराते, तो बहुत पुण्य होता (प+सू)। त्रिपिटक की भाषा मधुर न होती, तो पढ़ने वाले का चित्त प्रसन्न नहीं होता (प+सद्)। ब्रह्मलोक यदि न होता, तो प्रथम ध्यान का विपाक कैसे अनुभव किया जाता? पूर्व जन्म (पुब्बे-निवासो) यदि न होता, तो ध्यानियों को कैसे उसका अनुस्मरण होता।

चौथा काण्ड

तीसरा पाठ

‘वाला’-वाचक प्रत्यय

(क.)

(कृदन्त प्रकरण—तीसरा भाग)

लु, णक,

§ २६. कत्तरि लुणका ५.३३—‘इस काम को करने वाला,’ इस अर्थ में, धातु से परे ‘लु’ और ‘णक’ प्रत्यय होते हैं। ‘लु’ का ‘तु’, और ‘णक’ का ‘अक’ रह जाता है। (देखिए—पृ० ९४-९६) जैसे—

	लु	णक
दा = देना	दातु (दाता)	दायको = देने वाला
वच = बोलना	वत्तु (वक्ता)	वाचको = बोलने वाला
नी = ले जाना	नेत्तु (नेता)	नायको = नायक
सु = सुनना	सोतु (सोता)	सावको = सुनने वाला
जि = जीतना	जेतु (जेता)	× = जीतने वाला
छिद = छेदना	छेत्तु (छेत्ता)	छेदको = छेदने वाला

१. आ सता णा पि णिह युक् ५.६१—‘णापि’ को छोड़, अन्य ‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, आकारान्त धातु से परे ‘य’ का आगम होता है। जैसे—
दा + णक = दायको ।

आवी

§ ३०. आ वी ५.३४—‘इस स्वभाव वाला’ इस अर्थ में, धातु से परे, बहुधा ‘आवी’ प्रत्यय होता है। जैसे—भयदस्सावी=भय देखने वाला, भयशील।

अक

§ ३१. आ सिं सा य म को ५.३५—आशीर्वाद का भाव हो, तो धातु से परे ‘अक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवतु इति—जीवको=बहुत दिन जीने वाला

नन्दतु इति—नन्दको=आनन्द से रहने वाला

णन (का ‘अन’ रह जाता है)

§ ३२. कुरा णनो ५.३६—‘कर’ धातु से परे, ‘णन’ प्रत्यय होता है। जैसे—
करोति इति—कारणं=करने वाला

§ ३३. हा तो वी हि काले सु ५.३७—‘ब्रीहि’ और ‘काल’ का चोतक हो, तो ‘हा’ (=छोड़ना) धातु से परे ‘णन’ प्रत्यय होता है। जैसे—

हायना=एक प्रकार की ब्रीहि। हायनो=वर्ष।

कू (का ‘ऊ’ रह जाता है)

§ ३४. वि दा कू ५.३८—‘विद’ धातु से परे, ‘कू’ प्रत्यय होता है। जैसे—
विदू=जातने वाला। लोकविदू=संसार को जानने वाला।

§ ३५. वि तो आ तो ५.३९—‘वि’ पूर्वक ‘आ’ धातु से परे, ‘कू’ प्रत्यय होता है। जैसे—विञ्जू=विशेष जानने वाला।

§ ३६. क म्मा ५.४०—कर्म से परे ‘आ’ धातु आवे, तो उक्त अर्थ में उससे परे ‘कू’ प्रत्यय होता है। जैसे—सब्बं जानाति इति—सब्बञ्जू=सब कुछ जानने वाला। कालञ्जू=काल जानने वाला। वेदञ्जू=वेद जानने वाला।

अण

§ ३७. क्व च ण् ५.४१—कर्म से परे, धातु के बाद कही कही 'अण' प्रत्यय होता है। 'अण्' का 'अ' रहता है; तथा, धातु के उपान्त स्वर की वृद्धि होती है। जैसे—

कुम्भकारो = कुम्भ को बनाने वाला। सरलावो = सर नामक तृण को काटने वाला। मन्तज्जायो = मन्त्र पढ़ने वाला।

रू

§ ३८. ग मा रू ५.४२—कर्म से परे 'गम' धातु आवे, तो उक्त अर्थ में, उससे परे 'रू' प्रत्यय होता है। 'रू' का 'ऊ' रहता है। जैसे—

वेदगू = वेद में गति रखने वाला। पारगू = पार जाने वाला।

णी

§ ३९. सी ला अ भि क्व ऊा व स्स के सु णी ५.५३—शील, आभिक्षण्य (= बार बार होना), और आवश्यक का अर्थ प्रतीत होता हो, तो धातु से परे 'णी' प्रत्यय होता है। 'णी' का 'ई' रहता है; तथा, धातुके उपान्त की वृद्धि होती है। जैसे—

उण्होजी = गरम खाने वाला

खीरपायी = बार बार दूध पीने वाला

अवस्सकारी = अवश्य करने वाला

सतन्दायी = सौ देने वाला

§ ४०. था व रि त्तर भ ड्गुर भि डुर भा सुर भ स्स रा ५.५४—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

थावर = स्थावर = स्थित रहने वाला। इत्तर = जाने वाला। भङ्गुर = टूट जाने वाला। भिडुर = नष्ट हो जाने वाला। भासुर, भस्सर = चमकने वाला।

(र्व)

(तद्धित प्रकरण—पहला भाग)

मन्तु

§ १. त मे त्थ स्स त्थी ति मन्तु ४.७८—‘वाला’ के अर्थ में, नाम से परे ‘मन्तु’ प्रत्यय होता है । जैसे—

गौवों वाला देश या पुरुष—गोमा (गोमन्तु) । वैसे ही, गतिमा (गतिमन्तु)= गतिवाला । सतिमा (सतिमन्तु)=स्मृति वाला । आयस्मा^१ (आयस्मन्तु)= आयुष्मान् । [देखिए—पृ० ८०]

वन्तु

§ २. वन्त्व वण्णा ४.७९—अकार तथा आकार से परे, ‘मन्तु’ के स्थान में ‘वन्तु’ होता है । जैसे—

शीलवा (शीलवन्तु)=शील वाला । पञ्जवा (पञ्जवन्तु)=प्रज्ञा वाला । [देखिये—पृ० ८०]

इक्, ई

§ ३. दण्डा दि त्ति क ई वा ४.८०—‘वाला’ के अर्थ में, ‘दण्ड’ आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे, कहीं कहीं ‘इक्’ तथा ‘ई’ प्रत्यय भी होते हैं । जैसे—

दण्ड—दण्डिको, दण्डी, दण्डवा =दण्ड वाला

गन्ध—गन्धिको, गन्धी, गन्धवा =गन्ध वाला

रूप—रूपिको, रूपी, रूपवा =रूप वाला

§ ४. उ त्त मि णे व ध ना इ को—‘धन’ शब्द से परे, केवल उत्तमर्ण (=ऋण

२. आयुस्सायस् मन्तुम्हि ४.१३४—‘मन्तु’ प्रत्यय आने से, ‘आयु’ शब्द का ‘आयस्’ आदेश हो जाता है । जैसे—अयु + मन्तु = (आयस्मन्तु) आयस्मा ।

देने वाला महाजन) के अर्थ में, 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

धनिको = ऋण देने वाला महाजन ।

धनी, धनवा = धन वाला ।

§ ५. असन्निहिते अत्था—'अत्थ' (= अर्थ) शब्द में परे, 'न रहने के अर्थ में' 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अत्थिको, अत्थी = जिसके पास अर्थ नहीं हो; जो उसकी चाह करता है।

अत्थवा = अर्थ वाला ।

§ ६. हृत्थदन्ते हि जातियं—'हृत्थ' तथा 'दन्त' शब्दों में परे, जाति के अर्थ में, 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—हृत्थी = हाथी। दन्ती = हाथी। नहीं तो—हृत्थवा = हाथ वाला। दन्तवा = दाँत वाला।

§ ७. वण्णतो ब्रह्मचारिस्मि—ब्रह्मचारी के अर्थ में, 'वण्ण' शब्द में परे 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—वण्णी = वर्णी = ब्रह्मचारी। नहीं तो—वण्णवा = वर्णवान् = सुन्दर।

स्सी

§ ८. तपादीहि स्सी ४.८१—'वाला' के अर्थ में, 'तप' आदि शब्दों में परे, 'स्सी' प्रत्यय होता है। जैसे—तपस्सी = तप करने वाला। यसस्सी = यस वाला। तेजस्सी = तेज वाला। मनस्सी = मान वाला। पयस्सी = दूध वाला। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट]

र

§ ९. मुखदितो रो ४.८२—'मुख' आदि शब्दों में परे, 'रो' प्रत्यय होता है। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट] जैसे—

मुखरो = बहुत बोलने वाला। सुसिरो = छिद्र वाला। ऊसरो = रेत वाला। मधुरो = मीठा। दन्पुरो = निकले दाँत वाला।

भ

§ १०. तुण्ड्यादीहि भो ४.८३—'तुण्ड' आदि [देखिए, तीसरा

परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'भो' प्रत्यय होता है। जैसे—

तुण्डिभो=चोंच वाला। सालिभो=सालि धान वाला। विकल्प से, 'तुण्डिमा' भी।

अ

§ ११. सद्धा दि त्व ४.८४—'सद्धा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, उक्त अर्थ में, विकल्प से 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

सद्धो=श्रद्धा वाला। पञ्जो=प्रज्ञा वाला। विकल्प से—'पञ्जवा' भी।

ण

§ १२. णो त पा ४.८५—'तप' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रहता है; तथा, उपधा की वृद्धि होती है। जैसे—तापसो=तप करने वाला। स्त्रीलिङ्ग में—तापसी।

आलु

§ १३. आ ल्व भि ज्भा दी हि ४.८६—'अभिज्भा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'आलु' प्रत्यय होता है। जैसे—

अभिज्भालु=बड़ा लोभ वाला। सीतालु=शीत न सह सकने वाला। दयालु=दया वाला। क्रोधालु=क्रोध वाला। निहालु=बहुत नीद लेने वाला। विकल्प से—दयावा, क्रोधवा भी।

इल

§ १४. पि च्छा दि त्व लो । ४.८७—'पिच्छ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'इल' प्रत्यय होता है। जैसे—

पिच्छलो, पिच्छवा=पर वाला (=मोर)। फेणिलो, फेणवा=फेन वाला। जटिलो, जटावा=जटा वाला।

व

§ १५. सीलादितो वो ४.८८—'सील' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—

सीलवो=शील वाला। केसवो=केश वाला।

अण्णा नि च्चं—'अण्ण' शब्द से परे, नित्य 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—
अण्णवो=जल वाला (समुद्र)।

वी

§ १६. माया मे धा हि वी ४.८९—'माया' और 'मेधा' शब्दों से परे, 'वी' प्रत्यय होता है। जैसे—

मायावी=माया वाला। मेधावी=अकल वाला।

आमी, उवामी

§ १७. सिस्स रे आ म्यु वा मी ४.९०—'स' (=स्व) शब्द से परे, 'अधिकार रखने वाले' के अर्थ में, 'आमी' तथा 'उवामी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सामी, सुवामी=अधिकार रखने वाला।

ण

§ १८. लक्ख्या णो अ च ४.९१—'लक्खी' (=लक्ष्मी) शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से, 'लक्खी' शब्द के 'ई' का 'अ' हो जाता है। जैसे—

लक्खणो=लक्ष्मी वाला।

न

§ १९. अङ्गना नो कल्या णे ४.९२—कल्याण का द्योतक हो, तो 'अङ्ग' शब्द से परे, 'न' प्रत्यय आता है। जैसे—

अङ्गना=कल्याणकर अङ्गों वाली।

सो

§ २०. सो लोमा ४.६३—‘लोम’ शब्द से परे, ‘स’ प्रत्यय होता है।
जैसे—लोमसो = रोये वाला । स्त्रीलिङ्ग में—लोमसा ।

इम, इय

§ २१. इ मि या ४.६४—‘वाला’ के अर्थ में, बहुधा ‘इम’ और ‘इय’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—

पुत्तिमो = पुत्र वाला । क्तिमो = कीर्ति वाला । पुत्तियो = पुत्र वाला ।
जटियो = जटा वाला । सेनियो = सेना वाला ।

२२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा हि लोक-नायको लोक-विदू सत्था देव-मनुस्सान। एकच्चो पाणातिपाती होति, एकच्चो अदिनादायी होति, अदिन्नं थ्येय्यसखात् आदाता होति। एकच्चो कामेमु मिच्छाचारी होति चारिजं आपज्जिता। एकच्चो मुसा-आदी होति, सपजान-मुसा भासिता। भगवा हि एवं-रूपान सत्तानं अज्भासयवसेन पि धम्मं देसिता होति लोकस्म विनेता। ब्रह्मचारी, अनुमत्तेसु वज्जेसु भय-इस्सावी, अज्कोधनो भिक्खु वुट्ठस्म मानन-करो ताम होति, धम्मस्स अनुधम्म-चारी।

(ख) अरञ्ज-विहारिना भिक्खुना सतिमस्सेन भवितव्वं, कायिकं वाचिकं मान-सिक च कम्म पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कानव्वं। सतिमा, भय-इस्सावी, लज्जी, मेधावी, कतञ्जू, अकथंकर्था, दयालु, अमुखरो भिक्खु धम्मेसु परिपूर-कारी होति सुविञ्जाता, वुट्ठ-सासन-करो, धम्मिको ति।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों का विश्लेषण कीजिए—

जैसे, सुविञ्जाता = सु + वि + जा + ल्तु। सतिमा = सति + मन्तु। धम्मिको = धम्म + इक।

चौथा काण्ड

चौथा पाठ

भाव-वाचक प्रत्यय

भाव-वाचक प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—(१) धातु से परे लगने वाले, (=कृदन्त) और (२) नाम से परे लगने वाले (=तद्धित) । जैसे—गम—गमनं, गति । मधुर—मधुरत्तं, मधुरता ।

(क)

(कृदन्त प्रकरण—चौथा भाग)

अ, घण

§ ४१. भाव कार के सु अ - घण - घ - का ५.४४—भाव के अर्थ में, धातु से परे, बहुधा 'अ' तथा 'घण' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

अ—पगहो = पकड़ना । निगहो = निग्रह । चयो = चुनना । जयो = जीतना । रवो = आवाज । वचो = बोलना ।

घण्—पाको* = पकना । चागो* = त्याग । लाभो । भागो । भारो । हारो । आचारो । विचारो । निच्छयो^१ ।

* देखिए—पृ० १५०. सूत्र ५.६८.

१. नि तो चि स्स छो ५.१२२—'नि' उपसर्ग पूर्वक, 'चि' धातु का 'छि' आदेश हो जाता है । जैसे—

नि + चि + अ = नि + छि + अ =

(सरम्हा द्वे १.३४) निच्छि + अ = (चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५) निच्छि + अ = (युवण्णानं ए ओ पच्चये ५.८२) निच्छे + अ = (एओनं यवा सरे ५.८३) निच्छयो ।

इ

§ ४२. दा धा त्वि ५.४५—‘दा’ तथा ‘धा’ धातुओं से परे, ‘इ’ प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि=आदान करना=लेना। निधि=निधान करना=जमा करना।

अथु

§ ४३. व मा दी ह थु ५.४६—‘वम’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं से परे, ‘अथु’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वमथु=वमन करना। वेपथु=काँपना।

क्वि

§ ४४. क्वि ५.४७क्वि स्स, ५.१५९, क्वि म्हि लो पो ‘स्त व्यञ्जन स्स ५.९४—भाव तथा कारक मे, धातु से परे ‘क्वि’ प्रत्यय होता है। ‘क्वि’ प्रत्यय का लोप हो जाता है; उसके स्थान पर कुछ नहीं रहता है। ‘क्वि’ प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—अभिभवतीति—अभिभू। सयं भवतीति—सयम्भू। भत्तं गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ—भत्तगं। सलाकं गण्हन्ति एत्थाति—सलाकगं। सडिभि भाति—सभा। संगम्म भासन्ति एत्थाति—सभा।

भत्त + गस + क्वि = (‘गस’ धातु के अन्त्य व्यञ्जन ‘स’ का लोप) भत्त + ग = (सरम्हा द्वे १.३४) भत्तगं। स + भास + क्वि + आ = सभा।

क्वि म्हि घो प रि प च्च स सो हि ५.१००—‘परि’, ‘पति’, तथा ‘स’ पूर्वक, ‘हन’ धातु से परे ‘क्वि’ प्रत्यय आने से, ‘हन’ धातु का ‘घ’ आदेश हो जाता है। जैसे—

परिहञ्जतीति—पलिघो। पतिहञ्जतीति—पटिघो। आहञ्जतीति—अघं = पाप। संहतो इति—सङ्घो। ओहञ्जति एतेनाति—ओघो = वाढ़।

अ, गा, क्ति, क, यक्, य

§ ४५. इ तिथ य म ण क्ति क य क्वा च ५.४९—स्त्रीलिङ्ग में, धातु से परे, बहुधा ‘अ’, ‘ण’, ‘क्ति’, ‘क’, ‘यक्’, तथा ‘य’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अ—तितिक्षा, बीभंसा, जिगुच्छा, बीभच्छा, तिकिच्छा, विचिकिच्छा, विपासा, ईहा, भिक्षा, आपदा ।

ए—कारा=करना । हारा=हरण करना । तारा=तरण करना । धारा=धारण करना ।

क्ति (का 'ति' रह जाता है)—इष्टि, भित्ति, भक्ति (=भक्ति), भूति, सति (=स्मृति), वड्डि^३ (=वृद्धि) ।

क—(का 'अ' रह जाता है)—हजा=पीडा देना । मुदा=मोद ।

यक्—(का 'य' रह जाता है)—विज्जा=विद्या । इच्छा । क्रिया ।

य—वब्बज्जा=प्रव्रज्या । परिचरिया=सेवा । जागरिया=जानना । मिगया=शिकार खेलना ।

अन—वेदना, वन्दना, उपासना ।

अन

§ ४६. अनो ५.४८—भाव के अर्थ में, धातु से परे 'अन' प्रत्यय होता है । जैसे—निगूहन^३, आळाहन^३, गभनं, दानं, सम्पदानं, पानं, असनं, वसनं, अधिकरणं, चलनं, जलनं, कोधनो, कोपनो, अण्डनं, सरणं, भरणं, हरणं ।

§ ४७. रा ञ स्स णो ५.१७१—रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' हो जाता है । जैसे—अरणं, सरणं, भरणं ।

[न न्त मा न त्या दी नं ५.१०२—रकारान्त धातु से परे, 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि प्रत्ययों के 'न' का 'ण' नहीं होता है । जैसे—करोन्तो । कुहमानो । करोन्ति]

२. लोपो वड्डा क्ति स्स ५.१५८—'वड्ड' धातु से परे, 'क्ति' प्रत्यय के 'त' का लोप हो जाता है । जैसे—वड्ड + क्ति = वड्डि ।

३. गुहिस्स सरे ५.१०५—'गुह' धातु से परे स्वर हो, तो उसके 'उ' का दीर्घ हो जाता है । जैसे—नि + गुह + अन = निगूहनं ।

४. अनघणस्वापरीहि लो ५.१२७—'अन' तथा 'घण' प्रत्ययों के आने से, 'आ' तथा 'परि' पूर्वक 'दह' धातु के 'द' का 'ळ' होता है । जैसे—आळाहनं । परिळाहो ।

नि

§ ४८. जा हा हि नि ५.५०—भाव के अर्थ में, 'जा' तथा 'हा' धातुओं से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—जानि=खराब होना। हानि=नष्ट होना।

इ, कि, ति

§ ४९. इ कि ती त रूपे ५.५२—धातु के अपने ही अर्थ में, उससे परे 'इ', 'कि' तथा 'ति' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
वच=वचि। युध=युधि। पच=पचति।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—दूसरा भाग)

§ २२. तस्स भवकम्भेसु स्त, तात्तच, प्य, णेय्य, ण, इय, गिय ४.५९—
भाव के अर्थ में, नाम शब्दों से परे, बहुधा ये प्रत्यय आते हैं—(१) त्त, (२) ता, (३) त्तन, (४) प्य, (५) णेय्य, (६) ण, (७) इय, (८) गिय। जैसे—

१. त्त

नीलस्स भावो—नीलत्तं=नीलत्व
चन्दस्स भावो—चन्दत्तं=चन्द्रत्व
सुरियस्स भावो—सुरियत्तं=सूर्यत्व
बुद्धस्स भावो—बुद्धत्तं=बुद्धत्व
बहुनो भावो—बहुत्तं=बहुत्व
अनेकस्स भावो—अनेकत्तं=अनेकत्व

२. ता

नीलस्स भावो—नीलता
मनुस्सस्स भावो—मनुस्सता
बुद्धस्स भावो—बुद्धता
चपलस्स भावो—चपलता
सहायस्स भावो—सहायता

३. त्तन

पुथुज्जनस्स भावो—पुथुज्जनत्तनं =पुथक् जनत्व
 वेदनाय भावो—वेदन्त्तनं =वेदनात्व
 जायाय भावो—जायत्तनं =स्त्रीत्व
 जारस्स भावो—जारत्तनं = परस्त्री गमन करना

४. ण्य

अलसस्स भावो—अलस्सं^५ =अलस्य
 ब्रह्मनो भावो—ब्रह्मञ्जं =ब्राह्मणत्व
 चपलस्स भावो—चापल्यं
 निपुणस्स भावो—नेपुञ्जं =नैपुण्य
 पिसुत्तस्स भावो—पेसुञ्जं =चुगलखोरी
 राजस्स भावो—रज्जं =राज्य
 अधिपतिनो भावो—आधिपच्चं^६ =आधिपत्य
 दायादस्स भावो—दायज्जं =दायाद्य
 सखिनो भावो—सख्यं =मित्रता
 वणिजस्स भावो—वाणिज्जं =वाणिज्य

५. लो पो व णिण व ण्णानं ४.१३१—‘यकार’ से आरम्भ होने वाला प्रत्यय परे हो, तो शब्द के अन्त्य ‘अ’ तथा ‘इ’ का लोप होता है। जैसे—अलस + ण्य =अलस् + य आलस्यं। अधिपति + ण्य =आधिपत् + य =आधिपत्यं = (तद्वगवरणानं ये चवग्गवयञ्जा १.४८) आधिपच्चं।

स रान मा दि स्सा यु व ण्ण स्सा ए ओ णानु बन्धे ४.१२४—‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदि में स्थित ‘अ’, ‘इ’, तथा ‘उ’ का यथाक्रम ‘आ’,-‘ए’, तथा ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—अलस + ण्य =अलस्सं। चपल + ण्य =चापल्लं। अधिपति + ण्य =आधिपत्यं =आधिपच्चं।

५. शैथ्य

सुचिनो भावो—सोचेय्यं = पवित्रता

अधिपतिनो भावो—आधिपतेय्यं = आधिपत्य

६. ण

गुह्नो भावो—गारवं = गौरव

पटुनो भावो—पाटवं = पटुता

उजुनो भावो—अज्जवं = ऋजुता

मुदुनो भावो—मद्वं = मृदुता

७. इय

अधिपतिनो भावो—अधिपतियं = आधिपत्य

पण्डितस्स भावो—पण्डितियं = पाण्डित्य

बहुस्सुतस्स भावो—बहुस्सुतियं = बहुश्रुतता

नगस्स भावो—नगियं = नग्नता

सूरस्स भावो—सुरियं = सूरता

८. शिय

अलसस्स भावो—आलसियं = आलस्य

कलुसस्स भावो—कालुसियं = कालुष्य

मन्दस्स भावो—मन्दियं = मन्दता

दक्खस्स भावो—इक्खियं = दक्षता

पुरोहितस्स भावो—पोरोहितियं = पौरोहित्य

§ २३. लोपो ४.१२३—कभी कभी, प्रत्ययो का लोप भी देखा जाता है। जैसे—बुद्धे रतनं पणीतं = बुद्धे रतनत्त पणीतं। चक्खु सुञ्जं अत्तेन वा अत्तनियेन वा = चक्खुं अत्तत्तेन वा अत्तनियत्तेन वा सुञ्जं।

ब्य

§ २४. ब्य बद्ध दा सा वा ४.६०—भाव के अर्थ में, 'बद्ध' और 'दास' शब्दों से परे, विकल्प से 'ब्य' प्रत्यय होता है। जैसे—बद्धब्यं—बद्धता = बँधा हुआ होना। दासब्यं—दासता।

नण्

§ २५. नण् यु वा बो च वस्स ४.६१—भाव के अर्थ में, 'युव' शब्द से परे, विकल्प से 'नण्' प्रत्यय होता है। 'नण्' प्रत्यय लगने से, 'युव' शब्द के 'व' का 'ब' हो जाता है। जैसे—योब्वनं—युवत्त, युवता = जवानी।

इम

§ २६. अण्वा दि त्ति मो ४.६२—भाव के अर्थ में, 'अणु' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—अणिमा = अणुत्व। लघिमा = लघुत्व। महिमा^६ = महत्त्व। कस्सिमा^६ = कृशता। विकल्प से—अणुत्तं, अणुता, लघुत्तं, लघुता इत्यादि भी।

निपात—को स ज्जा ज्ज व पा रि स ज्ज सु ह ज्ज म इ वा रि स्सा स भा ज ज्ज थे द्य वा हु स च्चा ४.१२७—ये शब्द निपात हैं। जैसे—कुसीतस्स भावो कोसज्जं। उज्जुनो भावो—अज्जवं। परिसासु साधु—परिसज्जो। सुहृदयो व—सुहृज्जोः सुहृज्जस्स भावो—सोहृज्जं। मुदुनो भावो—मह्वं। इसिनो इदं, भावो वा—आरिस्सं। उसभस्स इदं, भावो वा—आसभं। आजानीयस्स भावो, सो एव वा—आजज्जं। थेनस्स भावो, कम्मं वा—थेद्व्यं। बहुस्सुतस्स भावो—बाहुसच्चं।

६. किस महत मि मे कस्महा ४.१३३—'इम' प्रत्यय आने से, 'किस' तथा 'महन्त' शब्दों का, यथाक्रम 'कस्' तथा 'मह' आदेश हो जाता है। जैसे—किस + इम = कसिमा। महन्त + इम = महिमा।

२३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) पञ्चाय पटिलाभो सुखो । पापान् अकरणं मुख । एकस्स चरितं सेव्यो ।
अरियानं दस्सनं साधु होति । तेसं सन्निवासो सदा सुखो होति । अञ्जेस
वज्जं सुदस्स होति, अत्तनो पन वज्ज दुदस्स होति । यो पापानि कम्मनि
करोति, सो वेदनं, फरुसं, जातिं, सरीरस्स भेदनं, गरुक् आबाधं, चित्त-
क्खेपं वा पापुणिस्सति । रागं च दोसं च मोहं च पहाय, निव्वाण एहिमि
(गमिस्ससि) । इन्द्रिय-गुत्ति, सन्नुट्ठि, पाप्पिमोक्खे च संवरों, पटिसन्धार
वुत्ति, भिक्खुना सम्पादेतव्वा । लसथो, दमथो, विपस्सना, सतिया उपट्ठान,
पटिसम्भिदा, वेदानानं सञ्जान च निरोथो, विमुत्ति चाति भावेतव्वा ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए ।

३. निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए—

- (क) हासो, पीति, वित्ति, तुट्टि, आनन्दो पमुदा, आधोदा, सन्नोमो, नन्दि
पामोज्ज पमोदो नि (सन्तोस-परियाया) ।
- (ख) तण्हा, तसिना, एजा, जालिनी, विसत्तिका, छन्दो, जटा, निकन्त्या,
सिब्बनी, भवनेत्ति, अभिज्झा, वनथो, वानं, लोभो रागो, मनोरथो, इच्छा,
अभिलासो, काम, आकंखा, रुचि (इच्छा-परियाया) ।
- (ग) धी, पञ्जा, बुद्धि, मेधा, मति, मुति, पञ्जाणं, ञाण, विज्जा,
योनि, पटिभानं, अमोहो, विपस्सना, सम्मादिट्ठि (पञ्जा-परियाया) ।
वाहुसच्च, गारवो, कतञ्जुता, सोवचस्सता ति (मङ्गलानि) । पण्डिच्च,
कोसल्लं, यथाभुच्च, अज्जव (भिक्खुना सम्पादेतव्वानि) । साठेय्य,
थेय्यं । पसुकुलिकत्तं, अब्भोकामिकता । काय-मुट्ठुता, काय-कम्म-ञ्जता,
काय-पागुञ्जता ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

- (क) बुद्धों की पूजा । देवताओं की अनुस्मृति । पापो का न करना । कुशल

धर्मों का जमा करना । सज्जनों का दर्शन करना । गुरुजनों का सम्मान करना । दुर्जनों का त्याग करना । त्रिपिटक का स्वाध्याय करना । खाने की इच्छा । इन्द्रियों का दमन करना । चित्त का निरोध करना । लड़कों को जमा करना । लकड़ियों को एकत्रित करना । सेना संग्रह करना । भिक्षुओं को प्रणाम करना । भूखों को खिलाना । ब्राह्मणों का सत्कार करना । तृष्णा को छोड़ना । घर छोड़ कर बेघर हो जाना ।

(ख) प्रातःकाल जागना अच्छा है । हाथ मुँह धोना अच्छा है । बुद्ध के अनुस्मरण से चित्त को शुद्ध करना कल्याणकर है । किसी कर्मस्थान को लेकर ध्यान करना उचित है । मैत्री भावना से सब दिसाओं को व्याप्त करना ब्रह्मविहार है । कुशल धर्मों को बढ़ाना, अकुशल धर्मों को घटाना जरूरी है ।

चौथा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

प्रेरणार्थक क्रिया

§ २२. प यो ज क व्या पा रे णा पि च ५.१६—प्रेरणा करने के अर्थ में, धातु से परे, (णि) 'इ', तथा (णापि) 'आपि' प्रत्यय आते हैं। प्रत्यय लगने से, धातु के अन्त्य तथा उपान्त लृस्व स्वर की प्रायः वृद्धि हो जाती है। 'अ' की वृद्धि 'आ', 'इ' तथा 'ई' की वृद्धि 'ए', और 'उ' तथा 'ऊ' की वृद्धि 'ओ' है। प्रत्यय लगे हुए धातु के रूप 'चुरादि गण' के समान चलते हैं (देखिए—पृ० १२४-१२५)। जैसे—

धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
भ्वादि गण—अच्च (=पूजा करना)	अच्चि, अच्चापि (=पूजा कराना)	अच्चेति, अच्चयति अच्चापेति, अच्चापयति
अट (=घुमना)	आटि, आटापि (=घुमवाना)	आटेति, आटयति आटापेति, आटापयति
अद (=खाना)	आदि, आदापि (=खिलाना)	आदेति, आदयति आदापेति, आदापयति
इक्ख (=देखना)	इक्खि, इक्खापि (=दिखाना)	इक्खेति, इक्खयति इक्खापेति, इक्खापयति
कन्द (=रोना)	कन्दि, कन्दापि (=रुलाना)	कन्देति, कन्दयति कन्दापेति, कन्दापयति

धातु	प्रेरणार्थक	धातु रूप
कम्प (=काँपना)	कम्पि, कम्पापि (=कँपाना)	कम्पेति, कम्पयति कम्पापेति, कम्पापयति
चज (=छोड़ना)	चाजि, चाजापि (=छुड़ाना)	चाजेति, चाजयति चाजापेति, चाजापयति
नी (=ले जाना)	नायि, (=लिवा जाना)	नाययति ^१
पच (=पकाना)	पाचि, पाचापि (=पकवाना)	पाचेति, पाचयति ^१ पाचापेति, पाचापयति
भू (=होना)	भावि, भापि	भावयति ^१ भावेति,
हन (मारना)	घाति (=मरवा देना)	घातेति, घातयति ^३ इत्यादि

१. आ या वा णा नु ब न्धे ५.६०—‘ण’ अनुबन्ध वाले स्वरादि प्रत्ययों के आने से, धातु के अन्त्य ‘ए’ तथा ‘ओ’ का क्रमशः ‘आय’ तथा ‘आव’ हो जाता है। जैसे—

नि + णि + ति = (युवण्णानमे ओप्पच्चये ५.८२) ने + इ + ति = (प्रस्तुत सूत्र से) नायि + ति = (कत्तरि लो ५.१८) = नायि + अ + ति = नाये + अ + ति = (एओनमयवा सरे ५.८६) नाययति ।

भू + णि + ति = (युवण्णानमे ओप्पच्चये ५.८२) भो + इ + ति = भावयति

२. अस्सा णा नु ब न्धे ५.८४—‘ण’ अनुबन्ध वाले किसी प्रत्यय के आने से, धातु के उपान्त ‘अ’ का ‘आ’ हो जाता है। जैसे—पच + णि + ति = पाच + इ + ति = पाचि + ति = (युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२) पाचेति ।

पाचे + ति = (कत्तरि लो ५.१८) पाचे + अ + ति = (एओनमयवा सरे ५.८६) पाचयति ।

पच + णापि + ति = पाचापेति (पाचापयति) पच + णक = पाचको ।

णी णा प्या पी हि वा ५.२०—णि, णापि, तथा आपि प्रत्ययान्त धातु से

	धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
२.	रुधादि गण—कन (=काटना)	कानि, कानापि (=कटवाना)	कातेति, कातयति कातापेति, कातापयति
	छिद (=छेदना)	छेदि, छेदापि (=छिदवाना)	छेदेति, छेदयति छेदापेति, छेदापयति
	भुज (=खाना)	भोजि, भोजापि (=खिलाना)	भोजेति, भोजयति भोजापेति, भोजापयति
३.	दिवादि गण—कुध (=क्रोध करना)	कोधि, कोधापि (=क्रोध करवाना)	कोधेति, कोधयति कोधापेति, कोधापयति
	दिव (=चमकना)	देवि, देवापि (=चमकाना)	देवेति, देवयति देवापेति, देवापयति
	दुम (=ट्रेप करना)	दूमि, दूमापि	दूसेति, दूमयति
४.	तुदादि गण—खिप (=फेकना)	खेपि, खेपापि (=फेकवाना)	खेपेति, खेपयति खेपापेति, खेपापयति
	नुद (=प्रेरित करना)	नोदि, नोदापि (=प्रेरित करना)	नोदेति, नोदयति नोदापेति, नोदापयति
	लिख (=लिखना)	लेखि, लेखापि (=लिखाना)	लेखेति, लेखयति लेखापेति, लेखापयति
५.	ज्यादि गण—अम (=खाना)	आमि, आसापि (=खिलाना)	आसेति, आसयति आसापेति, आसापयति

परे, 'ल' प्रत्यय लगा सकते हैं, और नहीं भी। जैसे—पाचि + अ + नि = पाचयति।
पाचि + ति = पाचति। पाचापयति। पाचापेति।

३. हनस्स घातो णानुबन्धे ५.६६—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घात' आदेश होता है। जैसे—हन + णि + नि = घातेति, घातयति।

४. णि णिद्दी घो दुसस्स ५.१०४—'णि' प्रत्यय आने से, 'दुस' धातु के उकार का दीर्घ हो जाता है। जैसे—दुम + णि + नि = दूसेति।

इसी तरह, दूसरे गणों के धातु से भी प्रेरणार्थक धातु बनाए जा सकते हैं। प्रेरणार्थक धातु के रूप, चुरादि गण के धातु के समान, सभी काल में होते हैं। प्रेरणार्थक धातु के साथ 'अ', 'ना', 'णो' आदि किसी गण का कोई विकरण नहीं लगता है।

§ २३. णि णा णीनं ते सु ५.१६०—प्रेरणार्थक धातु से परे, फिर भी प्रेरणा के अर्थ में कोई प्रत्यय नहीं होते हैं। जैसे—पाचति ।

ख

(विभक्ति प्रकरण—तीसरा भाग)

§ ४०. ग ति बो धा हा र स द्द तथा क म्म क भ ज्जा दी नं प यो ज्जे २.४—यदि गमनार्थ, बोधार्थ, आहारार्थ, शब्दार्थ, अकर्मक, तथा भज्ज आदि धातु प्रेरणार्थक हों, तो कर्ता में 'द्वितीया विभक्ति' होती है। जैसे—

गमनार्थ—गमयति माणवकं गामं—विद्यार्थी को गाँव ले जाता है। यहाँ, जाने वाला 'माणवक' है, जिसमें 'द्वितीया विभक्ति' लगी है।

बोधार्थ—बोधयति माणवकं धम्मं—विद्यार्थी को धम्म समझाता है। वेदयति माणवकं धम्मं ।

आहारार्थ—भोजयति माणवकं ओदनं, आसयति माणवकं ओदनं—विद्यार्थी को भात खिलाता है।

शब्दार्थ—अज्झापयति माणवकं वेदं—विद्यार्थी को वेद पढ़ाता है।

अकर्मक—आसयति देवदत्तं—देवदत्त को बैठाता है। साययति देवदत्तं—देवदत्त को सुलाता है।

भज्ज (=भूना) आदि—अज्जं भज्जापेति, अज्जं कोट्टापेति, अज्जं सन्थरापेति—दूसरे से भुनवाता है, दूसरे से कुटवाता है, दूसरे से फैलवाता है।

इन स्थानों को छोड़ दूसरी जगह, कर्ता में 'द्वितीया' न होकर 'तृतीया विभक्ति' होती है। जैसे—पाचयति ओदनं देवदत्तेन यज्जदत्तो—यज्जदत्त देवदत्त से भात पकवाता है।

§ ४१. ह रा दी नं वा २.५—प्रेरणार्थक 'हर' (=ले जाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'द्वितीया विभक्ति' होती है, और 'तृतीया' भी। जैसे—हारेति भारं

देवदत्तं देवदत्तेन वा = देवदत्त से भार लिया जाता है । वस्त्रयत्ने जलं जलेन वा = आदमी ने दिखवाता है । अभिवाद्यते गुरुं देवदत्तं देवदत्तेन वा = देवदत्त ने गुरु को प्रणाम करवाना है ।

§ ४२ ल खा वा बी नं २.६—प्रेरणार्थक खाव (= खाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'दुनिया विभक्ति' नहीं होती है, केवल 'तनिया विभक्ति' ही होती है । जैसे—

खाद्यति देवदत्तेनः अद्ययति देवदत्तेनः सहायति देवदत्तेन इत्यादि ।

§ ४३ य हि स्या लि च स्तु के २.७—नियन्ता (= हाकने वाला) न हो, तो प्रेरणार्थक 'वह' धातु के साथ, कर्ता में 'तनिया विभक्ति' होती है, 'दुनिया' नहीं । जैसे—आह्वयति भारं देवदत्तेन = देवदत्त ने भार ढुलवाना है ।

नियन्ता रहने से, 'दुनिया विभक्ति' होती है । जैसे—आह्वयति भारं बलिबद्धे = बैलो पर भार ढुलवाता है ।

§ ४४ अ क्लि स्या हि सा धं २.८—यदि हिंसा नहीं होती हो, तो प्रेरणार्थक 'भक्ख' धातु के साथ, कर्ता में 'तनिया विभक्ति' होती है, 'दुनिया' नहीं । जैसे—भक्खयति मोदके देवदत्तेन = देवदत्त को लड्डू खिलाता है ।

हिंसा का भाव आता हो, तो 'दुनिया विभक्ति' हो सकती है । जैसे—भक्खयति बलिबद्धे सस्सं = बैलो को धान खिला देता है ।

२४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु पाण न हनति, न अञ्जेहि धातापेति । अदिन्न न आदियति, न अञ्जेहि आदापेति । न चोरेति, न अञ्जेहि चोरापेति । पञ्हो सय पि पुच्छितब्बो, अञ्जेहि पि पुच्छापेतब्बो । विहार सयं पि गन्तब्ब, अञ्जे पि गच्छापेतब्ब । गन्त्वा च, गच्छापेत्वा च, धम्मे सावीयमाने धम्मो सयं पि सुणितब्बो अञ्जे पि सावापेतब्बो । एवं सय पि कथिरमाने, अञ्जे च कारीयमाने (कारापेन्ते) कुशला धम्मा वड्ढन्ति । माता सुसु पायेति, पुप्फ गाहापेति, तिण जहापेति, मधुर वाच सावेति, अञ्जेहि पि सावापेति । एवमेव भगवा पि वेनेय्ये सावके धम्मामत पायेति, सीलपुप्फ गण्हापेति, अकुसले धम्मे मुञ्चापेति, सब्बत्थ कल्याणे धम्मे साम सावयति, पण्डितेहि पि थेरेहि सावापेति च ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान् धर्म सुनाते है । भिक्षु लोग विहार बनवाते है, बुद्ध-वचन (पालि = धम्म-पलियायो, पेय्याल) सुनाते है, लोक-हित काम करते भी है, दूसरो से कराते भी है । भिक्षु लोग किसी की निन्दा न स्वय करते है, न दूसरो से कराते है । लड़के लोग पढ़ते भी है, दूसरो को पढाते भी है; अपने साथियो से दूसरो को पढ़वाते भी है । ब्राह्मण लोग धर्म को जानते भी है, दूसरो को सिखलाते भी है । वेदो को पढना भी चाहिए, दूसरो को पढ़ाना भी चाहिए, तीनों वेदो के पारङ्गतो से पढ़वाना भी चाहिए । इसी तरह, बुद्धो के उपदिष्ट धर्म भी स्वयं साक्षात्कार करना भी (सच्छि+कर) चाहिए, अपने साथियो को साक्षात्कार करवाना भी चाहिए, तीनों विद्या जानने वाले महात्माओ से धर्मोपदेश करवाना भी चाहिए ।

३. निम्नलिखित वाक्यों को प्रेरणार्थक बनाइए—

बुद्धो धम्म देसेति । थेरा भान भावेन्ति । देवो वस्सति । राजा रज्ज कारेति । बुद्धं सरण गच्छति । बुद्ध नमस्सति । दारका विहार गच्छन्ति । धम्म सुणन्ति । थेरे नमस्सन्ति । भिक्षू वन गमिस्सन्ति, समण-धम्म कत्वा, पच्छा आगमिस्सन्ति । बुद्धं वन्दाहि, धम्मं सरणं गच्छाहि, सङ्घाय दानानि देहि । भानानि चे भावेत्थ, पञ्जा उप्पज्जेय्य । बुद्धं सरण चे अगमिस्सा, सीलं रक्खिस्सा । धम्मं सोतु आगच्छन्तु । धम्म सुत्वा, निय्याथ ।

चौथा काण्ड

छठा पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

तद्धित

(तीसरा भाग—तद्धित)

नाम तथा सर्वनाम शब्दों से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय आते हैं, जिनके लगने से वे शब्द अव्यय बन जाते हैं। वेमे प्रत्यय चौदह हैं—(१) तो, (२) त्र, (३) त्थ, (४) धि, (५) हि, (६) हं, (७) दा, (८) था, (९) धा, (१०) ज्भं, (११) एधा, (१२) क्वत्तु, (१३) मो, और (१४) ची।

१. तो

§ २७. तो पञ्चम्या ४.६५—पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'तो' प्रत्यय आता है। 'तो' प्रत्यय लगा हुआ शब्द अव्यय होता है। जैसे—गामस्मा गच्छति इति—गामतो गच्छति—गाँव में जाता है।

इ तो ते त्तो कु तो ४.६६—कि

त

य

इम

एन

चोरतो भायति—चोर से डरता है।

कुतो आगच्छति—कहाँ से आता है?

ततो आगच्छति—वहाँ से आता है

यतो आगच्छति—जहाँ से आता है

इतो आगच्छति—यहाँ से आता है

अतो आगच्छति—यहाँ से आता है

अभ्यादी हि ४.६७—	अभि	अभितो=दोनों ओर
	परि	परितो=चारों ओर
	पच्छा	पच्छतो=पीछे से
	हेट्ठा	हेट्ठतो=नीचे से

आद्यादी हि ४.६८—‘आदि’ प्रभृति शब्दों से परे ‘तो’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

आदि	आदितो=शुरू से
मज्झ	मज्झतो=बीच से
अन्त	अन्ततो=अन्त से
पिट्ठि	पिट्ठितो=पीछे से
पस्स	पस्सतो=वगल से
मुख	मुखतो=सामने से

२. ३. त्र. त्थ

§ २८. सब्बादि तो सत्तन्या त्र तथा ४.६९—‘सत्तमी विभक्ति’ के स्थान में, ‘सब्ब’ आदि शब्दों से परे, ‘त्र’ तथा ‘त्थ’ प्रत्यय आते हैं। जैसे—

सब्बस्सिं	सब्बत्र, सब्बत्थ=सभी में, सभी जगह
यस्सिं	यत्र, यत्थ=जिसमें, जहाँ
त्तस्सिं	तत्र, तत्थ=उसमें, वहाँ
पर	परत्र, परत्थ=दूसरी जगह

कत्थेत्थ कुत्रात्र क्वे हि ४.१००—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्सिं	कत्थ, कुत्र, क्व=कहाँ
एत्तस्सिं	अत्र, एत्थ=यहाँ
अस्सिं	इध, इह=यहाँ

४. धि

§ २९. धि सब्बा वा ४.१०१—‘सत्तमी विभक्ति’ के स्थान में, ‘सब्ब’ शब्द

से परे, 'धि' प्रत्यय आता है, और 'त्र' तथा 'त्थ' भी। जैसे—

सर्वस्मि—सर्वधि, सर्वत्थ, सर्वत्र

५. हिं

§ ३०. या हिं ४.१०२—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'य' शब्द से परे 'हिं' प्रत्यय आता है, और 'त्र' भी। जैसे—

यस्मि—यहिं, यत्र—जहा

६. हं

§ ३१. ता हं च ४.१०३—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'त' शब्द से परे, 'हं' प्रत्यय आता है, और 'हिं' तथा 'त्र' भी। जैसे—

तस्मि—तहं, तहिं, तत्र—तहां

§ ३२. कु हिं क हं ४.१०४—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'कि' शब्द से ये अव्यय बनते हैं। जैसे—

कस्मि—कुहिं, कुहं—कहाँ ?

कथं—कैसे ?

कुहिंचन, कुहिञ्चिच—कही भी

७. दा

§ ३३. स ब्बे कञ्ज य ते हि काले दा ४.१०५—'सब्व', 'एक', 'अञ्ज', 'य', 'त'—इन शब्दों से परे, 'काल' के अर्थ में 'दा' प्रत्यय आता है। जैसे—

सब्वस्मि काले	सब्वदा—सभी समय
एकस्मि काले	एकदा—एक समय
अञ्जस्मि काले	अञ्जदा—दूसरे समय
यस्मि काले	यदा—जिस समय
तस्मि काले	तदा—उस समय

क दा कु दा स दा धु ने दा नि ४.१०६—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्मि काले	कडा, कुदा = किस समय ?
सब्बस्मि काले	सदा = सभी समय
इमस्मि काले	अधुना, इदानि = इस समय

अ ज्ज स ज्जु - अ प र ज्जु - ए त र हि - क र हा ४.१०७—ये शब्द भी निपात हैं। जैसे—

अस्मि अहनि	अज्ज = आज
समाने अहनि	सज्जु = उसी दिन
अपरस्मि अहनि	अपरज्जु = दूसरे दिन
इमस्मि काले	एतरहि = इस समय
कस्मि काले	करह = किस समय ?

८. था

§ ३४. स ब्बा दी हि प कारे था ४.१०८—‘इस प्रकार का’ इस अर्थ में, ‘सब्ब’ आदि शब्दों से परे ‘था’ प्रत्यय होता है। जैसे—

सब्बेन पकारेन	सब्बथा = सभी प्रकार से
येन पकारेन	यथा = जिस प्रकार से
तेन पकारेन	तथा = उस प्रकार से

क थ मि त्थं ४.१०९—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

केन पकारेन	कथं = कैसे ?
इमिन्ता पकारेन	इत्थं = इस प्रकार

९. धा

§ ३५. धा सं ख्या हि ४. ११०—‘इस प्रकार का’ इस अर्थ में, सख्या वाचक शब्दों से परे ‘धा’ प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वीहि पकारेहि करोति—द्विधा करोति = दो प्रकार से करता है, या दो टुकड़े करता है। इसी तरह, ‘एकधा’, बहुधा, पञ्चधा इत्यादि।

१०. एधा

§ ३६. द्विती हे धा ४.११२—ऊपर के ही अर्थ में, 'द्वि' तथा 'नि' शब्दों में परे, विकल्प से 'एधा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वेधा, तेधा। विकल्प से द्विधा, तिधा भी।

११. ज्भं

§ ३७. बे का ज्भं ४.१११—ऊपर के ही अर्थ में, 'एक' शब्द से परे, विकल्प से 'ज्भं' प्रत्यय होता है। जैसे—

एकज्भं करोति, एकधा करोति—एक प्रकार से करता है।

१२. क्वत्तुं

§ ३८. वार संख्याय क्वत्तुं ४.११४—'इतनी वार' इस अर्थ में, संख्या-वाचक शब्दों से परे, 'क्वत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे वारे भुञ्जति—द्विक्वत्तुं भुञ्जति—दो वार खाता है।

कति म्हा ४.११५—ऊपर के ही अर्थ में, 'कति' शब्द से परे 'क्वत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

कति वारे भुञ्जति—कतिक्वत्तुं भुञ्जति—कितनी वार खाता है ?

§ बहु म्हा धा च पच्चा सत्ति थं ४.११६—यदि, वार जल्दी जल्दी हो, तो 'बहु' शब्द से परे 'धा' तथा 'क्वत्तुं' प्रत्यय होने हैं। जैसे—

दिवसस्स बहू वारे भुञ्जति—बहुधा, बहुक्वत्तुं वा भुञ्जति—दिन में वार वार खाता है।

यदि, वार जल्दी जल्दी न हो, तो भी 'क्वत्तुं' प्रत्यय हो सकता है; किंतु, 'धा' प्रत्यय नहीं। जैसे—'मासस्स बहुक्वत्तुं भुञ्जति'—ऐसा तो हो सकता है, किंतु 'मासस्स बहुधा भुञ्जति' ऐसा नहीं।

§ ३९. सकिं वा ४.११७—'एक वार' इस अर्थ में, विकल्प से 'सकिं' होता है। जैसे—

एकं वारं भुञ्जति—सकिं भुञ्जति—एक वार खाता है। विकल्प से—
एकक्वत्तुं भुञ्जति।

१३. सो

§ ४०. सो वी च्छ्वाप्प कारे सु ४.११८—वीप्सा तथा प्रकार के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'सो' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीप्सा—खण्डसो = खण्ड खण्ड करके। एकेकसो = एक एक करके।

प्रकार—पुथुसो = विस्तार से। सब्बसो = सभी प्रकार।

१४. ची

§ ४१. अ भूत त व्भा वे क रा स भू यो जे वि कारा ची ४.११९—जो नहीं था, उसके होने के अर्थ में, 'कर', 'अस' तथा 'भू' धातुओं के योग में, विकार-वाचक शब्दों से परे 'ची' प्रत्यय होता है। जैसे—

अधवलं धवलं करोति इति—धवली करोति = जो उजला न था, उसे उजला करता है। धवली सिया = जो उजला न था, वह उजला होवे। धवली भवति = जो उजला न था, वह उजला होता है।

२५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

“सर्व्वेन सर्व्वं, सर्व्वथा सर्व्व, सङ्ख्याया अनिच्छा, दुःकदा, अनन्ता”ति सर्व्वत्थ (सर्व्वधि) भावेतव्वं । कथं, कुहि, कदा भावेतव्व नि ? “सर्व्वे सङ्ख्याया सङ्ख्याया, विपरिणाम-धम्मा, अविज्जा-पच्चया सम्भूता”ति एत्थ, परत्थ, सर्व्वत्थ; एकदा पि, अञ्जदा पि, तदानि पि, इदानि पि, सर्व्वदा भावेतव्वं, मत्तसि-कातव्वं । ततो पट्टाय । सर्व्वतो संबुतेन भवितव्वं । तिक्खत्तुं उदानं दानेमि । तिक्खत्तुं चतुक्खत्तु विहारा तिक्खमित्वा भावेतव्वानि भानानि भावितानि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

- (क) बुद्ध को हमेशा, हर जगह, हर तरह से याद करो । एक, दो, तीन बार बुद्ध के शरण जाता हूँ । हर तरह से धर्म को पूरा करना चाहिए । देवता लोग जब बुद्ध के पास आते थे, उस समय बड़ा प्रकाश फैलता था ।
- (ख) मेरे मकान के पास । वृक्ष के ऊपर । सूर्य के समान । नदी के दोनों तरफ़ । बालू के नीचे । दिन दोपहर को । रातों रात । लम्बे अरसे के बाद । निरन्तर अभ्यास के कारण । अक्सर पढ़ते रहने से । जैसे हो तैसे । शीघ्र शीघ्र चलने की अपेक्षा । पुण्य करते ही । धीरे धीरे विपाक सामने दिखाई देना । ध्यान करने के लिए, जङ्गल के भीतर पैठना ।

पाँचवाँ काण्ड

पहला पाठ

सन्धि-प्रकरण

१. स्वर सन्धि

§ १. स रो लो पो स रे १.२६—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

तत्र + इमे = तत्रिमे (तत्र + इमे = तत्र् + इमे = तत्रिमे)

सद्धा + इन्द्रिय = सद्धिन्द्रियं

नो हि + एत = नो हेतं

भिक्षुनी + ओवादो = भिक्षुनोवादो

समेतु + आयस्मा = समेतायस्मा

अभिभू + आयतनं = अभिभायतनं

पुत्ता मे + अत्थि = पुत्ता मत्थि

असन्तो + एत्थ = असन्तेत्थ

§ २. प रो क्व चि १.२७—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पर स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

सो + अपि = (सो + पि) सोपि

सा + एव = साव

यतो + उदकं = यतोदकं

ततो + एव = ततोव

चत्तारो + इमे = चत्तारो मे

ते + अहं = तेहं
 वसलो + इति = वसलोति
 आकासे + इव = आकासेव

§ ३. न द्वे वा १.२८—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी दोनों में से किसी स्वर का लोप नहीं होता है। जैसे—

लता + इव = लता इव
 विकल्प से—‘लताव’, तथा ‘लतेव’ भी।

§ ४. यु व ण्णा न मे ओ लु क्ता १.२९—लुप्त हुए स्वर से परे, ‘इ’ का कभी कभी ‘ए’, तथा ‘उ’ का ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—

तस्स + इदं = तस्स् + इद = तस्स् + एद = तस्सेदं
 वात + ईरित = वात् + ईरितं = वातेरितं
 वाम + उरु = वाम् + उरु = वामोरु
 अति + इव = अत् + इव = अतेव
 वि + उदक = व् + उदक = वोदकं

§ ५. य वा स रे १.३०—‘इ’ तथा ‘उ’ से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः ‘य’ तथा ‘व’ हो जाता है। जैसे—

वि + आकतो = व्याकतो
 इति + अस्स = इत्यस्स = इच्चस्स^१ = इच्चस्स^२
 अधि + इणमुत्तो = अधियणमुत्तो = अभियणमुत्तो = अभिभण-
 मुत्तो = अज्भिणमुत्तो^३
 सु + आगतं = स्वागतं
 बहु + आबाधो = बव्हाबाधो,^४ बह्वाबाधो

१. त व ग्ग व र णा नं ये च व ग्ग ब य ङ्गा १.४८—तवर्ग, ‘व,’ ‘र’ तथा ‘ण’ यदि ‘य’ से संयुक्त हों, तो उनका क्रमशः चवर्ग, ‘व,’ ‘य’ तथा ‘ञ’ हो जाता है। जैसे—

इत्यस्स = इच्चस्स । तथ्यं = तच्छ्यं । यद्येवं = यज्येवं । अद्यत्तं = अभ्यत्तं ।

§ ६. ए ओ लं १.३१—‘ए’ तथा ‘ओ’ से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः ‘य’ तथा ‘व’ हो जाता है। जैसे—

ते + अज्ज = त्थज्ज

सो + अहं = स्वाहं (सो + अह = स्व + हं = व्यञ्जने दीघ-
रस्सा १.३३. स्वाह)

मे + अयं = म्यायं

पव्वते + अहं = पव्वत्थाहं

§ ७. गो स्ता व ड् १.३२—‘गो’ शब्द से परे कोई स्वर आवे, तो ‘गो’ शब्द का ‘गव’ आदेश हो जाता है। जैसे

गो + अस्सं = गव + अस्सं = गव् + अस्सं = गवास्सं

निम्नलिखित सन्धि निपात है—

तथा + एव = तथरिव

यथा + एव = यथरिव

थन्यं = थञ्ज्यं । दिव्यं = दिब्बं । पर्येसना = पर्येथना । पोक्खरण्यो = पोक्खरञ्ज्यो ।

२. व ग्ग ल से हि ते १.४६—वर्गीय वर्ण, ‘ल’ या ‘स’ के साथ यदि ‘य’ संयुक्त हो, तो उसका भी (‘य’का भी) वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

इच्च्यस्स = इच्चस्स । तद्ध्यं = तद्धं । यज्जेवं = यज्जेवं । अभ्यत्तं = अभ्-
भ्रत्तं । थञ्ज्यं = थञ्जं । दिव्यं = दिब्बं । पोक्खरञ्ज्यो = पोक्खरञ्जो । फल्यते =
फलते । अस्यते = अस्सते ।

३. च तु त्थ दु ति ये स्वे सं त ति य प ठ मा १.३५—यदि किसी वर्ण के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनमें पहले का क्रमशः (उसी वर्ण का) तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—तद्धं = तद्धं । अभ्रत्तं = अज्भत्तं । अभ्रत्तं = अज्भत्तं । अभ्रत्तं = अज्भत्तं ।

४. वे वा १.५१—यदि ‘ह’, ‘व’ से संयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट (=विपर्यास) हो जाता है। जैसे बह्वाबाधो = बह्वाबाधो ।

[हस्स विपल्लासो १.५०—यदि ‘ह’, ‘य’ से संयुक्त हो, तो उनका विपर्यास हो जाता है। जैसे—गुह्यं = गुह्यं]

तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है । जैसे—

नि + घोसो = (सरम्हा द्वे १.३४ इस सूत्र से—निघोसो) = निग्घोसो

अ + खन्ति = अखन्ति = अक्खन्ति

सेत + छत्त = सेतच्छत्तं = सेतच्छत्तं

नि + ठानं = निठानं = निठानं

यस + थेरो = यसत्थेरो = यसत्थेरो

अ + फुट = अफुट = अफुटं

§ ११. वि ति स्से वे वा १.३६—यदि 'इति' शब्द के बाद 'एव' शब्द हो, तो विकल्प से 'इति' का 'इत्व' आदेश हो जाता है । जैसे—

इति + एव = इत्सेव । विकल्प से—इच्चेव ।

§ १२. ए ओ न स व ण्णे १.३७—'ए' तथा 'ओ' के बाद यदि कोई भी वर्ण हो, तो उनका ('ए' तथा 'ओ' का) कहीं कहीं 'अ' हो जाता है । जैसे—

सो + सीलवा = स सीलवा

एसो + धम्मो = एण धम्मो

याचके + आगते = याचकमागते

अकरम्हसे + ते = अकरम्हसे ते

एसो + अत्थो = एस अत्थो

अग्गो + अक्खायति = अग्गमक्खायति

३. निग्गहीत सन्धि

§ १३. नि ग्ग ही तं १.३८—कहीं कहीं, निग्गहीत (=अनुस्वार) का आगम होता है । जैसे—

चक्खु + उदपादि = चक्खुं उदपादि

त + खणे = तंखणे

त + सभावो = तंसभावो

अव + सिरो = अवंसिरो

पुरिम + जाति = पुरिमं जाति
याव + चिध = यावञ्चिध

§ १४. लोपो १.३६—कहीं कहीं, निगृहीत का लोप हो जाता है। जैसे—
म + गर्तो = स + गर्तो = (व्यञ्जने दीधर्म्मा १.३३) मारतो
सं + रागो = सारागो
स + रम्भो = सारम्भो
बुद्धानं + सासन = बुद्धान सासनं
एव + अह = एवाहं
कथ + अह = कथाहं
गन्तु + कामो = गन्तुकामो

§ १५. परस्परस्म १.४०—निगृहीत से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—

त्व + अग्नि = त्वंलि
बीज + इव = बीजंव
इदं + अपि = इदंमपि
अभिनन्दु + इति = अभिनन्दुन्ति
किं + इति = किन्ति
कि + इदानी = किन्दानी
अलं + इदानी = अलन्दानी

विकल्प से—स्वसति, बीजमिव इत्यादि भी ।

§ १६. वग्नो वग्नतो १.४१—निगृहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प से उसका (=निगृहीत का) उसी वर्ण का अल्पि वर्ण हो जाता है। जैसे—

तं + करोति = तङ्करोति
तं + चरति = तञ्चरति
द + ठान = तण्ठानं
तं + धन = तन्धनं
तं + पाति = तम्पाति

§ १७. ये व हि सु ङ्गो १.४२—यदि वाद में 'य', 'एव' तथा 'हि' शब्द हों, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कहीं कहीं 'ञ्ज' हो जाता है । जैसे—

यं + यं एव = यञ्जदेव

तं + एव = तञ्जेव

तं + हि = तञ्जिह

§ १८. ये सं स्त १.४३—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'सं' शब्द के निग्गहीत का 'व' हो जाता है । जैसे—

सं + यमो = सञ्जमो

§ १९. मय दा स रे १.४४—स्वर परे हो, तो कहीं कहीं पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है । जैसे—

तं + अहं = तमहं

तं + इदं = तयिदं

तं + अलं = तदलं

द्रष्टव्य

§ २०. छा लो १.४६—'छ' शब्द से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं 'ळ' हो जाता है । जैसे—

छ + अग्गं = छळग्गं

छ + आयतनं = छळायतनं

§ २१. त द मि ना दी नि १.४७—निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तं + इमिना = तदमिना

सकि + आगाभी = सकदागामी

एकं + इध + अहं = एकमिदाहं

संविधाय + अवहारो = संविदावहारो

वारिनो + वाहको = वलाहको

जीवन + सूतो = जीमूतो

छव + सयनं = मुसानं

§ २२. संयोगादि लोपो १.५३—संयोग के आदिभूत अवयव का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—

पुष्पं + अस्सा = पुष्पंसा। 'अम्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया।

जायते + अगिति = जायते गिति ('अग्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया)।

२६. अभ्यास

१. सन्धि कीजिए:--

- (क) जिह्वा + इन्द्रियं । मन + इन्द्रियं । महा + ओधो । महा + इच्छो । साधु + आवुसो । मे + अत्थि । कतमो + अस्स । भिक्खुनी + ओवादो । देव + इन्दो ।
- (ख) चत्तारो + इमे । ते + इमे । ते + अपि । भगवा + इति । सो + अहं । छाया + इव । सचे + अज्ज । वेदना + इति । बुद्धो + असि ।
- (ग) तत्र + अयं । बुद्ध + अनुस्सति । देव + अनुभावो । सम्मन्ति + इध । बहु + उपकारो । बहु + उपायासो । विमुत्ति + इति ।
- (घ) सचे + अह । साधु + इति । किमु + इध । यो + अयं । तथा + उपमं । इतर + इतरो ।
- (ङ) उप + इतो । अत्र + इच्च । न + उपेति । मे + अय । ते + अह । सो + अय । अनु + एति । को + अत्थो । सो + एव । खो + अह । सु + आगतं । न्तु + एव । वि + आकतो । इति + एव ।
- (च) गच्छामि + अहं । पञ्चहि + अङ्गेहि । वि + अकासि । परि + एसना । परि + ओसान । दु + अङ्गिकं ।
- (छ) यथा + एव । तथा + एव । अपि + अज्ज । इध + अहं । तं + एव । एवं + एतं । तं + आहु । धन + एव । तं + अबोच । न + इदं । मा + इदं । लघु + एस्सति । एक + एकस्स । कसा + इव । सम्मा + अञ्जा । सम्मा + अत्थो । सम्मा + अक्खातो । बहु + एव । पुन + एव । चिरं + आयति । अविज्जा + अहोसि । तस्मा + इहा । यस्मा + इह । अज्ज + अग्गे । राजा + इव । सन्धि + एव ।
- (ज) मुनि + चरे । सम्म + सम्बुद्धो । खन्ति + परमं । जायति + सोको । एसो + धम्मो । दीपं + करो । पभं + करो । सं + लापो । सं + पलापो । सं +

योगो । सं + योजनं । पुंस्व + गमा । याव + च्चिथ । बुद्धान् + सासन ।
देवानं + पियो । सं + रागो ।

(भ) एवं + अस्स । इध + अह । अभि + अञ्जासि । अति + अन्त । अपि + एव ।
इति + एव । इति + आदयो । अनु + एति । नि + सरण । उ + भवो ।
नि + आसो ।

२. सन्धि विच्छेद कीजिए—

एक मिदाह । अज्जतगो । पगोव । एकासने । कतिपाहञ्चयेत् । सो पज्ज डिम्मति ।
पाणुपेतं । स्वागतं । त्याहं । देवानुभादो । मेव्यथापि । यथरिद । सत्तमाकामि ।
पुंस्वङ्गमा । सेव्यथीद । इतरितरेत्त । अज्जभोगाहिन्दा । पञ्चत्ते । अट्ठोक्कामिको ।
अप्पेव ताम । उप्पन्नो । कनादकामो । अन्देति । त्रिह्विन्द्रियं । एतद्वहंति ।
मुत्तीचरे । गच्छामह । अहञ्जेव । चाह । चक्क व । छयाव । भगवाति । इतिपि ।
परियोसानं । सम्मावायामो । सम्मा-सम्बुद्धो । पञ्चिन्द्रिय । सकदागामी । बुद्धान्
सासन । देविन्दो । भिक्खुतोवादो । चक्कु उदपादि । सारत्तो ।

पाँचवाँ काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

‘ख’, ‘स’, ‘छ’ प्रत्यय

§ २४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते ५.४—इच्छा करने के अर्थ में, ‘तुं’-प्रत्ययान्त धातु से परे, बहुधा ‘ख’, ‘स’ और ‘छ’ प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों के लगने से, ‘तुं’ प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे—

‘ख’—भोतुं इच्छति इति—बुभुक्खति = भोजन करने की इच्छा करता है।

‘स’—जेतुं इच्छति इति—जिगिसति = जीतने की इच्छा करता है।

‘छ’—घसितुं इच्छति इति—जिघच्छति = खाने की इच्छा करता है।

नोट—यहाँ ‘बुभुक्ख’, ‘जिगिस’, ‘जिघच्छ’ आदि अपने में स्वतंत्र धातु हो गए; जिनके रूप सभी काल में होंगे। जैसे—बुभुक्खति, बुभुक्खिस्सति, छुभुक्खि, बुभुक्खेद्य, बुभुक्खतु इत्यादि।

§ २५. ख छ सा न जे क स्स रो दि द्वे ५.६६—‘ख’, ‘छ’, ‘स’, प्रत्ययों के लगने से, धातु के प्रथम एक स्वर-युक्त अंश का द्वित्व हो जाता है। जैसे—
तिज + ख + ति = तितिज + ख + ति = तितिक्खति

§ २६. आ दि स्मा सरा ५.७१—यदि धातु के आदि में ही स्वर हो, तो उसको ले कर एक और स्वर तक द्वित्व होता है। जैसे—अस + स + ति = असिससति = खाने की इच्छा करता है।

§ २७. च तुत्थ द्दु ति या नं त ति य प ठ मा ५.७८—द्वित्व होने पर, पूर्व-स्थित चतुर्थ वर्ण का तृतीय, और द्वितीय का प्रथम हो जाता है। जैसे—

भुज + ख + ति = भुभुज + ख + ति = बुभुज + ख + ति = बुभुखति । छिद्र + अ = चिच्छेद ।

§ २८. क व र्ग हा नं च व र्ग जा ५.७९—द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित कवर्ग का चवर्ग, और 'ह' का 'ज' हो जाता है । जैसे—कम + स + ति = ककम + स + ति = चकम + स + ति = चिकमिसति । हस + स + ति = हहस + स + ति = जहम + स + ति = जिहसिसति ।

§ २९. ख छ से श्व स्ति ५.७६—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययों के आने से, द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित अकार का इकार हो जाता है । जैसे—चकम + स + ति = चिकमिसति । जहस + स + ति = जिहसिसति, यिपासति ।

§ ३०. जि व्यञ्जन स्त ५.१७०—व्यञ्जन ने घृण होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' आदेश हो जाता है । जैसे—चकम + स + ति = चिकमिसति । जहस + स + ति = जिहसिसति ।

§ ३१. र स्तो पु व्व स्त ५.७४—द्वित्व होने पर, पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है । जैसे—गाह + स + ति = गागाह + स + ति = जागाह + स + ति = जगाह + स + ति = जिगाहिसति । पाल + स + ति = पापाल + स + ति = पपाल + स + ति = पिपालिसति । ददाति । जहाति ।

लो पो ना दि व्यञ्जन स्त ५.७५—द्वित्व होने पर, आदि से भिन्न पूर्व व्यञ्जन का लोप होता है । जैसे—

अस + स + ति = असअस + स + ति = असिसिसति ।

§ ३२. ध थि ढ्ठं स्या दि नो ५.७३—नाम-धातु में, आदिभूत एक स्वर, या जैसी इच्छा, किसी दूसरे स्वर का द्वित्व कर देने है । जैसे—पुपुत्तीयिसति, पुत्तितीयिसति, या पुत्तीयिधिसति ।

§ ३३. पर स्त घं से ५.१०१—'हन' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे 'ह' का 'घ' आदेश होता है । जैसे—हन + स + ति = हहन + स + ति = जघं + स + ति = जिघंसति ।

§ ३४. जि ह रानं गि ५.१०२—'जि' तथा 'हर' धातुओं के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'गि' हो जाता है । जैसे—जिगंसति । हर—जिगंसति ।

२७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

जिघच्छा परमा रोगा ति । जिघच्छु हि बुभुक्खति, सीतं वा उण्हं वा तित्ति-
क्खित्तुं न सक्कोति, धम्मं सुस्सुसन्तो पि वीमंसित्तुं समत्थो नाम न होति । दानं
दिच्छन्तेन न किञ्चि जिगुच्छित्तब्बं, न दिन्नं जिगिसित्तब्बं । अमतं पिवासुना
(पिपासुना) धम्मो वीमंसित्तब्बो । गिलाने (विमार) तिकिच्छ्यापेत्वा सगं
जिगिसति ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे पदों की व्युत्पत्ति बताइए ।

३. पालि से अनुवाद कीजिए—

(क) खाने की इच्छा से खाता हूँ, पीने की इच्छा से पीता हूँ । मुझे न तो खाने
की इच्छा है न पीने की इच्छा है, केवलमात्र भगवान् के धर्म को सुन कर,
मनन करने की इच्छा है । क्या आप को कुछ कहने की इच्छा है ? नहीं,
अब तो केवल पढ़ने की इच्छा है ।

(ख) मरने की इच्छा । सोने की इच्छा । देखने की इच्छा करता है । जाने
की इच्छा करेगा । बैठने की इच्छा करता है । पढ़ने की इच्छा से ।
विचार करने की इच्छा । भूख प्यास के मारे भागने की इच्छा करता
है । भगवान् को देखने की इच्छा । धर्म सुनने की इच्छा से, विहार
जाने की इच्छा करता है । बुद्ध-धर्म जानने की इच्छा से त्रिपिटक पढ़ने
की इच्छा करता है । काम करने की इच्छा ।

४. निम्नलिखित वाक्य खण्डों के लिए एक पद लिखिए—

(क) खादित्तुं इच्छति । गन्तुं इच्छिस्सति । सोत्तुं इच्छामि । पातुं इच्छति । जेतुं
इच्छथ । अत्तुं इच्छेय्यामि । विहरित्तु इच्छामि । पठित्तुं इच्छिसु ।

(ख) गन्तु-कामो । खादित्तु-कामा । सोत्तु-कामेन । अत्तु-कामताय । विहरित्तु-
कामा । जेतु-कामा । पातु-कामानं । सोत्तु-कामेहि । गन्तु-कामा । पठित्तु-
कामायो । पठित्तु-कामासु ।

पाँचवाँ काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवाँ भाग—नाम धातु)

नाम धातु

कभी कभी, हिन्दी में भी संज्ञा या विशेषण के रूप कुछ बदल कर, उनसे क्रिया का काम ले लेते हैं। जैसे—‘फूल’ से ‘फुलाना’, ‘जूता’ से ‘जुनियाना’, ‘गरम’ से ‘गरमाना’, ‘चटचट’ से ‘चटचटाना’ इत्यादि। इन्हे नामधातु कहते हैं।

पाली में भी, इसी तरह, संज्ञा (नाम) से क्रिया बनाने के लिए, उनके आगे—विशेष अर्थ में—पाँच प्रत्यय आते हैं—(१) ईय, (२) आय, (३) अस्स, (४) इ, (५) आपि। इन प्रत्ययों से युक्त होने पर जो रूप बनता है, उसे ‘नाम धातु’ कहते हैं। स्वतंत्र धातु की तरह, ‘नाम धातु’ के भी रूप सभी काल में होते हैं।

१. ईय

§ ३५. ईयो कम्मा ५.५—इच्छा करने के अर्थ में, इच्छा के कर्म से परे, ‘ईय’ प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तं इच्छति—पुत्तीयति=पुत्र की इच्छा करता है। धनीयति=धन की इच्छा करता है।

[ए क त्थ ता यं २.१२१—एकार्थी-भाव होने से (=अर्थात् नामधातु, समाग और तद्धित में), प्रायः सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—पुत्तं + ईय + ति = पुत्त + ई + ति = पुत्तीयति। रञ्जो पुरिसो—राजपुरिसो। वसिट्ठस्स अपच्चं—वासिट्ठो]

[कही कही लोप नहीं होता है। जैसे—परन्तपो । भगन्धरो । परस्सपदं । अत्तलोपदं । गदम्पति । देवानम्पिपतिस्सो । अन्तेवासी । जनेसुतो । मज्जत्तं । मासके]

§ ३६. उपमानाच्चा रे ५.६—‘इस जैसा आचरण करता है’, इस अर्थ में उपमान-भूत कर्म से उत्तर ‘ईय’ प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तमिवाचरति—पुत्तीयति सिस्सं—शिष्य को पुत्र की तरह मानता है।

§ ३७. आधा रा ५.७—‘इसमें ऐसा आचरण करता है’, इस अर्थ में उपमान के उत्तर ‘ईय’ प्रत्यय होता है। जैसे—कुटियं इव आचरति—कुटीयति प्रासादे—प्रासाद में इस तरह रहता है, मानों कुटी में। पात्तादीयति कुटियं—कुटी में इस तरह रहता है, मानों प्रासाद में।

२. आय

§ ३८. कसुताथो ५.८—आचरण करने के अर्थ में, कर्ता के उपमान के उत्तर ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—पव्वतो इव आचरति—पव्वतायति—पर्वत के ऐसा आचरण करता है।

§ ३९. च्यत्थे ५.९—जो नहीं है उसके हो जाने के अर्थ में, कर्ता से परे, कभी कभी ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—अभुसो भुसो भवति इति—भुसायति—जो अधिक नहीं था, वह अधिक हो जाता है। अपटपटो पटपटो भवति इति—पटपटायति—जो पटपट नहीं करता था, वह पटपट करता है। अलोहितो लोहितो भवति इति—लोहितायति—जो लाल नहीं था, वह लाल होता है।

§ ४०. सहादीनि करोति ५.१०—शब्द आदि करने के अर्थ में, ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—सहायति—शब्द करता है। वेरायति—वैर करता है। कलहायति—कलह करता है।

३. अस्स

§ ४१. नमोत्वस्सो ५.११—‘नमो’ करने के अर्थ में, उसके उत्तर ‘अस्स’ प्रत्यय होता है। नमस्सति—नमस्कार करता है।

४. इ

§ ४२. धात्वर्थे नामस्मा इ ५.१२—नाम-धातु से बहुधा 'इ' प्रत्यय है। जैसे—हृत्थिना अतिव्रकमति इति—अस्तिहृत्थयति = हाथी ने आक्रमण करता है। वीणाय उपगायति इति—उपवीणायति = वीणा के साथ गाना है। दल्ह करोति—दल्हयति विलयं। विसुद्रा होति रति—दिसुद्रयति = नाफ होना है। कुसल पुच्छति—कुसलयति = कुसल पूछना है।

५. आपि

§ ४३. सच्चादीहापि ५.१२—'सच्च' आदि [देखिए-नीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, नाम-धातु में 'आपि' प्रत्यय होता है। जैसे—सच्चापेति, सच्चापयति = सत्य सिद्ध करना है। सुखापेति, सुखापयति = सुख करना है। इत्यादि

२८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) किं सद्दायति ? यं धूमायति त मेव सद्दायति । अथ खो सो पायासो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति, चिटिच्चिटायति, सन्धूपायति सम्पधूपायति । को समत्थो पब्बतायित्वा समुद्दायितु, समुद्दायित्वा पब्बतायितु च ? महामोगल्लानो ति । सो अन्तेवासिनो पुत्तीयति । अन्तेवासिनो पि पुत्तायन्ते । भिक्खु चीवरीयति, पत्तीयति, न खो धनीयति । सो म कुसलयित्वा अतिहत्थयितु पक्कामि ।

(ख) पब्बतायति । समुद्दायति । धूमायति । दारका पुत्तायन्ति । पुत्तायन्ते दारके अज्झापको पुत्तीयन्ति । पत्तीयन्तानं च वत्थीयन्तानं च भिक्खून् । चीवरीयमानानं भिक्खुनीन् । पुत्थुज्जनो वेरायति, थेनेति, सद्दायति, कलहायति । चित्रयति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

अपने पुत्र की इच्छा करता है । अपने धर्म की इच्छा करता है । राजा के समान आचरण करता है । मूर्ख के समान आचरण करता है । पण्डित के समान आचरण करता है । दृढ़ करता है । बैर करता है । शब्द करता है । प्रणाम करता है । सुख, दुःख, अनुभव करता है ।

३. (क) इच्छार्थक तथा नाम-धातु में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाइए ।

(ख) प्रेरणार्थक तथा नाम-धातु में क्या भेद है ? उदाहरण देकर समझाइए ।

पाँचवाँ काण्ड

चौथा पाठ

स्त्री प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, शब्द में परे सात प्रत्यय आते हैं—
(१) आ, (२) डी, (३) इती, (४) नी, (५) आनी, (६) ऊ, और (७) नि

१. आ

इ स्थि य म त्वा ३.२६—पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, अकारान्त शब्द से परे 'आ' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सुसीलो	सुसीला
धम्मदिन्नो	धम्मदिन्ना
धनिको	धनिका
सबलो	सबला
बालको	बालिका ^१
कारको	कारिका ^१

१. अधातु स्स के 'स्या दि तो घे' स्ति ४.१४२—स्त्री प्रत्यय आने से, अधातु शब्द के 'क' के पहले 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे—

बालक—बालिका । कारक—कारिका ।

२. डी

न दा दि तो डी ३.२७—‘नद’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे ‘डी’ प्रत्यय आता है। ‘डी’ का केवल ‘ई’ रह जाता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
नद	नदी
मिग (=मृग)	मिगी
कुमार	कुमारी
तरुण	तरुणी
वारुण	वारुणी
गोतम	गोतमी

न्त न्तूनं डिं हि तो वा ३.३६—‘डी’ प्रत्यय लगने से, ‘न्त’ तथा ‘न्तु’ का विकल्प से ‘त’ आदेश हो जाता है (देखिए—पृ० ८२, १४२, १६०.)। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गच्छन्त	गच्छन्ती, गच्छन्ती
गुणवन्तु	गुणवन्ती, गुणवन्ती

भ व तो भो तो ३.३७—‘डी’ प्रत्यय लगने से, ‘भवन्त’ शब्द का विकल्प से ‘भोत’ आदेश हो जाता है। जैसे—भोती, भदन्ती।

गो स्सा व ड् ३.३९—‘गो’ शब्द में ‘डी’ प्रत्यय लगने से ‘गात्री’ रूप होता है।

पु थु स्स द थ व - पु थ वा ३.४०—‘डी’ प्रत्यय आने से, ‘पुथु’ (=पृथु) शब्द का ‘पथव’ तथा ‘पुथव’ आदेश हो जाता है। जैसे—पथदी, पुथवी, पठवी।

३. इनी

य क्खा दि तो इ नी च ३.२८—यक्ख (=यक्ष) आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, ‘इनी’ प्रत्यय होता है, और ‘डी’ भी। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
यक्ख	यक्खिनी, यक्खी
नाग	नागिनी, नागी
सीह (=सिह)	सीहिनी, सीही

आ रा मि का दी हि २.२६—'आरामिक' आदि [देविए—नीमरा परिशिष्ट]
शब्दों से परे 'इनी' प्रत्यय होता है । जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आरामिको (=आराम में रहने वाला)	आरामिकिनी
राजा	राजिनी
मानुम	मानुभिनी

४. नी

इ - उवण्णेहि नी ३.३०—इकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, तथा
उकारान्त शब्दों से परे, बहुधा 'नी' प्रत्यय आता है । जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सदापयतपाणि	सदापयतपाणिनी
दण्डी	दण्डिनी
भिक्षु	भिक्षुनी
सत्तबन्धु	सत्तबन्धुनी
परचित्तवेडू	परचित्तवेडुनी

कित् रुहा अ ऊज्जत्थे ३.३१—अन्वयार्थ (बहुव्रीहि) में, यदि 'कित्'
प्रत्ययान्त शब्द हो, तो उससे परे 'नी' प्रत्यय होता है । जैसे—

सा अहं अहिंसरन्तिनी—वह मैं अहिंसा में रति रखने वाली ।
आहं उपहित-
सतिनी—वह मैं उपस्थित स्मृति वाली ।

घ र ण्या द थो ३.३२—'घरणी' (=गृहिणी) आदि शब्द निपात-सिद्ध
हैं । जैसे—घरणी, पोक्खरणी (=पुष्करणी) इत्यादि ।

५. आनी

मा तु ला दि तो आ नी भ रि या यं ३.३३—भार्या होने के अर्थ में, 'मातुल' (=मामा) आदि शब्दों से परे, 'आनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	उसकी भार्या
मातुल	मातुलानी
वरुण	वरुणानी
गहपति	गहपतानी

६. ऊ

उ प मा - सं हित - स हित - स ऊज त - स ह - स थ - वा म - ल क्ख णा - दि तो उ रु तो ऊ ३.३४—उपमान, तथा 'सहित' आदि शब्द यदि पूर्व में रहें, तो (स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए) 'उरु' शब्द से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है। जैसे— करभोरू (=करभ के समान जिसकी जाँघ हो), संहितोरू (=मिली हुई जंघों वाली), सहितोरू (=मिली हुई जंघों वाली), सऊजतोरू (=संयत जंघों वाली), सहोरू (=साथ मिली हुई जंघों वाली), वामोरू (=सुन्दर जंघों वाली), लक्खणोरू (=लक्षित जंघों वाली)।

७. ति

यु वा ति ३.३५—स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, 'युव' (=युवक) शब्द से परे 'ति' प्रत्यय होता है। जैसे—युवति।

रिरिय

क रा रि रियो ५.५१—स्त्रीलिङ्ग में, 'कर' धातु से परे, 'रिरिय' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+रिरिय=(रानुबन्धेन्त सरादिस्स ४.१३२) क्+इरिय=किरिय।

इ ति थ य म त्वा ३.२६—इस सूत्र से—किरिया=क्रिया। पालि में 'क्रिया' शब्द निपात है।

२६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

माना कञ्जायो नज्ज नहापेति । भिक्वुनियो भगवन्त दस्मन्-कामा होन्ति ।
माणविकायो भिक्वुनी नमस्सन्ति । भोति देवने ! चरहि को एत जानाति ?
गुणवतियो (गुणवन्तियो) इत्थियो महनिय परिसाय पि पममितायो होन्ति ।
कञ्जाय धम्मी कथा सोतव्वा, मुमाय वाचाय वेरमणी हुत्वा पेमनीया मुन्ता-
सिता वाचा भासितव्वा । मिया ब्राह्मणी, मिया खत्तिया, मिया गहपतानी
वेम्सा, सिया मुट्टा—सव्वा इत्थियो भानीहि भावनारामेहि जिगुच्छित्तव्वायो !

२. निम्नलिखित शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिए—

(क) गहपति, खत्तियो, ब्राह्मणो । देवो, उट्ठो, राजा । पुनो, भाता, पिता,
मातुलो । भिक्वु, सामणेरो, उपासको, आचरियो, उपज्जायो । यक्खो,
नागो, कुमारो, हत्थि, अस्सो, हसो ।

(ख) गच्छन्तो कुमारा । पस्सन्तो भातरो । खादन्तो दारका । पटन्तो मण-
वका । भायमाना भिक्खवो । पसन्ना देवा । निसिन्ना ब्राह्मणा ।

३. निम्नलिखित स्त्री-प्रत्ययों के उदाहरण लिखिए—

आ । आनी । इनी । ऊ । डी । नी ।



छठा काण्ड

पहला पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

प्रथमान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ४२. सा स्स दे व ता पु ण्ण मा सी ४.१३—'वह इसकी देवता या पूर्णमासी है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होना है। 'ण' का 'अ' रह जाता है। [देखिए—पृ० २५५ : पाद-टिप्पणी] जैसे—

देवता—मुगतो देवता अस्साति—सोगतो—बौद्ध

महिन्दो देवता अस्साति—माहिन्दो—महेन्द्र का उपासक

यमो देवता अस्साति—यामो—यम का उपासक

वरुणो देवता अस्साति—वरुणो—वरुण का उपासक

पूर्णामासी—

फुस्सो पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फुस्सो मासो—पूस महीना ।

माघी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—माघो मासो—माघ महीना ।

फग्गुनी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फग्गुनो मासो—फागुन महीना ।

इसी तरह—**चित्तो** = चैत । **वेसाखो** = वैशाख । **जेटुमूलो** = जेट । **आना-
ळ्हो** = असाढ़ । **साकणो** । **पुट्टुपादो** = पादो । **अस्सयुजो** = अनिन । **कत्तिको** =
कातिक । **मागसिरो** = मृगशिरा ।

§ ४३. त सि ध स्थि ४.१६—'वह इन जगह पाया जाता है' इस अर्थ में, उस
शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है । 'ण' का 'अ' रह जाता है । जैसे—

उदुम्बरा अस्मि देसे सन्ति इति—**ओदुम्बरो** = जिस जगह उदुम्बर बहुत पाया
जाय ।

खदरा अस्मि देसे सन्ति इति—**खादरो** = जिस जगह 'खैर' बहुत पाया जाय ।

वव्वजा अस्मि देसे सन्ति इति—**बव्वजो** = जिस जगह वव्वज नाम की घास
पाई जाती है ।

णिक, क

§ ४४. त म स्त सि ष्पं सी लं प ष्यं प ह र णं प यो ज नं ४.२७—'वह
उसका शिल्प, शील, पण्य, अस्त्र या प्रयोजन है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे
'णिक' प्रत्यय होता है । 'णिक' का 'इक' रह जाता है । जैसे—

शिल्प—

वीणा-वादनं सिष्पमस्स—**वेणिको** = वीणा बजाना जिसका शिल्प है ।
मोदङ्गिको = मृदङ्ग बजाना जिसका शिल्प है ।

शील—

पमुकूलधारणं सीलमस्स—**पंसुकूलिको** = फेके चिथड़े ही धारण करने का
जिसने शील ग्रहण किया है । **तेचीवरिको** = तीन चीवर ही धारण करने का
जिसने शील ग्रहण किया है ।

पण्य—

गन्धो पण्यमस्स—**गन्धिको** = गन्ध बेचने वाला । **तेलिको** = तेल बेचने
वाला ।

अस्त्र—

चापो पहरणमस्स—**चापिको** = तीर जिसका अस्त्र है । **तोमरिको** = भाला
चलाने वाला । **सुगरिको** = मुग्दर चलाने वाला ।

प्रयोजन (=हेतु)

उपधिप्पयोजनमस्स—अपधिकं=पुनर्जन्म का जो हेतु हो । सातिकं=स्वास्थ्य बनाए रखने का जो हेतु हो ।

§ ४५. नि न्दा, अ ञ्जा त; अ प्प, प टि भा ग, र स्स, द या, स ञ्जा सु को ४. ४०—‘निन्दा’ आदि अर्थों में, नाम से परे ‘क’ प्रत्यय होता है । जैसे—

निन्दा—मुण्डको, समणको । अज्ञात—कस्सायं अस्सोति—अस्सको ।
अल्प—तेलकं, घतकं । प्रतिभाग—हत्थि विय—हत्थिको, अस्सको, बलि बट्ठको ।
ह्रस्व—मानुसको, रुक्खको, पिलक्खको । दया—पुत्तको, वच्छको । संज्ञा—
मोरो विय—भोरको ।

§ ४६. त म स्स परि मा णं णि को च ४.४१—‘यह इसका परिमाण है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है; और ‘क’ प्रत्यय भी । जैसे—

दोणो परिमाणमस्स—दोणिको बीहि=द्रोण भर धान । खारसत्तिको बीहि=सौ खार धान । आसीतिको बयो=अस्सी साल की आयु । पञ्चकं=पाँच का । छक्कं=छः का ।

त्तक

§ ४७. य ते ते हि त्त को ४.४२—ऊपर के ही अर्थ में, ‘य’, ‘त’, तथा ‘एत’ शब्दों से परे, ‘त्तक’ प्रत्यय होता है । जैसे—

यं परिमाणमस्स—यत्तकं=जितना । तत्तकं=तितना । एत्तकं=इतना ।

आवन्तु

§ ४८. स ब्वा चा वन्तु ४.४३—ऊपर के ही अर्थ में, ‘सब्ब’, ‘य’, ‘त’, तथा ‘एत’ शब्दों से परे, ‘आवन्तु’ प्रत्यय होता है । जैसे—

१. ए त स्से ट् त्त के ४.१४०—‘त्तक’ प्रत्यय आने से, ‘एत’ शब्द का ‘ए’ आदेश हो जाता है । जैसे—एतं परिमाणमस्स—एत + त्तक = ए + त्तक = एत्तकं ।

सर्वं परिमाणमस्स—सब्बावन्तं=सभी । यावन्तं=जितना । तावन्तं=तितना । एत्तावन्तं=इतना ।

रति, रीव, रीवतक, रिक्तक

§ ४६. किं म्हा र ति-री व-री व त क-रि त्त का ४.४४—ऊपर के ही अर्थ में, 'कि' शब्द से परे, 'रति', 'रीव', 'रीवतक', तथा 'रिक्तक' प्रत्यय होते हैं । जैसे—
किं संख्यातं परिमाणमेस—कति, कीव, कीवतकं, कित्तकं=कितने ।
इतमे 'कीव' शब्द अव्यय है ।

[देखिए—तद्धित परिशिष्ट]

इत

§ ५०. संजातं तारकादित्वतो ४.४५—'यह इसमें उगा (=संजात) है' इस अर्थ में, 'तारक' आदि शब्दों से परे 'इत' प्रत्यय होता है । जैसे—
तारका संजाता अस्स—तारकितं गगनं । पुष्फितो रुक्खो=पुष्पित वृक्ष ।
पल्लविता लता ।

मत्त

§ ५१. माने मत्तो ४.४६—'इतना भर' इस अर्थ में, शब्द से परे 'मत्त' प्रत्यय होता है । जैसे—
पलमत्तं=पल भर । हत्थमत्तं=हाथ भर । सतमत्तं=सौ भर । दोगमत्तं=द्वोग भर ।

तग्घो

§ ५२. तग्घो चुद्धं ४.४७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो शब्द से परे 'तग्घ' प्रत्यय होता है, और 'मत्त' भी । जैसे—
जाणुतग्घं, जाणुमत्तं=जांघ भर ऊँचा ।

ण

§ ५३. णो च पुरिसा ४.४८—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो 'पुरिस' शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है; और 'मत्त' तथा 'तम्भ' भी। जैसे—
पुरिसं, पुरिसमत्तं, पुरिसतम्भं = पुरुष भर ऊँचा।

अय

§ ५४. अयु भ द्वितीं हं से ४.४९—अंग का यदि बोध होता हो, तो 'उभ', 'द्वि' तथा 'ति' शब्दों से परे 'अय' प्रत्यय होता है। जैसे—
उभो अंसा अस्स—उभयं = दोनों अंश। द्वयं = दोनों अंश। तयं = तीनों अंश।

क. आकी

§ ५५. ए का का क्य सहाये ४.५५—'असहाय' के अर्थ में, 'एक' शब्द से परे 'क' तथा 'आकी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
एकको, एकाकी = अकेला = असहाय।

रतर, रतम, इस्सिक, इय, इट्ट

§ ५३. किंम्हा निद्धारणे रतर-रतमा ४.५७—बहुतों में से एक का निर्धारण जाना जाय, तो 'किं' शब्द से परे 'रतर' तथा 'रतम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
कतरो कतमो वा देवदत्तो भवत्तं = आप लोगों में कौन देवदत्त हैं ?

§ ५४. तरतमिस्सि किं चिद्धा लिसये ४.६४—अतिशय का अर्थ जाना जाय, तो शब्द से परे 'तर', 'तम', 'इस्सिक', 'इय', तथा 'इट्ट' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
अतिसयेन पापो—पापतर्रो, पापतमो, पापिस्सिको, पापियो, पापिट्ठो = अत्यन्त पापी।

जेय्यो, जेट्ठो^३। साधियो, साधिट्ठो^३। नेदियो, नेदिट्ठो। सेय्यो, सेट्ठो^३। कणियो, कणिट्ठो^३। मेधियो, मेधिट्ठो^३।

§ ५५. क्व चि प् च्च घे ३.६८—प्रत्यय परे हो, तो न्त्रीप्रत्ययान्त शब्द कहीं कहीं पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करता है। जैसे—अतिसयेन व्यक्ता—व्यक्ततया, व्यक्ततया।

द्वितीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण, क, णिक

§ ५६. त मधी ते तं जानाति क णि का च ४.१४—'उसको अध्ययन करता है, या जानता है', इस अर्थ में शब्द से परे 'ण', 'क' तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

व्याकरणं अधीते जानाति वा—वेद्याकरणो। छान्दसो—छन्द-मान्त्र को जो अध्ययन करता है, या जानता है। पदको—पद को अध्ययन करने, या जानने वाला। हेनधिको—विनय को अध्ययन करने, या जानने वाला। सुत्तन्तिको—सूत्र-पिटक को अध्ययन करने, या जानने वाला।

२. जो बुद्ध स्सि धिट्ठे सु ४.१३५—'इय' तथा 'इट्टु' प्रत्ययों के आने में, 'बुद्ध' शब्द का 'ज' आदेश होता है। जैसे—अतिसयेन बुद्धो—जेध्यो, जेट्ठो।

३. बाळ्हा हन्ति क प सत्थानं साधने दसा ४.१३६—'इय' तथा 'इट्टु' प्रत्ययों के आने से, 'बाळ्हा', 'अन्तिक', तथा 'पसत्थ' शब्दों का यथाक्रम 'माध', 'नेद' तथा 'स' आदेश होता है। जैसे—

अतिसयेन बाळ्हा—साधियो, साधिट्ठो। अनिसयेन अन्तिको—नेदियो, नेदिट्ठो। अतिसयेन पसत्थो—सेय्यो, सेट्ठो।

४. कण् कना प्प युवानं ४.१३७—'इय' तथा 'इट्टु' प्रत्ययों के आने में, अधिक अल्प के अर्थ में, 'युव' शब्द का 'कण्' तथा 'कन' आदेश हो जाता है। जैसे—कणियो, कणिट्ठो। कनियो, कनिट्ठो।

५. लोपो वी मन्तु वन्तूनं ४.१३८—'इय' तथा 'इट्टु' प्रत्ययों के आने में, 'वी', 'मन्तु' तथा 'वन्तु' प्रत्ययों का लोप हो जाता है। जैसे—

अतिसयेन मेधावी—मेधियो, मेधिट्ठो। अतिसयेन सतिमा—सतियो, सतिट्ठो। अनिसयेन गुणवा—गुणियो, गुणिट्ठो।

शिक

§ ५७. तं हत्त र ह ति ग च्छ तु च्छ ति च र ति ४.२८—‘उसे बध करता है, उसे पाने का योग्य होता है, वहाँ जाता है, वहाँ उच्छन्न करता है, उसका आचरण करता है’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

पक्खिको, साकुणिको = चिडीमार । मायूरिको = मोर मारने वाला । मच्छिको, मेनिको = मछुआ । म्हाणविको, हारणिको = हरिण मारने वाला व्याधा । सूकरिको = सूअर मारने वाला ।

सतं अरहति इति—ज्ञातिकं = सौ रूपये पा सकने वाला । सन्दिट्टिकं = जीते जी देखा जा सकने वाला । एहिपस्सिको = जिसके विषय में यह कहा जा सके कि ‘आवो, इसे देखो’ ।

परदार गच्छतीति—पारदारिको = परस्त्री-गमन करने वाला । मग्गिको = राह में जाने वाला । पञ्जासयोजनिको = पचास योजन जाने वाला ।

खदरे उच्छति इति—खादरिको = खैर डकट्टा करने वाला । सामाकिको = सामाक धान बटोरने वाला ।

धम्मं चरति इति = धम्मिको । अधम्मिको ।

ल्ल

§ ५८. त न्नि स्सि ते ल्लो ४.६५—‘उसको आधार मान कर होने वाले’ के अर्थ में, शब्द से परे ‘ल्ल’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वेदनिस्सितं—वेदल्लं । दुट्ठुनिस्सितं—दुट्ठुल्लं ।

ण्य

§ ५९. दक्खि णा या र हे ४.७६—‘उसको पाने का योग्य होना’ इस अर्थ में, ‘दक्खिणा’ शब्द से परे ‘ण्य’ प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खिणं अरहती ति—दक्खिण्यो = जो दक्षिणा पाने का योग्य पात्र है ।

[ण्यो तु मन्ता ४.७७—ऊपर के ही अर्थ में, ‘तु’ प्रत्ययान्त होने से, ‘ण्य’

प्रत्यय होता है। जैसे—

घातेतायं वा घातेतुं । पव्वाजेतायं वा पव्वाजेतुं]

तृतीयान्त शब्दों से चरे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६०. ण रा गा तेन रत्तं ४.११—‘इस रँग से रगा हुआ’, इस अर्थ में शब्द से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। [पृ० २५५, पाद टि०] जैसे—

कासावेन रत्तं—कासाबं—कापाय रँग से रगा हुआ । कोमुम्भं—कुमुम के रंग से रंगा हुआ । हालिह्वं—हल्दी के रंग से रंगा हुआ ।

§ ६१. न क्खत्ते निन्दुयुत्तेन काले ४.१२—यदि इन्दु-युक्त नक्षत्र से कोई काल लक्षित हो, तो उससे परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—

फुस्सी रत्ति—पूस की रात । फुस्सो अहो—पूस का दिन ।

§ ६२. तेन निब्बत्ते ४.१८—‘उसके द्वारा बनाया गया’ इस अर्थ में ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—कुसम्बेन निव्वत्तो—कोसम्बी—जो नगरी कुसम्ब ऋषि के द्वारा बसाई गई है । काकन्दी । माकन्दी । सहस्सेन निव्वत्ता साहस्सी—परिखा ।

§ ६३. तेन कत्तं, कीत्तं, बद्धं, अभिसं खत्तं, संसट्ठं, हत्तं, हन्ति, जितं, जयति, दिब्बति, खणति, तरति, चरति, वहति, जीवति ४.२९—‘इससे किया गया है, खरीदा गया है, बाँधा गया है, अभिसंस्कृत किया गया है, लगा है, मारा गया है, मारता है, जीता गया है, जीतता है, खेलता है, खनता है, तरण करता है, आचरण करता है, बहन करता है, जीता है,’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

कायेन कत्तं—कायिकं—शरीर से किया गया । वाचसिकं—वचन से किया गया । मानसिकं—मन से किया गया । वातेन कतो आवाधो—वातिको—वायु के कारण उत्पन्न रोग ।

सतेन कीत्तं—सातिकं—सौ रुपये में खरीदा गया । साहस्सिकं—हज़ार रुपए में खरीदा गया ।

वरत्ताय बद्धो—वारत्तिको=रस्सी से बँधा । आयसिको=लोहे से बँधा हुआ । पासिको=जाल से बँधा हुआ ।

घतेन अभिसङ्खतं संसट्ठं वा—घातिकं=घी से तैयार हुआ, या मिला । गोठिकं=गुड़ से ० । दाधिकं=दही से ० । मारीचिकं=मिर्च से ० ।

जालेन हतो हन्तीति वा=जालिको=जाल से मरा हुआ, या मारने वाला । बाठिसिको=बंसी से ० ।

अक्खेहि जितं=अख्खिकं=पासा से जीता गया । अक्खेहि जयति दिव्वति वा—अक्खिको=पासा से जीतने वाला, या खेलने वाला ।

खणित्तिया खणतीति—खाणित्तिको=खन्ती से खनने वाला । कुट्टालिको=कुट्टाल से खनने वाला ।

उलुम्पेन तरति इति—ओलुम्पिको=बेड़ा से पार करने वाला । गोपुच्छिको=गाय की पूँछ पकड़ कर पार करने वाला । नाविको=नाव से पार करने वाला ।

सकटेन चरतीति—साकटिको=सगड़ के साथ चलने वाला । रथिको=रथ से चलने वाला ।

वन्धेन वहति—बन्धिको=बँध कर वहन करने वाला । अंसिको=कंधे पर वहन करने वाला । सीसिको=शिर से वहन करने वाला ।

वेतनेन जीवति—वेतनिको=वेतन से जीने वाला । भतिको=मजदूरी से जीने वाला । कयविक्रयिको=क्रयविक्रय करके जीने वाला ।

ल, इय

§ ६४. तेन दत्ते लि या ४.५८—‘उससे प्रदत्त है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ल’ तथा ‘इय’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—

देवेन दत्तो—देवल्लो, देवियो । ब्रह्मना दत्तो—ब्रह्मल्लो, ब्रह्मियो । सीवल्लो, सीवियो । नागल्लो, नागियो ।

इम

§ ६५. भा वा ते न नि ब्बत्ते ४.६३—‘उससे तैयार किया गया है’ इस अर्थ में, भाव-वाचक शब्द से परे ‘इम’ प्रत्यय होता है । जैसे—

पाकेन निव्वत्त—पाकिन्नं—जो पका कर तैयार किया गया है। मंकेन निव्वत्तं—सेकिमं—जो सींच कर तैयार किया गया है।

चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६६. त स्स सं व त्त ति ४.३०—‘इसके लिए होता है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। [पृ० २५५—पाद टिप्पणी] जैसे—

पुनव्भवाय संवत्तति इति—पोनोभविको—जो पुनर्जन्म के लिए कारण हो। स्त्रीलिङ्ग मे—पोनोभविका। लोकाय सवत्तति—लोकिको—जो लोक के लिए हो। सगाय संवत्तति—सोदगिको—जो स्वर्ग के लिए हो।

पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६७. त लो सम्भू त मा ग तं ४.३१—‘उससे सम्भूत, या आया हुआ’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मातितो सम्भूतमागतं वा—मत्तिकं—माँ की ओर से सम्भूत, या आया हुआ। पेतिकं—पिता की ओर से ०।

‘ण्य’ ‘रियण’, ‘र्य’ प्रत्यय भी उक्त अर्थ में होते हैं। जैसे—

सुरभितो सम्भूतं—सोरभ्यं—सुगन्धि से सम्भूत। धनतो सम्भूतं—थञ्जं—दूध। पितितो सम्भूतो—पेतियो। मातियो, मत्तियो, मत्तियो।

छठा काण्ड

दूसरा पाठ

(ख)

तद्धित प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण^१

§ ६८. णो वा प च्चे ४.१—‘उसका अपत्य’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वासिटुस्स अपच्चं—वासिटू, वासेटू, वासिटूठी=वशिष्ठ के अपत्य।
रघुनो अपच्चं—राघवो।

शान, गायन^१

§ ६९. व च्छा दि तो णा न णा य ना ४.२—ऊपर के ही अर्थ में, ‘वच्छ’ आदि गोत्र वाचक शब्दों से परे, ‘णान’ तथा ‘णायन’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच्छानो, वच्छायनो=वत्स गोत्र में उत्पन्न। कच्चानो, कच्चायनो=कात्यायन गोत्र में उत्पन्न।

कातियानो। मोग्गल्लानो, मोग्गल्लायनो। साकटानो, साकटायनो। कण्हानो, कण्हायनो।

शेय्य, शेर^१

§ ७०. क त्ति का वि ध वा दी हि णे य्य णे रा ४.३—ऊपर के ही अर्थ में,

‘कत्तिका’ आदि शब्दों से परे, ‘ण्य’ तथा, ‘विधवा’ आदि शब्दों से परे ‘ण’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कत्तिकेय्यो=कार्तिकेय । वेनतेय्यो । भागिनेय्यो=भाजा ।

वेधवेरो=विधवा का लड़का । बन्धकेरो=बन्धकी अर्थात् अभिमात्रिका का पुत्र । नाळिकेरो । सामणेरो ।

रण्य

§ ७१. ण्य दि च्चा दी हि ४.४—ऊपर के ही अर्थ में, ‘दिनि’ आदि शब्दों से परे ‘ण्य’ प्रत्यय होता है। जैसे—

देच्चो=दिति का अपत्य । आदिच्चो=अदिति का अपत्य । कोण्डञ्जो=

१. स रान मा दि स्सा यु व ण्ण स्सा ए ओ णानुबन्धे ४.१२४—‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदिभूत ‘अ’, ‘इ’, तथा ‘उ’ का यथाक्रम ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—

अदितिया अपच्चं—अदिति + ण्य=(लोपो) वण्णवण्णानं ४.१३१) आदित् + य=आदित्यं=आदिच्चं । रघु + ण=राघवो । विनता + ण्य=वेनतेय्यो । मीन + णिक=मेनिको । उळ्म्पेन तरतति—उळ्म्प + णिक=ओळ्म्पिको । दुभगस्स भावो—दुभग + ण्य=दोभगं ।

सं यो गो व्व चि ४.१२५—‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, संयुक्त अक्षर से पूर्व ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ का कहीं कहीं यथाक्रम ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ होता है। जैसे—दितिया अपच्चं—दिति + ण्य=देच्चो । कुण्डनिया अपच्चं—कोण्डञ्जो ।

बहुत स्थानों में यह आदेश नहीं होता है। जैसे—वच्छ + णान=वच्छानो । कत्तिका + ण्य=कत्तिकेय्यो । दक्ख + णि=दक्खि ।

उ व ण्ण स्सा व ड् सरे ४.१२६—यदि ‘ण’ अनुबन्ध वाला कोई प्रत्यय आवे, जिसके आदि में स्वर हो, तो नाम के अन्त्य ‘उ’ का ‘अव’ हो जाता है। जैसे—रघु + ण=राघवो ।

म ज्जे ४.१२६—कहीं कहीं, मध्य में भी स्थित ‘अ’, ‘इ’, तथा ‘उ’ का यथाक्रम ‘आ’, ‘ए’, तथा ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—वसिट्ठस्स अपच्चं—वसिट्ठ + ण=वासेट्ठो ।

कुण्डलि का अपत्य । गग्घो=गर्ग का लड़का । भातब्बो=भाई का लड़का, भतीजा ।

णि

§ ७२. आ णि ४.५—ऊपर के ही अर्थ में, अकारान्त शब्द से परे विकल्प से 'णि' प्रत्यय होता है । जैसे—

दक्खि=दक्ष का अपत्य । दत्ति=दत्त का अपत्य । दोणि=द्रोण का अपत्य । वासवि=वासव का अपत्य । वारुणि=वरुण का अपत्य ।

ञ्जो

§ ७३. राज तो ञ्जो जा ति यं ४.६—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'राज' शब्द से परे 'ञ्ज' प्रत्यय होता है । जैसे—

राजञ्जो=राजा की जाति का ।

य, इय

§ ७४. खत्ता यि या ४.७—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'खत्त' शब्द से परे 'य' तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

खत्थो, खत्थियो=क्षत्रिय जाति का ।

स्स, सण

§ ७५. मनु तो स्स स ण् ४.८—ऊपर के अर्थ में, 'मनु' शब्द से परे, 'स्स' तथा 'सण्' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

मनुस्सो, मानुसो । स्त्रीलिङ्ग में—मनुस्सा, मानुसी ।

२. य भिह गो स्स च्च ४.१३०—'य' से आरम्भ होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो 'गो' तथा उकारान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अव' आदेश हो जाता है । जैसे—गुत्तं इदं—गो+य=गव+य=(लोपो) वण्णवण्णानं ४.१३१) गव्यं । भातुनो अपच्चं—भातु+प्य=भातब्बो ।

शा

§ ७६. ज व ष द वा म स्मः ख त्ति वा र ङ्जे च णो ४.१—'वहाँ क-
क्षत्रिय या राजा' इस अर्थ में, जनपद के नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—
पञ्चालो = पञ्चाल का क्षत्रिय या राजा। कोसलो। शालयो। श्रोत्रकाको।

ण्य

§ ७७. ष्ण कुरु सि वी हि ४.१०—अपत्य तथा राजा के अर्थ में, 'कुरु'
तथा 'सिवि' शब्दों से परे, 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—
कोरव्यो = कुरु का अपत्य, या राजा। सेव्यो।

शी

§ ७८. तं ह्य वि स यो दे से ४.१५—'उनके आसपास की जगह' इस अर्थ
में, 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसातीनं विसयो देसो—वासातो।

§ ७९. नि वा से त ह्य मे ४.१६—'उनके निवास करने की जगह' इस
अर्थ में, नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिवीनं निवासो देसो—सेव्यो = जिस जगह शिवी लोग निवास करें।
वासातो = जिस जगह 'वसाती' लोग निवास करें।

§ ८०. अ दू र भ वे ४.१७—'उसके पास वाला देश' इस अर्थ में, उस
नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

विदिसाय अदूरभवं—देदिसं = विदिशा के पान ही।

शिक

§ ८१. त स्ति वं ४.३३—'यह इतका है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'शिक',
'किय', 'निय', तथा 'क' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

संघस इदं—सङ्घिकं = जो संघ का हो। पुष्पशिकं = जो किसी व्यक्ति-
विशेष (=पुद्गल) का हो। सव्यपुत्तिकोः : सव्यपुत्तियो = जो नाक्यपुत्र का
हो। नाथपुत्तिको = जो नाथपुत्र का हो। जेनदत्तिको = जो जेनदत्त का हो।

क्रिय—सक्रियो—स्वकीय, अपना । परक्रियो—दूसरे का ।

निय—अत्तनियं—अपना ।

क—सको—अपना । राजकं—राजा का ।

ण

§ ८२. णो ४.३४—‘यह इसका है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है । जैसे—

कच्चायनस्स इदं—कच्चायनं व्याकरणं—काल्यायन का व्याकरण । सोगतं सासनं—सौगत बुद्ध का शासन । माहिसं—भैसे का दूध, मांस आदि ।

य

§ ८३. ग वा दी हि यो ४.३५—ऊपर के ही अर्थ में, ‘गो’ आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे ‘य’ प्रत्यय होता है । जैसे—

गुहं इदं—गव्यं—गाय का (दूध, मांस या कुछ) । कविनो इदं—कव्यं—काव्य ।

रेय्यण

§ ८४. पि तितो भा ल रि रे य्य ण् ४.३६—‘पितु’ शब्द से परे, उसके भाई के अर्थ में, ‘रेय्यण्’ प्रत्यय होता है । जैसे—

पितुनो भाता—पेत्तेय्यो—चाचा ।

छ

§ ८५. मा तितो च भ पि ति थं छो ४.३७—‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों से परे, उनकी बहन के अर्थ में ‘छ’ प्रत्यय होता है । जैसे—

मातुया भगिनी—मातुच्छा—सौसी । पितुनो भगिनी—पितुच्छा—फूआ ।

३. णि क स्सि यो वा ४.१४१—‘णिक’ प्रत्यय का विकल्प से ‘इय’ आदेश हो जाता है । जैसे—सक्यपुत्तस्स अयं—सक्यपुत्तियो, सक्यपुत्तिको ।

आमह

§ ८६. मा ता पि तु स्वा म हो ४.३८—‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों में परे, उनके पिता-माता के अर्थ में, ‘आमह’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया माता—मातामही—नानी। मातुया पिता—मातामहो—नाना।
पितुनो माता—पितामही—दादी। पितुनो पिता—पितामहो—दादा।

रेय्यण

§ ८७. हि ते रेय्यण् ४.३९—‘उनके हित के लिए’ इस अर्थ में, ‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों से परे ‘रेय्यण्’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुनो हिते—मत्तेय्यो। पितुनो हिते—पेत्तेय्यो।

तर

§ ८८. व च्छः-डो हि त नु स्ते त रो ४.६—उमका छोटा होने के अर्थ में, ‘वच्छ’ आदि शब्दों में परे ‘तर’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वच्छतरौ=छोटा वछड़ा। औवच्छतरौ=छोटा बैल। अस्सतरौ=खच्चर (आधा घोड़ा, आधा गदहा)।

ण, णिक, णेय्य, मय

§ ८९. त स्त वि कार रा व य वे सु ण णि क णे य्य म य ४.६६—‘उनका विकार या अवयव’ इस अर्थ में, शब्द में परे ‘ण’, ‘णिक’, ‘णेय्य’, तथा ‘मय’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

ण—आयसं=लोहे का बना। औडुस्वरं=गूलर का। कापोतं=कवूतर का।

णिक—कप्पासिकं=कपास का बना।

णेय्य—एणेय्यं=एणि मृग का। कोसेय्यं=रेगम का बना।

मय—तिणमयं=तुण का। दाश्वयं=लकड़ी का बना। वल्लिकामयं=मिट्टी का बना। गोभयं=गोबर।

स्सण

§ ९०. ज तु तो स्स ण् वा ४.६७—ऊपर के ही अर्थ में, ‘जतु’ शब्द में परे,

विकल्प से 'स्मण्' प्रत्यय होता है । जैसे—

जतुनो विकारो—जातुस्सं, जातुस्यं=लाह का वना ।

करण, शिक

§ ६१. सभूहे क ण्ण णि का ४.६८—'उनका समूह' इस अर्थ में, शब्द से परे 'कण', ण, तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

करण—राजज्जकं=राजा की जाति के लोगों का जमाव । भ्रातुस्सकं=आदमियों का जमाव । श्रोतुकं=ऊठों का जमाव । शोरब्भकं=भेड़ों का० । राजकं=राजों का० । राजपुत्तकं=गजपुत्रों का० । हत्थिकं=हाथी का० । धेनुकं=गौवों का० ।

रा—काकं=कौओं का जमाव । भिक्षकं=भिक्षुओं का० ।

शिक—(केवल प्राणहीन से परे) भ्रातुशिकं=पूए की ढेर । संकुलिकं=रोटी की ढेर ।

ता

§ ६२. ज ता षी हि ता ४.६९—'उनका समूह' इस अर्थ में, 'जन' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'ता' प्रत्यय होता है । जैसे—

जनता=जन-समूह । गजता=गज-समूह । बन्धुता=बन्धु-समूह ।

स्स

§ ६३. अक्खु वा वि लो स्सो ४.७१—'उसके हित के लिए' इस अर्थ में, 'चक्खु' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्स' प्रत्यय होता है । जैसे—चक्खुनो हितं—चक्खुस्सं । आयुनो हितं—आयुस्सं ।

जातिय

§ ६४. लब्ब नि जा लियो ४.११३—'उस प्रकार का' इस अर्थ में, उस सामान्य वाचक शब्दों से परे 'जातिय' प्रत्यय होता है । जैसे—

पटुजातियो । सुदुजातियो ।

सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६५. स प्र अक्षे ४.२०—‘उसमें हुआ’ इस अर्थ में, ‘उच्च’ से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—

उदके भवो—ओढ़को—जल में उत्पन्न। औरसो—उसने उत्पन्न। आमपदो—जनपद से उत्पन्न हुआ। जामधौ—नगध से उत्पन्न हुआ। कापिलशक्यो—कापिलवस्तु से उत्पन्न हुआ। कोसल्यो—कोशास्वी से उत्पन्न। मनसि भवो—मन + ण=मानसो।

तन

§ ६६. अज्जा बी हि सन्तो ४.२१—ऊपर के ही अर्थ में, ‘अज्ज’ आदि शब्दों से परे ‘तन’ प्रत्यय होता है। जैसे—

अज्ज भवो—अज्जतनो—आज दिन हुआ। सदान्तो—कल होने वाला। हिम्यस्तनो—कल हुआ हुआ।

§ ६७. पुरातो णो च ४.२२—ऊपर के ही अर्थ में, ‘पुरा’ शब्द से परे, ‘ण’ प्रत्यय होता है, और ‘तन’ प्रत्यय भी। जैसे—

पुराणो, पुरातनो—जो बहुत पहले हो चुका है।

अच्च

§ ६८. अथा त्वच्चो ४.२३—साथ रहने के अर्थ में, ‘अथा’ (=साथ) शब्द से परे ‘अच्च’ प्रत्यय होता है। जैसे—

अमच्चो—साथ रहने वाला, मंत्री।

४. सनादीनं सक् ४.१२८—‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने में, ‘मन’ आदि शब्दों से परे ‘स’ का आगम होता है। जैसे—

मनसि भवं—मानसं। दुम्मनसो भावो—दोमनस्सं। सोमनस्सं।

इम

§ ६६. मज्झा दि त्वि मो ४.२४—‘उसमें हुआ’ इस अर्थ में, ‘मज्झ’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, ‘इम’ प्रत्यय होता है। जैसे—
मज्झिमो = मध्य में हुआ। अन्तिसो = अन्त में हुआ।

कण, णेर्य, णेर्यक, य, इय

§ १००. क णे य्य णे य्य क यि या ४.२५—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे ‘कण’, ‘णेर्य’, ‘णेर्यक’, ‘य’, तथा ‘इय’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कण्—कुसिनारायं भवो—कोसिनारको। सागधको। आरञ्जको = जंगल में हुआ।

णेर्य—गङ्गेय्यो = गंगा में हुआ। पब्बतेय्यो = पर्वत पर हुआ। वानेय्यो = वन में हुआ।

णेर्यक—कोलेय्यको = कुल में हुआ। वाराणसेय्यको = बनारस में हुआ। चम्पेय्यको = चम्पा में हुआ।

य—गम्मो = ग्राम्य। दिब्बो = दिव्य।

इय—गामियो = ग्राम्य। उदरियो = उदर में हुआ। दिवियो = स्वर्ग में हुआ। पञ्चालियो = पञ्चाल में हुआ। बोधिपक्खियो = ज्ञान के पक्ष का। लोकियो = लोक में हुआ।

णिक

§ १०१. णिको ४.२६—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

सारदिको = शरत्काल में हुआ। सारदिको दिवसो। सारदिका रत्ति।

§ १०२. त त्थ व स ति वि दि तो भ त्तो नि यु त्तो ४.३२—‘वहाँ रहता है, वहाँ विदित है, उसमें भक्ति रखता है, वहाँ नियुक्त है’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

रुक्खमूले वसति—रुक्खमूलिको = वृक्ष के नीचे रहने वाला। आरञ्जको = जंगल में रहने वाला। सोसानिको = स्मशान में रहने वाला।

प्रत्यय लगा) ।

पथं गच्छतीति—अथावी (‘आवी’ प्रत्यय) ।

इस्सा अस्स अतीति—इस्सुकी (‘उकी’ प्रत्यय) ।

धुरं वहन्तीति—धोरह्हा (‘ग्रहण’ प्रत्यय) ।

स क त्थे ४.१२२—अपने ही अर्थ में भी, शब्द से परे कुछ प्रत्यय देखे जाते हैं ! जैसे—हीनको, पोतको, किञ्चयं ।

३०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) विपस्वो, सिखी, वेस्सभू च भगवन्तो गोत्तेन कोण्डञ्जा ग्रहेसु । कट्टुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो च भगवन्तो गोत्तेन कस्सपा ग्रहेसु । अहं एतरहि (भगवा) गोतमो गोत्तेन । वारिसिद्धा, भारद्वाजा, कच्चाना, वच्छादना, कण्हायना, अग्गिचेस्सा, कोसिका, भग्गवा, ब्राह्मणा च खनिया च गहपतयो भगवन्तं अभिवन्दन्ति, नमस्सन्ति, पञ्हे पुच्छन्ति । भगवा तेनं पुट्टे पुट्टे पञ्हे व्याकरोति ।
- (ख) राजगहिका, भागधिका, कापिलवत्थिका, कोसविका गहपतयो भगवन्तं भिक्खु-सङ्घं च उपट्टहन्ति । सुत्तस्सिका, वेनयिका, आग्निधम्मिका भिक्खू सज्जायन्ति । कच्चानो मोगलानो च वेद्यकरणिका । पंसुकूविका तेत्थीवरिका भिक्खू अठ्ठोकासिका हुत्वा विहरन्ति । भूते (भूत-काले) अज्जतनी, हिद्यत्तनी परोक्खा विभत्तियो होन्ति ।
- (ग) अथ खो राजा माग्धो अजात-सत्तु वेदेहि-पुत्तो कोसिनारकाणं मल्लानं दूतं पाहेसि । वेसालिका लिच्छवी । कापिलवत्थवा सक्या । रामगामका कोलिया । वेठदीपको ब्राह्मणो । पवेद्यका मल्ला दूतं पाहेसुं । वेणो वाह्मणो किर भगवतो सरारानि अट्टथा समं सुविभत्तं विभजित्वा, तेनं अदासि । अदंसु खो ते दोणस्स ब्राह्मणस्स कुम्भ याचमानस्स कुम्भ नि । पिप्पलिवनिया नोरिया पन अङ्गारं हरिसु ।
- (घ) पितामहो, मातामहो, मज्झिमो, अन्तिमो, पापिट्ठो, सेट्ठो, धम्मिको, मानुच्छा, पितुच्छा, गारवं, अज्जवं, पोरी, सन्दिट्टिकं, एहिपस्सिक, पोन्नो भविको, वक्खिण्यो, आहुनेय्यो, अधिपतेय्यं, देवता, जनता ।
- (ङ) स्वात्तनाथ भत्तं अधिवासेसि । पौत्तिकं च सत्तिकं च धनं सोगतानं सामणे-रानं च समणानं अत्थाय विसज्जेसि । पायासि राजञ्जो राजदायं ब्रह्मदेय्यं सेतव्यं अज्जावसति । कोसिनारका मल्ला पुरत्थिमेन द्वारेन निक्खमिसु ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों से वाक्य बनाइए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आज का भोजन । कल का दान । गत-कल की पूजा । मगध का राजा । शाक्य कुमार । कपिल-वस्तु के मनुष्य । कुरुदेश का राजा । इसी जन्म में । मन की व्यथा । शरीर की व्याधि । सालाना त्यौहार । वर्षा का वास । पाँच महिने की चारिका । संघ को दान । ध्यान का आनन्द । व्याकरण जानने वालों की सभा । त्रिपिटक की गाथा । वशिष्ठ, भृगु, उदुम्बर गोत्र के ऋषि ।

३. निम्नलिखित प्रत्ययों के कुछ उदाहरण दीजिए—

१. ण, २. णिक, ३. क, ४. त्तक, ५. रति, ६. रीव, ७. रीवतक, ८. इत्, ९. तग्घ, १०. काकी, ११. रतर, १२. रतम, १३. इय, १४. इट्ट, १५. ल्ल, १६. णेय्य, १७. प्य, १८. ल, १९. णान, २०. णायन ।

४. निम्नलिखित शब्दों श्रे प्रत्यय का निर्देश कीजिए—

सोगतो । वेणिको । समणको । एत्तावन्तु । कति । कीव । पलमत्तं । एकाकी । देवलो । वच्छानो । अज्जतनं । जनता । जानुस्सं । पितामहो । खत्थो । वारुणि । सामणेरो ।

छठा काण्ड

तीसरा पाठ

समास-प्रकरण

स्या दि स्या दिने क त्थं ३.१—स्याद्यन्त शब्द, स्याद्यन्त शब्द के साथ
एकार्थ होते हैं। यह, भिन्न अर्थों का एकार्थ हो जाना समास कहा जाता है। समास
छः हैं—१ अव्ययीभाव, २ बहुव्रीहि, ३ तत्पुरुष, ४ कर्मधारय, ५ क्रियार्थ औं
६ द्वन्द्व। जैसे—

१. अव्ययीभाव (असंख्य)

§ १. असंख्यं वि भ क्ति स म्प त्ति स मी प सा क ल्या भा व य था प च्छा -
यु ग प द त्थे ३.२—'विभक्ति, सम्पत्ति, समीप, साकल्य, अभाव, यथा, पश्चात्,
और युगपद'—इन अर्थों में, अव्यय के साथ समास होता है। जैसे—

विभक्ति—इत्थीसु कथा पवत्ता—अधिति ।^१

१. पु ष्व स्मा मा दि तो २.१२२—अव्ययी भाव समास होने पर, शब्द से
परे, प्रायः विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—इत्थीसु कथा पवत्ता—अधिति ।

कहीं कहीं नहीं होता है। जैसे—यथापत्तिया । यथापरिसाय ।

ना तो म प ञ्च मि या २.१२३—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे,
सभी विभक्तियों का लोप नहीं होता है। पञ्चमी को छोड़, दूसरी विभक्तियों
के साथ 'अं' तो होता है। जैसे—उपकुम्भं—घड़े के पास ।

वा त ति या स त्त मी नं २.१२४—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे,
तृतीया तथा सप्तमी विभक्ति में भी, विकल्प से 'अं' होता है। जैसे—

उपकुम्भेन कतं—उपकुम्भं कतं । उपकुम्भे निधेहि—उपकुम्भं निधेहि ।

सम्पत्ति—सम्पन्नं ब्रह्म—सब्रह्मं लिच्छवीलं । समिद्धि भिक्खानं—सुभिक्षं ।

समीप—कुम्भस्स समीप—उपकुम्भं ।

साकल्य—सत्तिजं अजभोहरति ।

अभाव—विगता इद्धि सहिकानं दुस्सहिकं । अभावो मक्खिकानं—निम्म-
क्खिकं । अनिगतानि तिणानि—निस्तिजं ।

यथा—अनुरूपं । अन्वह्वसासं । यथासत्ति ।

पश्चात्—अनुरथं ।

युगपद—सञ्चकं ।^३

§ धा वा व यथा र षे ३.४—अवधारण (= इतना) के अर्थ में, 'यथा' शब्द के साथ समास होता है । जैसे—

याजासत्तं (= जितने) ब्राह्मणे आमन्तथ ।

यावज्जीव = जीवन भर ।

§ २. य थ य ष ष हि ति रो पुरे प च्छा वा प च्च म्प्यन्त ३.५—'परि, अप, आ, वहि, तिरो, पुरे, पच्छा', इन शब्दों का पञ्चम्यन्त के साथ समास होता है, और द्वितीयान्त के साथ भी । जैसे—

परिपव्वत्तं वस्सि देवो, परिपव्वत्ता । अपपव्वत्तं वस्सि देवो, अपपव्वत्ता ।
आपाटल्लियुत्तं वस्सि देवो, आपाटल्लियुत्ता । बहिग्गामं, बहिग्गामा । तिरोपव्वत्तं,
तिरोपव्वत्ता । पुरेभत्तं, पुरेभत्ता । पच्छाभत्तं, पच्छाभत्ता ।

§ ३. स षी पा या मे सञ्च ३.६—तामीप्य, तथा आयाम (= विस्तार) के अर्थ में, 'अनु' शब्द के साथ समास होता है । जैसे—

अनुवत्तं असत्ति गत्ता । अनुगङ्गं वाराणसी ।

२. यथा न तुल्ये ३.३—'यथा' शब्द, यदि 'तुल्य' के अर्थ में समझा जाय, तो उसके साथ समास नहीं होता है । जैसे—

यथा देवदत्तो तथा यञ्जदत्तो ।

३. अ काले स क त्थे ३.८१—यदि कालवाचक न हो, तो उसी अर्थ में, पूर्वपद के अप्रधान 'सह' शब्द का 'स' हो जाता है । जैसे—सब्रह्मं । सञ्चकं निचेहि । सधुरं ।

§ ४. ओ रे प रि ष टि पा रे अ ङ्गे हे ट्टु द्वा धो न्तो वा छ ट्टि ध्या ३.८—
'ओरे, उपरि, पटि, पारे, मज्जे, हेट्टा, उद्ध, अधो, अन्तो'—इन षट्ठों का षट्ठान्त
के साथ समास होता है। जैसे—

गङ्गाय ओरे—ओरेगङ्गां। सिखरस्स उपरि—उपरिसिखरं। वट्टिमोलं। पारेय-
मुनं। मज्जेगङ्गां। हेट्टापासावं। उद्धगङ्गां। अधोगङ्गां। अन्तोपासावं।

§ ५. तिट्ठुग्वा बी नि ३.७—निम्नलिखित समास निपात हैं—

तिट्ठन्ति गावो यस्मि काले—तिट्ठणु कालो। वहन्ति गावो यस्मि काले—
वहणु कालो। आयन्ति गावो यस्मि काले—आयस्तिषवं।

खले यवा यस्मि काले—खलेयवं। लूयमाना यवा यस्मि काले—लूयदवं।
लूयमानयवं। पातकालं। सायकालं। पातमेघं। सायमेघं। पातसर्पं। सायनर्यं।

§ ६. ष र स्स सं ख्या सु ३.६०—मख्यावाचक चन्द उच्चारण में 'हो, हो,
'पर' शब्द के अन्त्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—परमेत्तं। परेत्तह्मं।

§ ७. तं ष पुं स कं ३.६—अव्ययी भाव गमान होने में, चन्द लघुमन्त्र
लिङ्ग होता है;

कभी कभी नहीं भी होता है। जैसे—अथापरिसं, अथापरिसाय=अपनी
अपनी सभा में।

२. बहुव्रीहि (अव्यय)

§ ८. वानेक उज्जत्थे ३.१७—कभी कभी, अनेक स्थावन्न शब्दों का
समास हो कर, उनसे मिल एक अव्यय का बोध होता है। जैसे—

वह्नि धनानि यस्स सो—बहुधनो। तप्त्वा दग्णा यस्स सो—सख्यकर्षो।
वजिरं पाणिमिह यस्स सो—अजिरपाणि। मत्ता वहवो मातङ्गा एत्थ—मत्तवहु-
मातङ्ग वनं। आरुळ्हो वानरो यं खलं सो—आरुळ्हवापरो। जितानि इन्दि-
यानि येन सो—जितिन्द्रियो। दिवं भोजनं यस्स सो—दिव्यभोजनो। अपगतं
काळकं परा सो—अपगतकालको। उपगता वस येस ते—उपवसा। तपोदस
परिसाणं एसं—तिदसा।

दक्खिणस्सा च पुव्वस्सा च दिसाय यदन्तरालं—इत्थिणपुव्वया सिता। सह
पुत्तेन आगतो—सपुत्तो। सलोभको—जिसके शरीर पर रोग्यं है। अत्थि खीरं
यस्सा सा—अत्थिखीरा ब्राह्मणी।

ओट्टमुखमिव मुखमस्स—ओट्टमुखो—ऊँट के समान जिसका मुँह हो ।
सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स—सुवण्णालङ्कारो । पपतितं पण्णमस्स—पपतित-
पण्णो, पपण्णो । अविज्जमाना पुत्ता अस्स—अविज्जमानपुत्तो । न सन्ति पुत्ता
अस्स—अपुत्तो ।

वहू मालायो एतस्स—बहुमालो* पोसो । चित्ता गावो अस्सेति—चित्तगु^१ ।

§ ६. बहुव्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण—

भवम्पतिट्ठा^१ । गुणवन्तपतिट्ठो^२ । मनोसेट्ठा^३ । कुमारभरिया^४ । सपुत्तो^५ ।

४. घ प स्सा न्त स्सा प्प धा न स्स ३.२४—अन्तभूत अप्रधान “घ”, तथा
“प” का ह्रस्व हो जाता है । जैसे—बहुमालो । निक्कोसम्बि । अतिवामोरु ।

५. गो स्सु ३.२५—अन्तभूत अप्रधान ‘गो’ शब्द का ‘गु’ हो जाता है ।

उत्तरपदे ३.५४—उत्तर पद परे हो, तो पूर्वपद में निम्न प्रकार परि-
वर्तन होता है—

६. ट न्त न्तूनं ३.५७—पूर्व पद के ‘न्त’ तथा ‘न्तु’ का कहीं कहीं ‘अ’ हो
जाता है । जैसे—

अवंपतिट्ठा अस्सं—भवन्त + पतिट्ठा = भव + पतिट्ठा = (निगगहीतं १.३८)
भवं + पतिट्ठा = (वग्गे वगन्तो १.४१) भवम्पतिट्ठा मयं । भगवन्तु + मूलका =
भगवन्मूलका नो अस्सा ।

७. अ ३.५८—पूर्वपद के ‘न्तु’ का कहीं २ ‘न्त’ हो जाता है । जैसे—

गुणवन्ता पतिट्ठा भव सोहं—गुणवन्तु + पतिट्ठा = गुणवन्तपतिट्ठो ।

८. अनाद्ययादीनलोमये च ३.५९—‘मय’ प्रत्यय के साथ, तथा समास के
पूर्वपद में स्थित, ‘अन’ आदि तथा ‘आप’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]
शब्दों के अन्त्य स्वर का ‘ओ’ हो जाता है । जैसे—

मनो सेट्ठा एतेसं इति—मनोसेट्ठा । मनसा निव्वत्ता—मनोभया । रजसो
जल्लं—रजोजल्लं (तत्पुरुष) । रजसो विकारो—रजोमयं । आपेसु गतं—
आपोगतं । आपस्स विकारो—आपोमयं । दिसं दिसं* अनुयन्ति—दिसोदिसं
अनुयन्ति ।

* वी च्छा भि क्ख उजे सु द्वे १.५४—बार बार होने के अर्थ में, एक शब्द

सास्सत्थं^{११} । साग्गि^{१२} । सद्दोणा^{१३} खारी । सोदरियो^{१४} । तन्दीपा^{१५} । वुविधो^{१६} ।
दिग्गुणं^{१७} । द्वत्तिक्खत्तुं^{१८} ।

को दो बार कहते हैं । जैसे—रुक्खं रुक्खं सिञ्चति । गामो गामो रमणीयो ।
गामे गामे पानीयं । दिस्सं दिस्सं अनुयन्ति = चारो ओर घूमता है ।

[स्या दि लो पो पु ब्व स्से क स्स १.५५—वीप्सा के अर्थ में, 'एक' शब्द के
द्वित्व होने पर, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है । जैसे—एकस्स एकस्म—
एकेकस्स]

९. इ तिथि य रूभा सि त पु मि त्थी पु मे वे क त्थे ३.६७—यदि उत्तर-पद
समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त पूर्वपद पुल्लिङ्ग का रूप ग्रहण
करता है । जैसे—

कुमारी भरिया यस्स सो—कुमारभरियो । दीघा जड्घा यस्म सो—
दीघजड्घो । युवति जाया यस्स सो—युवजायो ।

१०. स ह स्स सो, ञ्ज त्थे ३.७८—यदि अन्यपद का बोध होता हो, तो
पूर्वपद 'सह' शब्द का विकल्प से 'स' हो जाता है । जैसे—सह पुत्तेन वत्तमानो
सो—सपुत्तो । सहपुत्तो ।

११. स ञ्जा थं ३.७९—संज्ञा उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का
नित्य 'स' होता है । जैसे—सह अस्सत्थेन वत्तति—सास्सत्थं । सपलासं ।

१२. अ ष च क्खे ३.८०—उत्तर पद यदि अप्रत्यक्ष हो, तो पूर्वपद 'सह'
शब्द का नित्य 'स' होता है । सह अग्गिना विज्जमानो—साग्गि कपोतो,
पिसाचो, वातमण्डलिका ।

१३. ग न्था न्ता धि क्खे ३.८२—यदि उत्तर पद ग्रन्थ-वाचक या आधिक्य-
वाचक हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का 'स' आदेण होता है । जैसे—रुक्खं जोतिम-
धीते । समुहुत्तं ।

अधिको दोणो अस्साति—सद्दोणा खारी ।

१४. उ द रे इ थे ३.८४—'इय' के साथ 'उदर' शब्द उत्तर पद में हो, तो
पूर्वपद 'समान' का विकल्प से 'स' होता है । जैसे—सोदरियो । समानोदरियो ।

१५. तं म म ञ्ज त्र ३.८६—एक वचन में, पूर्वपद 'तुम्ह' तथा 'अम्ह'

[स ष्वा दीर्घं षीति हारे १.५६—परस्पर व्यवहार करने के अर्थ में, 'सब्ब' आदि शब्दों का द्वित्व होता है; तथा, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—अञ्जलञ्जस्स भोजका । इत्तरीत्तरस्स भोजका]

३. तत्पुरुष (अमादि)

§ १०. अ मा दि ३.१०—'अ' आदि स्याद्यन्त शब्दों का स्याद्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गानं गतो—गाभगतौ । मुहुत्तं सुखं—मुहुत्तसुखं । कुम्भकारो । तत्तवाथो । वराहरो ।

रञ्जा हतो—राजहतो । असिना छिन्नो—असिच्छिन्नो । पितुना सदित्तो—पितुसदित्तो । पितुसम्मो । सुखेन सहगतं—सुखसहगतं । दधिना उपसित्तं भोजनं—दधिभोजनं । गुठेन मिस्सो ओदनो—गुळोदनो ।

उरसा गच्छति—उरसो । पादेन पिवति—पादपो ।

बुद्धस्स देय्यं—बुद्धदेय्यं । यूपाय दारु—यूपदारु । रजनाय दोगि—रजनदोगि । सवरेहि भयं—सवरभयं । गामस्मा निग्गतो—गामनिग्गतो । मेथुनस्मा अपेतो—मेथुनापेतो ।

शब्दों का यथाक्रम 'तं' तथा 'सं' हो जाता है। जैसे—त्वं दीपो एसं—तन्दीपो । तंसरणा । तथ्योगो । वन्दीपो । संसरणा । भय्योगो ।

१६. त्रि षा दि लु द्वि स्त हु ३.६१—'विव' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'हु' आदेश होता है। जैसे—द्वे विधा प्रकारा अस्स—द्विविधो । द्वे पट्टा अस्स चीवरस्स—द्वुपट्टं ।

१७. त्रि गु णा दि लु ३.६२—'गुण' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दि' आदेश होता है। जैसे—द्वे गुणा अस्स—द्विगुणं । द्विन्नं रत्तीनं समाहारो—द्विस्तं । द्विन्नं गुणं समाहारो—द्विगु ।

१८. ती स्त ३. ६३—'ति' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'द्व' होता है। जैसे—द्वे वा तयो वा—द्वस्तयो वारे । द्वत्तिपत्तपूरा—दो या तीन पात्र भर कर ।

कम्मा जातं—कम्मजं । चित्तजं ।

रञ्जो पुरुषो—राजपुरिसो । चन्दइलगन्धो । नदीसोतो । कञ्जारूपं । काय-
सम्पस्सो । फलरसो ।

§ ११. वञ्चे कत्तञ्च छट्ठिया ३.२२—पष्ठी-तत्पुरुष समास कहीं
कहीं नपुमकलिङ्ग एकवचनान्त होता है । जैसे—

सलभान छाया—सलभच्छायं^१ । मकुन्तान छाया—मकुन्तच्छायं । पासा-
दच्छायं, पासादच्छाया ।

समास होने पर, अमनुष्यों की सभा में नपुनकलिङ्ग एक वचन होता है ।
जैसे—ब्रह्मसभं । देवसभं । इन्दसभं । यक्खसभं । सरभसभं ।

मनुष्यों की सभा में—खत्तियसभा, राजसभा इत्यादि ।

§ १२. तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण—
इदप्पच्चया^२ । पुल्लिङ्ग^३ । सत्थारदस्सनं^४ । तम्मूखं^५ । उदकुम्भो^६ ।
दकसोत्तं^७ ।

१६ स्यादि सु रस्सो ३.२३—विभक्तियों के आने में, नपुसक बने शब्द
के अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है । जैसे—

सलभच्छायं, सलभच्छायेन, इत्यादि ।

२०. इमस्सिदं ३.५५—पूर्वपद 'इम' का 'इद' आदेश हो जाता है ।
जैसे—

इमाय मग्गा पट्टिपत्तिया अत्थो—इदमट्ठो । इमेसं पच्चया—इदप्पच्चया ।

२१. पुं पुमस्स वा ३.५६—पूर्वपद 'पुम' शब्द का विकल्प में 'पुं' आदेश
हो जाता है । जैसे—पुमस्स लिङ्गं—पुंलिङ्गं । पुमलिङ्गं ।

पुं + लिङ्गं = (लोपो १.३९) पु + लिङ्गं = (सरम्हा द्वे १.३४) पुल्लिङ्गं ।

२२. ल्हु पि ता दी न मा र ड् र ड् ३.६३—पूर्वपद 'ल्हु' प्रत्ययान्त, तथा
'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से यथाक्रम, 'आर' तथा 'अर' हो
जाता है । जैसे—

सत्थुनो दस्सनं—सत्थु + दस्सनं = सत्थारदस्सनं । कत्तुनो निद्देसो—कत्तार-
निद्देसो । माता च पिता च—मातरपितरो (द्वन्द्व समास) ।

४. कर्मधारय (एकाधिकरण)

§ १३. वि से स न जे क त्थे न ३.११—स्याद्यन्त विशेषण का अपने स्याद्यन्त विशेष्य के साथ समास होता है। जैसे—

नीलञ्च तं उप्पलं—नीलुप्पलं । मुनि च नो सीहो चाति—मुनिसीहो ।
सीलभेद धनं—सीलधनं । कण्हएप्पो । लोहितसालि ।

§ १४. नञ् ३.१२—‘न’ के साथ स्याद्यन्त का समास होता है। जैसे—
न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो^{३३} । अपुनगेय्या गाथा । अनोकासं^{३४} कारेत्वा ।
असूलासूलं गन्त्वा । नखो^{३५} । नगो^{३६} ।

विकल्प से—सत्थुदस्सनं, कत्तुनिहेसो, मात्तापितरो ।

२३. स ब्वा इ यो वु त्ति म्भ स्ते ३.६९—स्यादि तथा तद्धित में, स्त्रीवाचक ‘सब्ब’ आदि शब्द पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करते हैं। जैसे—

तस्सा मुखं—तम्मुखं । तस्सं—तत्र । ताय—ततो । तस्स वेलायं—तदा ।

२४. कुम्भा दि सु वा ३.७२—‘कुम्भ’ आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद ‘उदक’ शब्द का विकल्प से ‘उद’ आदेश हो जाता है। जैसे—उदकस्स कुम्भो—उदकुम्भो, उदककुम्भो । उदकस्स पत्तो—उदपत्तो, उदकपत्तो । उदकस्स विन्दु—उदविन्दु, उदकविन्दु ।

२५. सो ता दि सू लो पो ३.७३—‘सोत’ आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद ‘उदक’ शब्द के ‘उ’ का लोप हो जाता है। जैसे—उदकस्स सोतो—दकसोतं । उदके रक्खसो—दकरक्खसो ।

२६. ट नञ् स्स ३.७४—पूर्वपद ‘नञ्’ का ‘अ’ आदेश होता है। जैसे—
न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो ।

२७. अन् सरे ३.७५—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद ‘नञ्’ का ‘अन्’ आदेश होता है। जैसे—न ओकासं—अनोकासं । न अक्खातं—अनक्खातं ।

२८. न खा इ यो ३.७६—‘नख’ आदि शब्द निपात हैं। इन में पूर्वपद ‘नञ्’ का ‘अ’ आदेश नहीं होता है। जैसे—नास्स खमत्थि इति—नखो (= नाखून) । नास्स कुलमत्थि इति—नकुलो (= नेवला) ।

१५. कु पा इयो नि च्च न स्या दि वि अि हि ३.१३—कु, 'प' आदि धव्वो के साथ, स्याद्यन्त धव्वो का निपात होता है। जैसे—

कुच्छितो ब्राह्मणो—कुब्राह्मणो । कुश्रुत—कुश्रुतः । कुश्रुतं—कालवर्णं ।
कुपुरिसो कापुरिसो^{११} । उक्त उक्त्—उक्त्तः । उक्तयोः कश्चिदयोः पक्वस्त्वा ।
पकतं । कुप्पुरिसो । कुक्कतं । कुपुरिसो । कुक्कतं । अहित्थुन ।

पगतो ब्राह्मणो—पक्वस्त्वा । पक्वस्त्वा । अहित्थुनोः पक्वस्त्वा—अनि-
मज्जो । अतिलोभो । अदकुट्ट कोकियाद वन—अदकोकिलं । अदसद्वरं । पग-
गितानो अज्जेताय—परियज्जेतो । विगतो कोमण्डिया—विक्कामिद्व ।

• १६. कर्मशास्त्र मसाम के कुछ विशेष उदाहरण—पुप्पुरिसो^{१२} ! माहो^{१३} ।
सपक्वो^{१४} । पुक्कतो^{१५} ।

'नख' आदि धव्व ये हैं—नख, नकुप, नयुमक, नखान, नाक ।

२६. नगो वा प्पापि नि ३.७७—अप्राणी-वाचक होने में, विकल्प में 'नग' शब्द निपात होता है। जैसे—नगा रक्खा । अगा रक्खा । नगा पव्वता ।
अगा पव्वता । नग = अचल ।

३०. सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे ३.१०७—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'कु' शब्द का 'कद' आदेश हो जाता है। जैसे—कु अन्न—
कदन्नं । कु असनं—कदसनं ।

३१. काप्पत्थे ३.१०८—अल्प होने के अर्थ में, पूर्वपद 'कु' शब्द का 'का' आदेश होता है। जैसे—अप्पकं लवण—कालवर्णं ।

३२. पुरिसे वा ३.१०९—'पुरिस' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'कु' का विकल्प से 'का' आदेश होता है। जैसे—कापुरिसो, कुपुरिसो ।

३३. जने पुथस्सु ३.६१—'जन' शब्द यदि उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'पुथ' शब्द के अन्त्य स्वर का 'उ' हो जाता है। जैसे—अरियेहि पुथगेवायं जनो ति—पुथुज्जनो ।

३४. सो छस्साहायतने वा ३.६२—'अह' (=दिन) या 'आयतन' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'छ' शब्द का विकल्प में 'स' आदेश होता है। जैसे—

छन्नं अहानं समाहारो—साहं, छाहं । छन्नं आयतनानं समाहारो—सळा-

§ १७. संख्यादि ३.२१—आदि में संख्या-वाचक शब्द हो, तो समाहार-समास नपुंसक-लिंगान्त होता है। जैसे—

पञ्चत्रं गुन्न समाहारो—पञ्चगवं । ऋनुप्परथं ।

५. क्रियार्थ समास

§ १८. ची क्रियत्थे हि ३.१४—‘ची’ प्रत्ययान्त शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—सीलीनीकरिय ।

§ १९. भू स ना द रा ना द रे स्व लं सा सा ३.१५—भूपण के अर्थ में प्रयुक्त ‘अलं’ शब्द, आदर के अर्थ में प्रयुक्त ‘स’ शब्द, तथा अनादर के अर्थ में प्रयुक्त ‘अस’ शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। [देखिए—पृ० १५५] जैसे—
अलंकरिय । सक्कच्च । असक्कच्च ।

§ २०. अञ्जे च ३.१६—कुछ दूसरे भी शब्दों के साथ क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—

पुरोभूय । तिरोभूय । तिरोकरिय । उरसिकरिय । मनसिकरिय । मज्जेकरिय ।
तुण्हीभूय ।

§ २१. री रि क्ख के सु ३.८५—‘री’, ‘रिक्ख’ तथा ‘क’ प्रत्ययों के^{३७} आने से

यतनं, छ्छायतनं ।

३५. स मान स्स पक्खादि सु वा ३.८३—‘पक्ख’ आदि शब्द उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद ‘समान’ शब्द का विकल्प से ‘स’ आदेश होता है। जैसे—समानो पक्खो—सपक्खो, समानपक्खो । सजोति, समानजोति ।

३६. पुब्ब, अ पर, अ ज्ज, सा य म ज्जे हि अ ह स्स अ न्हो ३.११०—‘पुब्ब’ आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] यदि पूर्वपद हों, तो उत्तरपद ‘अह’ शब्द का ‘अन्ह’ आदेश होता है। जैसे—

पुब्बो अहो—पुब्बन्हो । अपरन्हो । अज्जन्हो । सायन्हो । मज्जेन्हो ।

३७. स मान ञ्ज भ व न्त या दि तु प मा ना दि सा क म्मे री रि क्ख का ५.४३—उपमा के अर्थ में ‘समान’ आदि शब्दों से परे, ‘दिस’ = (दिखाई देना) धातु से परे ‘री’, ‘रिक्ख’, तथा ‘क’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

'समान' शब्द का 'म' आदेश होता है। जैसे—समानो द्विव दिस्सति—सरर; सरिक्खो, सरिसो।

॥ २२. सव्वा दीन मा ३.८६—इन प्रत्ययों के आने में, 'मव्' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—यो द्विव दिस्सति—आदी, यादिक्खो, यादिसो (=जैमा)।

॥ २३. न्त कि मि मानं टा की टी ३.८७—इन प्रत्ययों के आने में, 'न्त', 'कि', तथा 'इम' का यथाक्रम 'आ', 'की', तथा 'ई' आदेश हो जाता है। जैसे—भवं विव दिस्सति—भवन्त + दिस + री = भवादी। भवादिक्खो। भवादिसो। कीदी, कीदिक्खो, कीदिसो। ईदी, ईदिक्खो, ईदिसो।

॥ २४. तुम्हा म्हा नं ता से क सिमं ३.८८—इन प्रत्ययों के आने में, एतद्वचन 'तुम्ह' तथा 'अम्ह' शब्दों का यथाक्रम 'ता' तथा 'मा' आदेश होता है। जैसे—तादी, तादिक्खो, तादिसो (=तुम जैमा)। मादी, मादिक्खो, मादिसो (=मूम जैमा)।

वद्वचन में—तुम्हादी, अम्हादी, इत्यादि।

॥ २५. वेत स्से ट् ३.९०—'री', 'रिक्ख', तथा 'क' प्रत्ययों के आने में, 'एत'

समानो विव दिस्सति—सदी, सदिक्खो, सदिसो। अज्जादी, अज्जादिक्खो, अज्जादिसो। भवादी, भवादिक्खो, भवादिसो। यादी, यादिक्खो, यादिसो। तादी, तादिक्खो, तादिसो।

३८. रानु वन्थे न्त सरा दि स्स ४.१३२—'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने में, शब्द के अन्त्य स्वर में ले कर जेप अवयव का लोप हो जाता है। जैसे—

कि + रति = क् + रति ('कि' शब्द के 'इ' का लोप)

क् + रति = कति। कि + रीव = कीव। कि + रीवतक = कीवतक। रि + रित्तक = कित्तक।

समानो विव दिस्सति—सदिस + री = सदी ('दिस' शब्द के 'इस्' का लोप)

समाना रो री रिक्ख के सु ५.१२५—'समान' शब्द में परे, 'दिस' का विकल्प से 'र' आदेश होता है। जैसे—

सदिस + री = सर + ई = सरी। सदी। सरिक्खो, सदिक्खो। सरिसो, सदिसो।

शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है । जैसे—एदी, एतादी । एदिक्खो, एता-
दिक्खो । एदिसो, एतादिसो ।

§ २६. सञ्जा य खु दो ढक स्स ३.७१—संज्ञा का अर्थ हो, तो पूर्वपद
'उदक', शब्द का 'उद' आदेश होता है । जैसे—

उदकं धाति इति अस्मि—उदधि^{३९} । उदक पीयते अस्मि इति—उद-
पानं^{४०} ।

६. द्रुन्द

§ २७. च त्थे ३.१६—अनेक स्याद्यन्त शब्दों का, 'और' के अर्थ में,
समास होता है । जैसे—

(क) समाहार^{४१}

इन में नित्य समाहार-समास होता है—प्राणी के अङ्गों में—चक्खु च सोतं
च—चक्खुसोतं । मुखनासिकं । हनुगीदं । छविमंसलोहितं । नसखपं । जरावरणं ।
बाजों के नाम में—मुरजं च गोमुखं च—मुरजगोमुखं । पटहाळम्बरं ।
मह्विकपाणविकं । शीतवादितं । सम्भसाळं ।

हल के अंगों में—थालवाचगं । द्युगनङ्गलं ।

सेना के अंगों में—असिसत्तितोभरं । अत्तिचम्मं । धनुकलापं । पहरणवरणं ।

नित्य-वैरियों में—अहिनकुलं । बिठारमूसिकं । काकोलूकं । नागसुपण्णं ।

संख्या तथा परिमाण में—एककडुकं । डुकतिकं । तिकचतुक्कं । चतुक्क-
पञ्चकं । दसेकादसकं ।

३९. दा धा हिइ ५.४५—भाव तथा कारक में, बहुधा 'दा' तथा 'धा' धातु
के अन्त्य स्वर का 'ड' होता है । जैसे—आदि, निधि, डालधि, उदधि ।

४०. अ नो ५.४८—भाव तथा कारक में, धातु से परे 'घन' का आगम
होता है । जैसे—उदपानं, अयादानं, इत्यादि ।

४१. समाहारे न पुंसकं ३.२०—समाहार-समास नपुंसक लिङ् होता है ।

क्षुद्र जन्तुओं में—कोटयटङ्गं । कुतश्चिपिलिकं । उन्मकसं । लक्षिक-
किशिलिकं ।

छोटी जातियों में—ओरदिभकमूकरिकं । साकुन्दिकसागविकं । नपाक-
अण्डालं । देनरथकारं । पुणकुसद्वृङ्गकं ।

चरणा-साधारण में—अतिसभारद्वाजं । कठकालापं । लीलपञ्जाणं । सम-
कपिपस्तनं । विज्जाचरणं ।

ग्रन्थों के नाम में—दीवमज्जिनं । एकुत्तरसंयुक्तं । खन्थकविभङ्गं ।

खिङ्ग विशेषों में—इत्थिपुमं । दासिदामं । सिपकहुसत्तयापलामं ।

विविध विन्दुओं में—कुसलाकुसलं । सारवज्जानवज्जं । हंसपपीतं । कण्ठ-
सुवकं । छेकपासकं । अथरुत्तरं ।

दिशाओं में—पुद्वापरं । दक्खिणुत्तरं । पुद्दवदक्खिणं । पुद्दुत्तरं । अयर-
दक्खिणं । अयरुत्तरं ।

नदी के नामों में—गङ्गायमुनं । महीसरञ्जं ।

(ख) समाहार—इतरंतर

इनमें समाहार-समास होता है, और इतरंतर भी—

तृण विशेषों में—कासकुसं, कासकुसा, । उसीरबीरणं, उसीरबीरणा । मुञ्ज-
वव्वजं, मुञ्जवव्वजा ।

वृक्ष विशेषों में—खदिरपलासं, खदिरपलाता । धदास्सकण्णं, धदास्सकण्णा ।
पिलश्खनिघोथं, पिलश्खनिघोथा । अस्सत्थकपित्थनं, अस्सत्थकपित्थता । साकसालं,
साकसाला ।

पशु विशेषों में—गजगवजं, गजगवजा । गोमहिसं, गोमहिता । एण्येयगोम-
हिसं, एण्येयगोमहिता । एण्येयवराहं, एण्येयवराहा । अजेळकं, अजेळका । कुक्कुर-
सूकरं, कुक्कुरसूकरा । हत्थिगवास्सवळवं, हत्थिगवास्सवळवा ।

पक्षी-विशेषों में—हंसवलाकं, हंसवलाका । कारणडवचक्कवाकं, कारणडवच-
क्कवाका । बकवलाकं, बकवलाका ।

धन वाचक शब्दों में—हिरञ्जसुवण्णं, हिरञ्जसुवण्णा । मणिसंखमुत्ता-
वेळुरियं, मणिसंखमुत्तावेळुरिया । जातरूपरजतं, जातरूपरजता ।

धान्य के नामों में—सालियवकं, सालियवका । तिलमुग्गमासं, तिलमुग्ग-
मासा । निष्फाञ्जकुलत्थं, निष्फाञ्जकुलत्था ।

व्यञ्जनों में—साकमुदं, साकमुवा । गव्यमाहिंसं, गव्यमाहिंसा । एण्येयवाराहं,
एण्येयवाराहा । सिगमायूरं, सिगमायूरा ।

जनपदों में—कासिकोसलं, कासिकोसला । वज्जिमल्लं, वज्जिमल्ला । चेत-
विसं, चेतविसा । मच्छसूरसेनं, मच्छसूरसेना । कुरुपञ्चालं, कुरुपञ्चाला ।

(ग) इतरेतर

इनमें इतरेतर-समास होता है—

चन्दिमो च सुरियो च—चन्दिमसुरियो । समणो च ब्राह्मणो च—समण-
ब्राह्मणा । मातापितरो^{१२} । पितापुत्ता^{१३} । जयम्पती^{१४} ।

४२. विज्जा यो नि स सम्बन्ध न मा त त्र च त्थे ३.६४—विद्या तथा योनि
के सम्बन्ध-वाचक लुप्रत्ययान्त तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ'
होता है, यदि उनका वैसे ही शब्दों के साथ द्वन्द्व समास हो । जैसे—

होता च पोता च—होतापोतारो । मातापितरो ।

४३. पुत्ते ३.६५—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक लुप्रत्ययान्त,
नथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उन का समास 'पुत्त'
शब्द के साथ हो । जैसे—पिता च पुत्तो च—पितापुत्ता । माता च पुत्तो च—
मातापुत्ता ।

४४. जा या य जयं प ति स्मिह् ३.७०—'पति' शब्द यदि उत्तर पद में हो,
तो पूर्व पद 'जाया' शब्द का 'जयं' आदेश हो जाता है । जैसे—जाया च पति
च—जयम्पती ।

३१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) यावजीवं, यथासत्ति, अन्तोपासादं वा, अन्तोत्तर वा, बहि-नगरं वा, पुरे-भक्त वा, पच्छा-भक्तं वा, कायगता-मनि उपट्टापेतव्वा । इद्विद्या तिरोबुद्ध वा तिरोपाकारं वा गन्तुं सक्कोति । अनुलोम पटिलोम मनसि-कानव्वं ।
- (ख) (अम्बपाली-गाथातो) (पुरे) कालका भमर-वण्ण-मदिसा वेल्लितगगा मम मुद्धजा (केसा) अहं । (इदति) ते जराय साणवास-सदिसा । पुष्प-पूर मम उत्तमङ्गं, न जराय ससलोम-गन्धिकं । कानन व मन्दिन मुरोपितं कोच्छ-सूचि-विचित्तग-सोभितं न जराय विरञ्ज तद्दि तद्दि । सण्ह-गन्धक-सुवण्ण-मण्डितं सोभने मु वेण्हि (वेणीहि) अण्डन, नं जराय खलनि सिर कत । वट्ट-पलिघ-सदिसोपमा उभो सोभने मु वाहापुरे मम, ता जराय यथा पातली दुव्वलिका । सण्ह-मुहिका-सुवण्ण-मण्डिता हत्था मम, ते जराय यथा मूल-मूलिका । तूल-पुण्ण-सदिसोपमा पादा मम जराय फुटिका वलीमता । पीन-वट्ट-पहितुग्गता थनका मम रिन्दी व लम्बत्ते' नोदका । एदिसो अहं अयं ममुस्सयो जज्जरो बहुदुक्खान आदयो । सो' पलेप-पतितो जरागतो, सच्चवादि-वचनं (बुद्ध-वचन) अनञ्जथा ति ॥ (अञ्जथा न होती ति अम्बपाली-गाथा ।) मुवुत्तवादी द्विपदान-मुत्तमो, महाभिसक्को नरदम्म-सारथि । चिन्नं चलं मक्कट-सच्चिभं । अवीत-रागेन सुदुन्निवारियं ति ॥

(ग) माला-गन्ध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूषण-पटिविरतो ह्येति ।

सत्ताहं चतुसच्चं तिलकखनेन भावेनव्व । विकाल-भोजना, अद्विद्या-दाना मुसा-वादा, पटिविरतेन भवितव्वं । दीपङ्कुरो भगवा सत-सहस्स-छळभिञ्ज-खीणासव-भिक्षूहि अञ्जसं (मगं) पटिपज्जि । दिट्ट-धम्म-सुख-विहारिनो च अपगत-भयभेरेवा च कत-करणीया च बुद्ध-पुत्ता विहरन्ति । चीवर-पिण्ड-पात-सेनासन-गिलान-पच्चय-भेसज्ज-परिक्खारा समुदानेतव्वा । वीसंसा-समाधि-पधान-संखार-समन्नागतं इद्वि-पादं भावेतव्वं । ओट्ट-पहत-मत्तेन लपित-लापन-मत्तेन तावतकेनेव ज्ञाणवादां थेरवादां न वत्तव्वं । भगवा हि उत्तरि-मनुस्स-धम्मा अल-

सरिद्र-जाग-वस्तन-चित्तेसं अज्जगमा । एकत्त-परिपुणं एकत्त-परिसुद्धं संख-
ल्लिखितं अन्धचरियं चरितुं अगारं अज्जावनता न सुकरं होति । राग-दोस-मोहा
पमाद-कारणा ते खीणासव-भिक्षुणो पहीना उच्छिन्न-भूला ताला-वत्थु-कता
अनभावकता आयति अनुप्पाद-थम्मा । सज्जा-वेदधित-निरोध-समापत्तिया बुट्ट-
हन्तस्स भिक्षुणो विवेक-निम्नं चित्तं होति विवेक-पोण विवेक-पव्वभारं ति ।
निव्वजाणोपथं हि ब्रह्म-चरियं (तथागतपपवेदित-थम्म-विनये) निव्वजाण-परायणं
निव्वजाण-परियोत्तानं ति ।

२ ऊपर के काले शब्दों का विश्लेषण कीजिए; और उनके समास बताइए ।

३. हिन्दी में अनुवाद कीजिए । काले छपे अंशों के लिए एक ही पद्य (समास)
का व्यवहार कीजिए—

उसके कपड़े लाल हैं । वह कमल नीला है । वह लम्बे कान वाला है ।
उसकी कर्तब बहुत बढ़ी है । वह हाथ से तलवार लिए है । वह सोने के गहने
पहने हुए है । इन जङ्गल में बड़े मतवाले हाथी है । यह काम बहुत दुरा है ।
इसके पत्ते गिर गये हैं । पानी भरर पड़ा यहाँ है । उसके पास दूध है । भोजन
कुछ कुछ गरम है । शक्ति के अनुसार काम करता है । वृक्ष पर बानर चढ़े है ।
लड़के पड़ा दिये गये हैं । बड़ी विचित्र गाये रखने वाला आदमी है । चश्मे की
अंर जाना है । ब्राह्मणों की सभा में गया था । उसका आदमी है । दो नाम
बाला गवादा आ गया है । एक दूसरे का जोड़ा मिल गया । वह मेरा सगा भाई
है । आप का नाम क्या है ? धुकती आग में थोडा घी डालिये । वह गुड़ से
भिन्ना हुआ चावल खाता है । इस दरख्त के फल पक गये हैं । वह अपने पित्त
के समान है । उसको कोई लड़का नहीं है ।

४. निम्नलिखित शब्दों का विश्लेषण कीजिए, तथा उनके नियमों का निर्देश
कीजिए—

जयम्पती । निगमायूरं । पिलकवनिपोध । कुक्कुरनूकरा । गज्जायमुनं ।
अथरत्तरं । इत्थिपुमं । एककटुकं । विट्ठारमूमिकं । मादिकखो । सरिक्खो । अल-
कारिय । सक्कच्च । पच्चगवं । अवकोकिलं । अपुनगेय्या । लोहित सालि ।
नदीसोतो । चिन्जं । यूपदारु । उरसो । दधिभोजनं । तन्तवायो । साग्गि ।

दिगुणं । चित्तगु । अपुत्तो । पयग्गो । अन्धिन्दीरा । जित्तिन्दिरो । वजिरपाणि । साव-
सग्ग । अथोगङ्ग ।

५. समास कीजिए—

अनु + रथ । पटि + सोत । बहूनि + शतानि + द्रव्यम् । तयोदस + परिमाण + देव ।
पितुना + सदिसो । नवरेहि + भयं । न + कुसल । निग्गतो + क्रान्तिव्या । परिभियता +
अजभेताय । कुञ्चितो + पुरिमो । पच्चन्न + गुह्य + समाहारो । कस्मा + जान । गान्ता + निग्गतो ।
चित्ता + गावो + अन्म । परि + पव्वत + वस्सि + देवो । दिन्न + भोजनं + यन्म + सो । नीक्क + उध्वत्त ।

छठा काण्ड

चौथा पाठ

समासान्त प्रत्यय

अ

§ १. समासन्त ३.४० : पापादी हि भूमिया ३.४१—'पाप' आदि शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उस से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पापा भूमि यस्मि ठाने—पापभूमि + अ = पापभूमं । जातिया उपलक्षिता भूमि यस्मि ठाने—जातिभूमि + अ = जातिभूमं ।

§ २. संख्या हि ३.४२—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे भूमियो अस्स भवनस्स—द्विभूमं । तिभूमं ।

§ ३. नदीगोदावरीनं ३.४३—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'नदी', तथा 'गोदावरी' शब्दों के साथ समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चन्नं नदीनं समाहारो—पञ्चनदं । सत्तन्नं गोदावरीनं समाहारो—सत्तगोदावरं ।

§ ४. असंख्ये हि चाङ्गुल्या नञ्जसंख्यत्थेसु ३.४४—यदि बहुव्रीहि या अव्ययीभाव समास न हो, तो अव्यय तथा संख्यावाचक शब्दों के साथ 'अङ्गुली' शब्द का समास होने से, उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

निगतं अङ्गुलीहि—निरङ्गुलं । अच्चङ्गुलं । द्वे अङ्गुलियो समाहारो—द्वङ्गुलं ।

§ ५. दीघा हो वस्ते क दे से हि च रत्या ३.४५—संख्यावाचक शब्द, तथा 'दीघ', 'अहो', 'वस्स', 'एक', और 'दिम' के साथ 'रत्ति' का समास होने से,

उमसे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

दीघा च सा रत्ति चाति—दीघरत्तं। अहो च रनि चाति—अहोरत्तं।
वस्सामु रत्ति—वस्सरत्तं। पुड्वा च मा रनि चाति—पुड्वरत्तं। अपररत्तं।
अड्डा च सा रत्ति चाति—अड्डरत्तं। अनिकन्तो रति—अतिरत्तो। द्वे रनी
समाहारा—द्विरत्तं। एकरत्तं, एकरत्ति।

§ ६. गो त्व च त्थे चा लो पे ३.४६—यदि द्वन्द, बहुव्रीहि, या अव्ययीभाव
न हो, तो समास होने पर 'गो' शब्द में परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

रञ्जो गो—राजगवो। परमो गो—परमगवो। पञ्च गावो धन अस्स—
पञ्चगवधनो। दसन्न गुत्त समाहारो—दसगवं।

§ ७. र त्ति न्दि व दा र ग व च तु र स्सा ३.४७—निम्ननिमित्त समागान्न
निपात है—

रत्तो च दिवा च—रत्तिन्दिवं। रत्ति च दिवा च रत्तिन्दिवं। दारा च गावो
च—दारगवं। चतस्सो अस्सियो अस्स—चतुरस्सो। 'अनुगवं सकटं=वैन के
बराबर ही लम्बी गाड़ी।

§ ८. अ क्खि स्मा ञ्ज त्थे ३.४९—बहुव्रीहि समास में, 'अक्खि' शब्द में
परे, 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

विसालानि अक्खीनि यस्स सो—विसालक्खो।

§ ९. दा र्ह्ण्डु गु ल्या ३.५०—बहुव्रीहि समास में, 'दारु' समझे जाने
पर, अङ्गुली शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे अङ्गुलियो अवयवा अस्स—द्वङ्गुलं दारु—पुञ्जाल तृण आदि बटोरने के
लिए दो अङ्गुलियो वाली बनी लकड़ी। पञ्चङ्गुलं दारु।

§ १०. चि वी ति हा रे ३.५१—क्रिया का व्यतिहार (=अदला का बदला)
समझा जाय, तो बहुव्रीहि समास में 'चि' प्रत्यय होता है। 'चि' का 'इ' रह जाता
है। जैसे—

केसाकेसी=भोंटाभोंटी। दण्डादण्डी=लाठालाठी।

१ आयामे नुगवं ३.४८—निपात।

२. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं ३.१८—'उमें पकड़ कर, उससे

क

ॐ ११. लित्त्वि स्थि यु हि को ३.५३—बहुवीहि ममास में, 'लु' प्रत्ययान्त, तथा स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त-ऊकारान्त वाक्यों में परे बहुधा 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—
 बहवो कत्तारो एनम्स—बहुकत्तुको । बहू कुमारियो एतस्मि गामे—बहु-
 कुमारिको गामो । बहू ब्रह्मबन्धू एतस्मि गामे—बहुब्रह्मबन्धुको गामो ।

ॐ १२. दा ञ्ज तो ३.५३—और भी स्थानों में विकल्प से 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—
 बहुमालको, बहुमालो ।

मार मार कर, जैसे युद्ध करता है'—इस अर्थ में समास होता है। जैसे—

केसेमु च केसेमु च गहेत्वा युद्धम्पवत्तं—केसाकेसी । दण्डेहि च दण्डेहि च
 पहरित्वा युद्धम्पवत्त—दण्डादण्डी । मुट्टामुट्ठी ।

चिस्मि ३.६६—'चि' प्रत्यय आने से, उत्तर पद से पहले 'आ' का आगम होता है। जैसे—दण्डादण्डी । मुट्टामुट्ठी ।

पुष्पादि-वृत्ति

(उणादि)

मोग्गल्लान 'ण्वादि'-वृत्ति

णु

१. चर, वर, कर, रह, जर, लर, लल; कार भाव, कल; अर, अरु, अरु, वाहि णु—इस धातुओं में पने, बहुधा 'णु' प्रत्यय होता है। 'णु' का 'उ' रह जाता है।

'अस्सा णानुञ्ज्' ५.८८—इस सूत्र में, धातु के उपरान्त 'अ' का 'आ' हो जाना है। जैसे—

चरति हृदये मनुञ्जभावेनाति—चर—णु=चार=चुन्दर । दरीद्रीति—
वारु=लकड़ी । करोति इति—कारु=मिर्ची, इन्द्र, विष्वक्कर्मा । रहति, चन्दादीनिं
सोभाविसेसं नासेतीति—राहु=अनुरेन्द्र । जायति गनतागमन अनेनाति—
जाणु=घुटना । सतेति, अत्तनि भित्त उप्पावेनीति—सानु=जो अपने से भक्ति
उत्पन्न करावे—गहाड़ की चोटी । तलन्ति, पनिट्टहन्ति एत्थ दन्तानि—ताणु ।
मादीयति अस्मादीयतीति—साहु=मधुर । माधेति अन्नपरिहित इति—साधु=
नञ्जन । कनीयतीति—कामु=गढ़ा । अमति, मीधभावेन पवनतीति—आरु=
वीध । चटति, भिन्दति अमुञ्जभावन्ति—चाटु=खुसामद । अयन्ति, पवत्तन्ति
सत्ता एतेनानि—आसु=प्राण ।

'आ स्सा णा पि म्हि युक्' ५.९१—इस सूत्र में, 'आकारान्त' धातु में पने,
'य' का आगम होता है। जैसे—

वाति गच्छति इति—वायु=हवा ।

२. अ, र म र, चर, तर, अर, गर, घर, हण, तन, मन, भ म, कित,
ध न, व ह, क म्ब, अ म्ब, इ क्ख, अ क्ख, नि ष्ख, सं क, इ न्द, अ न्द, यज, पट,

अ ण, अ ल, व ल, प ल, पं स, वन्धा उ—इन धातुओं से परे 'उ' प्रत्यय होता है। जैसे—

अग्नीति—अरु=पति । मरति रूपकायेन सहैवाति—अरु=देव, निर्जल देश । चरीयति. भक्खीयतीति—अरु=हृदयपाक । तरन्ति अनेनाति—अरु=वृक्ष । अरति, सूत-भावेन उद्ग गच्छतीति—अरु=द्रव्य । गग्नि, सिञ्चति, गिरति, वमति वा सिम्सेमु चिनेहन्ति—अरु, या गुत् । हनति, ओदनादिसु वण्णविसेस नासेतीति—हनु=दुर्द्धी । तनोति ससारदुक्खन्ति—तनु=शरीर । मञ्जति सत्तान रिताहित इति—मनु=प्रज्ञापति । भमति, चलतीति—भमु=भौ । केतति, उद्ग गच्छति, उपरि निवमतीति—केतु=ध्वजा । धनति, सह करोतीति—धनु=चाप । वंह इति निहेसा उम्ह निच्च निग्गहीन लोपो—वंहति, बुद्धि गच्छन्तीति बहु=अधिक । कम्बति, सवरण करोतीति—कम्बु=दाडू । अम्बति, अभिन्नाह करोतीति—अम्बु=जल । चवद्धति रूपन्ति—अम्बु=आँस । भिक्खतीति धिसडु=अन्नण । सद्धीयतीति—सद्धु=मूल । इन्दति, नक्खत्तान परमिन्मरिय पवनेतीति—इन्दु=बाँद । अन्दति, वन्धति सत्ता एतायाति—अन्दु=जर्जर । यदन्ति अनेनाति—अदु=वेद । पटति, व्यत्तभाव गच्छतीति—पटु=विचक्षण । अणति, सुखुमभावेन पवत्ततीति—अणु=सूक्ष्म, धान्य विशेष । असन्ति, पवत्तन्ति नन्ना एनेहि—असवो=प्राण । मुख वसन्ति अनेनाति—असु=धन । पसीयति, वाधीयति सामिकेहीति—असु=चतुष्पाद । पंसति, सोभाविसेसं नासेतीति—पंसु=धूल । वन्धीयति सिनेहभावेनाति—अन्धु=वान्धव ।

ऊ

३. वन्धा ऊ व धो च—'वन्ध' धातु से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है; और 'वन्ध' का 'वध' आदेश हो जाता है। जैसे—पञ्चहि कामगुणेहि अत्तति सत्ते वन्धतीति—अधु=बहू ।

४. जम्बा इ यो—'जम्बू' आदि 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।

निपातनं—अप्पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पटिसेधो च । जनिस्मा ऊ वुच्चागमो । 'मनानं निग्गहीत' ५.६६—इन सूत्र से 'जन' धातु के

'न' का निग्राहीन हो गया । फिर, 'दग्ने वगन्तो' १.८१—इस सूत्र से निग्राहीन का 'म' हो गया । जैसे—

जायति, जनीयतीति वा—जत—ऊ=जन्तु=वृक्ष ।

'भन' धातु के 'भ्रम' का लोप हो जाता है । जैसे—भसति कम्पति—भू
या भसु ।

करोतिस्मा ऊ । तस्म 'कन्धु' चागमो । 'पन्थप-नयकारे व्यञ्जते ५.९५—
इति धात्वन्तस्त व्यञ्जनम् परह्यन्त । त्धिन्प्याद् करोतीति—कृकन्धु=ईर
का फल ।

प्रायश्चरति, अथनसतीति—अत्तद्भू=तुल्य ।

सर=गतिहिनाचिन्तानु । स्रति गच्छतीति—भ्रभू=गता नदी का ताम ।
जगति, पाणे हिंसतीति—तद्भू=शुद्ध जन्तु दिनेम ।

चस=प्रदत्ते । चसति, भक्षति तिदापयति—चसू=मेना ।

तन=द्विषणो । तनोति मस,रहु=इन्ति—तसू=गरीर इत्यादि ।

कु

५. तपुसबीधकु रपुथसुदाकु—इन धातुओं से परे 'कु' प्रत्यय होता
है । 'कु' का 'उ' रह जाता है । जैसे—

तापीयतीति—तिपु=सीसा । उसति, दाहं करोतीति—उमु=वाण ।
वेधति रंसीहि तिमिरन्ति—विधु=चन्द्र । कुरति, किच्चाकिच्चं वदतीति—
कुरु=राजा । कुरवो=जनपदा । पुथति, महन्तभावेन पत्थरतीति—पुथु=विस्तार ।
मोदनं, मुदीयतीति वा—मुदु=नरम ।

६. सिन्धा दयो—'सिन्धु' आदि 'कु' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

सन्दति, पस्सवतीति—सिन्धु=नदी । वहन्ति अनेनानि—बाहु । वथति,
उपद्ब्वे तिवारेतीति—बाहु=भुजा । रंथति, पयत्ति राजधम्मेति—रथु=
राजा । विन्दन्ति, अनेन नन्दन्तीति—विन्दु=कणिका । मञ्चति, जायति मधुर
न्ति—मधुः अथवा, मधुकरीहि कत—मधु । रपति, जप्पति मन्तन्ति—रिपु=
शत्रु । ससति, जीवतीति—सुसु=शिशु । अरति, महन्तं भाव गच्छति इति—
उरु=बड़ा । अरन्ति अनेनानि—ऊरु=जाँघ । आग्वञ्चतीति—आखु=चूहा ।

तरतीति—थरु=तलवार की मूठ । लङ्घति, पवत्तति लघुभावेनाति—लघु=हलका । भञ्जति विसेसेनाति—पभङ्गु=अङ्कुर । ठाति, पवत्तति सुन्दरभावेनाति—सुट्ठु=अच्छा । ठाति, पवत्तति अमुन्दरभावेनाति—डुट्ठु=बुरा इत्यादि ।

इ

७. इ—धातु में परे बहुधा 'इ' प्रत्यय होता है । जैसे—

असति, विधीयतीति—असि=तलवार । कसीयतीति—कसि=कृपि । आननीयतीति—मसि=राख । कु=सद्दे; ओस्स अवादेशो; कव्यति, कथेतीति—कवि । रवति, गज्जतीति—रदि=सूर्य । सप्पति, पवत्ततीति—सप्पि=घी । गन्धेतीति—गण्ठि=गाँठ । राजति, पवत्ततीति—राज्जि=पंक्ति । कलीयति, परिमायतीति—कलि=शप । बलन्ति, जीवन्ति अनेनाति—अलि=कर । धनति नदतीति—धनि=शब्द । अर्चन्ति, पूजियतीति—अर्च्चि=ज्वाला । बलन नङ्कोचनं—अलि=सिकुडन । बल्लोयन्ति संवरीयन्ति सत्ता एतायाति—बल्लि=लता इत्यादि ।

८. इ ध्या इ येः—'दधि' आदि 'इ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

धननादधतीति—दधि=दही । अहति, गच्छतीति—अहि=साँप । कम्पति, चलतीति—कवि=वानर । मनति जानतीति मुनि=श्रमण । मनति, महग्घभाव गच्छतीति—मणि=रत्न । इक्वति अनेनाति—अक्खि=आँख ('इक्ख' के 'इ' का 'अ' हो गया) । कमति, यातीति—किमि=कीड़ा ('कम' का 'किम' हो गया) । तुरितो तरति यातीति—तित्तिरि=पक्षी । कीळनं—कैळि=कीड़ा । उम्मति, दहतीति—उब्बल्लि=भाजन इत्यादि ।

कि

९. शु व ष्णु पन्ता कि—जिन धातुओं के उपान्त में 'इ' या 'उ' रहे, उनमें परे बहुधा 'कि' प्रत्यय होता है । 'कि' का 'इ' रहता है । जैसे—

नाल इच्छतीति—इसि=नपस्वी । गिरति, पसवति छविमंससारभूतं भेसज्जा-

दीनि—गिरि—पहाड़ । सूचेति सुन्दरन्ति—सुचि—पवित्र । रुचन्ति एतायाति रुचि—अभिलाषा इत्यादि ।

१०. व ष, व र, व स, र स, न भ, ह र, ह न, प ण, इ ण्—इन धातुओं में परे 'इण्' प्रत्यय होता है । जैसे—

वपन्ति एतायाति—वापि—जलाशय । वारेन्ति एतेनाति—वारि—जल । वमन्ति एतायाति—वासि—वसुला । रमीयन्ति, अस्मादनवनेन रमोन्तीत्यतीति—रसि—समूह । नमन्ति, हिंसतीति—नाभि । हारेतीति—हारि—मन्त्रोद । हन्ति एतेनाति—धाति—हथियार । पणन्ति, वोचन्तीति—वापि—प्राणी । पयन्ति, वोहरन्ति एतेनाति वा—प्राणि—हाथ ।

ईण

११. भू ग मा ई ण्—'भू' तथा 'गम' धातुओं से परे, भविष्यत्काल में, 'ईण' प्रत्यय होता है । जैसे—भविस्सतीति—भावी—होने वाला । गमिस्सतीति—गामी—जाने वाला ।

ई

१२. त न्व ल क्खा ई—इन धातुओं से परे, 'ई' प्रत्यय होता है । जैसे—तन्दन्—तन्दी—आलस्य । लक्खीयन्ति सत्ता एतायाति—लक्खी—श्री ।

रो

१३. ग मा रो—'गम' धातु से परे, 'रो' प्रत्यय होता है । 'रो' का 'ओ' रह जाता है ।

रानुवन्धेन्तसरादिस्स ४.१३२—इस सूत्र से 'गम' के 'अम' का लोप हो गया । जैसे—

गच्छतीति—गो—पशु ।

क

१४. इ भी का कर अ र व क स क वा हि को—इन धातुओं से परे, 'क' प्रत्यय होता है । जैसे—

एति पवत्ततीति—एको—असहाय । भायन्ति अस्मा इति—भेको—मेढक । कानि, सद्ं करोतीति—काको—कौआ । करोति वण्णन्ति—कवको—एक तरह का रंग । अरति, यातीति—अक्को—सूरज । वकति, ओदनमाददातीति—वक्कं—वेदकोट्टासविसेनों । सक्कोतीनि—सक्को—इन्द्र । वाति, वन्धति एतेनाति वक्को—वल्कल ।

१५. ऊ का द थो—‘ऊका’ आदि, ‘क’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे— ऊहीयति विचिनीयतीति—ऊका=जू । उन्दति, द्रव करोतीति—उदकं=जल । भायन्ति एतस्माति—भीको=भीर । सक्कोति धारेतुन्ति—सिक्का=सिकहर । हीयति साधूहि—हाको=क्रोध । सम्भवति, उदकं मण्डेतीति—सम्दुको=जलजल्लु विशेष । पुथति, पत्थरति अत्तनो वानभाव—पुथुको=मूर्ख । सोचन्ति एतेनाति—सुदकं=उजला । उपचिन्ततीति—उपचिका=दीयक । कम्पति, चलनीनि—पङ्को=कीचड़ (‘कम्प’ का ‘प’ आदेश) । उप्पनीति—उप्पका=ज्वाला । उप्पति, दहतीति—उप्पुक्कं=अलान । वसीयतीति—वस्मिको=दीयड । न्नीयति पेमेनाति—सत्थक्कं=दिर (‘स’ का ‘त्थ’ होता है) ।

आनक

१६. भी त्वा न को—‘भी’ धातु से परे ‘आनक’ प्रत्यय होता है । जैसे— भायन्ति एतस्मा ति—भयानको ।

आणिक, आटक

१७. सिङ्घा अ णि का ट का—‘सिघ’ धातु से परे ‘आणिक’ तथा ‘आटक’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सिङ्घायति पस्सवतीति—सिङ्घाणिका=नाक का पोटा । सिङ्घति एकी-भावं यातीनि—सिङ्घाटकं=चौगहा ।

अक

१८. क रा दि त्व को—‘कर’ आदि धातुओं से परे, ‘अक’ प्रत्यय होता है । जैसे—

करीयतीति—करको =कमण्डलु । करोतीति—करको =वस्त्रोपको । नरति उदकमेत्थाति—हरको =जल पीने का भाजन । नरन्ति पापुणन्ति सत्ता एत्थाति—नरको । तरन्ति अनेनाति—तरको =तरण । वारेतीति—वरको =वरण करना, धान्यविशेष । जनेतीति—जनको =पिता । कनति दिव्वनीति—कनकं =मोना । कटति, महति निवारैति रिपवोति—कटकं =नगर । कुरतीति कोरको =कली । धवीयतीति—धवको =गुच्छा ।

१९. ब ल प ते ह्या को—'बल' तथा 'पत' धातु से परे 'ग्रक' प्रत्यय होता है । जैसे—

बलति जीवतीति—बलाका =पक्षी-विशेष । पतति, यातीति—पताका :

२०. सा ना का द यो—'सामाक' आदि, 'आक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

साति, देहं तनुं करोतीति—सामाको =दृण धान्य । पिबति रत्तन्ति—पिनाको =शिव का धनुष । गवति, नदति एतेनाति—गुवाको =सुपारी । पटति, यातीति पटाका =पताका । सलति, यातीति—सलाका =शलाका, बैद्यों के चीर-फाड़ के लिए । विदति, जानातीति—विदाको =विद्वान् । पर्जायति, वोहरीयतीति—पिञ्जाको =तिलका पीना, खरी ।

किक

२१. वि च्छा ल ग म सु सा कि को—'विच्छ', 'अल', 'गम', तथा 'सुस' धातुओं से परे 'किक' प्रत्यय होता है । जैसे—विच्छति, यातीति—विच्छिको =विच्छू । अलति, बन्धति एतेनाति—अलिकं =असत्य । गच्छतीति—गच्छिको =जाने वाला । मुसति, धेनेतीति—सूसिको =चूहा ।

२२. कि क णि का द यो—'किकणिका' आदि 'किक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

कणति, सहं करोतीति—किकणिका =छोटी घण्टियाँ । मुदन्ति एतायाति—मुडिका =अंगूठी, फल विशेष । महीयति पूजियतीति—महिका =हिम । कनीयति, परिमीयतीति—कलिका =कली । सप्पति, गच्छतीति—सिप्पिका =सीपी इत्यादि ।

कीक

२३. इ सा की को—'इस' धातु से परे 'कीक' प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छीयतीति—इसीका = सीक ।

णुक

२४. क म प दा णु को—'कम', तथा 'पद' धातुओं से परे, 'णुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कामेतीति—कामुको = कामी । पञ्जति, याति एतायाति—पादुका = खड़ाऊँ ।

णूक

२५. म षड स ला णू को—'मण्ड', तथा 'सल' धातुओं से परे, 'णूक' प्रत्यय होता है। जैसे—

मण्डेति, जलं भूसेतीति—मण्डूको = मेढक । सलति, गोचरत्तं उपयातीति—
सालूकं = उत्पलकन्द ।

२६. उ लू का द यो—'उलूक' आदि 'णुक' प्रत्ययान्त शब्द निपात है।
जैसे—

उलति, गवेसतीति—उलूको = उल्लू । मञ्जतीति—मधुको = वृक्ष ('मन' के 'न' का 'ध' हो गया) । जलतीति—जलूका = जोंक इत्यादि ।

सक

२७. क सा स को—'कस' धातु से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—
कस्सतीति—कस्सको = कृषक ।

तिक

२८. क रा ति को—'करोति' से परे, 'तिक' प्रत्यय होता है। जैसे—
करोन्नि कीळं एत्थाति—कत्तिका = कार्तिक ।

ठकण्

२६. इ सा ठ क ण्—‘इम’ धातु से परे, ‘ठकण्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छीयतीति—इट्टुका = ईट ।

ख

३०. स मा खो—‘सम’ धातु से परे, ‘ख’ प्रत्यय होता है। जैसे—
उपसमेतीति—सङ्खो = सङ्ख ।

३१. मु खा द यो—‘मुख’ आदि, ‘ख’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—
मुनन्ति, बन्धन्ति एतेनाति—मुखं ।

सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयो वानि—सिखा = चूड़ा। विसन्ति एत्थ, पवि-
सन्ति वाति—विसिखा = गली। कनति, दिप्पतीति—निक्खो । नृत्रयन्निगारो ।
मयति यातीति—मयूखो = किरण। लुनाति, छिन्दति सोभन्ति—लूखो = रुखा।
अरन्ति, यन्ति एतेनाति—अक्खो = अक्ष, पासां। यसति, पयतति वलिमाहरणत्था-
याति—यक्खो = यक्ष। रुहति, जनेतीति—रूक्खो = वृक्ष। उसति, दहति कायमिग-
नाति—उक्खो = बैल। सहति, अत्तति कतापराधं खमतीति—सखो = मित्र
इत्यादि।

गक्

३२. अज वज मुद गद ग मा गक्—इन धातुओं से परे, ‘गक्’ प्रत्यय
होता है। जैसे—

अजति, गच्छति सेट्टुभावन्ति—अग्गो = अगुआ। वजति, समूहत्तं गच्छतीति—
वग्गो = समूह। मुदन्ति एतेनाति—मुग्गो = मूँग। गदतीति—गग्गो = एक
ऋषि। गच्छतीति—गङ्गा (‘मनानं निग्गहीतं ५.६६—इस मूत्र से ‘गम’ धातु के
‘म’ का अनुस्वार हो गया)।

३३. सि ङ्गा द यो—‘सिङ्ग’ आदि, ‘गक्’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है।
जैसे—

सयति, पवत्तति मत्थके ति—सिङ्गं = सींग (‘सी’ धातु का ह्रस्व हो गया;
और निग्गहीत का आगम हुआ)। फुरति, चलतीति—फुलिङ्गो = चिनगारी।

उच्चलति, कम्पतीति—उच्चालिङ्गो—एक उजला कीड़ा । कलति, नादं करोति
 बहुराजिकायाति—कलिङ्गो—दक्षिणापथो । भमतीति—भिङ्गो—भौरा । पत-
 न्तो गच्छतीति—पटङ्गो, पटगो—फतिगा ।

गि

३४. अ ग गि—अग—कुटिल गमने । इस धातु से परे, 'गि' प्रत्यय होता
 है । जैसे—

अगति, कुटिलो हृत्वा गच्छतीति—अग्गि—आग ।

गु

३५. या व ला गु—'या' तथा 'वल' धातुओं से परे, 'गु' प्रत्यय होता है । जैसे—
 या—पानुपाने । यातीनि—दग्गु—यवागु । वलीयति, सवरीयतीति—
 वग्गु—ननोगि ।

३६. फे र्णा द यो—'फेग्गु' आदि, 'गु' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—
 फलति, निट्टान गच्छतीति—फेग्गु—सारहीन । भरतीति—अग्गु—भृगु
 ऋषि । हिजोति, पवत्ततीति—हिङ्गु—हीग । कमीयतीति—कङ्गु—धान्य-
 विशेष इत्यादि ।

घ

३७. ज ना घो—'जन' धातु से परे, 'घ' प्रत्यय होता है । जैसे—
 जायति गमनमेतायाति—जङ्घा ('जन' धातु के 'न' का निग्नहीत हो गया—
 मनानं निग्नहीतं ५.१६) ।

३८. से षा द यो—'सेघ' आदि, 'घ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
 सेहति, सिञ्चतीति—सेघो (मिह—सेचने । 'ह' लोपो) । मुय्हन्ति सत्ता
 एत्थानि—सेघो—तुच्छ । सेति, लहु हृत्वा पवत्ततीति—सीघं—शीघ्र । निवह-
 तीति—निदाघो—ग्रीष्म । महीयति, पूजियतीति—सघा—एक नक्षत्र इत्यादि ।

च

३९. चु - स र - व रा जो—इन धातुओं से परे, 'च' प्रत्यय होता है । जैसे—

चवति हकवति—चोचं=उपभुक्तफलविसेषो । सरति. आयति हुक्च
हिंसतीति—सच्चं=सत्य । वारेति सुखन्ति—वच्चं=पादना ।

चु, ईचि

४०. मरा चु ईचि च—‘मर’ धातु से परे, ‘चु’ तथा ‘ईचि’ प्रत्यय होते हैं, और ‘च’ प्रत्यय भी । जैसे—

मरणं—मच्चु=मौत । मारेति, अन्धकार विनामेतीति—मरीचि=किण्व,
मृगतृष्णा । मरतीति—मच्चो=प्राणी ।

छिक्

४१. कु स - प सा छिक्—इन धातुओं से परे, ‘छिक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—

कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कुच्छि=पेट । पमीयति, वाधीयति एत्थानि—
पच्छि=खाँची, डाली ।

छुक्

४२. क स - उ सा छुक्—इन धातुओं से परे, ‘छुक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—
कसन्ति, विलेखन्ति एत्थाति—कच्छु=खुजली ।

छो

४३. अ स - म स - व द - कु च - क चा छो—इन धातुओं से परे ‘छो’ प्रत्यय होता है । जैसे—

असति, खिपतीति—अच्छो=भालू । आनसति जलन्ति—मच्छो=मछली ।
वदतीति—दच्छो=वत्स । कुचीयति, संकोचीयतीति—कोच्छो=पीड़ा । कर्ची-
यति, बन्धीयतीति—कच्छो=तराई ।

४४. गु च्छा द यो—‘गुच्छ’ आदि ‘छ’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
गोपीयतीति—गुच्छो=गुच्छा । तुसन्ति अनेनाति—तुच्छं=मिथ्या ।
पोसन्ति तनुमनेनाति—पुच्छो=पूँछ इत्यादि ।

उट्, जु

४५. अ रा - जु उट् च—‘अर’ धातु से परे, ‘जु’ प्रत्यय, होता है। ‘अर’ का ‘उ’ आदेश होता है। जैसे—अरति, अकुटिलभावेन पवत्ततीति—उजु=सीधा।
 ४६. र ज्जा इ यो—‘रज्जु’ आदि ‘जु’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
 रुन्धन्ति एतेनाति—रज्जु=रस्सी (‘रुध’ धातु का ‘रध’ हो गया)। अम-
 ङ्ग्रित्थानि—मज्जु=मज्जुल इत्यादि।

भक्

४७. गि धा भक्—गिध=अभिकड्खाय। इस धातु से परे, ‘भक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
 गेधतीति—गिज्भो=गीध।
 ४८. व ङ्भा इ यो—‘वञ्भ’ आदि ‘भक्’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
 जैसे—
 वन=याचने। वनोति, अत्तानं अनुभवितु याचतीति—वञ्भो=फलहीन वृक्ष। वञ्भा=वाँभ स्त्री। ‘वन’ का ‘विन’ आदेश हो जाने से—विञ्भो=पर्वत। सञ्जयतीति—सज्भं=रजत इत्यादि।

ज

४९. क म - य जा जो—इन धातुओं से परे, ‘ज’ प्रत्यय होता है। जैसे—
 कमीयतीति—कज्जा=कुमारी (‘कम’ धातु के ‘म’ का निगृहीत हो गया)।
 यजन्ति अनेनाति—यज्जो=यज्ञ।
 ५०. पु णा जं—‘पु’ धातु से परे, विकल्प से ‘ज’ प्रत्यय होता है। जैसे—
 पुणाति, मुन्दरत्तं करोतीति—पुज्जं=कुशल कर्म।
 ५१. अ र - हा जो हा स्स हि र ङ् च—‘अर’ तथा ‘हा’ धातु से परे, ‘ज’ प्रत्यय होता है। ‘हा’ का ‘हिरङ्’ आदेश हो जाता है। जैसे—
 अरीयते, गम्यतेति—अरञ्जं=वन। जहाति सत्तानं हीनत्तन्ति—हिरञ्जं=धन, मोना।

कीट

५२. किर-तरा कीटो—इन धातुओं से परे, 'कीट' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

सोभेतुमेत्थ रतनानि विकिरीयन्तीति—किरीटं=मकुट । तरन्ति, यन्ति
सुरूपत्तमनेनाति—तिरीटं=पगड़ी ।

अट

५३. लकाही ह्रस्वो—'सक' आदि धातुओं से परे, 'अट' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

सक्कोति भारं वहितुन्ति—सकटो=गाड़ी । अकसि, निरोज्ज्ज अगर्माति—
कसटं=वृत्रा, अप्रिय । करोति अमनायन्ति—करटो=कौआ । मक्कति चग-
तीति—मक्कटो=वानर । देवीयति पूजयतीति—देवटो=ऋषि । कर्मति,
इच्छति आरोहन्ति—कमटो=बौना ।

५४. म कु ट - आ वा ट - क वा ट - कु ष्कु ट्वा—ये धव्द निपात है । जैसे—
मङ्क्रेति, सोभेतीति—मकुटं=मकुट । अव्यते, खञ्जते 'ति—आदाटो=
गढ़ा । क्वति, रवतीति—कवाटं=किवाड । कुकति, गोचरमाददातीति—
कुक्कुटो=मुर्गा ।

ठ

५५. क म - उ स - कु स - क सा ठो—इन धातुओं से परे, 'ठ' प्रत्यय होता
है । जैसे—

ओदनादीनि कामेतीति—कण्ठो=गला । ओदनादीसु उण्हेन उनीयतीति—
ओट्ठो=ओठ, ऊँट । कुसीयति, अक्कोसीयति—कोट्ठो=आन की कोठी ।
कसति, याति विनासन्ति—कट्ठं=लकड़ी ।

५६. कु ट्वा ङ यो—'कुट्ठ' आदि 'ठ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—
कुच्छीयतीति—कुट्ठं=कुपट । कुणति, नदतीति—कुण्ठो=अत्यन्त क्षीण ।
अक्कोमीयतीति—कुण्ठो=जिसका हाथ पैर कटा हो । दंसति एनायानि—

णि

६१. वी आदि तो णि—'वी' आदि धातु से परे, 'णि' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीयतीति—वेणि=जूरा । नेवल—सेणि=समान शिल्पियों का समूह ।
निसेवीयतीति—निसेणि=निसेनी । सपति, पस्सवतीति—सेणि=दूतड़ । इत्थि,
वहतीति—वेणि=नाव । कीयतेति—केणि=कथ । इत्यादि

अणि

६२. ग हा वी ह्राण—'गह' आदि धातुओं से परे, 'अणि' प्रत्यय होता है । जैसे—

गण्हातीति—गहणि=जठराग्नि । अरीयति, असी प्रतीति—अरणि=अग्नि-
मन्थन की लकड़ी । धारेतीति—धरणि=पूर्वा । मरीयति, अर्जत्तीति—
सरणि=मार्ग । तरन्ति अनेनानि—तरणि=मसुद्र, मूर्ध ।

णु

६३. री - वी - हा हि णु—इन धातुओं से परे, 'णु' प्रत्यय होता है । जैसे—
रीयति पस्सवतीति—रेणु=रज । वेति, पवत्ततीति—वेणु=वास । भानि,
दिप्पतीति—भाणु=किरण ।

६४. खा ण्वा द यो—'खाणु' आदि 'णु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
खञ्जति, अवदारीयतीति—खाणु=ठूँट । जायति गमनमनेनानि—जाणु,
जण्णु=घुटना । हरीयतीति—हरेणु=गन्ध-द्रव्य इत्यादि ।

ण

६५. क्खा दि तो णो—'कु' आदि शब्दों से परे, 'ण' प्रत्यय होता है । जैसे—
कवति, नदति एत्थाति—कोणो=पास, अंश, वीणा आदि का दण्ड ।
मुणोतीति—सोणो=कुता, मनुष्य ।

दवति, पवत्ततीति—दोणो=एक परिमाण । विरूपत्त वारेतीति—वण्णो=
रंग । सवनं करोतीति—कण्णो=कान । पणीयति, वोहरीयतीति—पण्णो=

पत्ता । तायतीति—क्षणं—रक्षा । निलीयन्ति एत्थाति—त्वेणं—गुफा, छिपने का स्थान ।

णक्

६६. सु वी हि णक्—‘सु’ तथा ‘वी’ धातु से परे, ‘णक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—

मुणोनीति—मुणो—कुत्ता । वीयतीति—वीणा ।

६७. ति णा द घो—‘तिण’ आदि, ‘ण’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—
निज्ज—नियाने । ज लोपो । तेजेति एतेनाति—तिणं—तृण । लीयति, रसतो मव्वत्थ अल्लीयतीति—त्तोणं—निमक । लेहीयतीति—लोणं । गच्छतीति—णोणो—वैल । हरियतीति—हरिणो—मृग । अत्तनो लूखभावे सम्पत्ते ईरति कल्पनीति—इरिणं—ऊसर । अभित्थवायतीति—थूणं—नगर । थूणो—घर का खम्भा इत्यादि ।

६८. र व ण - व र ण - पू र णा द घो—‘रवण’ आदि शब्द, ‘अण’ प्रत्यय से मिद्ध होते हैं । जैसे—

रवनीति—रवणो—कोयल । वाहेतीति—वरणो—चहारदिवारी । पूरीयते अनेनाति—पूरणो—पूरा करने वाला ।

अति

६९. पा - व सा अ ति—‘पा’ तथा ‘वस’ धातु से परे, ‘अति’ प्रत्यय होता है । पूर्व स्वर का लोप होता है । जैसे—

पानि, रक्खतीति—पति—स्वामी । वमन्ति एत्थाति—वसति—घर ।

तु

७०. धा - हि - सि - त न - ज न - ग म - स च्छा तु—इन धातुओं से परे, ‘तु’ प्रत्यय होता है । जैसे—

धारेनीति—धातु—गेरुक आदि । हिनोति, पवत्तति फलं एतेनाति—हेतु—कारण । सेवीयति जनेहि इति—सेतु—पुल । तन्यतेति—तन्तु—सूत्र ।

जनीयते कम्मकिलेसेहिनि—जन्तु । जायति कम्मकिलेसेहि—जन्तु । जनीति—
जन्तु = पमुली । गच्छतीति—गन्तु = जाने जाना । सचति, मन्त्रेतीति—रन्तु = जन्तु ।

७१. अ रि स्तु इ च—'तु' प्रत्यय आने ने, 'धार' = पमने । धा उ
आदेश हो जाना है । जैसे—

अरति, पवत्तीति—उहु = ऋतु ।

७२. पि ता ङ थो—'पितु' आदि, 'तु' प्रत्ययान्त ङठ् विसर्ग है । जैसे—

पा = रक्खने । आस्स इत्त । पानि, रक्खतीति—पित्त । पान्तीति जस्ता ।

भार्तीति—भाता = भाई । धा = धारणे : आस्म ईत्त : धारणातीति—धोता =
बेटी । दुहति, बन्धवे पपूरेतीति—दुहिता = बेटी । जन = जन्ते : अस्म कान्त : मा
चन्तादेसो : पपुत्ते जनेतीति—जामाता = दामाद । नहीयति, पन्धीयति पेनेनाति
नत्ता = नाती । हवति, पूजेतीति—होता = हवन करने वाला । पुनाति, आयाति
भवं पवित्तं करोतीति—पोसा = पोता ।

रतु

७३. जन क रा रतु—'जन' तथा 'कर' धातु से परे, 'रतु' प्रत्यय होता
है । 'र' अनुबन्ध, अन्त स्वरदि को लोप करने के लिए है । जैसे—

जायतीति—जतु = लाह । करीयतीति—कतु = यज्ञ ।

उन्त

७४. स का उन्तो—सक = सत्तियं । इस धातु से परे, 'उन्त' प्रत्यय होता
है । जैसे—

[आकासे गन्तुं] सक्कोतीति—तक्कुन्तो = पक्षी ।

ओत

७५. क पा ओतो—कप = अछ्यादने । इस धातु से परे, 'ओत' प्रत्यय
होता है । जैसे—

कपतीति—कपोतो = कबूतर । कहीं कहीं, 'त' का 'ट' हो जाता है—

कपोटो = कबूतर ।

अन्त

७६. व सा दी ह्यन्तो—‘वस’ आदि धातु से परे, ‘अन्त’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

वसन्ति एतस्मि काले कीळापमुता इति—वसन्तो । रहति, जायतीति—
रहन्तो=वृक्ष, इस नाम का एक मृगराज । भद्=कल्याणे : भद्दिस्स संयोगादि-
लोपोः भज्जति कल्याणधम्मन्ति—भदन्तो=प्रव्रजित । नन्दति एतायाति—
नन्दन्ती=मन्त्री । जीवन्ति एतायाति—जीवन्ती=श्रौषधि । सूयतीति—सवन्ती=
नदी । रोदापेतीति—रोदन्ती=श्रौषधि । अरवति रक्खतीति—अरवन्ती=जनपद ।

७७. हि सी नं मुक् च—‘हि’ तथा ‘सि’ धातु से परे, ‘अन्त’ प्रत्यय होता
है; उससे परे ‘म’ का आगम होता है । जैसे—

हिनोति, अयनि पवत्तनि एतस्मिन्ति—हेमन्तो=ऋतु । मयन्ति एत्थ उक्का
कुमुमादयोनि—सीमन्तो=माँग ।

इत्

७८. ए ह-रुह-कुला इतो—इन धातुओं से परे, ‘इत्’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

अत्ततो जिनेहं हरतीति—हरितो=हरा रंग । रुहतीति—रोहितो=एक
तरुह की पद्मिनी । रहति, रुरीरे व्यायत्तवसेनाति—रोहितं (रस्स लत्ते—लोहितं)=
खून । अत्ततो गुण कुलिति, पत्थरतीति—कोलितो=द्वितीय अग्र श्रावक, इस
नाम का एक ब्राह्म ।

अत्

७९. भ रा दी ह्यतो—‘भर’ आदि धातुओं से परे ‘अत्’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

भरतीति—भरतो=नट । रज्जन्ति एत्थाति—रजत्तं=चाँदी । यजितव्वो
ति—यजतो=भ्रातृ । पचतीति—पचतो=रसोइया ।

आतक्

८०. कि रा दी ह्या लक्—‘किर’ आदि धातु से परे, ‘आतक्’ प्रत्यय होता

है । जैसे—

किरतीति—किरातो—एक कराली जात । रत्ना क हो जसेने—किनातो ।
अलतीति—अलातं—नितर्ही, लुकार्ही । चिलतीति—चिदातो—एक तरह की
मछली ।

अञ

५१. अ सा ई ह्य णो—'अस' आदि धातुओं में परे, 'अञ' प्रत्यय होता
है । जैसे—

असति, कावन्तर पदन्तीति—असत्—भासत । अस्मत्त जेणे—मात—
मत्तं—परिमाण, इतना भर । वारन्ति अनेनाति—उत्तं—अस्मि, अस्मत् । कर्त्तन्ति,
परिच्छिद्यतीति—कलनं—भार्ये ।

त

५२. अ षो हि णे—आ आदि धातुओं में परे, 'त' प्रत्यय होता है । जैसे—
वायतीति—वातो—हवा । नायतीति—नातो—दिन । मनीतीति—
तन्तं—तान । दन्तीति—दन्तो—दंत । अस्ति, दातीति—अस्तो—रसति,
अंत । मेदीयतीति—सेतो—उजला । नृन्ति अनेनति—पोतं—पात । नव-
तीति—सोतो—सोता । पुनीयतीति—पोतो—बच्चा । पोरीयतीति—पोत्तं—
गोत्र । योजन्ति अनेनाति—योत्तं—अस्मि । सनायन्तेति पवतीति—गत्तं—
शरीर । आदाधा निरन्तर अतति पदन्ति इति—अन्त—अत आदि । विपीयति
एत्यादि—ग्रेत्तं—ग्वेत् ।

तक्

५३. अ षो हि तक्—'अर' आदि धातुओं में परे, 'तक्' प्रत्यय होता
है । जैसे—

अरति, सिञ्चतीति—अत्तं—घो । मेवीयतीति—सितो—उजला । कुव्वलत्ता
दवति उपतपतीति—डूत । मिञ्जति, मितेदतीति—मित्तो—मित्र । चित्तेतीति—
चित्तं—विज्ञान, चित्त—कर्म आदि । पोनीयतीति—पुत्तो—बेटा । विन्दति
पीतिमनेनाति—वित्तं—धन । वरण—वत्तं—ब्रह्मचर्य आदि व्रत ।

८४. ने स्ता इ यो—'नेत्' आदि, 'तक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—
नयति, पापेतीति—नेसं—आँख। करण—कुसं—क्रिया। कर्मणि प्राप्तीति—
कुन्ती—एक हथियार। नुट्टु रमतीति—सूरतो—सुख मवास। मिहति, मिञ्च-
तीति—भुसं—पेशाव। पालीयतीति—पलितं—बालका पकवा। पतिन यम्म
अत्थि सो—पलितो। पलिता इत्थी। मिहनं—सितं—मुसकुराहट ['मिह' का
'सि' आदेश हो गया]।

मिहनं—मिहितं—मुसकुराहट। कुनीयति, अदकीनीयतीति—कुसोतो—
काहिल। नेत्ति वन्धन्ति वरावासं एतायाति—सोता—हल की जोन इत्यादि।

अथ

८५. असा दी ह्यथो—'सम' आदि धातुओं से परे, 'अथ' प्रत्यय होता
है। जैसे—

समेतीति—समेतो—समाधि। दरण—दरथो—पीडा। दमन—दमथो—
दमन। किलमन—किलमथो—परिश्रम। सपन—सपथो—सौगन्ध। प्रावसन्ति
एत्याति—प्रावसथो—घर।

८६. उप व स्या व स्तो इ छ—'उप' पूर्वक 'वस' धातु ने परे, 'अथ'
प्रत्यय होता है, 'वस' का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—

उपवसन्ति एत्याति—उपोसथ—निश्चिविगेष, नवा हस्ति-कुल।

थक्

८७. र मा थक्—'रम' धातु से परे, 'थक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
रमन्ति, कीळन्ति एतेनाति—रथो।

८८. ति तथा इ यो—'तित्थ' आदि, 'थक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है।
जैसे—

तर—तरणेः अस्स इत्तं, पररूपादि। तरन्ति अनेनाति—तित्थं—घाट।
सेचतीति—सित्थं—मोम। हसन्ति अनेनाति—हत्थो—हाथ, नक्षत्र। गायतीति
गाथा—पद्य विशेष। अरन्ति, पवत्तन्ति अनेनाति—अत्थो—धन। रोगं तुदति,
पीळेतीति—जुत्थं—दवा। यु—मिस्सने। यवतीति—यूथो—किन्हीं जानवरों
का समूह। पटिकूलत्ता गोपीयतीति—गूथो—मैला इत्यादि।

थु

८६. व स - म स - कु सा थु—इन धातुओं से परे, 'थु' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

वसन्ति एत्याति—वत्थु=पदार्थ । दधि आमसतीति—वत्थु=मट्टा ।
कुसति, अक्कोसति भेरवनादत्ताति—कोत्थु=सियार ।

थि

९०. स क - व स थि—'सक' तथा 'वस' धातु से परे, 'थि' प्रत्यय होता है । जैसे—

सक्कोति गन्तुमनेनाति—सत्थि=जाँघ । वसीयति अच्छादीयतीति—
वत्थि=पेड़ ।

थिक्

९१. वी लो थिक्—'वी' धातु से परे, 'थिक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
वीयन्ति, गच्छन्ति एतायाति—दीधि=गली ।

रथिण्

९२. स रि स्मा र थि ण्—'सर' धातु से परे, 'रथिण्' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

सारेतीति—सारथि=रथ हाँकने वाला ।

इथि

९३. ता ता इ थि—'ता' तथा 'अत' धातु से परे, 'इथि' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

नायति, पाप्नेतीति—तिथि । अतति, गच्छतीति—अतिथि ।

थी

९४. इ सा थी—'इस' धातु से परे, 'थी' प्रत्यय होता है । जैसे—
इच्छति, इच्छीयतीति वा—इत्थी=नारी ।

दक्

६५. रु द - खि द - मु द - म द - छि द - मू द - स प - क मा दक्—इन धातुओं से परे, 'दक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रुदतीति—रुद्धो=उमापति। 'र' का 'ल' होने से, लुद्धो=बहेलिया। खिदति, असहतीति—खुद्धो=क्षुद्र। मोदन्ति एतायाति—मुद्दा=अंगूठी। मज्जन्ति अस्मिन्ति—मद्धो=माद्र जनपद। छिज्जतीति—छिद्धं=छेद। मूदति, सापिकेहि भति पक्खरतीति—मुद्धो=गूद्र। सपन्ति अनेनाति—सद्धो=शब्द। कामीयतीति—कन्दो=मूल विशेष।

६६. कुन्दा द यो—'कुन्द' आदि, 'दक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
कामीयतीति—कुन्दो=एक प्रकार का फूल। मञ्जतेति—मन्दो=जड़।
वुणीयति मवरीयतीति—बुन्दो=मूल प्रदेश। निन्दीयतीति—निहा=नीद।
उन्दति, किलेदतीति—उद्धो=उद विलवा। सम्मा उन्दति, किलेदतीति—
समुद्धो=समुद्र। पुलति, हिमतीति—पुल्लिन्दो=शवर इत्यादि।

दु

६७. द दा दु—दद=दाने; इस धातु से परे, 'दु' प्रत्यय होता है। जैसे—
दुक्खं ददातीति—दुद्धु=दाद।

ध

६८. ख ण - अ न - द म - र मा धो—इन धातुओं से परे, 'ध' प्रत्यय होता है। जैसे—

नाणेन खञ्जते ति—खन्धो=राशि। अनति, जीवति एतेनाति—अन्धो=अंधा। दमेतब्बोति—दन्धो=जड़। रमन्ति एत्थ सप्पादयो ति—रन्धं=विल।

६९. मु द्धा द यो—'मुद्ध' आदि, 'ध' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
मोदन्ति एत्थ ऊकादयोति—मुद्धा=शिर। अरन्ति, यन्ति एत्थाति—अद्धा=मार्ग, काल। गोधतीति—गद्धो=गिज्भो। पटिवेधतीति—विद्धं=निर्मल इत्यादि।

धुक्

१००. सी तो धुक्—‘सी’ धातु से परे, ‘धुक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
सयन्ति एतायाति—सीधु=एक प्रकार की सुरा।

कुन

१०१. वर-अर-कर-तर-दर-अस-अज्ज-मिथ-सका कुनो—
इन धातुओं से परे, ‘कुन’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वारेतीति—वरुणो=इस नाम के ईश्वर देवराज, वृक्ष [रा नस्स णो ५.१७१]।
अरति, गच्छतीति—अरुणो=सूर्य। परदुक्खे सति साधूनं हृदयकम्पनं करोतीति—
करुणा=दया। बालभावं अतरि, तरतीति—तरुणो=युवा। द्विदारेतीति—
दारुणो=कड़ा। यमेति, नासेतीति—अमुन्दा=नदी। अज्जति, धनसञ्चयं करो-
तीति—अज्जुनो=राजा, वृक्ष विशेष। मिथो सङ्गमो ति—मिथुनं=जोड़ा।
सक्कोति इति—सकुनो=पक्षी। सकुनी। सकुणो। सकुणो?

इन

१०२. अजा इनो—अज, वज=गमने। इस धातु से परे, ‘इन’ प्रत्यय
होता है। जैसे—

अजति, विक्कयं यातीति—अजिनं=चमड़ा।

१०३. विपिनादयो—‘विपिन’ आदि, ‘इन’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

वपन्ति एत्थाति—विपिनं=वन। सुपन्ति एतेनाति सुपिनं=नींद, सपना।
तुदन्ति, सत्ते पीळेतीति—तुहिनं=हिम। कप्पति, रिपवो विजेतुं समत्थेतीति—
कप्पिनो=राजा। कमन्ति, एत्थ मीनादयो पविसन्तीति—कुमिनं=मछली
बभ्राने का छोप। देन्ति एतेनाति—दिनं=दिन।

कन

१०४. किरा कनो—‘किर’ धातु से परे, ‘कन’ प्रत्यय होता है। जैसे—

किरन्ति पत्थरन्तीति—किरणा=किरण । [रा नस्स णो ५.१७१—इस सूत्र से, 'र' के उत्तर 'न' का 'ण' हो गया ।]

नक्

१०५. वी - जि - इ - मी हि नक्—इन धातुओं से परे, 'नक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

अदेसि, खयमगमासि इति—वीनो=निर्धन । पञ्च मारे अजिनीति—जिनो=बुद्ध । एसि, इस्सरत्तं अगमासीति—इनो=स्वामी । मीयते, हिंसीयते ति—मीनो=मछली ।

न

१०६. सि - धा - वी - वा हि नो—इन धातुओं से परे, 'न' प्रत्यय होता है । जैसे—

सेति, वग्घतीति—सेनो=वाज । सेना । धारेतीति—धाना=भूजा । वेति, पवत्ततीति—वेनो=एक हीन जाति । सत्तेसु वाति, पवत्ततीति—वानं=नृणा ।

१०७. ऊ ना द यो—'ऊन' आदि, 'न' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
ऊह=वितक्के । ह लोपो । ऊहनं—ऊनो=अपूर्ण । हि=गतिय । दीघरत्त हेसि, हीनत्तमगमीति—हीनो । चि=चये । दीघरत्त चयन्ति एत्थ रतनानीति—चीनो=चीन देश । हनिस्स जघो । हञ्जतीति—ज्जनं=कटि । ठाति पवत्ततीति—थेनो=चोर ['ठ' का 'थ' हो गया] । उन्दीयतीति—ओदनो=भात ['उन्द' का 'ओद' हो गया] । रज्जते अनेनाति—रजनं=रंग । रज्जति एतायाति—रजनी=रात । पज्जति, गच्छतीति—पज्जुओ=इन्द्र, मेघ । गच्छन्ति एत्थ विहङ्गादयोति—गगनं=आकाश इत्यादि ।

तन

१०८. वी - पत्ता ल नो—इन धातुओं से परे, 'तन' प्रत्यय होता है । जैसे—

वेति, पवत्तति एतेनाति—वेतनं=वेतन । पतन्ति एत्थाति—पत्तनं=नगर ।

तनक्

१०६. रमा तनक्—'रम' धातु से परे, 'तनक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
रमन्ति एत्थाति—रत्नं=मणि आदि, हाथ भर लम्बा। [गमादिरानं लोपो'
न्तस्स ५.१०६—इस सूत्र से 'रम' धातु के 'म' का लोप हो गया।]

नुक्

११०. सू-भा हि नुक्—इन धातुओं से परे, 'नुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
पसवीयतीति—सूनु=पुत्र। भाति, दिप्पतीति—भानु=सूरज।
१११. धास्से च—धा=धारणे। इस धातु से परे, 'नुक्' प्रत्यय होता है;
तथा 'धा' का 'धे' आदेश होता है। जैसे—धारेतीति—धेनु=गाय।

अनि

११२. वत्त-अट-अव-धम-असे ह्यनि—वत्तन्ति एतेनाति—वत्तनि
=कन्नन दंडं?। वत्तनी=मार्ग। अटते, गम्मते ति—अटनि=मञ्चङ्गो?।
सत्ते अवति, रक्खतीति—अवनि=पृथ्वी। धमन्ति एतेन वीणादयोति—धमनि—
धमनी=सिरा। भण्डत्थाय असीयते, खिपीयतेति—असनि=वज्र।

नि

११३. धुतो नि—यु=भिस्सने। इस धातु से परे, 'नि' प्रत्यय होता है।
जैसे—
यवन्ति, सत्ता अनेन एकीभाव गच्छन्तीति—योनि=भग।

प

११४. चम-आय-पा-वपा पो—इन धातुओं से परे, 'प' प्रत्यय होता
है। जैसे—
चमन्ति, अदन्ति एत्थाति—चम्पा=नगर। अपेसि, ईसकमत्तं अगमासीति—
अप्पं=थोड़ा। अपायं पाति, रक्खतीति—पापं। वपन्ति एत्थाति—वप्पो=खेत।
११५. यु-धु-कूनं दीघो च—इन धातुओं से परे, 'प' प्रत्यय होता है,

तथा उनका दीर्घ होता है । जैसे—

यवन्ति, सह वत्तन्ति एत्थाति—**यूपो** = यज्ञ की लाठ, प्रासाद । थवीयतीति—**थूपो** = चैत्य, स्तूप । कवन्ति, नदन्ति एत्थाति—**कूपो** = कूआँ ।

पक्

११६. खि ष - सु ष - नी - सू - पू हि ष क्—इन धातुओं से परे, 'पक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

खिपति, खयं गच्छतीति—**खिष्पं** = शीघ्र । सुपन्ति एत्थ सुनखादयो 'ति—**सुष्पं** = सूष । नयन्ति एतस्मा फलन्ति—**नीषो** = वृक्ष । सवन्ति, रुचिं जनेतीति—**सूपो** = व्यञ्जन । पवीयति, मरिचजीरकादीहि पवित्त करीयतीति—**पूपो** = पूआ ।

११७. सि ष्या द यो—'सिष्प' आदि, 'पक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।

जैसे—

सपति अनेनाति—**सिष्पं** = कला ['सप' का 'सिप' हो गया] । विज्जं वप-
तीति—**विष्पो** = ब्राह्मण । यमति, वहिं निकलसति हृदयङ्गतसोकैनाति—**वप्पो** =
आँसू ['व' का 'व' हो गया] । छुप = सम्फस्से । उस्स ए । छुपति अनेनाति—
छेष्यं = अंगूठा । रप्पति, विकारमापज्जतीति—**रूपं** इत्यादि ।

अप

११८. सा सा अ षो—सास = अनुसिद्धियं । इस धातु से परे, 'अप' प्रत्यय होता है । जैसे—

सासीयन्ति एतेनाति—**सासपो** = सरसो ।

११९. वि ट पा द यो—'विटप' आदि, 'अप' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।
जैसे—

वट = वेठने । अस्स इत्तं । वटति, वेठति एतेनाति—**विटपो** । कुथ =
पूतिभावे । थस्स णो । अकुथिं, पूतिभावं अगमीति—**कुणपो** = मृतक । मण्डीयति
जनेहीति—**मण्डपो** इत्यादि ।

फ

१२०. गु पा फो—'गुप' धातु से परे, 'फ' प्रत्यय होता है । जैसे—

गोपीयतीति—गोप्फो = गिट्टा ।

ब

१२१. गर-स रा दी हि बो—‘गर,’ ‘सर’ आदि धातुओं से परे, ‘ब’ प्रत्यय होता है । जैसे—

गरति, अञ्जे अनेन पीठेतीति—गब्बो = अभिमान । सरति, पवत्ततीति—सब्बो = सकल । फलकामेहि जनेहि अमीयति, गमीयतीति—अम्बो = आम । पुत्तेन अमीयति, गमीयतीति—अम्बा = माता ।

१२२. निम्बा दयो—‘निम्ब’ आदि, ‘ब’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

नमति फलभारेनाति—निम्बो = नीम । वित्तादयो वमति, उगिरतीति—खिम्ब = शरीर । तित्तेन कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कोसम्बो = एक वृक्ष । कदन्ति एतेन द्वारादीनि इति—कदम्बो = वृक्ष । जनेहि कोटीयति, पवत्तीयतीति—कुटुम्बं । तण्डुलादयो अनेन कण्डन्ति परिच्छिन्दन्तीति—कुटुबो, कुडुबो = पैला इत्यादि ।

वि

१२३. द रा बि—दर = विदारणे । इस धातु से परे, ‘वि’ प्रत्यय होता है । जैसे—

ओदनादीनि दारेन्ति एतायाति—इब्बि = कलछुल ।

अभ

१२४. कर-सर-सल-कल-वल्ल-वसा अभो—इन धातुओं से परे, ‘अभ’ प्रत्यय होता है । जैसे—

करोतीति करभो = अँट । सरति, गच्छतीति—सरभो = मृगविशेष । सलति, गच्छतीति—सलभो = फाँसगा । कलीयति, परिमीयति वयसा ति कलभो—हाथी का बच्चा । कळभो । वल्लेति, संवरणं करोतीति—वल्लभो = प्रिय । वसन्ति अनेनाति—वसभो = पुङ्गव ।

रभ

१२५. ग द्वा र भो—'गद' धातु ने परे, 'रभ' प्रत्यय होता है । जैसे—
गदतीति—गदभो = गदहा ।

कभ

१२६. उ स-र स क भो—इन धातुओं से परे, 'कभ' प्रत्यय होता है ।
जैसे—
उसति पटिपक्खे निदहतीति—उसभो = थोष्ठ । रासति नदतीति—रासभो =
गदहा ।

भक्

१२७. इ तो भ क्—'ड' धातु से परे, 'भक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
एति गच्छतीति—इभो = हाथी ।

भ

१२८. ग र-अ वा भो—इन धातुओं से परे, 'भ' प्रत्यय होता है । जैसे—
गरति, वहि निवखमनवमेद सिञ्चतीति—गवभो = गर्भ, प्रसूति-गृह । अत्रति,
सत्ते रक्खतीति—अवभं = भेष ।

१२९. सो ष्वा ह धो—'सोष्वा' आदि, 'भ' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—
वीदन्ति एत्थाति—सोवभं = दरार ['सिद' के 'ड' का 'ओ' हो गया] ।
सोवभो = एक जलाशय । कामीयतीति—कुम्भो = घड़ा ['कल' के 'अ' का 'उ'
हो गया] । कुसति, अव्हयतीति—कुमुम्भं = एक फूल, जिन्से रंग तैयार किया
जाता है । कुसुम्भो = सोना इत्यादि ।

कुम

१३०. उ स-कु स-प ह-सु खा कु भो—इन धातुओं से परे, 'कुम' प्रत्यय
होता है । जैसे—
उसति दहतीति—उसुमं = गरम । कुसति अव्हयतीति—कुसुमं = फूल ।

गज्जति देवपूजायं यातीति—बहुसं=कमल । सुखयतीति—सुखुसं=सूक्ष्म ।

१३१. बट्टुन्नादयो—'बट्टुम' आदि, 'कुम्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।
जैसे—

वजन्ति एत्थाति—वट्टुमं=रास्ता [वजिस्सन्तस्स टो] । सिलिस्सतीति—
सिल्लेडुमो=कफ (सिलिस्स लिस्से) । कामीयतीति—कुड्कुलं=केसर
इत्यादि ।

उम

१३२. गुधा उओ—गुध=परिवेठने । इस धातु से परे, 'उम' प्रत्यय
होता है । जैसे—

गुधति, परिवेठतीति—गोधुमो=गेहूँ ।

अम, इम

१३३. षठ-चर अमिमा—'षठ' तथा 'चर' धातु से परे, यथाक्रम
'अम' तथा 'इम' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

पठीयति, उच्चारीयति उत्तमभावेनाति—षठसं=श्रेष्ठ, पहला । चरति,
हीनत्त यातीति—चरिसं=पिछला ।

मक्

१३४. हि धू हि मक्—हि=गतियं । धू=कम्पने । इन धातुओं से परे,
'मक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—हिमं=पाला । धुनाति, कम्पतीति—धूमो=धूँवाँ ।

रीसन

१३५. भी तो रीसनो च—'भी' धातु से परे, 'रीसन,' तथा 'मक्'
प्रत्यय होते हैं । जैसे—

भायन्ति एतस्मा 'ति—भीसनो=भयानक । भीमो=भयानक ।

म

१३६. खी-सु-वी-या-गा-हि-सा-लू-खु-हु-मर-धर-कर-घर-जम-अम-समा सो—इन धातुओं से परे, 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—

खेमनं, निरुपद्वकरणतायाति—खेमो =क्षेम । मुणातीति—सोसो =चाँद । वायन्ति एतेनाति—वेसो =करघा । यातीति—शामो =दिन का छटा या आठवाँ भाग । गायन्ति एत्थाति—गामो =गाँव । हिनोति, पवत्ततीति—हेमं =सोना । साति, सुन्दरत्तं ननु करोतीति—सामो =काल । लूयते ति—लोसं =रोवा । ख्यायते उत्तम भावेना ति—खोसं =अतसि । हवन हूयते वा—होसो =ग्राहुति । मरन्ति अनेनाति—मम्मं =मर्म । अनान धारेन्ते अपाये वट्टदुक्खे च अपनमाने कत्वा धारेतीति—धम्मो =परिपत्त्यादि, धर्म । करण, करीयतीति वा कम्मं =कर्म, सुखदुक्खफलद । नेदो परघरणि अनेना ति—धम्मो =धाम । जमेति अभक्खितव्व अदत्ताति—जम्मो =निहीन, बिना सोनें विचारे करने वाला । अमेति पेमेन पवन्ति पुत्तकोप्पूति—अस्मा =माता । ममेन्ति अनेजाति—सामा =ठीका करह ।

१३७. अस्सा दयो—'अस्स' आदि, 'म' प्रत्ययान्त शब्द निपात ह । जैसे—अस =खेपने । अस्सनेति—अस्सा पत्थाय । भम =भस्मीकरणे । भमन्ति परघरतीति—भस्सं =राख । उमति, निदहतीति—उस्सा =तेजो धातु । पावमन्ति एत्थाति—अस्सं =घर । भायन्ति एतस्माति—भेस्सा =भगानक । अस्मति, जनेहि चजीयते ति—अअस्सं =निहीन ['अस' के 'स' का 'ध' हो जाता है] । करोतीति—कुम्मो =कछुआ ['कर' के 'अ' का 'उ' हो गया] इत्यादि ।

मि

१३८. नी तो मि—'नी' धातु से परे, 'मि' प्रत्यय होता है । जैसे—नयतीति—नेमि =चक्रान्त ।

१३९. ऊ मि - भू मि - नि मि - र स्मि—'ऊमि' आदि 'मि' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

ऊह =वितक्के । ह लोपो । ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेनाति—ऊमि =तरङ्ग । भवन्ति एत्थाति—भूमि =पृथ्वी । नेति, सुगति पापेतीति—निमि =राजा । रसन्ति सत्ता एतायाति—रस्मि =रस्सी ।

य

१४०. मा-छा हि यो—‘मा’ तथा ‘छा’ धातु से परे, ‘य’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मेति, परिमेति अञ्जेन उत्तमेन गुणेन अत्तनो गुणन्ति—माया=सन्त दोस-पटिच्छादनलक्षण। छिन्दति संसयन्ति—छाया=प्रतिबिम्ब।

१४१. ज नि स्स जा च—‘जन’ धातु से परे, ‘य’ प्रत्यय होता है। ‘जन’ धातु का ‘जा’ आदेश होता है। जैसे—

जनेतीति—जाया=भाय्या।

१४२. ह द या द यो—‘हृदय’ आदि, ‘य’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

हरतीति—हृदयं=चित्त; मनो धातु, तथा मनोविज्ञान धातु का आश्रय [‘हर’ के ‘र’ का ‘द’ हो गया]। अत्तनि पेमं तनोतीति—त्तन्थो=बेटा। सरति गच्छतीति—सुरिथो=मूरज [‘सर’ का ‘सुरि’ हो गया]। सुखमाहरतीति—हम्मियं=मुण्डच्छदन पासादो [‘हर’ का ‘हम्मि’ हो गया]। कसति बुद्धिं यातीति—किसलयं=पल्लव [‘कस’ का ‘किसल’ हो गया] इत्यादि।

रक्

१४३. खी-सि-सि-नी-सी-सु-वी-कु-सू हि रक्—इन धातुओं से परे, ‘रक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—

खयति, दुहनेनाति—खीरं=दूध। कुसुमादीहि सेवीयतीति—सिरो=शिर। सेति, सरीर बन्धतीति—सिरा=नाड़ी। नेति, परेहि वा नीयतीति—नीरं=जल। सयतीति—सीरो=फाल। अनिट्फलदायकत्त सवतीति—सुरा=मदिरा। सुपोति उत्तमगीतादिति—सुरो=देवता। वेति, उत्तमभावं यातीति—वीरो=बहादुर। कवति, नदतीति—कुरं=भात। भयद्वितानं पठमकष्पिकानं सूरत्तं पसवतीति—सूरो=बहादुर, सूरज।

१४४. हि-चि-दु-मीनं दीधो च—इन धातुओं से परे, ‘रक्’ प्रत्यय होता है; और अन्त का दीर्घ होता है। जैसे—

हिनोति, पवत्तीति—हीरं=हीरा। चयतीति—चीरं=वल्कल। दुक्खेन

गमीयतीति—डूरं=दूर । मीयते पक्खपीयते 'नि'—सीरो=समुद्र ।

१४५. धा सा न भी च—'धा' तथा 'ना' धातु से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है । प्रत्यय स्वर का 'ई' प्रादेश होता है । जैसे—

धारेतीति—धीरो=धैर्यवान् । जय तायतीति—सीरे=नट ।

१४६. भद्रा इ धो—'भद्र' आदि, 'रक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—
भद्=कल्याणे । द लोप, पररूपाभावा । भजीयतीति—भद्रं=कल्याण ।
भायन्ति एतायाति—भेरी=दुन्दुभि । विचिन्तितव्वन्ति—विचित्रं=नाना प्रकार
का । या=वापुषेने । रस्स वज् । यातीनि—यात्रा=यान । गोपीयतीति—भोत्रं=
गोत्र । भस्म करोति एतायाति—अश्वा=भाथी, 'कम्मरगगरि' । सोकेन ताळन्ते
उसति, दहतीति—उरो=छाती इत्यादि ।

उर

१४७. मन्द-अङ्कु-सस-अस-मथ-चता उरो—इन धातुओं से परे, 'उर' प्रत्यय होता है । जैसे—

मन्दि, असुन्दरत्ता जळत्तमगमीनि—मन्दुरा=ग्रस्तबल । अङ्कीयति, लकड़ी-
यतीति—अङ्कुरो । ससति, हिसतीति—ससुरो=समुद्र । असियित्थाति—असुरो=
राक्षस । अरीहि मथीयति, अलोळियतीति—मथुरा=नगर । चलीयतीति—
चतुरो=चालाक ।

१४८. विधु रा द धो—'विधुर' आदि, 'उर' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।
जैसे—

वेधति, हिसति इति—विधुरो=रंडुआ । उन्दति, किलेदतीति—उन्दुरो=
चूहा । मङ्कति, अनेन अत्तानं अलं करोतीति—मकुरो=आइना, रथ, मछली ।
कुकति, ससादयो आददातीति—कुक्कुरो=कुत्ता । अमङ्गि, पसत्थमगमीति—
मङ्गुरो=एक तरह की मछली इत्यादि ।

किर

१४९. ति म-रुह-रुध-बध-मद-मन्द-वज-अज-रुच-कसा किरो—इन
धातुओं से परे, 'किर' प्रत्यय होता है । जैसे—

तेमेतीति—तिमिरं=अन्धकार, पानी । रुहति, पवत्ततीति—रुहिरं=लहू ।

जीवित रुन्धतीति—रुधिरं=लहू । बाधीयतीति—बधिरो=बहरा । जना मज्जन्ति एतायाति—मदिरा=शराब । मोदन्ति एत्थाति—मन्दिरं=घर । वजतीति—वजिरं=वज्र । अजति, गच्छति एत्थाति—अजिरं=आंगन । रोचतीति—रुचिरं=सुन्दर । कमीयति, दुक्खेन गमीयतीति—कसिरं=थोड़ा ।

१५०. थि रा द थो—‘थिर’ आदि, ‘किर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

ठातीति—थिरं=स्थिर । इच्छीयतीति—सिसिरो=शिशिर ऋतु । खादीयति पाणकेहीति खदिरो=दतवन । इत्यादि

१५१. द द ग रे हि डु र भ रा—‘दद’ तथा ‘गर’ धातु से परे, यथाक्रम ‘दुर’ तथा ‘भर’ होता हैं । जैसे—

अत्तानं ददातीति—इद्वरो=मेढ़क । गरति सिञ्चतीति—गभ्रं=गुहा ।

(द्वित्व)

१५२. च र - द र - ज र - ग र - म रे हि ते—‘चर’ आदि धातुओं से परे, वे ही ‘चर’ आदि होते हैं । जैसे—

चरन्ति एत्थाति—चच्चरं=चौराहा, आंगन । दरीयतीति—इद्वरं=एक पक्षी, भेरी । अजरीति, जज्जरो=जर्जर । गरति, सिञ्चतीति—गग्गरो=गड़-गड़ाहट, हंस की आवाज । मरीयतीति—मम्मरो=सूखे पत्तों की मरमर आवाज ।

क्वर

१५३. पी तो क्व रो—पी=तप्पने । इस धातु से परे, ‘क्वर’ प्रत्यय होता है । जैसे—

अपीनीति—पीवरं=मोटा ।

१५४. ची व रा द थो—‘चीवर’ आदि, ‘क्वर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

चिनातिस्स दीघरत्तं, चीयतीति—चीवरं=काषाय । परिळाहं समेतीति—संवरी=रात्रि । धारेतीति—धीवरो=मल्लाह (‘धा’ का ‘धी’ हो गया) । येन केन चि अत्तानं तायतीति—तीवरो=एक हीन जाति । नयन्ति एत्थ सत्ताति—नीवरं=घर । इत्यादि

क्रर

१५५. कु तो क्र रो—कु=सदे । इस धातु से परे, 'क्रर' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

कवति, नदतीति—**कुररो** = एक पक्षी (कुररी)

छर

१५६. व स - अ सा छ रो—इन धातुओं से परे, 'छर' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

वसन्ति एत्थाति—**वच्छरो** = वर्ष । सवसन्ति एत्थानि —**संवच्छरो** = वर्ष ।
असति विसज्जेतीति—**अच्छरा** = देवकन्या, चुटकी ।

छेर

१५७. म सा छे रो च—मस = ग्राममने । इस धातु से परे, 'छेर' प्रत्यय
होता है, और 'छर' भी । जैसे—

तण्हाय परामसनं—**मच्छेरं** = कजूमी । **मच्छरं** = कजूमी ।

सर

१५८. धू - वा तो स रो—धुनातीति—**धूसरो** = रूखा, हलका पीला रंग ।
वाति, गच्छतीति—**वासरो** = दिन ।

अर

१५९. भ मा ङी ह्य रो—'भम' आदि, धातुओं से परे 'अर' प्रत्यय होता
है । जैसे—

भमतीति—**भमरो** = भौरा । तसति, भयं गण्हातीति—**तसरो** = मन्दन्ति,
मोदन्ति एत्थाति—**मन्दरो** = पर्वत । कन्दति, अण्ठयतीति—**कन्दरो** = कन्दरा ।
देवन्ति, कीळन्ति एतेनाति—**देवरो** = देवर ।

१६०. व दि स्स ब दा च—'वद' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है । 'वद'
का 'वद' आदेश होता है । जैसे—

वदन्ति एतेनाति—वदरो—वैर का फल । वदरी ।

१६१. व द ज नानं ठ ड् च—‘वद’ तथा ‘जन’ धातु से परे, ‘अर’ प्रत्यय होता है; तथा अन्त का ‘ठ’ आदेश होता है । जैसे—

वदतीति—वठरो—मूर्ख । जनयति (एतस्माति)—जठरं—उदर ।

१६२. प चि स्सि ठ ड् च—‘पच’ धातु से परे, ‘अर’ प्रत्यय होता है; तथा ‘पच’ का ‘पिठ’ आदेश होता है । जैसे—

पचन्ति एतायाति—पिठरो—पकाने का बरतन ।

अरण

१६३. व का अ र ण—वक—आदाने । इस धातु से परे, ‘अरण’ प्रत्यय होता है । जैसे—

वकेति, आददाति एतायाति—वाकरा—जाल ।

आर

१६४. सि ङ्गि - अं ण - अ ग - म ज्ज - क ल - अ ल आ रो—इन नाम धातुओं से परे, ‘आर’ प्रत्यय होता है । जैसे—

किलेससिङ्गकरणं—सिङ्गारो । अङ्गति—विनासं गच्छतीति—अङ्गारो । अगन्ति, गच्छन्ति एत्थाति—अगारं—घर । लीहनेन अत्तनो सरीरं मज्जति, निम्मलत्तं करोतीति—मज्जारो—बिलार । एतेन गुणं कलीयति परिमीयतीति—कळारो—मटमैला रग । दीघत्तं अलति यातीति (बन्धे) —अळारो—टेड़ा ।

१६५. क मि स्स स्सु च—‘कम’—इच्छायं । इस धातु से परे, ‘आर’ प्रत्यय होता है । ‘कम’ का ‘कुम’ आदेश होता है । जैसे—

कामीयतीति—कुमारो ।

१६६. भि ङ्गु रा द धो—‘भिङ्गार’ आदि, ‘आर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

भरति, दधाति उदकन्ति—भिङ्गारो—सोने की भारी [‘भर’ का ‘भिङ्ग’ आदेश हो गया] । क्रेदीयतीति—कैदारं—खेत [किलद—अल्लभावे । ‘ल’ का लोप हो गया] । के जले सति दारो विदारणभस्साति वा—कैदारं—खेत । कु

पठवि विन्दति तत्रापन्ननायाति—कोविळारो—डुगता हुआ (विद—नाभे । इमस्मा कुपुब्बविदा आरो । दस्स लत्त । इस्स एत्ताभावो । समासे कुस्म आं च) इत्यादि ।

मार

१६७. करा मारो—‘कर’ धातु से परे, ‘मार’ प्रत्यय होता है । जैसे—
लोहकिच्चं करोतीति—कम्मारो—लोहार ।

खर

१६८. पुस-सरे हि खरो—‘पुस’ तथा ‘सर’ धातु से परे, ‘खर’ प्रत्यय होता है । जैसे—

पोसीयति जलेनाति—पोक्खरं—कमल । सरति विकार गच्छतीति—
सक्खरं—सक्कर ।

कीर

१६९. सर-वस-कला कीरो वस्मुट् च—इन धातुओं से परे, ‘कीर’ प्रत्यय होता है; ‘व’ का ‘उ’ होना है । जैसे—

सरीयतीति—सरीरं—शरीर । करोन्ति वासं एनेनाति—उत्तीरं—खस ।
अनेन थूलादि कलीयति परिमीयतीति—कलीरो—वाँस का अंकुर ।

१७०. गम्भीरादयो—‘गम्भीर’ आदि, ‘कीर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है । जैसे—

गो वुच्चति पठवी । तं भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति—गम्भीरो, गभीरो—
गहरा । पादे कुलति, पत्थरतीति—कुळीरो (कुलीरो)—केकड़ा इत्यादि ।

ऊर

१७१. खज्ज-वल्ल-भसा ऊरो—इन धातुओं से परे, ‘ऊर’ प्रत्यय होता है । जैसे—

खज्जियतीति—खज्जुरो, खज्जुरी—खजूर । वल्लीयति, संवरीयतीति—
वल्लूरो—सूखा मांस । मसीयतीति—मसूरो—मसूर की दाल ।

१७२. कप्पू रा द यो—‘कप्पूर’ आदि, ‘ऊर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

तुष्टि उप्पादेतुं कप्पति सक्कोतीति—कप्पूरं=कपूर=घनसार । किब्बिसं
करोतीति—कुरुरो=पापकारी । पस=बाधने । पसति पीळ्हेतीति—पसुरो=
दूर, व्यञ्जन इत्यादि ।

ओर

१७३. कठ-च का ओ रो—इन धातुओं से परे, ‘ओर’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

कठति, किच्छेन जीवतीति—कठोरो=कठोर । चकति, परिवितक्केतीति—
चकोरो=पक्षी विशेष ।

१७४. मो रा द यो—‘मोर’ आदि, ‘ओर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
मी=हिंसायं । ई लोपो । भीयति हिंसतीति—मोरो । कस=गमने । अस्स इ ।
कसति, गच्छतीति—किसोरो=किशोर, अश्व । महीयति पूजियतीति—महोरो=
बलमीक इत्यादि ।

एरक्

१७५. कु तो ए र क्—कवति, नदतीति—कुवेरो [युवण्णानमियडुवड-
सरे ५.१३६]

रिक

१७६. भू-सू हि रि क्—इन धातुओं से परे, ‘रिक’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

भवतीति—भूरि=बहुत । भूरी=मेघा । सवति, हितं पसवतीति—सूरि=
विचक्षण ।

रु

१७७. मी-क सी-नी हि रु—इन धातुओं से परे, ‘रु’ प्रत्यय होता है।
जैसे—

रंसीहि अन्धकारं मीयति हिंसतीति—मेरु=सुमेरु पर्वत । के, जले, सयति पवत्ततीति—कसेरु=पानी में जमने वाला एक कन्द । अत्तनिस्सिते सुन्दरत्तं नेति, पापेतीति—मेरु=पर्वत ।

एरु

१७८. सि ना ए र्—सिना=सोचेय्ये । इस धातु से परे, 'एरु' प्रत्यय होता है । जैसे—
सिनाति, सुविं करोतीति—सिन्देरु=पर्वतराज ।

रुक्

१७९. भी - रु हि रुक्—इन धातुओं से परे, 'रुक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
भायन्ति एनस्मानि—भीरु=भयानक (?) डरपोक । रवतीति रुक्=मिर्गा,
मृग ।

बूल

१८०. त मा बूलो—तम=भूमने । इस धातु से परे, 'बूल' प्रत्यय होता है । जैसे—
मुखं तमेति, भूसेतीति—तम्बूलं=पान ।

लक्, वाल

१८१. सि तो लक् वाला—सि=सेवायं । इस धातु से परे, 'लक्' तथा 'वाल' प्रत्यय होते हैं । जैसे—
सत्तेहि सेवीयतीति—सिला=शिला । सेलो=पर्वत । जलं सेवतीति—
सेवालो=सेवार ।

अल

१८२. म ज्झ - क म - स न्ब - स व - स क - व स - पि स - के व - क ल - प ल्ल -
क ठ - प ठ - कु ण्ड - म ण्डा अलो—इन धातुओं से परे, 'अल' प्रत्यय होता है । जैसे—

मङ्गन्ति, सत्ता एतेन वुद्धिं गच्छन्तीति—**मङ्गलं** । कामीयतीति—**कमलं** । सम्भवेति खण्डेतीति—**सम्बलं**—पाथेय । **सबलं**—चितकबरा । सक्कोति वत्तुन्ति—**सकलं**—सब । वसतीति—**वसलो**—शूद्र । पियभावं पिसति गच्छतीति—**पेसलो**—प्रियशील । केवति, पवत्तीति—**केवलं**—सकल । कलीयति, परिमीयति उदकमेतेनाति—**कललं**—गर्भ की एक अवस्था; कीचड़ । पल्लति, आगच्छति उदकमेतस्माति—**पल्ललं**—जलाशय । कठन्ति, एत्थ दुक्खेन यन्तीति—**कठलं**—कपाल-खण्ड । पटति वुद्धिं गच्छतीति—**पटलं**—समूह । धंसनेन कुण्डति दहतीति—**कुण्डलं** । मण्डीयति, परिच्छेदकरणवसेन भूसीयतीति—**मण्डलं**—घेरा ।

कल

१८३. **मुसा कलो**—‘मुस’ धातु से परे, ‘कल’ प्रत्यय होता है । जैसे—**मुसलो**—अयोग्य ।

१८४. **फला दयो**—‘फल’ आदि, ‘कल’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—**तिट्ठति** एत्थाति—**थलं**—ऊँची जगह (ठस्स थो । पुब्बसर लोपो) । उदकं पिवतीति—**उप्लं**—उत्पल । पतति गच्छति परिपाकन्ति—**पाटलो**—फल, सुवर्णकुमुम । बेहति वुद्धिं गच्छतीति—**बहलं**—घना । चुपति, एकत्थ न तिट्ठतीति—**चपलो** इत्यादि ।

कालो, कल

१८५. **कुला कालो च**—कुल—पत्थारे । इस धातु से परे, ‘काल’ प्रत्यय होता है, और ‘कल’ भी । जैसे—

कुलति, अत्तनो सिम्पं पत्थरतीति—**कुलालो**—कुम्हार । कुलति, पक्खे पसारतीति—**कुललो**—टिट्ठिहरी चिड़िया ।

१८६. **मुळाला दयो**—‘मुळाल’ आदि, ‘काल’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

मील—निमीलने । उद्धरमत्ते निमीलतीति—**मुळालं**—मृणाल । मूसिका-दिखादनेन बलति जीवतीति—**बिळालो**—बिलार । कप्पति जीवितुं एतेनाति **कपालं**—घटादि-खण्ड । पी—तप्पने । अत्तनो फलेन सत्ते सन्तप्पेतीति—**पियालो**

पालि महाव्याकरण

जल । कुण = सद्दे । वातसमुद्धिता वीचिसाला एत्थ कुणन्ति नदन्तीति—
इक महा सर । पविसन्ति एत्थाति—**विसालो** = विस्तार । पल =
तेन पलति, गच्छतीति—**पलालं** = पुञ्जाल । मसादयो सरति, हिस्-
ङ्गालो (सिगालो) = सियार इत्यादि ।

णाल

. **चण्डपताणालो**—‘चण्ड’ तथा ‘पत’ धातु से परे ‘णाल’ प्रत्यय
जैसे—
जे पीळेतीति—**चण्डालो** । अधो गच्छतीति—**पातालं** = रसातल ।

ल

मादितो लो—‘मा’ आदि धातु से परे, ‘ल’ प्रत्यय होता है । जैसे—
मा, परिमीयतीति—**माला** । एति, गच्छतीति—**एला** = मुँह का नार ।
पेति एत्थाति—**पेलो** = बेल की बनी छनिया । दूयति परितापेतीति—
डोला । **कल** = सङ्ख्याने । **कलनं**—**कल्लं** = व्युत्त ।

इल

. **अन-लल-कल-कुक-सठ-महा इलो**—इन धातुओं से परे,
होता है । जैसे—
पवत्ततीति—**अनिलो** = हवा । सलति, गच्छतीति—**सल्लं** = जल ।
वतीति—**कलिलं** = गहन । कुकति, अत्तनो नादेन सत्तान मनं गण्हा-
किलो = कोयल । सठति, वञ्चेतीति—**सठिलो** = शठ । महीयति
—**महिला** = स्त्री ।

किल

कुटा किलो—**कुट** = कोटिल्ये । इस धातु से परे, ‘किल’ प्रत्यय
जैसे—
कुटिलत्तमगमीति—**कुटिलो** = टेढ़ा ।

१६१. सिथिलादयो—'सिथिल' आदि, 'किल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सहित् अलन्ति—सिथिलं ['सह' धातु का 'सिथ' आदेश हो गया]।
परदुक्त्वे सति कम्पतीति—कपिलो=ऋषि। अकवि, नीलादिवण्णत्तमगमीति—
कपिलो=मटमैला रग। मथीयतीति—मिथिला=पुरी इत्यादि।

कुल

१६२. कट-कण्ड-वट्ट-पुथा कुलो—इन धातुओं से परे, 'कुल' प्रत्यय होता है। जैसे—

चटति, मित्ते भिन्दतीति—चटुलो=खुसामवी। कण्डीयति छिन्दीयतीति—
कण्डुलो=वृक्ष। वट्टतीति—वट्टुलो=परिमण्डल। अपत्थरीति—पुथुलो=
विस्तार।

१६३. तुभुलादयो—'तुमुल' आदि, 'कुल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

तम=द्वेदने। अतमि, वित्थिण्णत्तमगमीति—तुमुल=फैलने वाला। तमीयति,
विकारमापादीयतीति—तण्डुलो=चावल। अत्थिकेहि निचीयते कि—निचुलो=
हिज्जलो, एक वनस्पति-विशेष इत्यादि।

ओल

१६४. कल्ल-कप-तक्क-पटा ओलो—इन धातुओं से परे, 'ओल' प्रत्यय होता है। जैसे—

वातवेगेन ममुद्धतो कल्लति, रवतीति—कल्लोलो=समुद्र का लहर। कपति,
दन्ते अच्छादेतीति—कपोलो=गाल। तक्कीयतीति—तक्कोलं=एक फल।
पटति, व्याधिभेतेन गच्छन्तीति—पटोलो=एक सब्जी इत्यादि।

उल, उलि

१६५. अङ्गा उलो लि—अङ्ग=गमने। इस धातु से परे, 'उल' तथा
'उलि' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अङ्गन्ति, एतेन जानन्तीति—अङ्गुलं—प्रमाण । अङ्गति, उग्गच्छतीति—
अङ्गुलि ।

अलि

१९६. अञ्जलि—अञ्ज—व्यक्तिमक्खनगनिकन्तिमु । इस धातु से परे,
'अलि' प्रत्यय होना है । जैसे—
अञ्जेति, भस्ति अदेन पकासेतीनि—अञ्जलि ।

लि

१९७. छदा लि—छद—सवरणे । इस धातु से परे, 'लि' प्रत्यय होना है ।
जैसे—

छादेतीति—छल्ली—छल्ली ।

१९८. अल्यादयो—'अल्लि' आदि, 'लि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

अर—गमने । अरनि, पवत्ततीनि—अल्लि—वृक्ष । अत्थिकेहि नीयतीति—
नीलि, नीली—एक प्रकार का गाछ । द्वित्व होने से, 'निल्ली' भी होता है ।
पालेति, रक्खतीति—पालि । पाली—पक्ति । पालेति, रक्खतीनि—पल्लि—कुटि ।
चोदीयतीति—चल्ली—चूल्हा इत्यादि ।

अव

१९९. पि लादी ह्यवो—'पिल' आदि धातुओं से परे, 'अव' प्रत्यय होता
है । जैसे—

पिल—वत्तने । पिल्यतेति—पेलवो—पतला । पल्लीयतीति—पल्लवो ।
पणीयतीति—पणवो—एक तरह का ढोल इत्यादि ।

२००. साळवादयो—'साळव' आदि, 'अव' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

सलति, पवत्ततीति—साळवो—अच्छी तरह तैयार किया गया, 'खदर' आदि
फल का एक खाद्य । कित—निवासे । किच्छतीति—कितवो—ठग, जुआरी ।

म = बन्धने । मुनाति बन्धतीति—**मुतवो** = चण्डाल । वल, वल्ल = संवरणे । वलति, वल्लतेति वा—**वळवा** = अश्वराज । मुर = संवेठने । मुरीयतीति—**मुखो** = मूदङ्ग इत्यादि ।

आव

२०१. स रा **आवो**—‘सर’ धातु से परे, ‘आव’ प्रत्यय होता है । जैसे—सरति, पवत्ततीति—**सराव** = प्याला ।

गुव

२०२. अ ल - म ल - बि ला **गुवो**—इन धातुओं से परे, ‘गुव’ प्रत्यय होता है । जैसे—

लताहि अल्लीयतीति—**आलुवो** = एक गाछ । मलति, धारेतीति—**मालुवा** = लता, अमर वेल । बिलति, भिन्दतीति—**बेलुवो** = वृक्ष ।

ईव

२०३. गा त्वी **वो**—गा = सहे । इस धातु से परे, ‘ईव’ प्रत्यय होता है । जैसे—

गायन्ति एतायाति—**गीवा** = गला ।

क्व, क्वा

२०४. सु तो **क्व क्वा**—‘सु’ धातु से परे, ‘क्व’ तथा ‘क्वा’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सुणातीति—**सुवो** = सुग्गा । **सुवा** = सुग्गा ।

२०५. वि द्वा—‘विद’ धातु से परे, ‘क्वा’ प्रत्यय होता है; तथा उसका पर-रूप-भाव होता है । यह निपात है । जैसे—

विदति, जानातीति—**विद्वा** = विद्वान ।

रेव

२०६. थु तो **रेवो**—थु = अभित्थवे । इस धातु से परे, ‘रेव’ प्रत्यय होता

है। जैसे—

थवति, मिञ्चतीति—थेवो =जल विन्दु ।

रिव

२०७. स मा रि वो—सम =उपसमे। इस धातु में परे, 'रिव' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेति, उपसमेतीति—सिवो =शिव, उमापति। सिवा =सियार। सिवं =शान्ति।

रवि

२०८. छ दा र वि—छद =संवरणे। इस धातु में परे, 'रवि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—छवि =द्युति, त्वचा के ऊपर की पगड़ी।

किस

२०९. पू र-ति मा क्ति स्तो रस्सो च—'पूर' तथा 'निम' धातु में परे, 'किस' प्रत्यय होता है। 'ऊ' का 'उ' हो जाता है। जैसे—

पूरेतीति—पुरिस्ते =पुरुष। पूरे, उच्चे ठाने मेति, पवस्तीति—पुरिस्ते =पुरुष। तेमीयतीति—तिमिषं =ग्रन्थकार।

ईस

२१०. क रा ई सो—'कर' धातु में परे, 'ईस' प्रत्यय होता है। जैसे—
करीयतीति—करीसं =गुह।

२११. सि री सा द यो—'सिरीस' आदि, 'ईम' प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—

सप्पदट्टकालादिसु सरीयतीति—सिरीसो =वृक्ष। पूरेतीति—पुरिसं =गुह। तलति, सत्तानं पतिट्टानं भवतीति—तालिसं =एक दवा का गाछ इत्यादि।

रिब्विस

• २१२. क रा रि ब्विसो—'कर' धातु से परे, 'रिब्विस' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

करीयतीति—किब्विसं=पापं ।

स

२१३. स स - अ स - व स - वि स - ह न - व न - भ न - अ न - क मा सो—
इन धातुओं से परे, 'स' प्रत्यय होता है । जैसे—

ससन्ति, जीवन्ति सत्ता एतेनाति सस्सं=शस्य । असति, खिपतीति—
अस्सो=घोड़ा । वसन्ति एत्थाति —वस्सं=वर्ष । विसतीति—वेस्सो=वैश्य ।
हञ्जतेति—हंसो । वनोति, पत्थरतीति—वंसो=वंश, बाँस । मञ्जतेति—मंसं=
मांस । अनति, जीवति एतेनाति अंसो=हिस्सा, कंधा । कामीयतीति—कंसो=
एक नाप ।

सक्

२१४. आ मि - थु - कु - सी तो स क्—इन धातुओं से परे, 'सक्' प्रत्यय
होता है । जैसे—

आमीयति, अन्तो पक्खिपीयतीति—आमिसं=भोग्य पदार्थ । थवीयतीति—
थुसो=भुस्सा । कवति, वातेन नदतीति—कुसो=कुश घास । सयन्ति एत्थ
ऊकादयो ति—सीसं=सिर, सीसा ।

२१५. फ स्सा द थो—'फस्स' आदि, 'सक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात है ।
जैसे—

फुस =सम्फस्से । उस्स अ । फुसति इति—फस्सो=स्पर्श । फुस्सो=एक
नक्षत्र । पोसीयतीति—पोसो=पुरुष । पुस्सं=फल-विशेष । अभवीति—भुसं=
भुस्सा । अङ्केति अनेन अञ्जे 'ति—अङ्कसो । फायति, बुद्धिं गच्छतीति—पप्फासं=
पेट के भीतर का एक अवयव । कलीयति, परिमीयतीति—कम्मासो=चितकबरा ।
कम्मासं=पाप । कुलति पत्थरतीति—कुम्मासो=एक खाद्य । मञ्जति सधनत्तं
एतायाति—मञ्जूसा=बक्सा । पीनेतीति—पीयूसं=अमृत । कुल=संवरणे ।

कुलीयति, संवरीयतीति—कुलिसं=वज्र । वल=सवरणे । वलति, एतेन मच्छे
गण्हातीति—बळिसो=वसी । महीयति इति—महेसी=पट रानी इत्यादि ।

णिसक्

२१६. सु तो णि सक्—‘सु’ धातु से परे, ‘णिसक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—
सुणातीति—सुणिसा=पतोह ।

अस

२१७. वे त - अ त - यु - प न - अ ल - क ल - च मा असो—इन धातुओं से
पर, ‘अस’ प्रत्यय होता है । जैसे—

वेतति, पवत्ततीति—वेतसो=वेत । अतति, वातकम्पितो निच्च वेधत्त
यानीति—अतसो=वातो । अलसी=अलमी । यवीयति, मिम्मियतीति—
यवसो=पशुओं का चारा । पन्यते, धवीयतेति—पनसो=कटहल । अलीयति,
बन्धीयतीति—अलसो=आलमी । कनीयतीति—कलसो=शालध । चमति,
अदति अनेनाति—चमसो=चमचा, श्रुवा ।

असण्

२१८. द द - दि व - क र - क रे हि असण् सक् पा स क सा—‘वय’
आदि धातुओं से परे, यथाक्रम ‘असण्’ आदि प्रत्यय होते हैं । जैसे—

वयति, गच्छतीति—दायसो=कौआ । दिवन्ति एथाति—दिवसो=
दिन । करीयतीति—कपासो=कपास । किव्विसं करोतीति—कक्कसो=कर्कश ।

सु

२१९. स स - म स - दं स - अ सा सु—‘सस’ आदि धातुओं से परे, ‘सु’
प्रत्यय होता है । जैसे—

ससति, जीवति इति—सस्सु=सास । मसीयतीति—मस्सु=दाढ़ी । दंसीयति
परायत्तो एतेनाति—दहसु=चोट । असीयति, खिपीयतीति—अस्सु=आँसू ।

दसुक्

२२०. वि दा दसुक्—‘विद’ धातु से परे, ‘दसुक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
विदति, जानातीति—विदस्सु=विद्वान् ।

रीहो

२२१. स सा रीहो—‘सस’ धातु से परे, ‘रीह’ प्रत्यय होता है। जैसे—
ससति, हिंसतीति—सीहो=सिंह ।

ह

२२२. जी वा मा हो व मा च—‘जीव’ तथा ‘अम’ धातु से परे, ‘ह’ प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवन्ति एतायाति—जिह्वा=जीभ । अमति पवत्ततीति—अम्हं=पत्थर ।
पपुब्बो अमति पवत्ततीति—पम्हं=प्रमुख ।

२२३. त ण्हा द यो—‘तण्हा’ आदि, ‘ह’ प्रत्ययान्त शब्द निपात है। जैसे—
तसति, पातुमिच्छति एतायाति—तण्हा=तृष्णा । कस=विलेखने । कस-
तीति—कण्हे=काला । जोतेतीति—जुण्हा=चाँदनी । निमीलन्ति अनेन अक्खी-
नीति—मीळ्हं=गुह । गय्हतीति—गाळ्हं=गाड़ । दहतीति—दळ्हं=दूढ ।
बहति, बुद्धि गच्छतीति—बाळ्हं=मज्जबूत । गच्छतीति—गिम्हो=ग्रीष्म ।
पटति, यातीति—पटहो=एक बाजा । कलीयति, परिमीयति अनेन सूरभावन्ति—
कलहो=विवाद । कटन्ति, एत्थ ओसधादि मद्दन्तीति—कटाहो=कड़ाही । वरीय-
तीति—वराहो=सूअर । लुनाति एतेन, ति—लोहं=लोहा इत्यादि ।

हि, ही

२२४. ष णु स्स हा हि ही णो ल ड् च—‘पण’ तथा उ-पूर्वक ‘सह’ धातु से परे, यथाक्रम ‘हि ही’ प्रत्यय होते हैं। अन्त का ‘ण’ तथा ‘लड्’ आदेश होता है। जैसे—

पणीयति, बोहरीयतीति—पण्ही=एड़ी । उस्सहतीति—उस्सोळ्ह=वीर्य ।

ळ

२२५. खी-मि-पी-चु-मा-वा-का हि ळो उस्स वा दी धो च—इन धातुओं से परे, 'ळ' प्रत्यय होना है; तथा 'उ' का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे—

खीयतीति—खेळो=थूक । मीयति, पक्खिपीयतीति—मेळा=राख । पीनेतीति—पेळा=पेडा । चवतीति—चूळा=चूड़ा । चोळो=कपड़ा । मीयति परिमीयतीति—माळो=एक कूट वाला, अनेक कोनों वाला सभागृह । वाति गच्छतीति वाळो=जंगली जानवर । काति, फरुमं वदतीति काळो=कृष्ण ।

ळक्

२२६. गु तो ळक् च—गु=सदे। इस धातु से परे, 'ळक्' प्रत्यय होता है, और 'ळ' भी। जैसे—

गवति, (सद्) पवत्तति एतेनाति—गुळो=गुड़ । गोळो=बौना ।

२२७. पङ्गुळा दयो—'पङ्गुळ' आदि 'ळक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

खञ्ज= गतिवेकल्ले । पङ्गु आदयो अण्वञ्जि, गतिवेकल्ल आपज्जि इति—पङ्गुळो=लूंक । किब्बिसं करोतीति—कञ्खलो=कूर । कुक्कति, पापकारीहि आदीयतीति—कुक्कुळं=एक नरक । मङ्केति, वनं मण्डेतीति—मकुळो=कली ।

ळि

२२८. पा तो ळि—'पा' धातु से परे, 'ळि' प्रत्यय होता है। जैसे—
अत्थं पाति, रक्खतीति—पाळि=पालि भाषा ।

लु

२२९. वी तो लु—'वी' धातु से परे, 'लु' प्रत्यय होता है। जैसे—
वेति पवत्ततीति—वेलु=बाँस ।

॥ इति 'ण्वादि' वृत्ति ॥

पहला परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

मोग्गल्लान व्याकरणा

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं
सधम्मसङ्घं भासिस्सं भागधं सहलक्खणं ॥

पालि-व्याकरण मे सूत्र पाँच प्रकार के है—१. संज्ञा, २. परिभाषा,
३. विधि, ४. नियम, ५. अधिकार।

१. संज्ञा-सूत्र

‘संज्ञा’ का अर्थ है ‘नाम-करण’। मोग्गल्लान व्याकरण के प्रथम बारह सूत्र ‘संज्ञा-सूत्र’ है। पहला सूत्र^१ ‘वर्ण’ का नाम-करण करता है; दूसरा^२ ‘स्वर’ का, तीसरा^३ ‘सवर्ण’ का, चौथा^४ ‘ह्रस्व’ का, पाँचवाँ^५ ‘दीर्घ’ का, छठा^६ ‘व्यञ्जन’ का, सातवाँ^७ ‘वर्ग’ का, और आठवाँ^८ ‘निग्गहीत’ का।

नवाँ सूत्र है—इयुइण्णा भन्ता नामस्सन्ते १.९—अर्थात्, किसी पुल्लिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग नाम के अन्त्य ‘इ’ या ‘ई’ की संज्ञा ‘भ’, तथा ‘उ’ या ‘ऊ’ की संज्ञा ‘ल’ है।

‘भ’ या ‘ल’ शब्द का, अपने में कोई अर्थ नहीं है। किन्तु व्याकरण-शास्त्र में, जहाँ कहीं ‘भ’ संज्ञा आती है, उससे भट नाम के अन्त्य ‘इ’ या ‘ई’ का बोध हो

१. अ आइयो तितालीस वण्णा । २. दसादो सरा । ३. द्वे द्वे सवण्णा ।
४. पुब्बो रस्सो । ५. परो दीघो । ६. काइयो व्यञ्जना । ७. पञ्च पञ्चका वग्गा । ८. बिन्दु निग्गहीतिं ।

जाता है। उसी तरह, 'ल' सजा कहने से, नाम का अन्त्य 'उ' या 'ऊ' समझ लिया जाता है।

दसवाँ सूत्र है—**पित्थियं** १.१०—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ', 'ई', 'उ' या 'ऊ' की सजा 'प' होगी। आगे के सूत्रों में, जहाँ कहीं 'प' सजा आवेगी, उससे भट स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य इ, ई, उ या ऊ का बोध हो जायगा।

ग्यारहवाँ सूत्र है—**घा**^३ १.११—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' की 'घ' सजा होती है। आगे के सूत्रों में, जहाँ कहीं 'घ' सजा आवेगी, उससे भट 'आ'कारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' का बोध हो जायगा।

बारहवाँ सूत्र है—**गोस्थालपने** १.१२—अर्थात्, सम्बोधन के अर्थ में (=आलपने) प्रयुक्त 'सि' विभक्ति की सजा 'श' होगी।

२. परिभाषा-सूत्र

बहुत से स्थानों पर एक ही बात को बार-बार कहने में बचने के लिए, कोई नियम या छोटा सकेत निश्चित कर लेते हैं। ऐसे नियम या सकेत निश्चित करने वाले सूत्र 'परिभाषा-सूत्र' कहे जाते हैं।

मोग्गलान व्याकरण में, परिभाषा के (१३-२५) तेरह सूत्र हैं। इन तेरह सूत्रों में, पहले के पाँच सूत्र नियम निर्धारित करते हैं—

(क) नियम-निर्धारक-सूत्र

विधिब्विसेसनन्तस्स १.१३—सूत्र में यदि कोई विशेषण-पद आधे, तो वह विशेषण जिसके अन्त में हो उसी शब्द का ग्रहण होता है। जैसे—

'अतो घोलं टा टे'—इस सूत्र में, 'अतो' का अर्थ है 'अ' से परे। किंतु, यह पद नाम का विशेषण है; इसलिए, इसका अर्थ हुआ—'अ' जिसके अन्त में हो,

^३ घो इत्थियं

^३ घो ; आ

हो, और जो अनेक वर्णों वाला आदेश हो, वह सम्पूर्ण पाठ्यन्त पद के स्थान में होता है। जैसे—

‘प्रतो योत टा टो’ : इस सूत्र में, ‘योत’ पद से पाठी विभक्ति ह, प्रत, ऊपर कहे गये सूत्र ‘द्विद्वयन्तस्म’ के अनुसार, ‘यो’ पद के अन्तिम वर्ण ‘यो’ का लोप होना चाहिए था। किंतु, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार, सम्पूर्ण पद ‘यो’ वा ‘या’ तथा ‘ए’ आदेश होगा, क्योंकि ‘प्रा-ग’ के साथ ‘ट’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा है। जैसे—
बुद्ध+यो=बुद्धा, बुद्धे।

अनेक वर्णों वाला आदेश भी सम्पूर्ण पाठ्यन्त पद के स्थान में होता है।
जं कालुअन्धाअस्तः १.२०—जिसमें ‘अ’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा हो, वह पठ्यन्त पद के आदि में आता है। जैसे—

‘सुञ् सस्म’। इस सूत्र के सुञ् पद में, ‘ञ्’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा है। इसमें मालूम होता है, कि पठ्यन्त पद ‘ञ’ के आदि में ‘सु’ का आगम होगा। ‘सु’ का ‘ञ’ ही रहता है, क्योंकि ‘उ’ के लिये उचवाः (उचवाः) के लिये तथा दिया गया है। जं—बुद्ध+ञ्=बुद्धञ्, रम+ञ्=रमञ्।

जिसमें ‘क’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा हो, वह पठ्यन्त पद के अन्त में आता है। जैसे—

(अन्-आनुमान) ‘मुहिसु नक्’—यहां, ‘नक्’ पद में ‘क’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि ‘न’ का आगम पठ्यन्त पद ‘अन्’ तथा ‘आनुम’ के अन्त में होगा—‘मु-हि’ विभक्तियों यदि परे हों। जैसे—अत्त+सु=अत्तनेसु।

मनुबन्धो सरानमन्ता परो १.२१—जिसमें ‘म’ अनुबन्ध लगा हो, वह पठ्यन्त शब्द के अन्तिम स्वर से परे आता है। जैसे—

‘मं न रुधादीन’। इस सूत्र के ‘म’ पद में, ‘म’ अनुबन्ध (-सकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि ‘मं’ का आगम पठ्यन्त शब्द ‘रुध’ के अन्तिम स्वर ‘उ’ से परे होगा। जैसे—रुधति।

(ग) साधारण परिभाषा-सूत्र

विष्पटिलेधे १.२२—यदि एक ही जगह, परस्पर भिन्न दो सूत्र (नियम) लगते हों, तो उनमें बाद में कहा गया सूत्र लगता है।

संकेतो ऽनवयवोन्वन्धो १.२३—किसी शब्द में, 'अनुबन्ध' सिर्फ एक संकेत के लिए लगाया जाता है। 'अनुबन्ध' केवल इस बात का संकेत करने के लिए लगाया जाता है, कि वह आदेश किसके स्थान पर, या वह आगम कहाँ पर होगा। 'अनुबन्ध', शब्द का अङ्ग नहीं होता है; अतः, आदेश या आगम के समय, वह छोड़ दिया जाता है। [देखिए—पृ० ४३६, ४४०, ४४६, ४५०]

अनुबन्धों के संकेत—

१. 'ङ'—षष्ठ्यन्त पद के अन्तिम वर्ण के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।
२. 'ट'—सम्पूर्ण षष्ठ्यन्त पद के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।
३. 'ज'—षष्ठ्यन्त पद के आदि में आगम करने का संकेत करता है।
४. 'क'—षष्ठ्यन्त पद के अन्त में आगम करने का संकेत करता है।
५. 'म'—षष्ठ्यन्त पद के अन्तिम स्वर से परे आगम करने का संकेत करता है।

वर्णवरेण सवर्णोधि १.२४—स्वर के साथ 'वर्ण' शब्द लगा देने से, उसके सवर्ण का भी ग्रहण होता है। 'अवर्ण' कहने से, 'आ' का भी ग्रहण होता है; 'इवर्ण' कहने से, 'ई' का भी ग्रहण होता है। इत्यादि।

न्तु वन्तु मन्त्वा वन्तु तवन्तु सम्बन्धी १.२५—सूत्र में, जहाँ 'न्तु' शब्द का प्रयोग आवे, वहाँ 'वन्तु', 'मन्तु' 'आवन्तु' तथा 'तवन्तु'—इन्हीं के 'न्तु' का ग्रहण करना चाहिए। [जन्तु, तन्तु आदि शब्दों के 'न्तु' का नहीं]

३. विधि-सूत्र

विभक्ति-प्रत्ययादि के विषय में विधान करने वाले सूत्र 'विधि-सूत्र' हैं। 'विधि-सूत्र' ही, व्याकरण में सर्व-प्रधान है; क्योंकि, दूसरे सूत्र तो विधि-सूत्र के कार्य-सम्पादन के सौकर्य के लिए ही बनाए गए हैं। जैसे—

प्य दिच्चादीहि ४.४—अर्थात्, 'दिति' आदि शब्दों से परे, अपत्य के अर्थ में 'प्य' प्रत्यय होता है। दिति + प्य = देच्चो।

कम्मे द्रुतिया २.२—कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

अतो योनं टाटे २.४३—अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश होता है। इत्यादि।

४. नियम-सूत्र

किन किन स्थान में कोई खास नियम लागू होते हैं या नहीं, उसे बताने वाले सूत्र 'नियम-सूत्र' हैं। जैसे—

न खादादीनं २.६—अर्थात्, ऊपर कहा गया नियम 'खाद' आदि धातुओं के साथ नहीं लगता है।

वहिस्सानिमन्तु के २.७—अर्थात्, 'वह' धातु के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, यदि उसका कर्ता नियन्ता न हो।

५. अधिकार-सूत्र

किसी प्रकरण-विशेष की सूचना देने वाले सूत्र 'अधिकार-सूत्र' हैं। जैसे—

बहुलं १.५८—अर्थात्, आगे आने वाले सभी सूत्रों में 'बहुल' का नियम लगा है।

उत्तरपदे ३.५४—अर्थात्, आगे आने वाले सूत्रों के कार्य तभी होते हैं, यदि 'उत्तर पद' परे हो। इत्यादि।

सूत्र-पाठ

पठनी कण्डो

१. अ आदयो तितालीस वण्णा	११. वा
२. दसादो सरा	१२. गो स्थालपने (सञ्जाधिकार)
३. द्वे द्वे सवण्णा	१३. विधिब्रिसेसनन्तस्स
४. पुब्बो रस्सो	१४. सत्तमियं पुब्बस्स
५. परो दीघो	१५. पञ्चमियं परस्स
६. कादयो व्यञ्जना	१६. आदिस्स
७. पञ्च पञ्चका वग्गा	१७. छट्ठियन्तस्स
८. बिन्दु निग्गहीतं	१८. उ नुवन्धो
९. इयुवण्णा भला नामस्सन्ते	१९. टनुवन्धानेकवण्णा सब्बस्स
१०. पित्थियं	

९. उ। १०. प + इ०। ११. घ + आ। १२. सि + आ०। १७. अ०। १८. उ +

२०. अकानुवन्धाद्यन्ता	३६. लोपो
२१. मनुवन्धो सरान्मन्ता परो	४०. परसरस्स
२२. विप्पटिसेधे	४१. वग्गे वग्गन्तो
२३. संकेतो 'नवयवो' नुवन्धो	४२. धेवहिंसु ञ्जो
२४. वण्णपरेन सवण्णो' पि	४३. धे संस्स
२५. न्तु वन्तुमन्त्वावन्तु तवन्तुसम्बन्धी (परिभासायो)	४४. मयदा सरे
२६. सरो लोपो सरे	४५. वनतरगा चागमा
२७. परो क्वचि	४६. छा लो
२८. न द्वे वा	४७. तदमिनादीनि
२९. युवण्णानमेओ लुत्ता	४८. तवग्गवरणानं ये चवग्गवयजा
३०. यवा सरे	४९. वग्गलसेहि ते
३१. एओनं	५०. हस्स विपल्लासो
३२. गोस्सावड्	५१. वे वा
३३. व्यञ्जने दीघरस्सा	५२. तथनरानं टठणला
३४. सरम्हा द्वे	५३. संयोगादि लोपो
३५. चतुत्थदुतियेस्सेक्षं ततियपठमा	५४. वीच्छाभिकवञ्जेसु द्वे
३६. वितिस्सेधे वा	५५. स्यादिलोपो पुव्वस्सेकस्स
३७. एओनमवण्णे	५६. सब्बादीनं वीतिहारे
३८. निग्गहीतं	५७. याव बोधं सम्भमे
	५८. वहुलं

इति (मोगल्लाने व्याकरणे) सञ्जादिकण्डो पठमो

अ० । २०. न्धा + आदि + अन्ता । २१. नं + अ० । २६. इ + उ = यु ।
 ३२. स्स + अ । ३५. लु + एसं (चतुत्थदुतियानं) । ३६. वो + इतिस्स + एवे ।
 ३७. नं + अ । ४२. य + एव । ४४. म, य, द० । ४५. व, न, त, र, ग० ।
 ४८. तवग्ग-व-र-णानं ये चवग्ग-व-य-जा । ४९. वग्ग-ल-से हि ते (= ते एव वग्ग-
 ल-सा) । ५२. त-थ-न-रानं ट-ठ-ण-ला । ५४. च्छा + आ० । ५५. स्स + ए० ।
 ५६. व्व + आ० ।

दुतियो कण्डो

(स्वादि)

१. द्वे द्वेकानेकेसु नामस्मा सि यो अं यो	२०. लक्खणे
ना हि सनं स्मा हि सनं स्मि सु	२१. हेतुम्हि
२. कम्मे दुतिया	२२. पच्चन्दीणे वा
३. कालद्धानमच्चन्तसयोगे	२३. गुणे
४. गतिबोधाहारसहत्थाकम्मक	२४. छट्ठी हेतवत्थेहि
भज्जादीन पयोज्जे	२५. मव्वादिनो सव्वा
५. हरादीनं वा	२६. चतुत्पी म्पदाने
६. न खादादीन	२७. तादत्थे
७. वहिस्सानियन्तुके	२८. पच्चम्भयधिरमा
८. भक्खिस्सत्ताहमाथ	२९. अपपणीहि वज्जने
९. ध्यादीहि युत्ता	३०. पटिर्त्ताधिपटिक्खानेसु पानिना
१०. लक्खणित्थम्भूनवीच्छास्वभिना	३१. गिणे दुतिया च
११. पतिपरीहि भागे च	३२. पिन्तज्जप ततिया च
१२. अनुना	३३. पुथनानाहि
१३. सहत्थे	३४. सत्तम्याधारे
१४. हीने	३५. निमित्ते
१५. उपेन	३६. यवभावो भावलक्खण
१६. सत्तम्याधिक्ये	३७. छट्ठी चानादरे
१७. सामित्ते 'धिना	३८. यतो निद्वारणं
१८. कत्तुकरणेसु ततिया	३९. पठमात्थमत्ते
१९. सहत्थेन	४०. ग्रामन्तणे

१. द्वे + एक + अने० । ४. गति-बोध-आहार-सहत्थ-अकम्मक-भज्जादीनं पयोज्जे । ७. स्स + अ० । ८. स्स + अ० । ९. धि + आ० । १०. लक्खण-इत्थंभूत-वीच्छासु अभिना । १६. मी + आ० । २२. मी + इ० । २८. मी + अ० । ३२. ना + अ० । ३३. पुथ-नानाहि । ३९. मा + अ० ।

४१. छट्ठी सम्बन्धे	६१. अयूनं वा दीघो
४२. तुल्यत्थेन वा ततिया	६२. घण्णहादित्थे
४३. अतो योनं टाटे	६३. नरम्मदीहि
४४. नीनं वा	६४. रस्सो वा
४५. स्मास्मिन्नं	६५. घो स्संस्सास्सायंति
४६. सस्साय चतुत्थिया	६६. एकवचनयोस्वघोनं
४७. घपतेकस्मि नादीन यया	६७. गे वा
४८. स्सा वा तेत्थिस्साम्हा	६८. सिस्मि नानपुसकस्स
४९. नम्मिह नुक् द्वादीन सत्तरसन्नं	६९. गोस्सागसिहिनंसु गावगवा
५०. बहुकतिन्न	७०. सुम्मि वा
५१. ण्णं ण्णन्नं तितोज्झा	७१. गवं सेन
५२. उभिन्नं	७२. गुब्बं च नंना
५३. सुज सस्स	७३. नास्सा
५४. स्सं स्सा स्सायेस्वितरेकञ्जेति- मानभि	७४. गावुम्मिह
५५. ताय वा	७५. यं पीतो
५६. तेत्थिस्सात्तो सस्स स्साय	७६. नं भीतो
५७. रत्थादीहि टो स्मिनो	७७. योनं नोने पुमे
५८. सुहिसुभस्सो	७८. नो
५९. ल्लुपितादील्लमा सिम्मिह	७९. स्मिनो नि
६०. गे अ च	८०. अम्भवादीहि
	८१. कम्मवितो

४६. स्स + आ० । ४७. घ-यतो एकास्मि ना-आदीनं यया । ४८. ता + एता + इमा + अम्मूहि । ५०. बहु-कतिन्नं । ५४. स्सं-स्सा-स्सायेसु इतर-एक-अञ्ज-एत-इमानं इ । ५६. ता + एता + इमा० । ५७. ति + आ० । ५८. सु-हि-सु उभस्स ओ । ५९. नं + आ० । ६१. अ + इ + उ (इच्चेसं) । ६२. तो + ए । ६३. न + अ० । ६५. स्सं + स्सा + स्साय + अं + ति (इच्चेतेसु) । ६६. एकवचन-योसु अ-घ-ओनं । ६८. न + अ० । ६९. स्स + अ० । ७७. नो-ने । ८०. स्सु + आ० । ८१. स्म + आ० ।

८२. नास्सेनो	१०४. म्मिनो स्सं
८३. भक्त्वा सस्स तो	१०५. य
८४. ना स्मास्म	१०६. ति लभापरिमाय
८५. वा योनं वो पुमे	१०७. पदादीहि मि
८६. जन्त्वादितो नो च	१०८. नास्म गा
८७. कूतो	१०९. कोधादीहि
८८. लोपो' मुस्सा	११०. अस्तेन
८९. न तो सस्स	१११. मिस्सो
९०. यो लोपनिमु दीवो	११२. क्वक्के वा
९१. सुनहिसु	११३. अण्णपुत्तके
९२. पञ्चादीनं चुत्तमत्तम	११४. योन नि
९३. थ्यादो त्तुस्स	११५. भक्त्वा वा
९४. त्तस्स च ट्ठंसे	११६. लोपो
९५. योमुज्जिभस्म पुभे	११७. जन्तु हेत्तीघपोहि वा
९६. वेवोमु लुस्स	११८. ये पस्सिवण्णस्स
९७. योमिह वा क्ववि	११९. गग्गीनं
९८. पुसालपने वे वो	१२०. प्रमग्घेहि मच्चान
९९. स्मा-हि-स्सिदां म्हा-भि-मिह	१२१. एणत्थनायं
१००. सुहिस्सस्से	१२२. पुव्वस्सामादितो
१०१. सव्वादीन नमिह च	१२३. नातो' मपञ्चमिमा
१०२. सं-त्तानं	१२४. वा ततिया सत्तमीन
१०३. घ-पा सस्स स्सा वा	१२५. राजस्सि नामिह

८२. स्स+ए० । ८३. भ-ल० । ८६. त्तु+आ० । ९१. सु-नं-हिसु । ९२. पञ्च-आदीनं चुत्तमत्तं अ । ९३. यो+आ० । ९४. वा+अंसे । ९५. योसु भ-इस्स० । १००. सु+अस्स+ए । ११०. तो+ए० । १११. स्स+ओ । ११२. चि+ए० । ११३. अं+न० । ११७. जन्तु-हेतु-ई-व-येहि वा । ११८. स्स+इ० । १२२. स्मा+अ० । १२३. न+अतो+अं+अपञ्चमिया । १२५. स्स+इ ।

१२६. सु-नं-हिसु	१४६. मनादीहि स्मिसंतास्मानं सिसे
१२७. इमस्सानित्थिय टे	ओसासा
१२८. नाम्हनिमि	१४७. सतो सब्भे
१२९. सिम्हनपुसकस्साय	१४८. भवतो वा भोन्तो गयोनासे
१३०. त्यत्तेतानं तस्स सो	१४९. सिस्साग्गतो नि
१३१. मस्सामुस्स	१५०. न्तस्सं
१३२. के वा	१५१. भूतो
१३३. ततस्स नो सब्वासु	१५२. महन्तारहन्तानं टा वा
१३४. ट सस्मास्मिस्सायस्संस्सासंम्हा- म्हिस्विमस्स च	१५३. न्तुस्स
१३५. टे सिस्सिसिस्सा	१५४. अण्डं नपुंसके
१३६. डुतियस्स योस्स	१५५. हिमवतो वा ओ
१३७. एकच्च।दीहत्तो	१५६. राजादियुवादित्वा
१३८. न निस्स टा	१५७. वा म्हानड्
१३९. सव्वादीहि	१५८. योनमानो
१४०. योनमेट्	१५९. आयो नो च सखा
१४१. नाञ्चञ्च नामप्पधाना	१६०. टे स्मिनी
१४२. तत्तित्थयोगे	१६१. नोनात्तेस्वि
१४३. चत्थसमासे	१६२. स्मानसु वा
१४४. वेट्	१६३. योस्वंहिसु चारड्
१४५. पुव्वादीहि छहि	१६४. ल्तुपितादीनमसे
	१६५. नम्हि वा

१२७. स्स + अ० । १२८. नाम्हि अन-इमि (इच्चादेस्सा होन्ति) । १२९. सिम्हि अनपुंसकस्स अयं । १३०. त्य + एत० । १३१. स्स + अ० । १३४. ट स-स्ना-स्मि-स्साय-स्सं-स्सा-सं-म्हा-म्हिसु इमस्स च । १३५. स्स + इ० । १३७. दीहि + अतो । १४०. नं + एट् । १४१. न + अ० । स + अ० । १४४. वा + एट् । १४६. अन-आदीहि—

स्मि = सि । स = सो । अं = ओ । ना = सा । स्मा = सा ।

१६६. आ	१६१. वत्तहा मनन्नं नोनान
१६७. सलोपो	१६२. ब्रह्मस्मु वा
१६८. मुहिस्वारङ्	१६३. नास्मि
१६९. नञ्जा योस्वाम्	१६४. पुमकम्पश्यामद्धान वा मस्मानु च
१७०. टि कतिम्हा	१६५. युवा मस्मितो
१७१. ट पञ्चादीहि चुद्महि	१६६. नोनान्तुमा
१७२. उभगोहि टो	१६७. मुहिमु नक्
१७३. आरङ्स्मा	१६८. स्मास्म ना ब्रह्मा च
१७४. टोटे वा	१६९. इमेतानमेतान्वादेमे दुनियाय
१७५. टा नास्मान	२००. किस्म को मव्वामु
१७६. टि स्मितो	२०१. कि मन्मममु वानित्थिय
१७७. दिवादितो	२०२. किमगिमु गह नपम्को
१७८. रस्मारङ्	२०३. उमस्मिद्य वा
१७९. पिनादीनमनत्वादीनं	२०४. मम्पमाद
१८०. युवादीन मुहिस्वानङ्	२०५. मुस्मा म्हाग्मास्मा
१८१. नोनानेस्वा	२०६. नस्मि विचतुगोर्मात्थया विग्म
१८२. स्मास्मिन्न नाने	चनस्मा
१८३. योनं नोने वा	२०७. तिस्मो चनस्मो योम्हि मविभत्तीनं
१८४. इतो'ञ्जत्थे पुमे	२०८. तीणि चत्ताग्ि नपुंनके
१८५. ने स्मितो क्वचि	२०९. पुमे नयो वत्तागे
१८६. पुमा	२१०. चतुरो वा चतुस्स
१८७. नास्मि	२११. मयमस्मास्हस्म
१८८. सुम्हा च	२१२. नत्सेस्त्रस्माकं मम
१८९. गस्त	२१३. सिम्हह
१९०. सास्संसे चानङ्	२१४. तुम्हस्स तुवं त्वमस्मि च

२०१. वा + अ० । २०३. स्स + इ० । २०४. स्स + अ० । २०५. सुम्हि +
 अम्हस्स + अस्मा । २०६. म + इ० । २११. मयं + अस्मा + अम्हस्स । २१२.
 सु + अ० । २१३. स्मि + अ० । २१४. त्वं + अ० ।

२१५. तया-तयीनं त्व वा तस्स	२२९. अम्हि तं मं तवं ममं
२१६. स्माम्हि त्वम्हा	२३०. नास्मासु तया मया
२१७. न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे	२३१. तव मम तुय्हं मय्हं से
२१८. तं नम्हि	२३२. उंडाकं नम्हि
२१९. तोतातिता सस्मास्मिनासु	२३३. दुतिये योम्हि वा
२२०. टटाग्रं गे	२३४. अपादादो पदतेकवाक्ये
२२१. योम्हि द्विन्नं दुवे द्वे	२३५. यो-नं-हिस्वपञ्चम्या वो नो
२२२. दुविन्नं नम्हि वा	२३६. ते मे नासे
२२३. राजस्स रञ्ज	२३७. अन्वादेसे
२२४. नास्मासु रञ्जा	२३८. सपुब्बा पठमन्ता वा
२२५. रञ्जो रञ्जस्स राजिनो से	२३९. नचवाहाहेवयोगे
२२६. स्मिम्हि रञ्जे राजिनि	२४०. दस्सनत्थेनालोचने
२२७. समासे वा	२४१. आमन्तणं पुब्बमसन्तं व
२२८. स्मिम्हि तुम्हाम्हानं तयि	२४२. न सामञ्जवचनमेकत्थे
मयि	२४३. बहुसु वा

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) स्यादिकण्डो द्रुतियो

तंतियो कण्डो

(समालो)

- | | |
|--|---|
| १. स्यादि स्यादिनेकत्थं | ४. यावावधारणे |
| २. असंख्यं विभत्तिसम्पत्तिसमीपसा-
कल्याभावयथापच्छायुगपदत्थे | ५. पय्यपावहितिरोपुरे पच्छा वा पञ्च-
म्या |
| ३. यथा न तुल्ये | ६. समीपयामेस्वनु |

२३४. अपाद + आदो पदतो + एकवाक्ये । २३५. सु + अ० । २३९. न-च-
वा-हि-एव योगे । २४०. त्थे + अना० ।

१. ना + ए० । ४. व + अ० । ५. परि-अप-आ-वहि-तिरो-पुरे-पच्छा वा
पञ्चम्या । ६. प + आ० । सु + अ० ।

७. तिट्ठवादीनि	२६. इत्थियमन्वा
८. ओरे-परि-पटि-पारे-मज्जे हेट्ठ- द्धाथोन्तो वा छट्ठिया	२७. नदादिनां डी
९. तं नपुंसक	२८. यक्कादिद्विनी च
१०. अमादि	२९. आगामिकादीहि
११. विसेसनमेकत्थेन	३०. युवण्णंदि नी
१२. नञ्	३१. विनम्हाञ्जत्थे
१३. कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि	३२. वरण्यादयो
१४. ची क्रियत्थेहि	३३. मानुलादित्थानी भरियाय
१५. भूसनादरानादरेस्वलं सामा	३४. उपमा-मंहित-सहित-सञ्जत-सह- मथ-वान-लक्खणादिनुत्तु
१६. अञ्जे च	३५. युवा नि
१७. वानेकञ्जत्थे	३६. न्तन्तुन डीम्हि तो वा
१८. तत्थ गहेत्वा तेन गहरित्वा युद्धे सरूपं	३७. भवतां भोतां
१९. चत्थे	३८. गोस्सावद्
२०. समाहारे नपुंसक	३९. पृथुग्ग पथव-पुपवा
२१. मंख्यादि	४०. समागन्त्व
२२. ववचेकत्तञ्च छट्ठिया	४१. पागादीहि भूमिया
२३. स्थादिसु रस्सो	४२. संख्याहि
२४. घपस्सान्तस्साप्पधानस्स	४३. नदीगोशवरीनि
२५. गोस्सु	४४. अनख्येहि चाङ्गुल्या नञ्जासंख्य- त्थेसु

७. गु+आ०। ८. हेट्ठा+उद्धो+अथो+अन्तो। ११. म+ए०। १३. उच्चं+अ०। १५. भूसल+आदर+अद.दरेहु अलं, ता सम। १७. वा+अ०। २२. छि+ए०। २३. सि+आ०। २५. गोस्स+उ। २६. इत्थियं+अतो+अ०। २८. तो+इ०। ३०. इ+उ=यु। ३१. म्हा+अ०। ३२. णी+आ०। ३३. तो+इनी। ३४. लक्खणादितो+उद्धतो+अ। ३८. स्स+अ०। ४०. न्तो+अ। ४४. असंख्येहि च+अङ्गुल्या+अनञ्+असंख्यत्थेसु।

४५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या	६६. चिस्मि
४६. गोत्वचत्थे चालोपे	६७. इत्थियम्भासितपुमित्थी पुमेवेकत्थे
४७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा	६८. क्वच्चिप्पच्चये
४८. आयामे 'नुगव	६९. सब्वादयो वुत्तिमत्ते
४९. अक्खिस्सा'ञ्जत्थे	७०. जायाय जयत्थिप्पत्तिम्हि
५०. दारुम्ह्वङ्गुल्या	७१. सञ्जायमुदोदकस्स
५१. चि वीतिहारे	७२. कुम्हादिसु वा
५२. ल्त्वित्थियूहि को	७३. सोतादिसूलोपो
५३. वाञ्जतो	७४. ट नञ्स्स
५४. उत्तरपदे	७५. अन् सरे
५५. इमस्सिदं	७६. नखादयो
५६. पुं पुमस्स वा	७७. नगो वाप्पाणिनि
५७. ट न्तन्तूनं	७८. सहस्स सो'ञ्जत्थे
५८. अ	७९. सञ्जायं
५९. मनाद्यपादीनमो मये च	८०. अपच्चक्खे
६०. परस्स संख्यासु	८१. अकाले सकत्थे
६१. जने पुथस्सु	८२. गन्थान्ताधिक्ये
६२. सो छस्साहायतने वा	८३. समानस्स पक्खादिसु वा
६३. ल्तुपितादीनमारडरङ्	८४. उदरे इये
६४. विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे	८५. रीरिक्खकेसु
६५. पुत्ते	८६. सब्बादीनमा

४५. दीघ + अहो + वस्स + एकदेसेहि च रत्या, ४६. गोतो + अचत्थे + च + अलोपे । ४७. रत्तिन्दिव-दारगव-चतुरस्सा । ५०. म्हि + अ० । ५२. ल्तु + इत्थि इ + उ० । ५३. वा + अ० । ५५. स्स + इदं । ५९. मनादि + अपादीनं + ओ मये च । ६१. स्स + उ । ६२. स्स + अ० । ६३. नं + आ० । ६४. नं + आ । ६७. इत्थियं भासितपुमा इत्थी पुमा इव एकत्थे । ६८. चि + प० = चिप्प० । ७०. जयं पत्तिम्हि । ७१. यं + उ० । ७३. सोतादिसु उ-लोपो । ७७. वा + अ० । ८२. न्ते + आ० । ८६. नं + आ ।

८७. न्तकिमिमान टाकीटी	९९. वीमनिदमेसु पञ्चम्म पण्णपन्ना
८८. तुम्हाम्हांतं तामेकस्मि	१००. चतुस्स चुचो दमे
८९. तं ममञ्जत्र	१०१. छस्स सो
९०. वेतस्सेट्	१०२. एकट्टानमा
९१. विधादिमु द्विस्स दु	१०३. र मख्यातो वा
९२. दि गुणादिमु	१०४. छतीहि लो च
९३. तीस्व	१०५. चतुत्थतनियानमड्डुड्डतिया
९४. आ मंख्यायासतादो' नञ्जत्थे	१०६. दुतियस्स सह दियड्ड-दिवड्डा
९५. तिस्से	१०७. मरे कद् कुस्सुत्तरन्थे
९६. चत्तालीसादो वा	१०८. काप्पत्थे
९७. द्विस्सा च	१०९. पुरिसे वा
९८. वा चत्तालीसादो	११०. पुव्वापरज्जमायमज्जेहाहस्सन्हो

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) ममामत्रण्डो तनियो

चतुत्थो-करण्डो

(णादि)

१. णो वापञ्चे	५. आ णि
२. वच्छादितो णानणायणा	६. राजतो ञ्जो जानियं
३. कत्तिका-विधवादीहि णेय्य-णेरा	७. खत्ता यिया
४. ण्य दिच्चादीहि	८. मनुतो स्ससण्

८७. न्त-किं-इमानं टा-की-टी । ८८. तुम्ह-अम्हांतं ता-मा एकस्मि ।
 ८९. तं मं अञ्जत्र । ९०. वा एतस्स एट् । ९३. तीसु अ । ९५. तिस्स ए । ९७. द्विस्स
 आ च । ९८. वा अचत्तालीसादो । १०२. नं आ । १०५. नं अड्डा उड्डतिया ।
 १०७. स्स + उ । १०८. का अप्पत्थे (= अत्पार्थे) । ११०. पुव्व-अपर-अज्ज-
 सायं-मज्जेहि अहस्स अन्हो ।

१. वा + अ० । ७. य-इया । ८. स्स, सण् ।

९. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्जे च णो	दिब्बति खणति तरति चरति
१०. प्य कुरुसिवीहि	वहति जीवति
११. ण रागा तेन रत्तं	३०. तस्स सवत्तति
१२. नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले	३१. ततो सम्भूतमागत
१३. सास्स देवता पुण्णमासी	३२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो
१४. तमधीते त जानाति कणिका च	३३. तस्सिद
१५. तस्स विसये देसे	३४. णो
१६. निवासे तन्नामे	३५. गवादीहि यो
१७. अदूरभवे	३६. पितितो भानरि रेय्यण्
१८. तेन निब्बत्ते	३७. मातितो च भगिनिघं छो
१९. तमिधत्थि	३८. मातापितुस्वामहो
२०. तत्र भवे	३९. हिते रेय्यण्
२१. अज्जादीहि ततो	४०. निन्दा ज्ञातप्पपटिभागरस्सदया
२२. पुरातो णो च	सञ्जामु को
२३. अमात्वच्चो	४१. तमस्स परिमाण णिको च
२४. मज्झादित्थिमो	४२. यतेतेहि त्तको
२५. कण्ण्येय्येय्यकयिया	४३. सब्वा चावन्तु
२६. णिको	४४. किम्हा रति-रीव-रीवतक-रित्तका
२७. तमस्स सिप्पं सीलं पय्यं पहरणं	४५. संजातं तारकादित्थीतो
पयोजनं	४६. माने मत्तो
२८. तं हन्तरहति गच्छमुच्छति चरति	४७. तग्घो चुद्धं
२९. तेन कत कीतं बद्धमभिसंखतं	४८. णो च पुरिसा
संसट्ठं हतं हन्ति जितं जयति	४९. अयुभद्वितीहंसे

१२. न + इ० । १४. क, णिका । १९. तं इध अत्थि । २३. अमातो अच्चो ।
 २४. तो + इ० । २५. कण्-णेय्य-णेय्यक-य + इया । २८. न्ति + अर० । ति +
 उ० । ३३. स्स + इ० । ३८. सु + आ० । ४०. निन्दा-अज्ञात-अप्प-पटिभाग-
 रस्स-दया-सञ्जामु को । ४२. यतो एतेहि त्तको । ४५. दितो-इतो । ४७. च उद्धं ।
 ४९. अयो उभ-द्वि-तीहि अंसे ।

५०. संख्याय सञ्चुतीसासदसन्ताधि- कार्त्वि सनसहस्से डो	७०. इयो द्विने ७१. चक्खादितो स्पो
५१. तस्स पूरणेकादसादितो वा	७२. ण्यो तत्थ माधु
५२. म पञ्चादिकनीहि	७३. कम्मा नियञ्जा
५३. सतादीनमि च	७४. कथादित्विको
५४ छा ढु-ढुमा	७५. पथादीहि णेय्यो
५५. एका काव्यसहाये	७६. दक्खिणायारहे
५६ वच्छादीहि तनुत्ते तरो	७७. रायो तुमन्ता
५७ किम्हा निद्वारणे रतर-रतमा	७८. तमेत्थस्सन्थीति मन्तु
५८. तेन दत्ते लिया	७९. वन्त्तवण्णा
५९ तस्स भावकम्मेषु त्त-त्तात्तन-ण्य- ण्येय्य-णिय-णिया	८०. दण्डादित्विक ई वा
६०. व्य वट्टदासा वा	८१. तपादीहि स्मी
६१. नण् युवा खो च वस्स	८२. मुग्धादिनो रो
६२. अण्वादित्विमो	८३. तुण्डयादीहि भो
६३. भावा तेन निब्बत्ते	८४. सट्ठादित्व
६४. तरतमिस्सिकियिट्ठा' तिसये	८५. णो तपा
६५. तन्निस्सिते ल्लो	८६. आलवभिज्जभादीहि
६६. तस्स विकारावयवेषु ण-णिक- ण्येय्य-मया	८७. पिच्छादित्विलो
६७. जतुतो स्सण् वा	८८. सीलादितो वो
६८. समूहे कण्ण-णिका	८९. मायामेधाहि वी
६९. जनादीहि ता	९०. सिस्सरे आम्युवार्मा
	९१. लक्ख्या णो अ च
	९२. अज्जा नो कल्याणे

५०. शति-उति-ईस-आस-दसन्ताधिकार्त्वि । ५३. नं + इ । ५५. एका क-आकी असहाये । ५८. ल-इया । ६२. अणु-आदितो इमो । ६४. तर- तम-इस्सिक-इय-इट्ठा अतिसये । ७३. निय, जा । ७४. दितो-इको । ७८. तं एत्थ अस्स अत्थि, इति मन्तु । ७९. न्तु + अ० । ८०. तो + इ० । ८४. तो अ । ८६. लु + अ० । ८७. तो + इ० । ९०. आमी-उवासी ।

६३. सो लोमा	११४. वारसख्याय क्वत्तु
६४. इमिया	११५. कतिम्हा
६५. तो पच्चम्या	११६. बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं
६६. इतोतेत्तो कुतो	११७. सकिं वा
६७. अभ्यादीहि	११८. सो वीच्छाप्यकारेसु
६८. आद्यादीहि	११९. अभूततब्भावे करासभूयोगे वि-
६९. सब्वादितो सत्तम्या त्र-त्था	कारा ची
१००. कत्थेत्थकुत्रात्र क्वेहिध	१२०. दिस्सन्तञ्जे'पि पच्चया
१०१. धि सब्वा वा	१२१. अञ्जस्मिं
१०२. या हिं	१२२. सकत्थे
१०३. ता हं च	१२३. लोपो
१०४. कुहिं कहं	१२४. सरानमादिस्सायुवणस्साएओ
१०५. सब्बेकञ्जयत्तेहिं काले दा	णानुबन्धे
१०६. कदा कुदा सदाधुनेदानि	१२५. संयोगे क्वचिं
१०७. अज्जसज्जवपरज्ज्वेतरहिं करहा	१२६. मज्जे
१०८. सब्वादीहिं पकारे था	१२७. कोसज्जाज्जवपारिसज्जसुहज्ज
१०९. कथमित्थं	मह्वारिस्सासभाजञ्जथेय्यवाहु-
११०. धा संख्याहिं	सच्चा
१११. वेकाज्मं	१२८. मनादीनं सक्
११२. द्वितीहेधा	१२९. उवण्णस्सावड् सरे
११३. तव्वति जातियो	१३०. यम्हि गोस्स च

६६. इतो, अतो, एतो, कुतो । १००. कत्थ, एत्थ, कुत्र, अत्र, क्व, इह, इध ।
 १०५. सब्ब-एक-अञ्ज-य-स० । १०६. सदा अधुना इदानि । १०७. अज्ज, सज्जु,
 अपरज्जु, एतरहिं, करहा । १०९. थं + इ० । १११. वा एका ज्मं । ११२. हि +
 ए० । ११९. अभूत-तब्भावे कर-अस-भू-योगे विकारा ची । १२०. न्ति + अ० ।
 १२४. सरानं आदिस्स अ-इ-उवण्णस्स आ-ए-ओ ष-अनुबन्धे । १२७. कोसज्ज-
 अज्जव-पारिसज्ज-सुहज्ज-मह्व-आरिस्स-आसभ-आजञ्ज-थेय्य-वाहु-सच्चा । १२९.
 स्स + अ० ।

१३१. लोपो वृष्णवृणानं	१३७. कण्कताप्ययवान्
१३२. रानुवन्वे'न्त सरादिस्स	१३८. लोपो वीसन्तु-वन्तन्
१३३. किलमहत्तमिमे कस्महा	१३९. डे भनित्स्म तिस्र
१३४. आयुस्सायस्सन्तुम्हि	१४०. एतम्मद् चके
१३५. जो बुद्धस्सियिद्धेसु	१४१. णिकस्सियो वा
१३६. बाळ्हन्तिकपमत्थान साधने दसा	१४२. अधात्तुम्ह के 'स्यदिनो घे'स्सि

इति (मोग्गलाने व्याकरणे) णादित्ठेणो वत्तुत्थो

पञ्चमो कण्डो

(खादि)

१. तिज-आनेहि ज-मा नामा-वी मसागु	१०. गद्वार्थीणि करीणि
२. किता तिकिच्छा-अगथेगु छो	११. नमोत्तरमा
३. निन्दाय गुप-अथा वस्स भो ज	१२. मन्नादीहार्णि
४. तुंस्मा लोपो चिच्छाय ते	१४. क्रियत्था
५. ईयो कम्मा	१५. चुगदित्तो णि
६. उपभासात्तारे	१६. पथोजकव्यापारे णापि च
७. आधारा	१७. क्यो भावकम्मेस्वपरोक्खेसु मान- न्तत्यादिमु
८. कत्तुतायो	१८. कत्तरि लो

१३१. अवृष्ण-इवृणानं । १३३. किल-महत्तं इमे कप्-महा । १३४. स्स +
आ० । १३५. बुद्धस्स इय-इट्ठसु । १३६. बाळ्हन्तिक-पमत्थानं साध-नेद-
सा । १३७. कण-कता अप्ययवानं । १४१. स्स + इ० । १४२. घे अस्स इ ।

पञ्चमो कण्डो

४. च + इ० । ६. ना + आ० । ८. तो + आयो । ९. वी + अत्ये । ११.
नमोत्तो अस्स ओ । १७. क्यो भाव-कम्मेसु अपरोक्खेसु मान-न्त-ति आदिमु ।

१९. सं च रुधादीनं	४१. क्वचण्
२०. णिणाप्यापीहि वा	४२. गमा रू
२१. दिवादीहि यक्	४३. समानञ्जभवन्तयादितुपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका
२२. तुदादीहि को	४४. भावकारकेस्सच्चण्-घका
२३. ज्यादीहि क्णा	४५. दाधात्वि
२४. कथादीहि कणा	४६. वमादीहथु
२५. स्नादीहि क्णो	४७. क्वि
२६. तनादिस्वो	४८. अनो
२७. भावकम्मेसु तब्बानीया	४९. इत्थियमणकित्तकयक्या च
२८. घ्यण्	५०. जा-हाहि नि
२९. आस्से च	५१. करा रिरियो
३०. वदादीहि यो	५२. इ-कि-ती सरूपे
३१. किच्च-घच्च-भच्च-भच्च-लेय्या	५३. सीलाभिक्खञ्जावस्सकेसुणी
३२. गुहादीहि यक्	५४. थावरित्तरभङ्गुरभिदुरभासुर भस्सरा
३३. कत्तरि ल्तु-णका	५५. कत्तरि भूते क्तवन्तु-क्तावी
३४. आवी	५६. क्तो भाव-कम्मेसु
३५. आसिसायमको	५७. कत्तरि चारम्भे
३६. करा णनो	५८. ठास-वस-सिलिस-सी-रुह-जर- जनीहि
३७. हातो वीहि-कालेसु	५९. गमनत्थाकम्मकाधारे च
३८. विदा कू	
३९. वितो जातो	
४०. कम्मा	

२०. णि-णापि-आपीहि वा । २३. जि+आ० । २४. की+आ० । २५. सु+आ० । २६. तो+ओ । २९. आस्स+ए । ३०. द+आ० । ३२. ह+आ० । ३५. यं+अको । ४१. क्वचि अण् । ४३. समान-अञ्ज-भवन्त-य आदितो उपमाना दिसा कम्मे री-रिक्ख-का । ४४. सु+अ० । ४५. दा-धातो इ । ४६. वम-आदीहि अथु । ४९. इत्थियं अ, ण, कित्त, क, यक्, या च । ५३. ल+आ० । ञ्ज+आ० । ५४. थावर-इत्तर-भङ्गुर-भिदुर-भासुर-भस्सरा । ५७. च+आ० ।

६०. आहारत्था	८०. मानस्स वी परस्स च म
६१. तुं-ताये-त्तवे भावे भविस्सति क्रियाय तदत्थाय	८१. क्तिन्स्सनात्मसये ति वा
६२. पटिसेधे' लंखलूनं तून-वत्त्वा-नवत्त्वा वा	८२. युक्कणानमे ओप्पच्चवे
६३. पुब्बेककत्तुकानं	८३. लट्ठस्सुणन्तस्स
६४. न्तो कत्तरि वत्तमाने	८४. अस्सा णानुबन्धे
६५. मानो	८५. न ते कानुबन्धनागमेसु
६६. भाव-कम्मेसु	८६. वा व्वन्नि
६७. ते स्सपुब्बानागते	८७. अञ्जन्नापि
६८. ष्वादयो	८८. प्ये त्तिस्सा
६९. खच्छसानमेकस्सरोदि द्वे	८९. एओनमयवा सरे
७०. परोक्कवायञ्च	९०. आयावा णानुबन्धे
७१. आदिस्सा सारा	९१. आस्साणापिम्हि युक्
७२. न पुन	९२. पदादीन व्वन्नि
७३. यथिट्ठं स्यादिनो	९३. मं वा स्यादीन
७४. रस्सो पुव्वस्स	९४. निव्वाम्हं लोपो' न्तव्यञ्जनस्स
७५. लोपो' नादिव्यञ्जनस्स	९५. पररूपमयकारे व्यञ्जने
७६. ख-छ-सेस्वस्सि	९६. मनानं निग्गहीतं
७७. गुपिस्सुस्स	९७. न ब्रूस्सो
७८. चतुत्थट्ठितियान ततियपठमा	९८. कगा चजानं णानुबन्धे
७९. कवग्ग-हानं चवग्ग-जा	९९. हनस्स घातो णानुबन्धे
	१००. क्किव्वाम्हि घो परिपच्च समोहि
	१०१. परस्स थं से

६७. ते (=न्तमाना) सपुब्बा अवागते । ६८. णु+आ० । ६९. ख-छ-सानं एक-स्सरोदि द्वे । ७३. यथा+इट्ठं । ७६. ख-छ-सेसु अस्स इ । ७७. स्स+उ० । ८१. स्स+आ० । ८२. इ+उ=यु । नं ए-ओ । ८३. स्स+उ० । ८४. अस्स आ । ८५. न ते (ए-ओ-आ) क+अनुबन्ध-न+आगमेसु । ८८. त्तिस्स आ । ८९. ए-ओनं अय-अवा सरे । ९०. आय-आवा णानुबन्धे । ९१. स्स+आ० । ९६. म-नानं । ९७. ब्रूस्स+ओ ।

१०२. जि-हरानं गिं	१२३. जर-सदालमीम् वा
१०३. धास्स हो	१२४. दिसस्स पस्स दस्स दस् द दक्खा
१०४. णिम्हि दीघो दुसस्स	१२५. समाना रो री-रिक्ख-केसु
१०५. गुहिस्स सरे	१२६. दहस्स दस्स डो
१०६. मुह-बहानञ्च ते कानुबन्धे'त्वे	१२७. अनघण्स्वापरीहि लो
१०७. वहस्सुस्स	१२८. अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू
१०८. धास्स हि	१२९. अत्रास्सात्रादिसु
१०९. गमादि-रानं लोपो'न्तस्स	१३०. न्तमानान्तियियुस्वादि लोपो
११०. वचादीनं वस्सुट् वा	१३१. पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि
१११. अस्सु	१३२. दास्सियड्
११२. वद्धस्स वा	१३३. करोतिस्स खो
११३. यजस्स यस्स टियी	१३४. पुरस्सा
११४. ठास्सि	१३५. नितो कमस्स
११५. गा-पानमी	१३६. युवण्णानमियडुवड् सरे
११६. जनिस्सा	१३७. अञ्जादिस्सास्सी क्ये
११७. सासस्स सिस् वा	१३८. तनस्सा वा
११८. करस्सा तवे	१३९. दीघो सरस्स
११९. तुं-तून-तब्बेषु वा	१४०. सानन्तरस्स तस्स डो
१२०. आस्स ने जा	१४१. कसस्सिम् च वा
१२१. सकापानं कुक्कु णे	१४२. धस्तो-त्रस्ता
१२२. नितो चिस्स छो	१४३. पुच्छादितो

१०६. ते = तकारे । १०७. स्स + उ० । १०९. रानं = रकारन्तानं ।
 ११०. स्स + उट् । १११. अस्स उ । ११४. ठास्स इ । ११५. गा-पानं ई ।
 ११६. जनिस्स आ । ११८. स्स + आ । १२१. क + आ० । १२३. नं ईम् ।
 १२७. अन-अणसु आ-परीहि लो । १२८. ति + आ० । सुव-अ० । १२९. अ-आ-
 स्सा आदिसु । १३०. न्त-मान-अन्त-इय-इयंसु आदि लोपो । १३२. स्स + इ० ।
 १३६. इ-उवण्णानं इयड्-उवड् सरे । १३७. अ-जादिस्स आस्स ई क्ये ।
 १३८. स्स + आ । १४०. स + अ० । १४१. स्स + इ० ।

१४४. सास-वस-मम-गमा थो	१६८. मानमन मस्त
१४५. धो धहभेहि	१६९. जिलस्मे
१४६. दहा ढो	१६८. एधो वा त्वास्म ममाने
१४७. बहस्सुम् च	१६५. तु वाना
१४८. रुहादीहि हो ळ च	१६६. टना रच्चो
१४९. मुहा वा	१६७. सामाधिकरा चचरिच्चा
१५०. भिदादितो नो वन-वनवन्दून	१६८. उतो च्चो
१५१. दात्वित्तो	१६९. दिसा वानवा स् च
१५२. किरादीहि णो	१७०. त्रि व्यञ्जनस्म
१५३. तरादीहि रिण्णो	१७१. रा नस्स णो
१५४. गो भञ्जादीहि	१७२. न न्तमानन्वादीन
१५५. सुमा खो	१७३. गमयभिन्नागदिसान वा च्छड्
१५६. पचा को	१७४. जन्-गराणस्तिप्
१५७. सुजा वा	१७५. टा-नान तिठ्-गि वा
१५८. लोपो वट्ठा विनस्स	१७६. गम-यम-दान प्रम्म-वज्ज-वज्जा
१५९. क्विस्स	१७७. करस्स गोम्म कुट्ठ-कुर-कथिरा
१६०. णिणापीनं तेमु	१७८. गहस्स धेप्पो
१६१. क्वचि विकरणान	१७९. णो निग्गहीनस्स

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) खादिकण्डो पञ्चमो

१४५. ध-ह-भेहि = धकारन्त-हकारन्त-भकारन्तेहि क्रिप्रथेहि । १४७. स्स + उ० । १५१. दातो इन्नो । १६३. जि-लस्स ए । १६७. स-अस-अधिकरा च-च-रिच्चा । १६९. दिसा वान-वा स् च । १७३. गम-यम-इस-आस-दिसानं वा च्छड् । १७४. णं + ई० ।

छट्टो करडो

(त्यादि)

- | | |
|--|--|
| १. वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म,
ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे | १२. सम्भावने वा |
| २. भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि
स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते,
स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे | १३. मायोगे ई आ आदि |
| ३. नामे गरहाविम्हयेसु | १४. पुब्बपरच्छक्कानमेकानेकेसु तुम्हा-
म्हसेसेसु द्वे द्वे मच्चिभूमुत्तमपठमा |
| ४. भूते ई उं, ओ त्थ, इ म्हा, आ ऊ,
से व्हं, अ म्हे | १५. आ-ईस्सादिस्वब्ब वा |
| ५. अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा,
त्थ त्थुं, से व्हं, इ म्हेसे | १६. अआदिस्वाहो ब्रूस्स |
| ६. परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह, त्थ
रे, त्थो व्हो, इ म्हे | १७. भूस्स वुक् |
| ७. एय्यादो वातिपत्तियं स्सा स्संसु,
स्से स्सथ, स्सं स्सम्हा, स्सथ स्सिसु,
स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हेसे | १८. पुब्बस्स अ |
| ८. हेतुफलेस्वेय्य एय्युं, एय्यासि एय्या-
थ, एय्यामि एय्याम, एथ एरं,
एथो एय्यव्हो, एय्यं एय्याम्हे | १९. उस्संस्वाहा वा |
| ९. पञ्चपत्थनाविधिसु | २०. त्यन्तीनं टटू |
| १०. तु अन्तु, हि थ, मि म,; तं अन्तं,
स्सु व्हो, ए आमसे | २१. ई-आदो वचस्सोम् |
| ११. सत्यरहेस्वेय्यादि | २२. दास्स दं वा मि-मेस्वद्वित्ते |
| | २३. करस्स सोस्स क् |
| | २४. का ई आदिसु |
| | २५. हास्स चाहड् स्सेन |
| | २६. लभ-वस-च्छिद-भिद-खदानं च्छड् |
| | २७. मुज-भुच-वच-विसानं क्खड् |
| | २८. आ ई आदिसु हरस्सा |
| | २९. गमिस्स |
| | ३०. डंसस्स च्छड् |
| | ३१. हूस्स हे-हेहि-होहि स्सच्चादो |
| | ३२. णा-नासु रस्सो |

११. सत्ति-अरहेसु एय्य आदि । १४. नं+ए० । म्हे+अ० । म+उ० ।
१५. सु+अ० । १६. सु+आ० । १९. उस्स अंसु आहा वा । २०. ति-अन्तीनं
ट-टू । २१. स्स+ओ । २८. स्स+आ । ३१. स्सति+आदो ।

३३. आ ई ऊ म्हा स्ता स्सम्हानं वा	५५. एमु स्
३४. कुस-रुहेहीस्स छि	५६. ई आदो दीघो
३५. अ ई स्पादीन व्यञ्जनस्सिञ्	५७. हिमिमेस्सव्व
३६. ब्रूतो तिससोञ्	५८. सता णास्स च ई आदो
३७. क्यस्स	५९. स्ने वा
३८. एय्याथस्से अ आ ई थानं ओ अ अं त्थ त्थो व्होक्	६०. तेमु सुतो कणोकणान रोद्
३९. उं स्सि स्वंसु	६१. आस्स ननास्स नायो निम्हि
४०. एओत्ता सुं	६२. जाम्हि जं
४१. हूतो रेसुं	६३. एय्यस्सियाजा वा
४२. ओस्स अ इ त्थ त्थो	६४. ई सच्च्चादिनु कनालोपो
४३. सि	६५. स्मस्स हि कम्मो
४४. दीघा ईस्स	६६. एनिस्सा
४५. म्हात्थानमुञ्	६७. हना छेत्ता
४६. इस्स च मिञ्	६८. हातो ह
४७. एय्यु स्सुं	६९. क्कण्यहेहि होहीहि लोपो
४८. हिस्सतो लोपो	७०. कथिण्यस्सेव्वुमादीनं
४९. क्यत्स स्ने	७१. टा
५०. अत्थित्थ्यादिच्छत्त स-सु-मसथ सं- साम	७२. एअस्सा
५१. आदिद्विज्जमिया इयुं	७३. लभा छट्ठं थथा वा
५२. तस्स थो	७४. गुण्णुव्वा रम्मा रे न्ते न्ती न
५३. सि-हिस्सद्	७५. एय्येय्वानेय्यत्त टे
५४. मि-मानं वा म्हि-म्हा च	७६. ओ-अिकरणस्सु णरच्छत्रके
	७७. पुट्ठच्छत्रके वा क्वचि
	७८. एय्याभस्सो सु च

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) त्यादिकण्डोः छट्ठो

३४. कुस-रुहेहि ईस्स छि । ३५. स्स + इञ् । ३६. स्स + ईञ् । ५०. अत्थितो +
एय्यादि० । ५१. अं + इ० । ५३. सु + अद् । ५७. सु + अ० । ७६. स्स + उ ।
७८. एय्यामस्स एमु च ।

दूसरा परिशिष्ट

मोगगल्लान धातु-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

दूसरा परिशिष्ट

मोगगल्लान-धातुपाठो

अ-अन्तो उच्चारणत्थो, सेसा धात्वत्था

संख्या

- २५ अग्घ (भू) अग्घने=योग्य होना, बराबरी करना, कीमत का होना
- ३ अंक (भू) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना
- ४५१ अङ्क (चु) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना
- २२ अङ्ग (भू) गमनत्थे=जाने के अर्थ में
- ४५६ अच्च (चु) पूजायं=पूजा करना
- ३८ अच्च (भू) पूजायं=पूजा करना
- ४८ अज (भू) गमने^१=जाना
- ६१ अज्ज (भू) गमने=जाना
- ३७ अच्च (भू) गमने=जाना
- ४६६ अच्च (चु) पूजायं=पूजा करना
- ४३ अञ्छ (भू) आयामे=खींचना । निकालना
- ५८ अञ्ज (भू) व्यक्ति मक्खन०=व्यक्त करना, मालिश करना, जाना
- ५८ अञ्ज (भू) व्यक्तिमक्खनगतिकन्तिसु=व्यवत करना, मालिश करना, जाना, चमकना

१. अज ('सम' पूर्वक) + य = समज्जा । ५.४६

संख्या

- ४६४ अज्ज (जु) मज्जने = माफ करना
 ७० अट (भू) गमनत्थे = घूमना
 ६६ अण (भू) सदत्थे = शब्द करना
 ४६७ अत्थ (चु) याचने^३ = माँगना
 १३० अछ (भू) भक्खने = खाना
 १३२ अछ (भू) गतियाचनेसु = जाना; माँगना
 १४६ अन (भू) पाणने = जीना, रक्षा करना
 ११७ अन्द (भू) वल्धने = बान्धना
 १६२ अम (भू) गमने = जाना
 १६८ अम्ब (भू) सहे = शब्द करना
 १६५ अय (भू) गमनत्थे = जाना
 २१२ अर (भू) गमने^३ = जाना
 २६८ अरह (भू) पूजायं = पूजा करना
 २३० अरव (भू) रक्खणे = रक्षा करना
 ४२२ अस (जि) भोजने = खाना
 ३७३ अस (दि) क्खेपने = फेकना
 ३०३ अस (भू) भुवि^४ = होना

२. अत्थ + अपि = अत्थापेति । ५.१३

३. ० + अन = अरण । ५.१७१

४. विधि ६.५०—

अस्स अस्तु

अस्स अस्सथ

अस्सं अस्साम

० + एय्य = सिया । ० + एय्यं = सियुं । ६.५१

० + ति = अत्थि । ० + तु = अत्थु । ६.५२

० + सि = असि । ० + हि = अहि । ६.५३

संख्या

- २३७ अस (भ) अदने^१ = खाना
 ४८८ आण (चु) पेसने = भोजना, आज्ञा देना
 ४२७ आप (की) पापुणने^१ = पाना
 ४२४ आप (त) पापुणने = पाना

० + मि = अमिह । ० + म = अमह । ६.५४

० + मि = अस्मि । ० + म = अस्म । ६.५५

भूत ६.५६—

आसि आसु

आसि आसित्थ

आसि आसिम्हा

० + अ (परोक्खे) = अब्भूव

आ (अनज्जतने) = अभवा

स्सा = अभविस्सा

स्सति = भविस्सति । ५.१२६.

० + न्त = सन्तो

मान = समानो

न्ति = सन्ति

न्तु = सन्तु

एय्य = सिया

एय्युं = सियुं

५. ० + स, ति = असिसिसति । ५.७१:७५

० + षत्त = आसितं । ५.५६

६. ० (‘प’ पूर्वक) + न्त = पापुणन्तो

ति = पापुणोति; पापेति । ५.१२१

तब्ब = पापुणितब्बं

तुं = पापुणित्तुं । ५.८५

संख्या

- २४० आस (भू) उपवेसने^० = वैठना
 २८८ इ (भू) अज्झने गति कन्तिमु^० = पढ़ना । जाना
 १३ इक्ख (भू) दस्सने = देखना
 २२ इज्झ (भू) गमनत्थे = जाना
 ३४५ इध (दि) सेसिद्धियं = बढ़ना । उत्तति करना
 ११८ इन्द (भू) परमिस्सरिये = मालिक बनना । ऐश्वर्य-लाभ करना
 १४७ इन्ध (भू) दित्थियं = प्रदीप्त होना
 २३८ इस (भू) इच्छायं^० = चाहना ।
 २५२ इस्स (भू) इस्सायं = डाह करना
 ५१९ ईर (चु) खेपे = फेकना । प्रेरणा करना
 २४ ईसा (दि) इस्सगिये = ऐश्वर्य करना

७. ० ('उप' पूर्वक) -|-अन = उपासना । ५.४९
 +क्त (भाव; कर्म) = उपाक्षितो । ५.५८
 +क्त = आसितं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५.५९
 +ति = अच्छति
 न्त = अच्छन्तो
 मान = अच्छमानो । ५.१७३
८. ० सीले; निपात = इत्वणे । ५.५४
 ० ('अधि' पूर्वक) +प्य = अधिच्च
 त्वा = अधीधित्वा
 ० ('सम' पूर्वक) +प्य = समेच्च
 त्वा = समेत्वा । ५.१६८
 ० +स्सति = एहिति; एस्सति । ६.६६
९. ० +तब्ब = एसितब्बं । ५.८३
 +ति = इच्छति
 न्त = इच्छन्तो

संख्या

- २८२ ईह (भू) घट्टने^{००} = चेष्टा करना
 ४२ उञ्छ (भू) उञ्छे = कर्णों को चुनना
 १९८ उसूय (भू) दोसाविकरणे = दोष का आरोप करना
 ५४६ ऊह (चु) विम्हापने = ठगना
 २८३ ऊह (भू) वितक्के = वितर्क करना
 ६८ एज (भू) कम्पने = कांपना
 १७७ उद्रम (भू) अद्रमे = खाना
 १२१ उन्द (भू) किलेदने = भिगोना
 ६९ उञ्छ (भू) उत्सगे = छोड़ना
 १४० एध (भू) वुद्धियं = वृद्धि करना
 २३९ एस (भू) मग्गने = खोजना
 १७ कड्ख (भू) इच्छाय = चाहना
 ७७ कट (भू) मद्दने = चूर चूर करना
 ९२ कड्ढ (भू) कड्ढने = निकालना
 ९६ कण (भू) सद्दत्थे = शब्द करना
 ९५ कणू (भू) निमीलने = मूँदना
 ४७७ कण्ठ (चु) सोके = शोक करना
 ८४ कण्ड (भू) भेदने = तोड़ना
 ४७८ कण्ड (चु) भेदने = तोड़ना
 २३३ कण्डुव (भू) कण्डुवने = खुजलाना
 ४८७ कण्ण (चु) सवने = सुनना
 ३१० क्त (र) छेदने = छेदना । काटना
 १०४ कत्थ (भू) सिलाघायं = प्रशंसा करना
 ४८६ कथ (चु) वाक्यापवन्धे = कहना

 मान = इच्छमानो । ५.१७३

१०. ० + अ = ईहा । ५.४९

संख्या

- १५० कन (भू) द्विनिगनिकन्तिमु = चमकना; जाना
 ११४ कन्द (भू) वहानरोदनेमु = पुकारना; रोना
 १६२ कप्प (भू) सामस्थिये = समर्थ होना
 ५१३ कप्प (चु) वितक्के = वितर्क करना
 १८२ कम (भू) पदविक्षेपे = टहलना
 ५१६ कम (चु) इच्छायं^{११} = चाहना
 १५६ कम्प (भू) चलने = काँपना
 १६६ कम्ब (भू) संवरणे = आच्छादित करना
 ४४३ कर (त) करणे^{१२} = करना

११.० +ति (पुनः पुनः) = चङ्कमति । ५.७०

○ ('नि' पूर्वक) +ति = निक्खमति । ५.१३५

१२.० +णि = कारेति (प्रेरणार्थक)

णापि = कारापेति (प्रेरणार्थक) । ५.१६ : १६०

○ +णि = कारेन्तो; कारयन्तो

णापि = कारापेन्तो; कारापयन्तो; कारापेति; कारापयति । ५.२०

○ +तब्ब, अनीय = कत्तब्बं । करणीयं । ५.२७

○ +ध्यण् = कारियं । ५.२८

○ +य = किच्चं । ५.३१

○ +णन = कारणं (कत्तरि) । ५.३६

○ +अण = कुम्हकारो । ५.४१

○ +अ = करो (भाव) । ५.४४

○ +अ (कर्म) = ईसक्करो; दुक्करो; सुक्करो

○ +ण = कारा

अन = कारणा । ५.४६

○ +रिरिय = किरिया । ५.५१

○ +णी (सीले) = अवस्सकारी । ५.५३

संख्या

५२६ कल (चु) संख्याने = गिनना

- + क्त = कतो । ५.५६
- ('प' पूर्वक) + क्त = पकतो (क्रियारम्भ स्त्रे) । ५.५७
- + तुं, ताये, तवे = कातुं, कत्ताये, कातवे । ५.६१
- + णक = कारक । ५.८४
- + क्त = कतो । ५.१०६
- + तवे = कातवे । ५.११८
- + तुं = कातुं, क्तुं
तून = कातून, कत्तून
तव्वं = कातव्वं, कत्तव्वं
- ('सं' पूर्वक) + यण = सङ्खारो (कर्म) सङ्खरीयति । ५.१३३
- ('पुर' पूर्वक) निपात = पुरक्खत्वा; पुरेक्खारो । ५.१३४
- + मान = कारणो
- ('स', 'अस', 'अधि' पूर्वक) + प्य = सक्कच्च, असक्कच्च, अधि-
किच्च । ५.१६७
- + स्त = करोन्तो
मान = कुहमानो
न्ति = करोन्ति । ५.१७२
- + ति = कुब्बति, कयिरति, करोति
न्त = कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो
मान = कुब्बमानो, कयिरमानो, कारणो
ते = कुब्बते, कुस्ते, कयिरते । ५.१७७
- + मि = कुम्मि, करोमि
म = कुम्म, करोम । ६.२३
- + ई = अकासि, अकरि
उं = अकंसु, अकारिसु

संख्या

- २४५ कस (भू) गतिहिंसा विनेवनेमुं^१ =जाना । माग्ना । जंतना
 ३२२ का (दि) मदे =घट्ट करणा
 २५५ कास (भू) दित्तिथि =शोभित होना
 ३५ किञ्च (भू) मद्दने =नोडना । चुर चुर कर देना
 १०० कित (भ) निवासे^२ =रहना

आ =अका, अकरा । ६.२४

० + स्सति =काहति, करिस्सति

स्सा =अकाहा; अकरिस्सा । ६.२६

० + ई =अकासि, अका । ६.४४

० + ईं =अकारिं, अकरिं

इम्हा = अकासिम्हा, अकरिम्हा

त्थ = अकासित्थ, अकरित्थ । ६.४६

कर (=कथिर) -+ एय्यं - कथिसं

एय्यासि =कथिरासि

एय्याथ =कथिराथ

एय्यासि =कथिरासि

एय्याम =कथिराम । ६.७०

० + एय्य =कथिरा । ६.७१

० + एथ =कथिराथ । ६.७२

० + एय्य =करे, करेय्य

एय्यासि =करे, करेय्यासि

एय्यं =करे, करेय्यं । ६.७५

१३.० + वत्त =कित्ठं, कट्ठं

त्तब्ब =कसित्तब्बं । ५.१४१

१४.० + छ (संसघे) =विचिकिच्छति; विचिकिच्छा । ५.२

० + छ (तिकिच्छायं) =तिकिच्छति; तिकिच्छा । ५.२:८१

संख्या

- ४६३ कित्त (चु) संसद्दे = वार वार, या विशेष रूप से कहना
 ३६८ किर (तु) विकिरणे^{१५} = बिखेर देना
 १८७ किलम (भू) गिलाने = ग्लानि को प्राप्त होना
 ३६८ किलिस (दि) उपतापे = क्लेश पाना
 ४२३ की (की) दब्बविनिमये^{१६} = खरीदना
 २२४ कील (भू) बन्धे = बाँधना
 २८५ कीळ (भू) = खेल करना
 २ कु (भू) सद्दे = शब्द करना
 ८६ कुण्ड (भू) दाहे = जलाना
 ३८६ कुच (तु) संकोचे = सिकोड़ना
 ३४३ कुध (दि) कोपे = क्रोध करना
 ६४ कुज (भू) अव्यत्ते सद्दे = पक्षियों का आवाज करना
 ३६० कुट (तु) कोटिल्ये = टेढ़ा होना
 ७५ कुट (भ) च्छेदने = काटना
 ४७ कुट (भू) च्छेदने = काटना
 ४७१ कुट (चु) आकोटने = मारना पीटना
 १६६ कुण (भू) सद्दत्थे = शब्द करना
 ३५४ कुप (दि) कोपे^{१७} = क्रोध करना
 ४०१ कुर (तु) सद्दे = शब्द करना
 ४०६ कुर (तु) च्छेदने = काटना
 २५१ कुस (भू) अक्कोसे आव्हाने च^{१८} = बुरा-भला कहना । पुकारना

१५. ० + क्त = किण्णो । + क्तवतु = किण्णवा । ५.१५२

१६. ० + ति = किणात्ति । ६.३२

१७. ० + अ (परोक्खे) = चुकोय । ५.७६

१८. ० + ई (भूत) = अक्कोच्छि; अक्कोसि । ६.३४

० + तब्ब = कोसितब्बं

संख्या

- ५३८ कुम (चु) श्रवकोमे = बुरा-भला कहना
 २२५ कूल (भू) आवरणे = ढकना
 २२७ केल (भू) चलने = हिलना
 ४७० कोह (चु) च्छेदने = छेदना
 ७५ कोह (चु) च्छेदने = छेदना
 ३६८ क्लम (भू) गिलाने = परेशान होना
 ३६८ क्लस (दि) उपतापे = क्लेश उठाना
 ६७ खञ्ज (भू) गतिवेकल्ले = लगडाना
 १५१ खण (भू) श्रवदारले = फाटना
 ८७ खण्ड (भू) च्छेदने = काटना
 ४७८ खण्ड (चु) च्छेदने = काटना
 १५१ खन (भू) श्रवदारणे^{१९} = खनना
 १८३ खम (भू) महने = मटना । क्षमा करना
 १७५ खम्भ (भू) पतिवन्धे = ग्राह देना
 २८६ खर (भू) विनामे = नाश होना
 ५२४ खल (भ) गोचेय्ये = नाफ करना
 २१६ खल (भू) कम्पने = कापना
 २८६ खा (भू) कथने = कहना
 ३८१ खा (दि) पकासने = प्रकाशित होना
 ३३८ खिद (दि) असहने = खिन्न होना
 ३३६ खिद (दि) दीनभावे^{२०} = दुःखित होना
 ३६५ खिप (तु) पेरणे = फेंकना
 ४०५ खिल (तु) भेदने = तोड़ना
 ४१८ खिप (जि) क्लेपे^{२१} = फेंकना

१६. ० + क्त = खतो । ५.१०६

२०. ० + क्त = खित्तो । क्तवन्तु = खित्तवा

२१. ० + क = खिपो । ५.४४

० + णक = खिपको । ५.८७

संख्या

- २५ खी (दि) खये = क्षय होना
 ६ खी (भू) खये = ,,
 ४२५ खी (की) खये^{३२} = ,,
 ४३८ खी (सु) खये = ,,
 १३६ खुद (भू) जिघच्छायं=भूख लगना
 ३५६ खुभ (दि) सञ्चलने=क्षुब्ध होना
 १७२ खुभर (भू) सञ्चलने= ,,
 ४०२ खुर (तु) च्छेदनविलेखनेसु=काटना । खुरेदना
 २२७ खेल (भू) चलने=खेलना
 २८६ ख्या (भू) कथने=कहना
 ६३ गज्ज (भू) सद्दे =गरजना
 ४८६ गण (चु) संख्याने=गिनना
 १२४ गद (भू) व्यक्तवचने=साफ साफ बोलना
 ४६५ गन्ध (चु) गन्धने=गूथना
 ५०६ गन्ध (चु) सूचने=सूचित करना
 १७६ गब्भ (भू) पागम्भिभये=बकवाद करना
 १६२ गम (भू) गमने^{३३}=जाना

२२.० +क्त =खीणो । +क्तवन्तु =खीणवा । ५.१५२

२३.० +आ =अगमा; गमा

ई =अगमी; गमी

स्सा =अगमिस्सा; गमिस्सा । ६.१५

० +स्सं =गच्छं; गच्छिस्सं । ६.२६

० +आ =अगा; अगमा । +ई =अगी; अगमी । ६.२६

० +आ =अगच्छा; अगच्छा । +ई =अगच्छि; अगच्छि । ६.३०

० +आ =गमा; गम

ई =गमी; गमि

सख्या

- २०६ गर (भू) मेचने=मीचना
 २७७ गरह (भू) निन्दाप=निन्दा करना
 २३७ गस (भू) अदने^{११}=खाना
 २१७ गल (भू) अदने= ,,
 २३६ गवेस (भू) मगुगने=गोजना
 ३१८ गह (ऋ) उपादाने^{१२}=गकड़ना

ऊ=गमू; गमु

म्हा=गमिम्हा; गमिम्ह

स्सा=गमिस्सा; गमिस्त

म्हा=गमिस्तम्हा; गमिस्तम्ह । ६.३३

०+उं=अगसिमु; अगसंमु; अगसुं । ६.३६

०+म्हा=अगसुम्हा; अगमिम्हा

त्थ=अगसुत्थ; अगमित्थ । ६.४५

०+हि=गच्छ; गच्छति । ६.४८

०+एथ्युं=गच्छुं; गच्छेथ्युं । ६.४७

०+न्ति; न्ते=गच्छरे । गमिस्सरे । ६.७४

०+य=गल्मं । ५.३०

०+ऋ=वेदमू; पारगू । ५.४२

०+अन=गसनं । ५.४८

०+घ्र (परोक्खे)=जगाम । ५.७०

०+तब्ब=गन्तव्वं । ५.६६

०+क्त=गतो । ५.१०६

०+ति, न्त मान=गच्छति; गच्छन्तो; गच्छमानो । ५.१७३

०+ति, त्त, मान=घम्मति; घम्मन्तो; घम्ममानो । ५.१७६

२४. ०+क्वी=(भत्तं गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ) भत्तगं । ५.६४:४७

२५. ०+अ (भाव)=पग्गहो; निग्गहो । ५.४४

संख्या

- ३२२ गा (दि) सद्दे^{३३}—गाना
 १४१ गाध (भू) पतिठ्ठायं=प्रतिष्ठित होना
 २८४ गाह (भू) विलोळने=थाह लेना
 ४३४ गि (सु) सद्दे=कहना
 ४२६ गि (कि) सद्दे= ,,
 २ गिर (भू) निगिरणे=निगलना
 ३६६ गिर (तु) निगिरणे=निगलना
 ४०४ गिल (तु) अदने=खाना
 ३६२ गिला (दि) हासक्खणे=दुःखित होना
 ६४ गुज (भू) अव्यत्तेसद्दे=गूजना
 ३ गुण (भू) आमन्तणे=आमन्त्रित करना
 १५३ गुण (भू) रक्खणे^{३९}=रक्षा करना
 ४७६ गुण्ठ (त्तु) वेठने=लपेटना
 २६ गुध^{४०}(दि) परिवेठने=चारो ओर से लपेटना
 २७४ गुह (भू) सवरणे^{४०}=ढकना

-
- ० +क्वी =सलाकगं । ५.४७
 ० +क्वी (भत्तं गण्हन्ति एत्थ) =भत्तगं । ५.४६
 ० +त्वा =गहेत्वा । ५.१६३
 ० +ति, न्त, मान =घेप्पति; घेप्पन्तो; घेप्पमानो । ५.१७८
 ० +त्तब्ब, तुं, न्त =गण्हित्तब्बं, गण्हित्तुं, गण्हन्तो
 २६. ० +क्त =गीतं । +त्वा =गाधित्वा । ५.११५
 २७. ० +छ (निन्दायं) =जिगुच्छा । जिगुच्छति । ५.३
 ० +अ =जिगुच्छा । ५.४६:६६:७७
 २८. ० +यक् =गुय्हं । ५.४६:१०५
 ० +क =गुहा । ५.४६
 ० +य, अन =गुय्हं, निगूहनं । ५.१०५
 ० +क्त =गूळहो । ५.१०६:१४८

संख्या

- १६ चिक्ख (भू) वचने=कहना
 ४६२ चित (चु) संचेतने=होश में होना
 ४८६ चिन्त (चु) चितायं=चिन्ता करना
 १५८ चुप (भू) मन्द गमने=धीरे चलना
 ४८५ चुप्प (चु) संचुण्णने=चूर्ण करना
 १६४ चुम्ब (भू) बदन संयोगे=चूमना
 ४४७ चुर (तु) थेट्थे^{३३}=चोरी करना
 २२७ चेल (भू) चलने=गति करना
 ४८३ छड्डु (चु) छड्डने=फेकना
 ५०४ छद्द (चु) वमने=उलटी करना
 ५०१ छन्द (भू) इच्छायं=चाहना
 ५०० छद (चु) संवरणे^{३४}=छिपाना
 ३१२ छिद (रु) द्वेधाकरणे^{३५}=टुकड़े करना
 ३३५ छिद (दि) द्वेधाकरणे=काटना, टुकड़े करना
 ३६६ छु (तु) सम्फस्से=छूना ।
 १६ जग्ग (भू) निहाखये=जागना
 २४ जग्घ (भू) हसनै=हँसना

-
- ० + क्य (कर्म) = चीयते । ५.१३६
 ० + क्त = चिण्णो; क्तवन्तु = चिण्णवा । ५.१५३
 ३३. ० + णि = चोरयति । ५.१५
 ० + णि (प्रेरणार्थ) = चोरेति, चोरयति, चोरेन्तो, चोरयन्तो । ५.२०
 ३४. ० + क्त = छल्लो । + क्तवन्तु = छल्लवा । ५.१५०
 ३५. ० + स्सा = अच्छेच्छा; अच्छिन्दिस्सा; + स्सति = छेच्छति; छिन्दि-
 स्सति उं = अच्छेच्छुं; अच्छिन्दिसु । ६.२६
 ० + अ (परोक्त्वे) = अच्छेद । ५.७८
 ० + क्त, क्तवन्तु = छिल्लो, छिल्लवा । ५.१५०

संख्या

- ७९ जट (भू) सङ्घाते=टोङ् होता
 ३५२ जन (दि) जनने^{३३}=उत्पन्न करना
 १५७ जप (भू) वचने=बोलना
 १७४ जम्भ (भू) गत्तविनाभे=जंभाई लेना
 २११ जर (भू) जीरणे^{३०}=जीर्ण होता
 २१९ जल (भू) दित्तिथे^{३६}=जलना
 जा (की) वयोहानियं^{३१}=उग्र घटना
 २१३ जागर (भू) निद्विखये^{३६}=जागना
 २९० जि (भू) जये^{३१}=जीतना

३६. ० ('अनु' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = अनुजातो । ५.५८
 ० + घ = जङ्घा । ५.६६
 ० + क्त, त्या = जातो, जनित्वा । ५.११६
 ३७. ० ('अनु' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = अनुजिणो । ५.५८
 ० + अन, ति, णादि, अ = जीरणं, जीरति, जीरापेति, जरा । ५.१२३
 ० + क्त = जिणो । + क्तवन्तु = जिणवा । ५.१५३
 ० + न्त = जीयन्तो; जीरन्तो
 मान = जीयमानो; जीरमानो
 ति = जीयति; जीरति । ५.१७४
 ३८. ० + ति (अधिक के अर्थ में) = दहल्लति । ५.७०
 ३९. ० + नि = जानि (भाव) । ५.५०
 ४०. ० + य = जागरिया । ५.४९
 ४१. ० + स (इच्छायां) = जिगिसति; जिगिसा । ५.४
 ० + घ्यण् = जेय्यं । ५.२८
 ० + अ (भाव) = जयो । ५.४४:८९
 ० ('वि' पूर्वक) + क्तवन्तु = विजितवा । + क्त्वावी = विजितावी ।
 ५.५५

संख्या

- ४६ जि (भू) जये=जीतना
 ४११ जि (जि) जये=जीतना
 २२९ जीव (भू) पाणधारणे^{१३}=जीना
 ४७ जु (भू) जवे=वेग में होना
 ९८ जुत (भू) दित्तिथं=चमकना
 ५१२ भूप (चु) दाहे=जलाना
 ३३० भा (दि) चिन्ताय^{१३}=चिन्ता करना (शास्त्र आदि की), ध्यान करना
 ५१० अप (चु) मरण तोसननिसाने=मरना, संतुष्ट होना, तेज करना
 ४१२ वा (जि) अवबोधने^{१४}=जानना
 ८ टीक (भू) गमनत्थे=जाना
 २९२ ठा (भू) गतिविधाने^{१५}=ठहरना

-
- ० ('वि' पूर्वक) +स, अ =विजिगिस्ता । ५.१०२
 ० +ति =जयति । ५.१३६
 ४२. ० +अक (आशीर्वादाथक) =जीवको । ५.३५
 ४३. ० +अण् =मन्तज्भायो । ५.४१
 ४४. ० +ति =नायति; जानाति । ६.६१
 ० +एय्य =जञ्जा; जानेय्य । ६.६२
 ० +एय्य =जानिया; जञ्जा; जानेय्य । ६.६३
 ० +ई (भूत) =अञ्जासि; अजानि
 स्सति =अस्सति; जानिस्सति । ६.६४
 ० ('वि' पूर्वक) +क् =विञ्जू । ५.३९:४०
 ० +तुं, न्त, ति, क्त =जानितुं, जानन्तो, जानेति, जातो । ५.१२०
 ४५. ० +क्य (कर्म, भाव) =ठीयमानं, ठीयते । ५.१७
 सीले; निपात्त =आवर । ५.५४
 ० ('उय' पूर्वक) +क्त (कर्म, भाव) =उपट्टितो । ५.५८
 ० +न्त =तिट्टन्तो । +मान =तिट्टमानो । ५.६४:६५

मंख्या

- २९३ डी (भू) आकासगमने^{११} = उडना
 २५३ डंस (भू) दसने^{१२} = डसना
 ४५० तक्क (चु) वितक्के = तर्क करना
 ४१ तच्छ (भू) तनुकरणे = छीलना, पतला करना
 ४६३ तज्ज (चु) सतज्जने = डराना, धमकाना
 ६२ तज्ज (भू) हिमायं = हिंसा करना
 ४३६ तन (त) वित्थारे^{१३} = फैलाना
 १५४ तप (भू) संतापे = तपाना
 ३५५ तप (दि) सतापे = तपाना
 १६० तप्प (भू) सतप्पने = तृप्न करना
 २०१ तर (भू) तरणे^{१४} = तरना

- ० + मान (भाव, कर्म) = ठीयमानं । ५.६६
 ० + न्त, मान (भविष्यत्) ठस्सन्तो; ठस्समानो
 मान (भाव, भवि०) = ठीयिस्समानं । ५.६७
 ० + क्त = ठितो । + त्वा = ठत्वा । ५.११४
 ० (‘सि’ पूर्वक) + न्त, ति = सण्ठहन्तो, सन्तिट्ठन्तो । सण्ठहति,
 सन्तिट्ठति । ५.१३१
 ० + ति = तिट्ठति, ठाति
 मान, स्त = तिट्ठमानो, तिट्ठन्तो । ५.१७५
 ४६. ० + क्त = डीनो । + क्तवन्तु = डीनवा । ५.१५०
 ४७. ० + आ = अडञ्छा; अडंसा
 ई = अडञ्छि; अडंसि । ६.३०
 ४८. ० + क्य (कर्म, भाव) = तायते; तञ्जते । ५.१३८
 ० + क्त = तन्ति । ५.४९
 ० + क्त = ततो । ५.१०९
 ० + ते = तनुते । ६.७६
 ४९. ० + ण = तारा । ५.४९

संख्या

- ५५१ तळ (चु) पतिट्ठाय=प्रतिष्ठित करना
 २६१ तस (भू) उब्बेगे^{५०}=सताना
 ३६६ तस (दि) पिपासाय=पाना, चाहना
 ३३१ ता (दि) पालने=पालना
 १६६ ताप (भू) संतापे=क्लेश देना, तपाना
 ४६६ तिज (चु) निसाने=तेज करना
 ५२ तिज (भू) निसाने^{५१}=तेज करना
 ५२१ तीर (चु) कम्मसमत्तियं=तरना, काम खतम करना
 ३८३ तुद (तु) व्यथने=तकलीफ देना, सताना
 ३८४ तुल (चु) उभाने=तोलना
 २४६ तुस (भू) तुट्ठियं^{५२}=खुश करना
 ३७० तुस (दि) तुट्ठियं=खुश करना
 २६१ त्रस (भू) उब्बेगे=सताना
 ४४६ थक (चु) पतिघाते=रोकना
 ५०८ थन (चु) देवसद्दे=गर्जना (मेघ का)
 १७५ थम्भ (भू) पतिवन्धे=रोकना
 २०२ थर (भू) सत्थरणे=फैलाना
 १०२ थु (भू) अभित्थवे=तारीफ करना
 ४१४ थु (जि) अभित्थवे=तारीफ करना
 ३२ थेन (चु) चोरिये=चुराना
 ५१६ थोम (चु) सिलाघायं=तारीफ करना
 ४८२ दण्ड (चु) दण्डने=सजा देना

० + क्त = तिण्णो । + क्तवन्तु = तिण्णवा । ५.१५३

५०. ० + क्त (निपात) = त्रस्तो । ५.१४२

५१. ० + ख, अ = तित्तिक्खा । ५.१:४६:६६

५२. ० + क्त, क्तवन्तु, तब्ब, क्तित = तुट्ठो, तुट्ठवा, तुट्ठब्बं, तुट्ठि । ५.१४०

संख्या

- १६४ दप (भू) दान गर्तिहिमादानेसु=देना, जाना. हिमा करना, लेना
 २०७ दा (भू) दारणे=फाड़ना
 २१८ दल (भू) विदारणे=फाड़ना
 २१९ दल (भू) दित्तियं=दीप्त होना, चमकना
 १३३ दलिद् (भू) दुग्गतिय=निर्धन होना
 २६९ दह (भू) भस्मीकरणे^{५०}=भस्म करना
 १०७ दा (भू) दाने^{५१}=देना
 १२ दिक्ख (भू) मुण्डियोपनयननियमवतादंसेमु=मुण्डन करना, उपनयन करना, नियम करना, व्रत करना, धर्म सिखाना

५२. ० +ण =डाहो; दाहो; डहति; दहति । ५.१२६
 ० +अत्त =दड्ढो । ५.१४६
 ० ('आ' पूर्वक) +अन =आळाहनं । परिळाहो । ५.१२७
 ५३. ० +मि =दम्मि; देमि; ददामि
 म =दम्म; देम; ददाम । ६.२२
 ० +ई (भूत) =अदासि; अदा । ६.४४
 ० +दृण् =देट्ठं । ५.२९
 ० +अ (कर्म) =अन्नदो; पुरिन्ददो । ५.४४
 ० +इ =आदि । ५.४५
 ० +णी (सीले) =सतन्दायी । ५.५३
 ० +ति =ददाति । ५.७४
 ० +णक, अन, जापि =दायको; दानं, दापयति । ५.९१
 ० +त्वा =अनादियित्वा । +ति =समादियति ।
 +प्य =आदाय । ५.१३२
 ० +व्य (कर्म, भाव) =दीयते । ५.१३७
 ० +वत्, क्तवन्तु =दिन्नो, दिन्नवा । ५.१५१
 ० ('अ' पूर्वक) +अन्ति =अदेन्ति । ५.१६३
 ० +ति, त्त, मान =दज्जति, दज्जन्तो, दज्जमानो । ५.१७६

संख्या

३५६ द्विप (दि) दित्तिर्यं=चमकना

३१९ दिव (दि) कीलाविजगिसा
 ओहारज्जुतित्थुतिगतिमु

खेलना, जीतने की इच्छा करना,
 =व्यापार करना, चमकना,
 तारीफ करना, जाना

४०९ दिस (तु) अतिसज्जने^{५६}=इनाम देना

३७२ दिस (दि) अण्पीतियं=घृणा करना

२४३ दिस (भू) पेक्खने^{५५}=देखना

२४४ दिस (भू) अतिसज्जने=इनाम देना

५४० दिस (चु) उच्चारणे=उच्चारण करना

२७३ दिह (भू) उपचये=बढना

३८३ दी (दि) अवखंडने=टुकड़े करना

३३३ दी (दि) खये^{५९}=नष्ट होना, क्षीण होना

५४.० +ति, न्त, मान =दिच्छति, दिच्छन्तो, दिच्छमानो । ५.१७३

५५.० +आवी =भयदस्सावी । ५.३४

० +रो, रिक्ख, क =सरो, सवी; सरिक्खो, सदिक्खो, सरिसो,
 सविसो । ५.४३:१२५

० +स्सति =दक्खति; दक्खिस्सति । ६.६९

० +क्त =दिट्ठो । ५.८५

० +आ, ई, स्सति =अह्हा, अह्हाक्खि, दक्खिस्सति । (कर्म) द्विस्सति ।
 ५.१२४

० +अन, ति तब्ब, तुं, अ, आ =दस्सनं, दस्सेति, वट्ठब्बं, वट्ठुं, वट्ठसो,
 अट्ठस । ५.१२४

० +अन, तुं, ति, जी =विपस्सना, विपस्सितुं, विपस्सति, सुदस्सी-
 पियदस्सी-धम्मदस्सी । ५.१२४

० +त्वा =दिस्वा, पस्सित्वा, दिस्वान । ५.१६९

५६.० +क्त, क्तवन्तु =दीनो, दीनवा । ५.१५०

संख्या

- १०९ वृ (भू) वृत्त-गणना
 १०८ दु (भू) गमने-जाना
 ३३ दुभ (चु) जिघ्रसाय-हिंसा की इच्छा करना
 ५२९ दुत्त (चु) उक्तेपे-ऊपर फेंकना
 ३७२ दुस (दि) ग्रणीतिय^{११}-घृणा करना
 २७५ दुह् (भू) 'पपरणे'^{१२}-दुहना
 ४३८ दू (त) परितापे-पछताना
 १७८ दूभ (भू) जिघ्रसाय-हिंसा की इच्छा करना
 २३१ देव (भू) गमने-जाना
 २५३ दस (भ) दसने-डसना
 धन (चु) सट्टे-यात्रा करना
 १९१ धम (भू) सट्टे-वगाना (अङ्गुल ग्राहि का)
 २०६ धर (भू) धारणे-धारण करना
 ५२० धर (चु) धारणे-धारण करना
 २५६ धस (भू) धमने^{१३}-धंस करना
 १३८ धा (भू) धारणे^{१४}-धारण करना
 २३४ धाव (भू) गतिसुद्धियं-दौड़ना
 ४१५ धू (जि) कम्पने^{१५}-हिलाना

५७.० +णि, क्त = ब्रूसितो । ५.१०४

५८.० +यक् = दुह् । ५.३२

० +क्त = दुह् । ५.१४५

५९.० +क्त (निपात) = धस्तो । ५.१४२

६०.० +ति = दहति । ५.१०३

० +इ = निधि; बालधि । ५.४५

० ('नि' पूर्वक) +क्त, क्तवन्तु = निहितो, निहितवा । ५.१०८

६१.० +ति = धुनाति । ६.३२

संख्या

- १३६ धे (भू) पाने=पीना
 ५ धोव (भू) धोवने=धोना
 ६ नच्च (भू) नच्चने=नाचना
 ४७२ नट (चु) नाटचे=नाटय (अभिनय) करना
 ७२ नट (भू) नच्चे=नृत्य करना
 १२६ नद (भू) अव्यत्ते सद्दे=नाद करना
 ११२ नन्द (भू) समिद्धिय^{६३}=समृद्ध होना
 १८६ नम (भू) नमने=भुक्ता, नमस्कार करना
 १६५ नय (भू) गमनत्थे=जाना
 ३७६ नस (दि) अदस्सने=नष्ट होना
 ३७६ नह (दि) बन्धने=बाँधना
 ३५० नहा (दि) सोच्चे=नहाना
 १०५ नाथ (भू) याचनोपतापिस्सरियासिसासु=माँगना, बीमार होना,
 श्रीमान् होना, आशिष देना
 ११३ निन्द (भू) गरहायं=निन्दा करना
 २६४ नी (भू) पापुणने^{६४}=पहुँचाना, प्राप्त कराना
 २२३ नील (भू) वण्णे=रँगना, नीला रँगना
 ३८४ नुद (तु) क्खेपे^{६५}=फेंकना

० +तब्ब, तुं, अन्न =धुनितब्बं, धुनितुं, धुननं
 +णि-तब्ब, णापि-तब्ब, णि-तुं =धुनयित्तब्बं, धुनापेतत्त्वं, धुन-
 यित्तुं । ५.८५

६२. ० +अक (आशीर्वादार्थक) =नन्दको । ५.३५

६३. ० +उं =नेसुं; नयिसु । ६.४०

० +तब्ब =नेतब्बं । ५.८२

० +णि-ति =नायति । ५.६०

६४. ० ('प' पूर्वक) +अन्न =पनूदन् । ५.८७

सक्या

- ३३ पच (भू) पाके^{६५} = पकाना
 ४५७ पच (चु) वित्थारे = फलाना
 ७० पठ (भू) गमन्त्ये = जाना
 ८१ पठ (भू) उच्चारणे^{६६} = उच्चारण करना, पठना
 ९८ पण (भू) व्यवहारत्थुनिनु = व्यापार करना, यवाई करना
 ४८० पण्ड (चु) परिहारे = गण्डन करना, नाट करना
 ९६ पण्ड (भ) तिङ्गवैकल्ये
 ९९ पत (भू) पतने = गिरना
 १०१ पत (भू) गमने = जाना
 २०२ पत्थर (भ) सत्थरणे = विज्ञाना
 ३९८ पथ (तु) वित्थारे = फलाना
 १०१ पथ (भू) गमने = जाना
 ३३९ पद (दि) गमने = जाना

६५. ० +ल-मान, न्त, ति = पचमानो, पचन्तो, पचति । ५.१८
 ० +घ (कारक) = निपको । ५.४४
 ० +घ्यण (भाव) = पाको । ५.४४
 ० +अ (भाव) = पचो । ५.४४
 ० +ति (सरूपे) = पचति । ५.५२
 ० +मान (भाव, कर्म) = पचमानो । ५.६६
 ० +मान (कर्म-भविष्य) = पचिस्समानो । ५.६७
 ० +क्त, क्तवतु = पक्को, पक्कवा । ५.१५६
 ० +क्य (कर्म) = पचीयति, पच्चति । ६.३७
 ० +मि, म, हि = पचामि, पचाम, पचाहि । ६.५७
 ६६. ० +णक, ल्लु = पाठको, पठिता । ५.३३
 ६७. ० +घ्यण (कारक) = पादो । ५.४४
 ० ('आ' पूर्वक) +अ = आपदा । ५.४९

संख्या

- १६५ पय (भू) गमनत्थे=जाना
 २६७ पा (भू) रक्खणे=रक्षा करना
 २६६ पा (भू) पाने^{६६}=पीना
 ७ पाण (भू) चागे=त्यागना
 ५२२ पार (चु) सामत्थिये=सकना, समर्थ होना
 ५२३ पाल (चु) रक्खने=पालना
 ७६ पिट (भू) सङ्घाते=ढेर करना
 ४८१ पिण्ड (चु) सङ्घाते=ढेर करना
 २१५ पिलु (भू) गमनत्थे=जाना
 ५३४ पिस (चु) गमने=जाना
 ५४७ पिह (चु) इच्छायं=चाहना
 २६० पिस (भू) संचुण्णने=पीसना
 ५०६ पी (चु) तप्पने^{६९}=तृप्त करना
 ५४६ पीळ (चु) वाधायं=तकलीफ देना

-
- ० ('नि' पूर्वक) +तब्ब, तुं, अन =निपज्जितब्बं, निपज्जितुं, निप-
 ज्जनं । ५.६२
 ० ('उ' पूर्वक) +क्त, क्तवन्तु =उप्पन्नो, उप्पन्नवा । ५.१५०
 ० ('उ' पूर्वक) +ई (परोक्खे) =उदपादि । ५.१६१
 ६८. ० +स-अ =पियासा । ५.४६ : ७६
 ० +णी (सीले) =खीरपाथी । ५.५३
 ० +क्त =पीतं (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)
 ० +क्त, त्वा =पीतं, पीत्वा । ५.११५
 ० +ति, न्त, मान =पिबति, पाति, पिबन्तो, पिबमानो । ५.१७५
 ६९. ० +क =पियो । ५.४४
 ० +तब्ब, तुं, अन, ति =पीनेतब्बं, पीनयितुं-पीनितुं, पीननं, पीन-
 यति । ५.८५
 ० +क्त, क्तवन्तु =पीनो, पीनवा । ५.१५०

संख्या

- ३६ पुच्छ (भू) पुच्छने^{३०} - पूछना
 ४५ पुञ्छ (भू) पुञ्छने - पोछना
 ४७३ पुट (चु) भेदने - तोडना
 ३६२ पुण (तु) कम्मनि मुभे - धर्म कृत्य करना
 ३६४ पुथ (तु) वित्थारे - फैलना
 १६३ पुप्फ () विकसने - फूलना
 ५३२ पुल (चु) महत्ते - ऊँचा होना
 ५३१ पुल (चु) समुस्सये - डेर करना
 २४८ पुस (भू) पोसने - पोसना; पालना
 ५३७ पुस (चु) पोमने - पोसना; पालना
 ४१६ पू (जि) पवने - पवित्र करना
 १५२ पू (भू) पवने - पवित्र करना
 ४६७ पूज (चु) पूजाय पूजना
 २०४ पूर (भू) पूरणे^{३१} - भरना
 २२७ पेल (भू) चलने - चलना
 २१५ प्लु (भू) गमनत्थे - जाना
 ङ फण (भू) फरणे - व्याप्त होना
 ११५ फन्द (भू) किञ्चि चलने - थडकना, हिलना
 ङ फर (भू) फरणे - व्याप्त होना
 २२१ फल (भू) निप्फत्तियं - फलना
 १६६ फाय (भू) वुद्धियं - बढ़ना
 ४०० फुर (तु) चलने - फड़कना
 २२० फुल्ल (भू) विकसने - फूलना

७०. ० + क्त = पुट्ठो । ५.८५

० + क्त, त्वा = पुट्ठो, पुच्छित्वा

७१. ० + क्त = पुण्णो । + क्तवन्तु = पुण्णवा । ५.१५२

संख्या

- ४१० फुस (तु) सम्फस्से=छूना
 ३१४ बध (रु) बन्धने^{७३}=बंधाना
 १४६ बध (भू) बन्धने=बाँधना
 ६ बल (भू) पाणने=साँस लेना
 २८१ बह (भ) बुद्धियं^{७३}=बढ़ना
 १४२ बाध (भू) निबाधायं=पीड़ा देना
 ३४१ बुध (दि) अवगमने=जनाना, समझना
 २८१ ब्रह (भू) बुद्धियं=बढ़ना
 २६८ ब्रू (भू) वचने^{७४}=बोलना
 २८१ ब्रूह (भू) बुद्धियं=बढ़ना
 १४ भक्ख (भू) अदने=खाना
 ४५३ भक्ख (चु) अदने=खाना
 ५० भज (भू) सेवायं^{७५}=सेवा करना
 ६५ भज्ज (भू) पाके^{७६}=भूना

७२. ० + छ = बीभच्छा, बीभच्छति (निन्दायं) । ५.३
 ७३. ० + क्त = बाळ्हो । ५.१०६
 ० + क्त = बुड्ढो । ५.१४७
 ७४. ० + आ, उ = आह, आहु इत्यादि । ६.१६
 ० + उ = आहंसु, आहु । ६.१६
 ० + ति, अन्ति = आह, आहु । ६.२०
 ० + ति = ब्रवीति; ब्रूति । ६.३६
 ० + मि, इ = ब्रूमि; अब्रवि । ५.६७
 ० + णि-ति, न्ति = ब्रूति, ब्रुवन्ति
 ७५. ० + क्त = भत्ति । ५.४६
 ० + छ्यण् = भाग्यं । ५.६८
 ७६. ० + क्त = भट्ठो । ५.१४३

संख्या

- ५७ भज्ज (भू) ग्रोमद्ते^{११}—ताप्ट करना
 ७८ भट (भू) भनिय—नीकरी करना
 ६३ भण (भू) भणने—स्पष्ट कहना
 ४८० भण्ड (चु) परिहासे = उपहास करना
 ३०३ भद् (चु) कल्याणे शुभ कर्म करना, मुग्धी होना
 ११६ भद् (भू) कल्याणे—शुभ कर्म करना, मुग्धी होना
 १८४ भम (भू) अतवट्ठाने—घूमना
 १० भर (भू) भरणे^{१८}—पालना
 ३७५ भस (दि) अधोपतने—नीचे गिरना, निन्दित होना
 २६४ भस (भू) भस्मीकरणे—भस्म करना
 २६० भा (भू) दित्तिय^{१९}—चमकना
 २६१ भा (भू) अत्रवाोधने—जनाना, प्रकाशित करना
 २५६ भास (भू) वचने—बोलना
 ११ भिक्ख (भू) याचने^{२०}—मागना
 ३११ भिद (रु) विदारणे^{२१}—तोड़ना, फोड़ना, चीरना
 ३३४ भिद (दि) विदारणे—तोड़ना, फोड़ना, चीरना

-
७७. ० (सीले-निपात) = भङ्गुर । ५.५४
 ० + क्त, क्तवन्तु = भग्गो, भग्गवा । ५.१५४
 ७८. ० + य = भच्चो (निपात) । ५.३१
 ७९. ० (सीले-निपात) = भासुर, भस्सर । ५.५४
 ८०. ० + अ = भिक्खा । ५.४६
 ८१. ० + स्सा = अभेच्छा, अभिन्दिस्सा । ६.२६
 ० + क्त = भित्ति । ५.४६
 ० (सीले-निपात) = भिदुर । ५.५४
 ० + तब्ब = भेतब्बं, भिन्दित्तब्बं । ५.६५
 ० + क्त, क्तवन्तु = भिन्नो, भिन्नवा । ५.१५०

संख्या

- १६९ भी (भू) भये=डरना
 ३८८ भुज (तु) कोटिल्ले=टेढ़ा होना
 ३०९ भुज (रु) पालनज्भोहारेसु^{रि}=पालना, खाना
 ५३६ भूस (चु) अलङ्कारे=सजाना
 २५४ भूस (भू) अलङ्कारे=सजाना
 १ भू (भू) सत्ताय^{रि}=होना

८२. ० +ख (इच्छायं) =बुभुक्वति, बुभुक्वा । ५.४:७८
 ० +स्सा =अभोक्वा, अभुञ्जिस्सा
 स्सति =भोक्वति, भुञ्जिस्सति । ६.२७
 ० +य =भोज्जं । ५.३०
 ० +क =भुजो । ५.४४
 ० +णी (सीले) =उण्हभोजी । ५.५३
 ० +क्त =भुत्तं (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे) । ५.६०
 ० +तुं =भुञ्जितुं, भोत्तुं ('तुं' प्रत्ययके प्रयोग) । ५.६१: १७०
 ८३. ० +अ =बभूव । ६.१७: १८
 ० +त्थ, स्सा, स्सति =बभूवित्थ-अभवित्थ, अभविस्सा, अनुभविस्सति,
 अनुभोस्सति । ६.३५
 ० +एय्याथ, स्से =भवेय्याथो, भवेय्याथ, अभविस्से, अभविस्स;
 +अ, आ =अभवं, अभव; अभवित्थ, अभवा;
 +ई, थ =भवथव्हो, भवथ । ६.३८
 ० +ओ =अभव, अभवि, अभवित्थ, अभवित्थो, अभवो । ६.४२
 ० ('अनु' पूर्वक) +क्य-स्सा =अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा,
 +स्सति =अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति । ६.४६
 ० +एय्याम =भवेमु, भवेय्यामु, भवेय्याम । ६.७८
 ० +य =भब्बं । ५.३१
 ० +अ (भाव) =भवो । ५.४४: ८६

संख्या

- २८७ भू (भू) सनाय -- होना
 ४५४ मक्ख (भू) मक्खने -- जाना
 १८ मग्ग (भू) अन्वेमने -- खोजना
 ४५६ मग्ग (चु) अन्वेमने -- खोजना
 २१ मङ्ग (भू) मङ्गल्ये -- मङ्गल होना
 ११ मज्ज (भू) समुद्धिय -- मशोधन करना, साफ करना
 ६६ मण (भू) सद्धथे -- शब्द करना
 ४७६ मण्ड (चु) भूसार्ये -- सजाना
 ८५ मण्ड (भू) भूसने -- सजाना
 १०३ मथ (भ) विलोळने -- मथना
 २७ मद (दि) उम्मादे -- नशे में होना, पागल होना
 १३१ गद्द (भू) मद्दने -- मगलगा
 ३५१ मन (दि) जाने -- जानना
 ८८१ मन (त) बोधने -- विचारना. मनन करना

- ० + घ्यण (भाव) -- भावो । ५.४४
 ० + क्वी -- अभिभू, सयम्भू । ५.४७ : १५६
 ० + क्ति -- भूति । ५.४६
 ० + तब्ब -- भवितब्बं । ५.८२
 ० + णि-ति -- भावयति । ५.६०
 ० + ति -- भवति । ५.१३६
 ० ('अभि' पूर्वक) + त्वा, प्य -- अभिभवित्वा, अभिभूय । ५.१६४
 ८४. ० + य -- मज्जं । ५.३०
 ० ('प' पूर्वक) + तब्ब, तुं -- पमज्जितब्बं, पमज्जितुं,
 + अन, ण -- पमज्जनं, पादो । ५.६२
 ८५. ० + स -- वीमंसा, वीमंसति । ५.१ : ४६ : ६६ : ८०
 ० + क्त -- मतो । ५.१०६

संख्या

- ४६० मन्त (चु) गुत्तभासने=सलाह करना
 १०३ मन्थ (भू) विलोढने=मथना
 १६५ मय (भू) गमनर्थे=जाना
 २०५ मर (भू) पाणचागे^{६९}=मरना
 २४६ मस (भू) आमसने=माफ करना
 ४५६ मह (चु) अन्वेसने=खोजना
 २६८ मह (भू) पूजाय=पूजना
 ५०७ मान (चु) पूजाय=पूजना
 २८ मिद (दि) स्नेहने=स्नेहयुक्त होना
 १३५ मिद (भ) सिनेहे=स्नेहयुक्त होना
 १२ मिध (भू) सङ्गमे^{७०}=जोड़ना, युक्त करना
 ३४० मिध (दि) अभिकर्षायं=चाहना
 ३६३ मिला (दि) गत्तविनामे=अँगड़ाई लेना
 ५४४ मिस्स (चु) सम्मिस्से=मिलाना
 २७६ मिह (भू) सेचने=गीला करना, सीचना
 २६६ मिह (भू) ईसं हसने=मुसकराना
 ५४८ मिह (चु) पूजार्यं=पूजना
 ३०६ मुच (रु) मोचने^{७१}=छुड़ाना, मुक्त करना
 ३५ मुच (चु) पमोचने=छुड़ाना, मुक्त करना
 ४० मुच्छ (भू) मोहे=मुरझाना

८६. ० +न्त, मान ति =मीयन्तो, मरन्तो; मीयमानो, मरमानो; मीयति,

मरति । ५.१७४

८७. ० +अ =मेधा । ५.४६

८८. ० +क्त, क्तवन्तु =मुक्को, सुत्तो; मुक्कवा, सुत्तवा । ५.१५७

० +स्ता =अभोक्खा, अमुञ्चिस्सा

स्सति =अोक्खति, मुञ्चिस्सति । ६.२७

संख्या

- ५६ मुञ्ज (भ) मुञ्जन्^{११} -गोता खेता
 ८८ मुण्ड (भू) मुण्डन्ते^{१२} -मूडना
 १०२ मद (भू) मदीन्ते^{१३} -मतुष्ट होता
 ४०७ मुम (तृ) मुम्ये^{१४} -चोरी करना, ठगना
 २८० मुह (भू) मुह्यन्ते^{१५} -मूर्च्छित होता, मुरझाना
 ३८० मुह् (दि) मुह्यन्ते^{१६} -मोहित होना, मूढ होना
 ४१७ मी (जि) मीमाय^{१७} -हिसा करना
 १३ मील (भू) निमीलने^{१८} -मूँदना
 ५२७ मील (चु) निमीलने^{१९} -मूँदना
 ४१६ मू (जि) मून्धने^{२०} -ब्राधना
 १८१ मू (भू) मून्धने^{२१} -बाँधा
 १२ मध (भू) मध्मन्ते^{२२} -लडाई करना
 ४५५ मोक्ष्य (चु) मोक्षन्ते^{२३} -छुड़ाना
 ५१ यज (भू) यजन्ते^{२४} -देवपूजा सङ्गति करण दानेसु^{२५} -देवपूजा करना, मिलना, देना
 ४६४ यन (चु) निय्यातने^{२६} -बाहर भेजना

-
८६. ० ('नि' पू०) -क्त, क्तवन्तु -निबुग्गो, निबुग्गवा । ५.१५४
 ६०. ० +क =मुदा । ५.४६
 ० +क्त =मुदितो, मोदितो । ५.८६
 ० ('अनु' पू०) +त्वा =अनुमोदित्वा, अनुमोदियान् । ५.१६५
 ६१. ० निपात् -मोसुहो । ५.७०
 ० +क्त =मूळहो । ५.१०६
 +क्त =मूलहो, मुद्धो । ५.१४६
 ६२. ० +यक् =इज्जा । ५.४६
 ० +क्ति =इट्टि । ५.४६
 ० +क्त, त्वा =इट्ठं, यिट्ठं; यजित्वा । ५.११३ : १४३

संख्या

- ४६१ यन्त (चु) सकोचने=सकुचना
 १८० यम (भू) मेथुने^{९३}=विवाहित होना
 १६० यम (चु) उपरमे=रकना
 ३७४ यस (दि) पयतने=यत्न करना
 ३०० या (भू) पापुणने^{९४}=प्राप्त करना
 ३१ याच (भू) याचने=माँगना
 ३२८ युज (दि) समाधिम्हि=ध्यान करना
 ४६६ युज (चु) संयमे=संयम करना
 ३०८ युज (रु) योगे=जोड़ना
 ३४२ युध (दि) सम्पहारे^{९५}=लड़ना, जूझना
 १५ रक्ख (भू) पालने=पालना
 २२ रङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
 ४६१ रच (चु) पतियतने
 ५५ रञ्ज (भू) रागे=रँगना
 ३२७ रञ्ज (दि) रागे=रँगना
 ७१ रट (भू) परिभासने=रटना
 ६६ रण (भू) सहत्थे=आवाज़ करना
 १३४ रद (भू) विलेखणे=खोदना
 १५७ रप (भू) वचने=बोलना
 १४ रभ (भू) राभस्से=जल्दी में होना
 ८८ रम (भू) कीळाय^{९६}=खेलना

६३. ० +ति, न्त, मान =यच्छति, यच्छन्तो, यच्छमानो । ५.१७३

६४. ० +क्त =यातं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५.५६

६५. ० ('आ' पूर्वक) +क =आयुधं । ५.४४

० +कि =युधि । ५.५२

६६. ० +क्त =रतो । ५.१०६

मुख्या

- १३१ रम (भू) प्राग्भे गृह्ण करणा
 १३५ रम्य (भू) गद्यनेमने =नचाना
 १३५ रम (भू) गमनत्थे जाना
 ५४२ रम (चु) प्रस्नाद स्नेहनेमु =स्वाद लेना, गीत्वा टोना, प्यार करना
 २६३ रस (भू) अस्नादनेमु =स्वाद लेना
 २७६ रह (भू) चागे =त्यागना
 ५४२ रह (चु) वागे =त्यागना
 ३०१ रा (भू) आदाने =लेना
 ४६ राज (भू) दित्तिथि =शोभा देना
 ३१५ राध (दि) मंसिद्विय =सिद्ध होना
 ३४८ राध (दि) हिगाय =हिगा करना
 २३ रिच (क) विरेचने =दस्त आना
 ३२५ रिच (दि) विरेचने =दस्त आना
 ३६ रिञ्च (भू) रिञ्चने =खाली होना
 २०० रु (भू) सद्दे^० =शब्द करना
 ३८७ रुज (तु) भङ्गे =टूटना
 ३७ रुच (चु) भासने =चमकना
 ३६ रुच (चु) रोचने =पसन्द आना
 २६ रुच (दि) रोचने =पसन्द आना
 ३० रुच (भू) दित्तिथि =चमकना
 ३२४ रुच (दि) रोचने =पसन्द आना
 ३८७ रुज (तु) भङ्गे^६ =बुरा होना, पीड़ा होना, पीड़ा देना
 ३६१ रुठ (तु) उपसंघाते =मारना, लूटना

६७.० +अ (भाव) =रवो । ५.४४

६८.० +क =रुजा । ५.४६

० +द्वण् (कारक) =रोगो । ५.४४

संख्या

- १२० रुद (भू) रोदने^{११} = रोना
 ३०५ रुध (रु) आवरणे^{१०} = रोकना, घेर लेना
 ३४६ रुध (दि) आवरणे = रोकना, घेर लेना
 ३६१ रुस (दि) रोसे = रूसना, नाराज होना
 २४६ रुस (भू) रोसे = रूसना, नाराज होना
 ५३६ रुस (चु) फारुसिये = कठोर होना
 २७१ रुह (भू) जनने^{१०} = उगना
 ४३२ लक्ख (चु) दस्सणे = देखना
 २२ लङ्घ (भू) गमनत्थे = जाना, लांघना
 २६ लङ्घ (भू) गतिसोसनेसु = जाना, सूखना
 ६० लज्ज (भ) लज्जने = लजाना, शरमाना
 ४४ लञ्छ (भू) लक्खणे = निशान करना
 ५११ लप (भू) वचने = बोलना, बातचीत करना
 १५७ लप (भू) वचने = बोलना, बातचीत करना
 २० लभ (भू) सङ्गे^{१०} = आसक्त होना, पाना

६६. ० + स्सा = अरुच्छा; अरोदिस्सा

स्सति = रुच्छति; रोदिस्सति । ६.२६

० + क्त = रुदितं, रोदितं । ५.८६

१००. ० + ल-ति, मान, न्त = रुन्धति, रुन्धमानो, रुन्धन्तो । ५.१६

० + तुं, ण = रुन्धितुं, रुन्धितुं; निरोधो

१०१. ० ('अभि' पू०) + ई = अभिरुच्छि, अभिरुहि । ६.३४

० ('आ' पू०) + क्त (भाव, कर्म) = आरुद्धो । ५.५८

० + क्त, तुं = अरुद्धो, आरोहितुं । ५.१४८

१०२. ० + स्सा = अलच्छा, अलभिस्सा

+ स्सति = लच्छति, लभिस्सति । ६.२६

० + घ्यण = लाभो । ५.४४

२६

सम्बन्ध

- १७० लभ (भू) लाभे—पाना
 १६५ लम्ब (भू) अत्रसमने—लटकना
 ५५२ लळ (चु) उपसेवाय^{१०}—पालना, पोसना
 २८६ लळ (भू) विलासे—पेश करना
 ५३३ लल (चु) इच्छाय—चाहना
 २६२ लस (भू) कल्पिते—शीभा देना
 ३०१ ला (भू) आदाने—ग्रहण करना
 ३८५ लिख (तु) लेखने—खोदना (लोहे की लेखनी आदि से अक्षर आदि का)
 ३१५ लिप (रु) लिम्पने—लीपना
 ३६७ लिम (दि) लेसे—आलिङ्गन करना
 २७२ लिह (भू) ग्रम्मादने^{१०१}—चाटना
 ३६४ ली (दि) मिलेसन द्रवीकरणेमु^{१०२}—चिपकाना, पिघलाना
 ३२६ लुज (दि) विनासे—नाश करना
 १५ लुञ्च (भू) अपनयने—उखाड़ना (वाल आदि का)
 ३६१ लुठ (तु) उपसंघाते—मारना-लूटना
 ३१६ लुप (रु) छेदने^{१०३}—काटना
 ३५७ लुप (दि) च्छेदने—काटना
 ३५८ लुभ (दि) लोभे—लोभ करना

०+ई (भूत) =अलत्थ, अलभि

इं (भूत) =अलत्थं, अलभिं । ६.७३

०+क्त =लद्धं । ५.१४५

१०३. ०+णि =लाळयति । ५.१५

१०४. ०+य =लेय्यं । ५.३१

१०५. ०+क्त, क्तवन्तु =लीनो, लीनवा । ५.१५०

१०६. ० निपात—लोलुपो । ५.७०

संख्या

- ४२० लू (जि) छेदने^{१०९} = काटना
 ४४८ लोक (चु) = देखना
 ४४८ लोच (चु) दस्सने = देखना
 ६ वक (भू) आदाने = लेना
 ५ वङ्क (भू) कोटिल्लो = टेढ़ा होना
 २२ वज्ज (भू) गमनत्थे = जाना
 ३७ वच (चु) भासने^{१०६} = बोलना = बातचीत करना
 ३८ वच (चु) भासने = बोलना = बातचीत करना
 २९ वच (भू) व्यत्तवचने = बोलना
 ४६० वच्च (चु) अज्जेने = पढ़ना
 ४८ वज (भू) गमने^{१०९} = जाना
 ४६२ वज्ज (चु) वज्जने = मना करना
 ४५८ वञ्च (चु) पलम्भने = ठगना
 ३७ वञ्च (भू) गमने = जाना
 १४० वड्ढ (भू) वुद्धियं^{११०} = बढ़ना

१०७. ० + अण् = सरलावो । ५.४१
 ० + क्त, क्तवन्तु = लूनो, लूनवा । ५.१५०
 १०८. ० + ई = अवोच । ६.२१
 स्ता, स्ताति = अवक्खा, अवचिस्सति; वक्खति, वचिस्सति । ६.२७
 ० + ध्यण् = वाक्यं । ५.२८ : ६८
 ० + अ (भाव) = वचो । ५.४४
 ० + घ (भाव) = वको । ५.४४
 ० + इ (स्वरूथ) = वचि । ५.५२
 + क्त = उत्तं, वुत्तं, उत्थं, वुत्थं । ५.११० : १११
 १०९. ० ('य' पूर्वक) + य = पव्वज्जा । ५.४६
 ११०. ० + क्त = वड्ढि । ५.१५८

सरथा

- ६१ वट्ट (भू) वट्टने -वट्टाना
 ११८ वण (भू) मम्हत्तिव प्रायाज करना
 ४३४ वण्ट (चु) विभाजने -वाटना
 ७६ वण्ट (भू) विभाजने वाटना
 ४८४ वण्ण (चु) वण्णने -वर्णन करना
 ६७ वत्त (भू) वत्तने -होना
 ११० वद (भू) वचने^{१११} =बोलना
 १४३ वध (भू) हिंसाय^{११२} =हिंसा करना
 ४४० वन (त) वाचने^{११३} =मांगना
 ५०२ वन्द (चु) अभिवादनथुत्तिमु^{११४} =नमस्कार करना, तारीफ करना
 १११ वन्ध (भू) अभिवादनथुत्तिमु =नमस्कार करना, तारीफ करना
 १५६ वप (भू) वीजनिकखेपे =वोना
 १८६ वम (भू) उगिगणे^{११५} -उलटी करना
 ५१४ वम्ह (चु) गरहायं =निन्दा करना
 १६५ वप (भू) गमनत्थे =जाना
 ५१८ वर (चु) आवरणिच्छामु =छिपाना, चाहना
 २१४ वर (भू) वारणसम्भत्तिमु =मना करना, विभाग करना
 २२६ वल (भू) सवरणे =छिपाना
 २२६ वल्ल (भू) संवरणे =छिपाना
 ५४१ वस (चु) अच्छादने =ढकना

१११. ० +य =वज्जं । ५.३०

० +ति, न्त, भान =वज्जति, वज्जन्तो, वज्जमानो । ५.१७६

११२. ० +णक् =वधको । ५.८७

११३. ० +ति =वत्तुति, वनोति । ६.७७

११४. ० +अन =वन्दना । ५.४६

११५. ० +थु =वमथु । ५.४६

संख्या

- १७ वस (भू) निवासे^{११६} = रहना
 १६ वस्स (भू) सेवने = सेवन करना
 ७४ वह (भू) वहने = ढोना
 २७० वह (भ) पापुणने^{११७} = पाना
 ३६५ वा (दि) गतिबन्धनेसु = जाना, बाँधना
 ३०२ वा (भू) गमने = जाना
 ३८६ विज (तु) भयचलनेसु^{११८} = डरना, काँपना
 ३४० विद (दि) सत्तार्य = होना
 ३६३ विद (तु) ब्राणे^{११९} = जानना
 ३१३ विद (रु) लाभे = पाना
 ४६८ विद (चु) ब्राणे^{१२०} = जानना
 ३४६ विध (दि) वेधने = बीधना
 १४५ विध (भू) वेधने = बीधना
 ४०८ विस (तु) पवेसने^{१२०} = घुसना

११६. ० + स्सा = अक्वच्छा, अक्वसिस्सा

स्सति = वक्खति, वसिस्सति । ६.२६

० ('अनु' पू०) + क्त (भाव, कर्म) = अनुवुसितो । ५.५८

० + क्त = वुत्थं । ५.१४४

११७. ० + क्त = वुल्लहो । ५.१०७ : १४८

११८. ० ('सं' पू०) + क्त = संविग्गो । + क्तवन्तु = संविग्गवा । ५.१५४

११९. ० + णि-ति = वेदियति । ५.१३६

० + यक् = विज्जा । ५.४६

० + अन = वेदना । ५.४६

० + कू = विदू (लोकविदू) । ५.३८

१२०. ० ('प' पूर्वक) + स्सा = पावेक्खा, पाविसिस्सा

स्सति = पवेक्खति, पाविसिस्सति

मंग्या

- ३०२ वी (भू) गमने जाना
 २२८ वी (भू) तत्त्वमन्ताने वृत्तना (कपडे का)
 ६६ वीज (भू) वीजने हवा करना
 ४२९ वृ (की) गवरणे वृवना
 ४३३ वृ (सु) गवरणे वृकना
 ४७५ वेठ (चु) वेठने लपेटना
 १५६ वेग (भू) चलने^{१११} -कापना
 २२७ वेण (भू) चलने -हिलना
 १०६ व्यथ (भू) दुःखभयचान्दनेमु =दुःखी होना, डरना, कापना
 २६७ व्हे (भू) अट्टाने -पुकारना
 ४३७ मरु (त) मन्थिये^{११२} -मरना; समर्थ होना
 ६३४ मरु (कि) मन्थिये^{११३} -मरना; समर्थ होना
 ६३५ मरु (सु) मन्थिये^{११४} -मरना; समर्थ होना
 = सक्क (भू) गमनत्थे -जाना
 ४ मङ्क (भू) सङ्काय -मन्देह करना
 ५१७ सङ्गाम (चु) युद्धे =लडाई करना
 ३४ सच (भू) समवाये
 ५३ सज (भू) विस्सजनानिङ्गननिम्मानेमु =छोड़ना, गले लगाना, बनाना

ई =पावेक्खि, पाविसि । ५.२७

० + ध्यण (कारक) =वेसो । ५.४४

१२१. ० + थु =धेपथु । ५.४६

१२२. ० + न्त, ति =सक्कुणन्तो; सक्कुणोति, सक्कोति । ५.१२१

० + ई, उं (भूत) =असक्खि, असक्खिसु । ६.५८

० + स्सा =सक्खिस्सा; सक्कुणिस्सा

स्सति =सक्खिस्सति; सक्कुणिस्सति । ६.५९

० + स्सति =सक्खति; सक्खिस्सति । ६.६९

संख्या

- ३२६ सज (दि) सङ्गे=आसक्त होना
 ६१ सज्ज (भू) अज्जने=उपार्जन करना
 ४६४ सज्ज (चु) अज्जने=उपार्जन करना
 ५६ सज्ज (भू) सङ्गे=आसक्त होना
 ८२ सठ (भू) केतवे=ठगना
 १२६ सद (भू) विसणगत्यवसादनादानेसु^{१२३}=जीर्ण होना, जाना, नीचे गिराना, लेना
 ४३९ सन (त) दाने=दान करना
 १२५ सन्द (भू) पस्सवने=टपकना
 १५५ सप (भू) अक्कोसे=कोसना, शाप देना
 १६१ सप्प (भू) गमने=जाना, रेंगना
 ३६० सम (दि) उपसमखेदेसु^{१२४}=(ब्रत आदि से) शान्ति प्राप्त करना, पसीना छूटना
 १८५ सम (भू) परिस्समे=थकना
 ४६८ समाज (चु) पीतिदस्सने=खातिर करना
 १६७ सम्ब (भू) मण्डने=सजाना
 १७९ सम्भ (भू) विस्सासे=भरोसा रखना
 ४२८ सम्भु (की) पापुणने=इकट्टा करना; प्राप्त करना
 २०८ सर (भू) गतिहिंसाचिन्तासु^{१२५}=आना, हिंसा करना, सोचना=चिन्ता करना
 २१५ सल (भू) गमनत्थे=जाना

१२३. ० ('नि' पूर्वक) +तब्ब =निसीदितब्बं । +अन =निसीदनं ।

+तुं =निसीदित्तुं । +त्ति =निसीदत्ति । ५.१२३

० +क्त, क्तवन्तु =सन्नो; सन्नवा । ५.१५०

१२४. ० +क्त =सज्जतो । ५.१०९

१२५. ० +अन =सरण । ५.१७१. ० +ध्यण् (कारक) =सारो । ५.४४

गन्था

- २१० गम (भू) गर्तिहसापाणतेसु - जाना, दिमा करना, साम लेना
 २१० गम (भू) पगमने - दटाड करना
 २१० मह (भू) मग्गिमे - क्षमा करना
 ३७० मा (दि) तनूकरणावमानेसु - पैना करना-धान धरना, भवतम करना
 १२३ माद (भू) अस्मादने - स्वाद लेना
 ३४५ माध (दि) मंसिद्धियं - मिद्ध करना
 १६३ साय (भू) नायने - चाटना
 २४१ माम (भू) अनुमिद्धियं - अनुधानन करना
 ४२१ मि (जि) बन्धने - बाधना
 ४४५ मि (त) बन्धने - बाधना
 २३५ मि (भू) सेवाय - टटल करना
 १० मिकव (भू) विज्जोपादाने - मीग्वना (विद्या आदि का)
 २७ मिद्ध (भू) घायने - मूँघना
 ३०७ मिच्च (स) कवरणे - टपकना
 ३३७ सिद (दि) पाके - पकाना
 १३७ सिद (भू) पाके - पकाना
 १४४ सिध (भू) गमने - जाना
 ३४५ सिध (दि) मंसिद्धियं - मिद्ध होना
 * सिना (दि) सोचेय्ये - नहाना - पवित्र होना

१२६. ० + क्त = पसत्थं, सत्थं । ५.१४४

१२७. ० + क्त = सिद्धि । ५.४६. ० + क्त = सिद्धं, सत्थं । ५.११७

० + क्त, तुं = सत्थं, सासितुं । ५.१४४

० + यक् = सिस्सो । ५.३२

१२८. ० + ति = सिनोति । ५.८५

१२९. ० ('नि' पूर्वक) + प्य = निस्साय । ५.८८

१३०. ० + क्त, क्तवन्तु = सिन्नो, सिन्नवा । ५.१५०

संख्या

- ३८२ सिनिह (दि) पीणने = स्नेह करना
 २३ सिलाघ (भू) कत्थने = बखान करना
 ३६६ सिलिस (दि) आलिङ्गने^{३३३} = गले लगाना
 ७ सिलोक (भू) संघाते = शब्द योजना (काव्य आदि के रूप में) करना
 ५४३ सिस (चु) विसेसने = बचाना; बाकी रखना
 २३८ सिंस (भू) इच्छायं = चाहना
 ३२० सिव (दि) तन्तुसन्ताने = सीना
 ३०४ सी (भू) सये^{३३३} = सोना
 २२२ सील (भू) समाधिम्हि = शील पालन करना
 ५२८ सील (चु) उपधारणे = चुनना, कन कन उठाना
 ४३१ सु (सु) सवने^{३३३} = सुनना
 ४३० सु (की) सवने^{३३३} = सुनना
 ४४६ सु (त) अभिसवे = नहाना
 * सुच (चु) पेसुञ्जे = सूचना (खबर) देना
 ३२ सुच (भू) सोके = शोक करना

-
१३१. ० ('आ' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = आसिलिट्ठो । ५.५०
 १३२. ० + य = सेट्ठ्या ५.४६. ० ('अधि' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) =
 अधिसयितो । ५.५८
 १३३. ० + क्य = सूयमानं, सूयते । ५.१७ : १३६. ० + तून = सोतून,
 सुत्वानः सुत्वा ('अलं-खलु' के साथ) । ५.६२.० + तब्बं = सोतब्बं ।
 ५.८२. ० + क्त, तब्ब, तुं = सुतो, सुणितब्बं, सुणितुं । ५.८५.
 ० + ति = सुनोति । ५.८५.
 ० + उं = अस्सोसुं, अस्सुं । ६.४०
 ० + ई (भूत) = अस्सोसि, असुणि
 + स्स = अस्सोस्सा, असुणिस्सा
 + स्सति = सोस्सति, सुणिस्सति । ६.५०.

मन्वा

- ३४४ मुय (दि) मोयेये -मोयना; पवित्र करना
 ३८७ गुण (वृ) गये - मोना
 १७३ गुभ (भू) मोभने - मोभा देना
 ३७७ गुस (दि) मोसने - -म्वना
 २३६ ग् (भू) पसवे - पेदा करना
 १५ नू (भू) पम्मवने - -उत्पन्न करना
 १२७ न्द (भू) कवग्गे - -उत्पन्नता
 १९ मूल (भू) रुजाय - -वर्द्ध होना
 २३२ मेव (भू) मेवने - -मेवा करना
 २५८ मम (भू) ममने - -बडाई करना
 ३८२ म्निह (दि) पीणने - -प्रेम करना
 ८३ ह्ठ (भू) व्वनक्कारे - -हठ करना
 ३५३ हल (दि) हिमाप - हिमा करना, मारना
 २९५ हन (भू) हिमार्य - -हिमा करना, मारना
 * हनु (भू) अपनयने - छिपाना
 ३६१ हर (दि) लज्जाय - -लजाना, धरमाना

१३४. ० ('प' पूर्वक) + क्त = पसुत्तं । ५.५७

१३५. ० + क्त, क्तवन्तु = सुखो, मुक्खवा । ५.१५५

१३६. ० + क्त, क्तवन्तु = सूतो, सूतवा । ५.१५०

१३७. ० + य = यच्चो । ५.३१. ० + स्साम = ह्च्छेम; ह्निस्साम ।
 पटिहंखामि; पटिह्निस्सामि । ६.६७. ० ('आ' पूर्वक) + क्त =
 आधातो । ५.९६. ० ('परि' पूर्वक) + क्वी = पलिघो । ० ('पटि'
 पूर्वक) + क्वी = पटिघो । निपात-अर्धं, संघो, ओघो । ५.१००.
 ० + स, अ = जिघंसा । ५.१०१. ० + क्त = हतो । ५.१०६.
 ० + ति = हन्ति । ५.१६१. ० ('आ' पूर्वक) + प्य = आहच्च;
 आहन्तिवा । ५.१६६.

संख्या

- * हर (भू) हरणे^{३३८} =हरना, चुराना
 २५० हस (भू) हसने =हँसना
 * हस (भू) आलिक्ये =ठट्टा करना, मञ्जाक करना
 २६५ हा (भू) चागे^{३३९} =त्यागना, छोड़ना
 ३८१ हा (दि) परिहाने =हानि होना
 ४४२ हि (त) गतियं^{३४०} =जाना
 ६० हिण्ड (भू) आहिण्डने =भटकना, खोजते फिरना
 १२५ हिलाद (भू) सुखे =सुखी होना
 ५०५ हिलाद (चु) सुखे =सुखी होना
 ३६१ हिरि (दि) लज्जायं =लजाना, शरमाना
 ५५० हीळ (चु) निन्दायं =निन्दा करना
 ३१७ हिस (रु) हिंसायं =हिंसा करना, मारना
 २१५ हुल (भू) गमनत्थे =जाना
 २८७ हू (भू) सत्तायं^{३४१} =होना

१३८. ० +आ =अहा, अहरा । +ई =अहासि, अहरि । ६.२८. ० +
 ण =हारा । ५.४६. ० +अन =हारणा । ५.४६. ० +स-अ =
 जिगंसा । ५.१०२. ० ('अभि' पूर्वक) +तुं =अभिहृदुं । +
 त्वा =अभिहरित्वा । ५.१६५.

१३६. ० +स्सति =हायिस्सति, हाहति । +स्सा =अहाहा, अहायिस्सा ।
 ६.२५. ० +णन =हायना (वीहि) । हायनो (संबच्छरो) ।
 ५.३७. ० +नि =हानि । ५.५०. ० +स्सति =हाहति, जहिस्सति ।
 ६.६८. ० +ति, तब्ब, तुं =जहाति, जहितब्बं, जहितुं । ५.७०:७६
 १४०. ० +त्ति, तब्ब =हिनोत्ति, पहिणितब्बं
 +तुं, अन =पहिणितुं, पहीणनं
 १४१. ० +स्सति =हेस्सति; हेहिस्सति; होहिस्सति । ६.३१
 ० +रेसुं =अहेसुं; अभवुं । ६.४१

संख्या

२४६ हंस (भू) तुट्टियं = सन्नुट्ट टोना

—————

-
- ० +ओ = अहोसि; अहुवो । ६.४३
 - ० .(=हेहि) +स्सति = हेहिति; हेहिस्सति । ६.६६
 - ० (=होहि) +स्सति = होहिति; होहिस्सति । ६.६६

तीसरा परिशिष्ट
मोग्गल्लान गण-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

तीसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान गण-पाठो

व्याकरण में कुछ ऐसे नियम आते हैं, जो कुछ निश्चित शब्द अथवा धातु पर ही लागू होते हैं। जैसे—

ध्यादीहि युत्ता २.६—अर्थात् 'धि' आदि शब्दों के योग में दुतिया विभक्ति होती है। 'धि' आदि शब्द आठ हैं—धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्वतो, उभयतो।

ऊपर के सूत्र में, इन आठों शब्दों का उल्लेख न करके, सरलता के लिए, उनका बोध 'धि-आदि' से कर लिया गया है। इस तरह, इन आठ शब्दों का एक गण हुआ, जिसका नाम 'ध्यादि' पड़ा; क्योंकि यह गण 'धि' शब्द से आरम्भ होता है।

मोग्गल्लान व्याकरण में ऐसे अस्सी गण हैं। कुछ तो छोटे छोटे गण हैं, जिन में दो या तीन ही शब्द या धातु हैं; परन्तु, बड़े बड़े गणों में उनकी संख्या तीस-चालीस तक भी है।

किसी गण को आसानी से खोज निकालने के लिए, अ-कारादि क्रम से गणों की एक सूची दे दी जाती है—

मोग्गल्लान गण-पाठ की सूची

अङ्गुलि	आदि	४. ३५	अभिज्झा	आदि	४. ६६
अज्ज	,,	४. २१	अम्मा	,,	२. ६३
अणु	,,	४. ६२	आदि	,,	४. ६८

आप	आदि ३.५६	दिति	आदि ४.४
आरामिक	" ३.२६	दिव	" २.१७७
एकच्च	" २.१३७	धि	" २.६
एकादस	" ४.५१	नख	" ३.७६
कत्तिका	" ४.३	नत्ता	" २.१७६
कथादि	" ४.७४	नद	" ३.२७
कम्म	" २.८१	पक्ख	" ३.८३
किर	" ५.१५२	पञ्च	" ४.५२
कुम्ह	" ३.७२	पथ	" ४.७५
कोध	" २.१०६	पद	" २.१०७
खाद	" २.६	पद	" ५.६२
गम	" ५.१०६	पिच्छ	" ४.८७
गुण	" ३.६४	प	" ३.१३
गुह	" ५.३२	पाप	" ३.४१
गो	" ४.३५	पिता	" २.५६
घरणी	" ३.३२	पुच्छ	" ५.१४३
चक्खु	" ४.७१	ब्रह्म	" २.६२
चत्तालीस	" ३.६६	भज्ज	" २.४
चुर	" ५.१५	भज्ज	" ५.१५४
जन	" ४.६६	भिद	" ५.१५०
जन्तु	" २.८६	मज्झ	" ४.२४
जा	" ५.१३७	मन	" २.१४६
तदमिना	" १.४७	मातुल	" ३.३३
तप	" ४.८१	मुख	" ४.३५; ८२
तर	" ५.१५३	यक्ख	" ३.२८
तारका	" ४.४५	राजा	" २.१५६
तिट्ठु	" ३.७	रुह	" ५.१४८
तुट्ठि	" ४.८३	वच्च	" ५.११०
दण्ड	" ४.८०	वच्छ	" ४.२; ५६

वद	आदि ५. ३०	सद्धा	आदि ४. ८४
विध	" ३. ६१	सब्ब	" २. १०१
विधवा	" ४. ३	साखा	" ४. ३५
दम	" ५. ४६	स	" ५. ४३
सक्करा	" ४. ३५	सील	" ४. ८८
सच्च	" ५. १३	सुमेध	" २. १३०
सत	" ३. ६४:५३	सोत	" ३. ७२
सद्द	" ५. १०	हर	" २. ५

पठमो कण्डो

तदमिनादीनि । १.४७

तदमिना, सकदागामी, एकमिदाहं, संविदावहारो, वलाहको, जीमूतो, सुमानं, उदुक्खल, पिसाचो, मयूरो, दोवारिको, सीहो, नियको, मेखला, मागविको, सोवग्गिको, लोलुपो, मोमुहो, महिसो, पिसोदरं, पुरेक्खारो, आकासानञ्चं, अञ्जोञ्जं, दुस्स, विहगो, द्विजो, कळभो, दक्खिति, अभिसंखासि, पिदहति, पिदहन्तिच्चादयो, अपिपुब्बदधातिना, निप्फन्ना, लुत्ता, कारा, सद्दा, इति तदमिनादि । (आकतिगणो'य)

(यं यं लक्खणेनानुपपन्नं तं सब्बं तदमिनादिपक्खेन साधेतब्बं ।)

दुतियो कण्डो

गतिबोधाहारसद्धत्थाकम्मकभज्जादीनिं पयोज्जे । २.४.

भज्जं=पाके, कुट कोट्टं=च्छेदने, थरं=सन्थरणे इति भज्जादि ।

हरादीनिं वा । २.५.

हरं=हरणे, अज्जोपुब्ब-हरं=अज्जोहारे, करं=करणे, दिसं=पेक्खने, अभिवादि=(नाम धातु) अभिवादाने इति हरादि ।

न खादादीनं । २.६.

खाद = भक्वन्ते, अद = भक्वन्ते, वहे = अघ्नान्ते. गदाय = (नाम धातु) मद्दकरणे, कन्द = वह्नान रोदनेसु, नी = पापुणने, (अनियन्तुके, कर्त्तारि गम्यमाने) वह = पापणे, (अहिंसाय गम्यमानाय) भक्वन् - अदने, इति खादादि ।

ध्यादीहि युत्ता । २.६.

धि, हा, अन्तरा, अन्तरेण, अभिनो, परिणो, सद्यन्तो, उभयन्तो, इति ध्यादि (आकनिगणोयं) ।

ल्लुपितादीनमा लिम्हि । २.५६.

पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नन्तु, हंतु, पोतु, इति पितादयो ।

घ ब्रह्मादिते । २.६२.

ब्रह्म, कत्तु, उमि, सख, मनि, भयन्त, इति ब्रह्मादि । (आकनिगणोथ)

नाम्मादीहि । २.६३.

अम्मा, अन्ना, अम्वा, नाता, इति अम्मादि । (आकनिगणोयं)
[मम्बोधने गस्स एकारत्ताभिनो घसञ्जा सव्वे एत्थ दट्ठव्वा ।]

अम्बवादीहि । २.८०.

अम्बु, पंसु, इच्चादि अम्बु-आदि । (अयञ्चाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने नि-आदेसो वा दिस्सति, सो'यं अम्बवादिमु दट्ठव्वो ।]

कम्मादितो । २.८१.

कम्म, चम्म, वेस्म, भस्म, ब्रह्म, अत्त, आतुम, घम्म, मुद्ध, (कालट्टान वाचि) अद्ध, अस्म, गाण्डीवधन्व, अणिम, लधिम, कसिम, महिम, इच्चादि कम्मादि । (अयम्पाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने वा नि आदेसो, ततियेकवचने वा एनादेसो च दिस्सति, अयं कम्मादिसु दट्ठव्वो ।]

'मनादीन नक्' इति ४.१०८ एत्थ तु मुमेधादयोऽपि मनादिम् पठीयन्ते, णानुबन्धणचनये परे सकागमन्त्र सकागममुच्चारणत्वेन प्रजन तु येऽपि न मनादिम् दट्ठव्वा ।]

मुमेधादीनमद्युद्धि च (५)

सुमेध, भूरिमेध, मन्दमेध, अपमेध. इच्चादि मुमेधादि ।

[पाणिनीयेऽपि समासन्तान विधानावन्तरे तद्गुणु इच्चेतेहि परेहि अकारान्ते हि स्थिलिङ्गेहि पजा-मेधामदेहि "मित्यर्मात्तच् प्रजामेधयो. ५.१.१२४" इच्चेनेन सुत्तेन अम् विधाय सकारन्ता "प्रप्रजन्. दुप्रजन्. सुप्रजन् अमेधम्, दुमेधम्, सुमेधम्" इच्चेते सहा निष्कार्दीयन्ते ।

[चन्द्रव्याकरणे तु "प्रजाया अग्निच् ४.१.१०३ मन्दात्पाच्च मेधाया. ४.४.१०८" इति मुनेऽपि द्वीहेनेहि यथावन्ता चं च पाणिनीया तदाधिका "मन्दमेधम्, अपमेधम्" इति सहा च निष्कार्दीयन्ते ।

अस्मिन्मपि महान्तरेण 'मुमेधादीनम द्युद्धि च' इति गण-मृतेनानेन यथावृत्तंमु तेम् सकारन्तेगु ये ये बुद्धवचने दिग्गन्ति तेगमेव सहान गहणन्ति मज्जाम ।]

राजादियुदीदित्वा । २.१५६.

राज, ब्रह्म, सख, अन्न, आनुम, अस्म, गुद्ध, (कालदानवाचि) अद्ध, गाण्डीव-धन्व, (अञ्जत्थे वत्तमानधम्मसद्वन्ता) दद्ध, हधम्म, पच्चत्तनधम्म, कल्याणधम्म, अधीनधम्म (इच्चादयो विकल्पेन, भावे, इमप्यच्चयन्ता) अणिम, लधिम, महिम, कसिम् इच्चादयो च राजादयो ।

युव, सा, सुवा, मधव, पुम, वत्तह इच्चादयो युवादयो ।

(इमेऽपि द्वे आकतिगमणाव, तेन यथागममञ्जेऽपि सहा एत्थ दट्ठव्वा ।)

दिवादितो । २.१७७.

दिव, भू, इति दिवादि ।

पितादीनमनत्वादीनं । २.१७८.

पितादयो दस्सितपुब्बाव । नत्तु, होतु, पोतु, इति नत्तादि ।

(इति स्यादि कण्डो दुतियो)

ततियो पाठो

तिट्ठग्वादीनि । ३.७.

निट्ठगु, वहग्गु, आयतिगव, खलेयवं, लूनयवं, लूयमानयवं, सहटयवं, उम्मत्त-
गङ्ग, लोहितगङ्ग, सयम्भूमि, समम्पदाति, सुसमं, विसमं केसाकेसि, मुट्ठामुट्ठि,
दग्गडादण्डि, मुसलमामुसलि, (इच्चादयो च्यन्ता), पातनहान, सायनहान, पातकाल,
सायकालं, पातमेवं, सायमेवं, पातमग्ग, सायमग्ग, इच्चादि तिट्ठग्वादि । (आक-
तिगणोयं)

कुपादयो निच्चमस्यादि विधिस्सिह । ३.१३.

प, परा, अप, स, अनु, अव, ओ, नि, दु, वि, अधि, अपि, अति, सु, उ, अभि,
पति, परि, उप, आ, इति पादि ।

(किञ्चापि कच्चानेहि ओ-उपसग्ग पहाय 'वि-नी' इति द्वे उपसग्गा पठिता,
तथापि इह यथा द्वरक्ख-वीतिहार-अतीसारादिसु 'द्व-वी-अतीन' दीघेन सिद्धि,
तथेव नी-सद्दस्सापि दीघेन सिद्धि भवतीति, नी-सद्द पहाय ओ-उपसग्गो पठितो ।)

नदादितो डी । ३.२७.

नद, मह, कुमार, तरुण, वरुण, नगर, ब्राह्मण, सूकर, हंस, कुक्कुट, किसोर,
कलभ, हरीतक, देव, मातामह, पितामह, विसालक्ख, सख, काळ, अतस, नीलि,
पालि, भूरि, खज्जूर, बदर, कुरर, संवर, भेर, दब्बि, धमनि, वत्तनि, सकुन, सकुण,
पुत्त, सोणि, दोणि, वलि, वल्लि, पच्चम, छट्ठ, छट्ठम, सत्तम, अट्ठम, नवम,
दसम, कतिमादयो (पूरणत्थपच्चयन्ता); नन्दन्त, जीवन्त, सवन्त, रोदन्त,
अवन्तादयो (अन्तप्पच्चयन्ता); पच्चन्त, महन्त, भवन्तादयो (न्तप्पच्चयन्ता);
वासिट्ठ, गोतम, माणव, ओपगव, मानुस, तापस, कोसम्ब, काकन्द, माकन्द,
साहस्स, फुस्स, वेसाख, मागसिरादयो (णप्पच्चयन्ता) वच्छतर, उक्खतर अस्स-
तर, उसभतर, महत्तरादयो (केचि तर-पच्चयन्ता); वेनतेय्य, सामणेरादयो
(णेय्य-णेरन्ता); नाविकादयो (णिकन्ता); गुणवन्त, सुत्तवन्त, सतिमन्त, गोम-
न्तादयो (त्त्वन्ता); गो (विकप्पेन); पंयोगतो इत्थियं वत्तमाना पुमुनो
सञ्जाभूता अपालकन्ता सद्दा इच्चादि नदादि । (आकतिगणोयं)

[यतो यतो नासन्मा र्दिवो उपावृषो विरगो, नो तदादिषु दृश्यव्यो । कुतोऽपि सत्समा उपावृषो विक्रमेत शर्मति । कृतीति गित्तं । यन्मा यथा यथा त्रिनवन्ते दिम्बति, त सा तथा एव उपावृषो र्मादिनो दृश्यव्यो ।]

यक्खादित्विनी च । ३.२८

जम्भ, नाग, मीढ, सपति, इच्चादि यक्खादि । (आकृतिगणोय)

आरासिकादीहि । ३.२९.

आरासिक, अन्तन्नायिक, राज, डोहळ, (नञ्जाय सम्प्रदानाय) मानुस एव-
मादि आरासिकादि । (आकृतिगणोय)

घरण्यादयो । ३.३२.

रुन्, पांक्वरी, उररी, वफिकदाप मारी, मनार मारी, पपञ्चमदी, निरं-
मरी, आन्तरिय एवमादि घरण्यादि । (आकृतिगणोय)

मानुलादित्वाती भरियाय । ३.३३.

मानुल, वरुण, उल्द, गहपति, मृत्तारिच, (पभादिनाय) मानुय, प्रय्यक एव-
मादि मानुलादि ।

पापादीहि भूमिया । ३.४१.

पय, जानि इति पापादि ।

मनाद्यपादीनमो मये च । ३.५६.

मानदि वृत्तपुव्व । आप, दिमा, ग्रह, र्ह, वाय, सरद इच्चादि आपादि ।
(आकृतिगणोय)

कुम्हादिसु वा । ३.७२.

कुम्भ, पत्त, विन्दु इच्चादि केम्भादि । (आकृतिगणोय)

सोतादिसू लोषो । ३.७३.

सोत, रक्खस, आसय इच्चादि सोतादि । (आकृतिगणोय)

[येसु सद्देसु परेसु उदकसहस्स उकारो लुप्यते, ते सदा सोतादिसु दट्ठब्बा ।
केचि तु दकसहमेविच्छन्ति, नेवुलोप ।]

नखादयो । ३.७६.

नख, नकुल, नपुंसक नक्खत्त, नाक, नमुच्चि, नक्क, एवमादि नखादि । (आकति-
गणोयं)

समानस्स पक्खादिसु वा । ३.८३.

पक्ख, जोति, जनपद, रत्ति, पत्तिनि, पत्ती, नाभि, बन्धु, ब्रह्मचारी, नाम,
गोत्त, रूप, ठान, वण्ण, वयो, वचन, धम्म, जातिय, घच्च इति पक्खादि ।

विधादिसु द्विस्स दु । ३.९१.

विध, पट्ट, रत्ति, अङ्ग, (हळादेसलाभि) हृदय, इति विधादि ।

दि गुणादिसु । ३.९२.

गुण, रत्ति, गो, पद, सत, सहस्स, वचन, इति गुणादि ।

आ संख्यायासतादो' नञ्जत्थे । ३.९४.

सह, सहस्स, सतसहस्स, लक्ख, कोटि, एवमादि सतादि ।

चत्तालीसादो वा । ३.९६.

चत्तालीस, पञ्जास, सट्ठि, सत्तति, असीनि, नवुत्ति, इति चत्तालीसादि ।

(इति समासकण्डो ततियो)

चतुत्थो कण्डो

वच्छादित्तो गान-गायना । ४.२.

कच्छ, कच्च, कातिय, मोगल्ल, सकट, (ब्राह्मणे) कण्ह, अस्सल, बदर, अग्गि-
वेस्स, मुञ्ज, कुञ्ज, हरित, गग्ग, दक्ख, दोग एवमादि वच्छादि । (आकतिगणोयं)

[उभो गान-गायना उभिन्नमञ्जतरो वा येहि दिस्सते ते सब्बे वच्छादिसु
दट्ठब्बा ।]

कत्तिकाविधवादीहि णेय्य-णेरा । ४.३.

कत्तिका, विनता, भगिनी, रोहिनी, अत्ति, पण्हि, गङ्गा, नदी, अन्त, अहि, कपि, सुचि, बाला, इच्चादि कत्तिकादि । (आकतिगणोयं)

[येभुय्येन घपसञ्जन्ता अञ्जे च केचि अत्ति पण्हि इच्चादयो एत्थ दट्ठब्बा ।]

विधवा, वन्धकी, नाळिकी, समण, चटक, गोधा, काण, दासी इच्चादि विधवादि । (आकतिगणोयं)

[यतो णेर-प्पच्चयो दिस्सति सो विधवादिसु दट्ठब्बो ।]

प्य दिच्चादीहि । ४.४.

दिति, अदिति, कुण्डनी, गग, भातु, कत, मुगल, वच्छ, अग्गिवेस्स, इच्चादि दिति-आदि । (आकतिगणोयं)

[येहि ण्यो दिस्सति ते दिच्चादिसु दट्ठब्बा । सक्कते गग्गादिगणतोपि यो यो इध जिनवचने लब्भति सो' पि एत्थेव दट्ठब्बो ।]

अज्जादीहि तनो । ४.२१.

अज्ज, स्वे, हिय्यो, सायं इति अज्जादि ।

मज्झादित्विमा । ४.२४.

मज्झ, अन्त, हेट्ठा उपरि, ओर, पार, पच्छा, अम्भन्तर, पच्चन्त इति मज्झादि ।

गवादीहि यो । ४.३५.

गो, कवि, दु इति गो-आदि ।

साखादीहि इयो (४३)

साखा, मेघ, कुसग्गिय इति साखा-आदि ।

मुखादीहि यो (४४)

मुख, जघन, इति मुखादि ।

सक्करादीहि णो (४६)

सक्करा, कपालिका इति सक्करादि ।

अङ्गुल्यादीहि णिको (४७)

अङ्गुलि, मुनि, बाल, कुलिस, एकसाला, कक्क, लोहित इति अङ्गुल्यादि ।

सञ्जातं तारकादित्वतो । ४.४५.

तारका, पुप्फ, पल्लव, फल, कण्णक, कण्टक, सुत्त, मुत्त, उच्चार, विचार, पचार, मुकुळ, कुसुम, थवक, किसलय, कुतूहल, निदा, मुदा, तन्दा, बुभुक्खा, पिपासा, मुच्छा, जिगुच्छा, संका, आसंका, सद्, सुख, दुक्ख, उक्कण्ठा, बाधा, आबाधा, भर, व्याधि, अन्ध, बंधिर, पण्ड, संसय, विम्हय, एवमादि तारकादि ।
(आकतिगणोयं)

तस्स पूरणेकादसादितो वा । ४.५१.

एकादस—अट्ठारस, एकूनवीसति—एकूनतिसति—एकूनचत्तालीस—
एकूनपञ्चास—अट्ठपञ्चास इति एकादसादि ।

स पञ्चादिकतीहि । ४.५२.

पञ्च, सत्त, अट्ठ, नव, दस—अट्ठादस, एकूनवीसति—एकूनतिसति
इच्चादि पञ्चादि ।

[छ-सङ्ख्याय सतादीहि च विना तदितरेहि येहि संख्यासद्देहि मप्पच्चयो
दिस्सते ते सब्बे पञ्चादिसु दट्ठब्बा ।]

सतादीनमि च । ४.५३.

सत्त—दससत, सहस्स—सतसहस्स इति सतादि ।

वच्छादीहि तनुत्ते तरो । ४.५६.

वच्छ, उक्ख, अस्स, उसभ, इति वच्छादि ।

अण्वादित्वमो । ४.६२.

अणु, लघु, महन्त, किस, गरु इति अण्वादि ।

जनादीहि ता । ४.६६.

जन, गज, बन्धु, गाम, सहाय, नगर इति जनादि ।

चक्ख्वादितो स्सो । ४.७१.

चक्खु, आयु इति चक्ख्वादि ।

कथादित्त्विको । ४.७४.

कथा, धम्मकथा, सङ्गाम, पवास, उपवास इति कथादि ।

पथादीहि णेय्यो । ४.७५.

पथ, सपति, पदीप इति पथादि ।

दण्डादित्त्विक ई वा । ४.८०.

दण्ड, गन्ध, रूप, रस, सीस, केस, सस, धम्म, सङ्घ, जाण, गण, चक्क, पक्क, दाठा, रट्ठ, कुट्ठ, जटा, छत्त, मन्त, योग, भोग, भाग, चाग, काम, धज, यान, कर, कुसल, मुसल, कंखा, विचिकिच्छा, धनसद्दो, (अमम्पत्ते वत्तव्वे) अत्थसद्दो, पुञ्जत्थ, धम्मत्थ, धनत्थादयो ('अत्थ' सहन्ता) । ब्रह्मवण्ण, देवदण्ण, मुवण्ण, वण्णादयो (वण्णन्ता); (जातिय गम्यमानायं) हत्थ, दन्तगद्दा; (ब्रह्मचारिणि वाचिनि) वण्णसद्दो; (देसे वत्तव्वे) पोक्खर, उप्पल, कुमुद, भिस, मुळाल, सालूक, पट्टुम, कद्दमादि, पोक्खरादि; (क्वचि अदेरो'पि) पट्टुमसद्दो, नावासद्दो, मुत्त, दुक्खसद्दा च, सिखा, माला, सील, वल, मेखला, वीणा, सञ्जा, वळवा, अट्ठका, बलाका, पताका, कम्म, वम्म, उस्साह, कूल, मूल, आयाम, वायाम, उपयाम, आरोह, अवरोह, एवमादि सिखादि; बाहुवल, ऊरुवल सद्दा च इच्चादि दण्डादि । (आकति-गणोयं)

तपादीहि स्सो । ४.२१.

तप, यस, तेज, मन, पय, इति तपादि ।

सुखादितो रो ४.८२.

मुख, सुसि, ऊस, मधु, ख, कुञ्ज, नग, नख, (उन्नतदन्ते वत्तव्वे) दन्त, रुचि, सुभ, सुचि, इति सुखादि ।

तुट्ठयादीहि भो । ४.८३.

तुट्ठि, साळि, वलि, इति तुट्ठयादि ।

आल्वभिज्भादीहि । ४.८६.

अभिज्भा, सीत, धज, दया, सद्धा, निदा, इति अभिज्भादि ।

पिच्छादित्वलो । ४.८७.

पिच्छ, फेण (फेन), जटा, वाचा, तुण्ड इच्चादि पिच्छादि । (आकति-
गणोयं)

सीलादितो वो । ४.८८.

सील, केस, अण्ण, (सञ्जाय वल्लव्जाय) गाण्डी, राजी च एवमादि सीलादि ।
(आकतिगणोय)

अभ्यादीहि । ४.९७.

अभि, परि, पच्छा, हेट्ठा, ओर, पार, पुरादि अभ्यादि ।

आद्यादीहि । ४.९८.

आदि, मज्झ, अन्त, पिट्ठि, पस्म, मुत्त, य, एवमादि आद्यादि ।

[सगख्येहि तन्नुव्येहि चापञ्चभ्यन्तेहि येहि तो दिस्सति ते आद्यादिमु
दट्ठव्वा ।]

(इति णादिकण्डो चतुत्थो)

पञ्चमो कण्डो

सद्दादीनि करोति । ५.१०.

सद्द, वेर, कलह, धूप, अब्भ, मेघ, अट्ट, सुदिन, दुद्दिन, नीहार, इच्चादि सद्दादि ।

सच्चादीहापि । ५.१३.

सच्च, अत्थ, वेद, सुक्ख, सुख, दुक्ख, एवमादि सच्चादि ।

चुरादितो णि । ५.१५.

चुरादि, भुवादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि, क्यादि, स्वादि, तनादि,
इच्चेते धातुगणा धातुपाठतो येवावगन्तव्वा ।

वृद्धादीहि धो । ५.३०.

वद=वचने, मद=उम्मादे, अम, गम=गमने, गद=वचने, पद=गमने, अद, खाद=भक्खने, दम=दमने, (अन्ने भिधेय्ये) भुज=पाल नज्भोहारेसु (सञ्जाय वत्तव्वाय), भर=भरणे एवमादि वदादि । (आकतिगणोयं)

गुहादीहि यक् । ५.३२.

गुह=संवरणे, दुह=प्पूरणे, सास=अनुसिट्ठियं, एवमादि गुहादि । (आकतिगणोयं)

समानञ्जभवन्तयादितूपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका । ५.४३.

य, त्य, त, एत, इम, अमु, कि, एक, तुम्ह, अम्ह, इति यादि ।

वमादीहथु । ५.४६.

वम=उगिरणे, वेप, कम्प=चलने, दू=परितापे, सी - सये णि वमादि ।

पदादीनि क्वचि । ५.६२

पद=गमने, मद=उम्मादे, बुध=जाणे, युध=सम्पहारे, मन=जाणे, रुध=आवरणे, मुह=वेचित्ते, तुस=तुट्ठियं, नस=अदस्सने, भस=अधोपतने, सुम=सोसे, कुप=कोपे, सीव=तन्नुसन्ताने, पूज=पूजायं इच्चादि पदादि । (आकतिगणोयं)

गमादिरानं लोपोत्तस्स । ५.१०६.

अम, गम=गमने, खन, खण=अवदारणे, हन=हिंसायं, मन=जाणे, तन=वित्थारे, यम=उपरमे, रम=कीळाय, नम=नमने, एवमादि गमादि । (आकतिगणोयं)

अञ्जादिस्सास्सि क्ये । ५.१३७.

जा=अवबोधने, ता=पालने, पा=रवखने, खा=ख्या=कथने, वा=गमने, भा=चिन्तायं, दा=अवखण्डने, गिला=हासक्खये, मिला=गत्तविनामे इच्चादि ज्ञादि । (आकतिगणोयं)

पुच्छादितो । ५.१४३.

पुच्छ=पुच्छने, भज्ज=पाके, यज=देवपूजासगतिकरणदानेसु, सज=सङ्गे, मज=विस्सज्जनालिङ्गननिम्मानेसु, मज्ज=मसुद्धिय, हर=हरणे, इच्चादि पुच्छादि । (आकतिगणोयं)

रहादीहि हो ळ च । ५.१४८.

रह=जनने, गुह=सवरणे, वह=पापुणने, बह-ब्रह-ब्रूह=वुद्धियं, इच्चादि रहादि । (आकतिगणोयं)

भिदादितो नो क्तवत्तवन्तं । ५.१५०.

भिद=विदारणे, छिद=द्वेधाकरणे, छद=सवरणे, खिद=असहने, पद=गमने, सिद=पाके, सद=विसरणगत्यवसादनादानेसु, पी=तप्पने, सु=पसवे, दी=खये, डी-ळी=आकासगमने, ली=शिलेसने, लू=च्छेदने, रुद=रोदने, एवमादि भिदादि । (आकतिगणोयं)

किरादीहि णो । ५.१५२.

किर=विकिरणे, पूर=पूरणे, खी=खये, तुद=व्यथने, एवमादि किरादि । (आकतिगणोयं)

तरादीहि रिण्णो । ५.१५३.

तर=तरणे, जर=वयोहानियं, चि=चये, एवमादि तरादि । (आकतिगणोयं)

गो भज्जादीहि । ५.१५४.

भज्ज=ओमदने, लभ=सङ्गे, मुज्ज=मुज्जने, विज=भयचलनेसु एवमादि भज्जादि । (आकतिगणोयं)

(इति खादिकण्डो पञ्चमो)

(इधाम्हेहि आकतिगणत्तेन नोपदिट्ठापि आदिसद्दोपलक्खिता सब्बे आकतिगणोयेव । यतो इध वुत्तानमादिसद्दोपलक्खितगणानमाकारमादस्सयमिदमाह सद्-

लक्षणकत्तायेव । यथा चायमाकतिगणो तथाञ्जत्रापि आदिमद्वोपनिषत्तु गणा
आकतिगणाति दस्सेतुमाह एवमञ्जत्रापि ।

आकति इति

च जाति वुच्चतिः तप्पधाना गणा आकतिगणा ।)

इति सोमगल्लान गण-पाठो

चौथा परिशिष्ट

समास, स्त्री-प्रत्यय, समासान्त

समास-तालिका

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
न	×	अ ×	न ब्राह्मणो-अब्राह्मणो	३.१२; ७४	२७४
कुच्छित्तो	×	कु ×	कुच्छित्तो ब्राह्मणो-कु- ब्राह्मणो	३.१३	२७५
ईसकं	×	कद ×	ईसकं उण्हं-कदुण्हं	३.१३	२७५
×	(अप्रधान)	× ह्रस्व	बहुमालो पोसो । निक्को- सम्बि	३.२४	२७०
×	घ, प	×	चित्ता गावो यस्स-चित्तगु	३.२५	२७०
इम	×	इदं ×	इमेसं पञ्चया-इदप्प- च्चया	३.५५	२७३
पुम	×	पु ×	पुमस्स लिङ्गं-पुलिङ्गं	३.५६	२७३
न्त, न्तु	×	अ ×	भवम्पतिट्ठा मयं-भग- वम्मूलको नो धम्मो ।	३.५७	२७०
न्तु	×	न्त ×	गुणवन्तपतिट्ठो	३.५८	२७०
मन	×	मनो ×	मनोसेट्ठा । मनोसया	३.५९	२७०
पर	(सख्या- वाचक)	परो ×	परोसतं । परोसहस्सं	३.६०	२६६
पुथ	जनो	पुथु ×	पुथुज्जनो	३.६१	२७५
छ	अहं । आय तनं	स ×	साहं (=छाहं) । सळा-	३.६२	२७५
ल्लु	×	तार ×	यतनं	३.६३	२७३
ल्लु	(विज्जा, योनि)	ता ×	सत्थुनो दस्सनं-सत्थारद स्सनं	३.६४	२८०
पितु	पुत्त	पिता ×	होतापोतारो		
(इत्थियं)	(समाना- धिकरणं)	(पुमेव) ×	पितापुत्ता	३.६५	२८०
(इत्थियं)	(वृत्तिमत)	(पुमेव) ×	कुमारी भरिया यस्स सो- कुमारभरियो	३.६७	२७१
सब्बादि			तस्सा मुखं-तम्मुखं	३.६६	२७४
जाया	पति	जयं ×		३.७०	२८०
उदक	×	उद ×	जाया च पति च-जयम्पती	३.७१	२७८
	(सञ्जायं)		उदकस्स पानं-उदपानं		

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	नृन नग्या	पृष्ठ नग्या
उदक	सोत	दक ×	उदकस्स सोतं-दकसोतं	३.७०	२७४
न	(स्वर)	अन ×	न अन्नान्-अन्नकान्तं	३.७५	२७४
सह	×(अञ्ज- त्थे)	स ×	सपुत्तो (महपुत्तो)	३.७८-८०	२६८, २७१
समान	(पक्खादि)	स ×	समानो पक्खो-सपक्खो	३.८३-८५	२७१, २७६
उम्ह	×	त ×	तंसरणा। तन्दीया	३.८६	२७१
अम्ह	×	म ×	मंसरणा। मन्दीया	३.८६	२७१
द्वि	विध(आ- दि)	दु ×	दुविधो। दुप्पटं	३.९१	२७२
द्वि	गुण(आदि)	दि ×	दिगुणं। दिरत्तं। दिगु	३.९२	२७२
द्वि	ति	द्व ×	द्वत्तिखत्तुं	३.९३	२७२
द्वि	(असातादि संख्या)	द्वा ×	द्वादस। द्वावीसति	३.९४	१६८
ति	„	ते ×	तेरस। तेवीसति।	३.९५	१६८
ति	(चत्ताली- सादि)	ति, ते ×	तेचत्तालीस। तिचत्तालीस	३.९६	१७१
द्वि	(अचत्ता- लीसादि)	वा ×	बारस। बावीसति	३.९८	१६८
पञ्च	दस	पन्न ×	पन्नरस (पञ्चदस)	३.९९	१६८
पञ्च	वीसति	पण्ण ×	पण्णुवीसति (पञ्चवीसति)	३.९९	१६८
चतु	दस	चु, चो ×	चुद्दस, चोद्दस, चतुद्दस	३.१००	१६८
छ	दस	सो ×	सोळस	३.१०१	१६९
एक	दस	एका ×	एकादस	३.१०२	१६८
अट्ठ	दस	अट्ठा ×	अट्ठादस	३.१०२	१६८
(संख्यावा- चक)	दस	× रस	एकारस (एकादस)	३.१०३	१६८
छ। ति	दस	× ळस	सोळस(सोरस)। तेळस (तेरस)	३.१०४	१६८
कु (अप्पत्थे)	×	का ×	अप्पकं लवणं-कालवणं	३.१०८	२७५
कु (पुब्बादि)	पुरिस अह	का × × अन्ह	कापुरिसो पुब्बन्हो। सायन्हो	३.१०९ ३.११०	२७५ २७६

स्त्री प्रत्यय

प्रत्यय	प्रयोग-स्थान	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ
आ	अकारान्ततो	धम्मदिन्ना	३.२६	२३६, २४२
डी	नदादितो	नदी, मही, कुमारी	३.२७	२४०
डी	त्तन्तून तो वा	गच्छती, गच्छन्ती । सील- वती, सीलवन्ती ।	३.३६	२४०
डी	भवतो भोतो	भोती, भवन्ती	३.३७	२४०
डी	गोस्सावङ्	गावी	३.३८	२४०
डी	पुथुस्स पथव-पुथवा	पथवी, पुथवी	३.४०	२४०
इनी	यक्खादितो	यक्खिनी, यक्खी	३.२८	२४०
इनी	आरामिकादीहि	आरामिकिनी	३.२९	२४१
नी	इ-उवणोहि	दण्डिनी, भिक्खुनी	३.३०	२४१
नी	क्तिम्हा अञ्जत्थे	साहं अहिंसारतिनी	३.३१	२४१
आनी	मातुलादितो	मातुलानी (भरियायं)	३.३३	२४२
ऊ	उपमानादिपुब्बा	करभोरू, वामोरू	२.३४	२४२
ति	युवा	युवति	३.३५	२४२

समासान्त प्रत्यय

अ	पापादीहि भूमिया	पापभूमं । जातिभूमं	३.४१	२८४
अ	संख्याहि भूमिया	द्विभूमं । तिभूमं	३.४२	२८४
अ	नदी गोदावरीनं	पञ्चनदं । सत्तगोदावरं	३.४३	२८४
अ	अङ्गुल्या	निग्गतमङ्गलीहि-निरङ्गुलं	३.४४	२८४
अ	रत्तिया	दीघरत्तं । अहोरत्तं	३.४५	२८४
अ	'गो' सद्दा	राजगवो । परमगवो	३.४६	२८५
अ	अक्खिस्सा	विसालक्खो	३.४९	२८५
अ	अङ्गलन्ता (दारुम्हि)	पञ्चङ्गलं दारु	३.५०	२८५
च्चि	वीतिहारे	केसाकेसि । दण्डादण्डि	३.५१	२८५
क	त्तु-ई-ऊ कारन्तेहि	बहुकत्तुको । बहुकुमारिको	३.५२	२८६
क	अञ्जेहि अञ्जपदत्थे	बहुमालको	३.५३	२८६

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित प्रत्यय लगाने के साधारण नियम

साधारण नियम

‘ण’ अनुबन्ध

१. प्रत्यय में यदि ‘ण’ अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के प्रथम ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ का क्रमशः ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

२. यदि ‘ण’ अनुबन्ध वाला कोई स्वरदि प्रत्यय हो, तो शब्द के अन्त्य ‘उ’ का ‘अव’ होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

३. शब्द के प्रथम ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ से परे, यदि कोई संयुक्त अक्षर हो, तो उनका कभी-कभी ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ नहीं भी होता है। जैसे:—कत्तिका+ण्य=कत्तिकेय्यो।

४. कभी-कभी, बीच के ‘अ-इ-उ’ का भी ‘आ-ए-ओ’ हो जाता है। जैसे:—वासिठ्ठ+ण=वासेठ्ठो!

‘र’ अनुबन्ध

५. प्रत्यय में यदि ‘र’ अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के अंश का लोप होता है। जैसे:—पितु+रेय्यण=(‘पितु’ के ‘इतु’ का लोप) पेत्येय्यं।

(१) ४.१२४। (२) ४.१२६। (३) ४.१२५। ‘कत्तिकेय्ये’ नहीं हुआ, क्योंकि ‘क’ से परे संयुक्त अक्षर ‘त्त’ है। (४) ४.१२६। (५) ४.१३२।

‘ड’ प्रत्यय

६. ‘ड’ प्रत्यय आने से, ‘सत्यन्त’ संख्या वाचक शब्दों के ‘ति’ का लोप होता है। जैसे :—वीसति+ड=वीसं । तिसं ।

स्त्री प्रत्यय लगने पर

७. ककारान्त शब्द से परे, यदि स्त्री-प्रत्यय ‘आ’ आवे, तो ‘क’ के पत्र ‘अ’ का बहुधा ‘इ’ होता है। जैसे बालक+आ=बालिका । कारिका ।

(६) ४.१३४।

* जैसे—विसति ।

(७) ४.१४२।

तद्धित प्रत्ययों की सूची

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१	अ	सद्धो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८४	१६६
२	अच्चो	अमच्चो	तत्र भवे	४.२३	२६१
३	अय	उभयं, द्वयं	परिमाणे	४.४६	२४८
४	आकी	एकाकी	असहाये	४.५५	२४८
५	आमह	मातामहो	मातापितुसु	४.३८	२६६
६	आमी	सामी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.६०	१६७
७	आलु	अभिज्जालु	"	४.८६	१६६
८	आवन्तु	यावन्तं, तावन्तं	"	४.४३	२४६
९	इक	दण्डिको	"	४.८०	१६४
१०	इक	कथिको	तत्थ साधु	४.७४	२६३
११	इट्ठ	पापिट्ठो	अतिसये	४.६४	२४८
१२	इत	तारकितं	संजातं इच्चत्थे	४.४५	२४७
१३	इम	पाकिमं	भावा तेन निब्बते	४.६३	२५२
१४	इम	अणिमा, लघिमा	भावे	४.६२	२०६
१५	इम	सतिमो, सहस्सिमो	पूरणे	४.५३	१७६
१६	इम	मज्झिमो, अन्तिमो	तत्र भवे	४.२४	२६२
१७	इम	पुत्तिमो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.६४	१६२
१८	इय	पापियो	अतिसये	४.६४	२४८
१९	इय	अधिपतियं, पण्डितियं	भावे	४.५६	२०३
२०	इय	देवियो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
२१	इय	गामियो, उदरियो	तत्र भवे	४.२५	२६२
२२	इय	खत्तियो	अपच्चे	४.७	२५६
२३	इय	पुत्तियो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.६४	१६२
२४	इय	उपादानियं	तस्स हिते	४.७०	...
२५	इल	पिच्छिलो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८७	१६६
२६	इस्सिक	पापिस्सिको	अतिसये	४.६४	२४८
२७	ई	दण्डी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८०	१६४
२८	उवामी	सुवामी	"	४.६०	१६७
२९	एधा	द्वेधा	पकारे	४.११२	२१६

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
३०	क	राजञ्जकमानुस्सकं	समूहे	४.६८	२६०
३१	क	एको	असहाये	४.५५	२४८
३२	क	एको	असहाये	४.५५	२४८
३३	क	पञ्चकं, छक्कं	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
३४	क	समणको	निन्दिते	४.४०	२४६
३५	क	अस्सको(कस्सायं?)	अञ्जाते	४.४०	२४६
३६	क	तेलकं, घतकं	अप्पत्थे	४.४०	"
३७	क	बलिवद्दको (बलि- वद्दो विय)	पटिभागत्थे	४.४०	"
३८	क	मानुसको, रुक्खको	रस्से	४.४०	"
३९	क	पुत्तको, वच्छको	दयायं	४.४०	"
४०	क	मोरको	सञ्जाय	४.४०	"
४१	क	पदको	त अधीते, तं जानाति	४.१४	२४६
४२	कण्	मागधको, आरञ्जको	तत्र भवे	४.२५	२६२
४३	क्खत्तुं	द्विक्खत्तुं	वारे	४.११४	२१६
४४	ची	धवली (करोति)	अभूततब्भावे	४.११६	२२०
४५	छ	मानुच्छा	मातितो, पितितो भगिनियं	४.३७	२५८
४६	जातियो	पटुजातियो	पकारे	४.११३	२६०
४७	ज्झ	एकज्झं	"	४.१११	२१६
४८	ञ्जो	राजञ्जो	जातियं	४.६	२५६
४९	ञ्ज	कम्मञ्जं	तत्थ साधु	४.७३	२७३
५०	ट्ठ	छट्ठो	पूरणे	४.५४	१७५
५१	ट्ठम	छट्ठमो	पूरणे	४.५४	१७५
५२	ड	एकादसो, वीसो	तस्स पूरणे	४.५१	१७५
५३	ड	वीसं (सतं)	अधिकायं संख्यायं	४.५०	१७३
५४	ण	काकं	समूहे	४.६८	२६०
५५	ण	आयसं, ओदुम्बरं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
५६	ण	कच्चायनं	तस्सेदं	४.३४	२५८
५७	ण	गारवं, अज्जवं	भावे	४.५६	२०३
५८	ण	पोरिसं	उद्धं परिमाणे	४.४८	२४८
५९	ण	पुराणो	तत्र भवे	४.२८	२५०

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
६०	ण	श्रोदको, मागधो	तत्र भवे	४.२०	२६१
६१	ण	श्रोदुम्बरो	तं इध अत्थि	४.१६	२४५
६२	ण	कोसम्बी	तेन निब्वते	४.१८	२५१
६३	ण	वेदिस	अदूर-भवे	४.१७	२५७
६४	ण	सेव्यो	निवासे	४.१६	२५७
६५	ण	वास्यतो	तस्स विसये देसे	४.१५	२५७
६६	ण	वेय्याकरणो	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४६
६७	ण	सोगतो	सास्स देवता	४.१३	२४४
६८	ण	फुस्सी (रत्ति)	नक्खत्तेन युत्ते	४.१२	२५१
६९	ण	हालिहं	तेन रक्तं	४.११	२५१
७०	ण	मागधो	अपच्चे	४.६	२५७
७१	ण	वासिट्ठो	अपच्चे	४.१	२५४
७२	ण	लक्खणो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१६५
	(अवयव)				
७३	ण	तापसो	"	४.८५	१६६
७४	णान	वच्छानो	अपच्चे	४.२	२५४
७५	णायन	वच्छायनो	अपच्चे	४.२	२५४
७६	णि	वारुणि	"	४.५	२५६
७७	णिक	वेनधिको, सुत्तन्तिको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४६
७८	णिक	सारदिको	तत्र भवे	४.२६	२६२
७९	णिक	वेणिको	तमस्स सिप्पं	४.२७	२४५
८०	णिक	पंसुकूलिको	तमस्स सीलं	४.२७	"
८१	णिक	तेलिको	तमस्स पण्यं	४.२७	"
८२	णिक	चापिको, मुग्गरिको	तमस्स पहरणं	४.२७	"
८३	णिक	ओपधिकं	तमस्स पप्योजनं	४.२७	"
८४	णिक	साकुणिको	तं हन्ति	४.२८	२५०
८५	णिक	सन्दिट्ठिकं	तं अरहति	४.२८	"
८६	णिक	पारदारिको; मग्गिको	तं गच्छति	४.२८	"
८७	णिक	सामाकिको	तं उञ्छति	४.२८	"
८८	णिक	धम्मिको	तं चरति	४.२८	"
८९	णिक	कायिकं	तेन कतं	४.२९	२११

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	मंत्र मन्त्र्या	पृष्ठ मन्त्र्या
६०	णिक	सातिक	तेन कीन	४.२६	२११
६१	णिक	आयसिको, पासिको	तेन बद्ध	४.२६	"
६२	णिक	घानिकं, दाधिक	तेन अभिमङ्खत्, संसट्ठ	४.२६	"
६३	णिक	जालिको	तेन हतहन्ति वा	४.२६	"
६४	णिक	अक्खिक	तेन जित जयति वा	४.२६	"
६५	णिक	कुट्टालिको	तेन खणति	४.२६	"
६६	णिक	नाविको, गोपुच्छिको	तेन तरति	४.२६	"
६७	णिक	रथिको	तेन चरति	४.२६	"
६८	णिक	अंसिको, सीमिको	तेन वहति	४.२६	"
६९	णिक	वेतनिको, भतिको	तेन जीवति	४.२६	"
१००	णिक	पोनोभविको	तस्स सवत्तति	४.३०	२५२
१०१	णिक	मत्तिक, पत्तिकं	ततो सभूतमागत	४.३१	२५३
१०२	णिक	रुक्खमूलिको	तत्थ व्रमति	४.३२	२६२
१०३	णिक	लोकिको	तत्थ विदिन्तो	४.३२	"
१०४	णिक	चातुम्महाराजिको	तत्थ भत्तो	४.३२	"
१०५	णिक	दोवारिको	तत्थ नियुत्तो	४.३२	"
१०६	णिक	सङ्घिक	तस्सेद	४.३३	२५७
१०७	णिक	दोणिको	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
१०८	णिक	कप्पासिकं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
१०९	णिक	आपूपिकं	समूहे (=अचतेनमं)	४.६८	२६०
११०	णिय	आलसियं, कालुसिय	भावे	४.५६	२०३
१११	णैय्य	पब्बतेय्यो	तत्र भवे	४.२५	२६२
११२	णैय्य	दक्खिणैय्यो	अरहत्थे	४.७६	२५०
११३	णैय्य	पाथेय्यं	तत्थ साधु	४.७५	२६३
११४	णैय्य	एणेय्यं, कोसेय्यं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
११५	णैय्य	सोचेय्यं, आधिपत्तेय्यं	भावे	४.५६	२०३
११६	णैय्यक	बाराणसेय्यको	तत्र भवे	४.२५	२६२
११७	ण्य	सन्भो, पारिसज्जो	तत्थ साधु	४.७२	२६३
११८	ण्य	आलस्यं, ब्राह्मज्जं	भावे	४.५६	२०३
११९	ण्य	कोरव्यो	रज्जे	४.१०	२५७
१२०	तग्घ	जाणुतग्घं	उद्धं पारिमाणे	४.४७	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१२१	तन	अज्जननो	तत्र भवे	४.२१	२६१
१२२	तत	तापतमो	अतिसये	४.६४	२४८
१२३	मर	पापतरो	अतिसये	४.६४	२४८
१२४	तर	वच्छतरो	तनुत्तं	४.५६	२५६
१२५	ता	नीलता	भावे	४.५६	२०३
१२६	ता	जनता	समूहे	४.६६	२६०
१२७	ति	युवति	स्त्री	४.३५	२५८
१२८	तो	गामतो	पञ्चम्यत्ये	४.६५	२१५
१२९	त्त	नीलत्त	भावे	४.५६	२०३
१३०	त्तक	यत्तक	तं अस्स परिमाण	४.४२	२४६
१३१	त्तन	वेदनत्तनं, पृथुज्जन- त्तनं	भावे	४.५६	२०३
१३२	त्थ	सव्वत्थं	सत्तम्यन्ते	४.६६	२१६
१३३	त्र	सव्वत्र	"	४.६६	२१६
१३४	था	सव्वथा	पकारे	४.१०८	२१०
१३५	दा	सव्वदा	सत्तम्यन्ते	४.१०५	२१७
१३६	धा	द्विधा, बहुधा	पकारे	४.११०	२१८
१३७	धि	सव्वधि	सत्तम्यन्ते	४.१०१	२१६
१३८	नण्	योव्वनं	भावे	४.६१	२०६
१३९	निय	कम्मनियं	तत्थ साधु	४.७३	२६३
१४०	नो	अङ्गना	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८२	१६५
१४१	व्य	दासव्यं	भावे	४.६०	२०६
१४२	भ	तुण्डिभो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८३	१६५
१४३	म	पञ्चमो	पूरणे	४.५२	१७८
१४४	मत्त	पलमत्तं	तमस्स परिमाणं	४.४६	२४७
१४५	मन्तु	बुद्धिमा	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.७८	१६४
१४६	मय	तिणमयं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
१४७	य	दिव्वो, गम्मो	तत्र भवे	४.२५	२६२
१४८	य	खत्यो	अपच्चे	४.७	२५६
१४९	रतम	कतमो	निद्वारणे	४.५७	२४८
१५०	रतर	कतरो	"	४.५७	"
१५१	रति	कति, तति	"	४.४४	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	मंत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१५२	राथ	घातेताय, पब्बाजे- तायं	अरहत्थे	४.७७	२५०
१५३	रित्तक	कित्तक	तमस्स परिमाण	४.४४	२४७
१५४	रीव	कीव	"	४.४४	"
१५५	रोवत्तक	कीवत्तक	तमस्स परिमाण	४.४०	२४६
१५६	रेट्ठण	मत्तेय्यो	हिते	४.३६	२५६
१५७	रेट्ठण	पेत्तेय्यो	पितित्तो भानरि	४.३६	२५८
१५८	रो	मुखरो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८२	१६५
१५९	ल	देवलो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
१६०	ल्ल	दुट्ठुल्लं, वेदल्लं	तन्निस्सिते	४.६५	२५०
१६१	वन्तु	गुणवा	त एत्थ अस्स अत्थि	४.७६	१५४
१६२	वो	सीलवो	"	४.८८	१५७
१६३	वी	मायावी	"	४.८६	१५७
१६४	स	खण्डसो, एकसो	वीच्छाय	४.११८	२२०
१६५	स	लोमसो	त एत्थ अस्स अत्थि	४.६३	१६८
१६६	सण्	मानुसो	अपच्चे	४.८	२५६
१६७	स्सो	तपस्सो	त एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१६५
१६८	स्स	मनुस्सो	अपच्चे	४.८	२५६
१६९	स्स	चक्खुस्सं	तस्स हिते	४.७१	२६०
१७०	स्सण्	जातुस्सं	तस्स विकारावयेसु	४.६७	२५६
१७१	हं	तहं	सत्तम्यन्ते	४.१०३	२७१
१७२	हि	यहि	"	४.१०२	२१७

ब्रह्म परिशिष्ट

कृदन्त

छठा परिशिष्ट

कृदन्त प्रत्ययों के लगाने के साधारण नियम

१. धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे:—
इस + तब्ब = एसितब्बं। कुस + तब्ब = कोसितब्बं।
२. प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे:—
नी + तब्ब = नेतब्बं। सु + तब्ब = सोतब्बं।
३. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'अय' तथा 'अव' होता है। जैसे:—
जि + अ = जे + अ = जयो। भू + अ = भो + अ = भवो।
४. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'इय' तथा 'उव' होता है। जैसे:—
वेदि + अ = ति = वेदियति। ब्रू + अ + अन्ति = ब्रुवन्ति।
५. रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' होता है। जैसे:—अर + अन = अरणं।

'ण'-अनुबन्ध

६. 'ण'-अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' होता है।

(१) सूत्र—५.८३। (२) ५.८२। (३) ५.८६। (४) ५.१३६।
(५) ५.१७१। (६) ५.८४।

पठ+णक=पाठको ।

७. 'ण' अनुबन्ध वाला स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'आय' तथा 'आव' होता है। जैसे :—

नी+णी-ति=ने+णि-ति=नायति । भू+णि-ति=भो+णि-ति=भावयति ।

८. 'णापि' को छोड़, अन्य 'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो आकारान्त धातु से परे 'य' का आगम होता है। जैसे :—

दा+णक=दायको ।

'क' अनुबन्ध

९. 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'इ', 'उ' या 'अ' का 'ए', 'ओ' तथा 'आ' नहीं होता है। जैसे :—

दिस+क्त=दिट्ठो ।

'र' अनुबन्ध

१०. 'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के भाग का लोप होता है। जैसे :—

वेद-गम+रू=वेद-ग्+रू=वेदगू ।

'घ' अनुबन्ध

११. 'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तस्थित 'च' तथा 'ज' का क्रमशः 'क' तथा 'ग' हो जाता है। जैसे :—

वच+घ्यण=वाक्यं । भज+घ्यण्=भाग्यं ।

ख-छ-स प्रत्यय

१२. 'ख-छ-स' प्रत्यय परे हो, तो धातु के 'प्रथम एकस्वर शब्दरूप' का द्वित्व होता है : जैसे :—

(७) ५.६। (८) ५.६२। (९) ५.८५। (१०) ५.१३२। (११) ५.६८। (१२) ५.६६।

तिज+ख-अ=तितिख्वा। जिगुच्छा। बीमंसा।

१३. द्वित्व होने पर, पूर्व 'अ' का 'इ' होता है। जैसे:—

पा+स-ति=पिपासति।

१४. द्वित्व होने पर, पूर्व चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण का क्रमशः तृतीय तथा प्रथम वर्ण होता है। जैसे:—

भुज+ख-ति=बुभुखति।

'क्वि' प्रत्यय

१५. धातु से परे, 'क्वि' प्रत्यय का लोप होता है। जैसे:—

अभिभू+क्वि=अभिभू।

१६. 'क्वि' प्रत्यय परे हो, तो अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे:—

भत्तं गमस्ति एत्थाति=भत्तगं। भत्त-गम+क्वि=भत्त-ग=(सरम्हा द्वे) भत्तगं।

*'क्य' प्रत्यय

(कर्म, भाव)

१७. 'क्य' प्रत्यय के पूर्व, 'ई' का विकल्प से आगम होता है। जैसे:—

पच+क्य-ति=पचीयति।

१८. 'जा' धातु को छोड़, अन्य धातु के अन्त्य 'आ' का 'ई' होता है। जैसे:—

दा+क्य-ति=दीयति।

१९. स्वरान्त धातु का दीर्घ होता है। जैसे:—

चि+क्य+ते=चीयते।

'जि' (आगम)

२०. व्यञ्जनादि प्रत्यय के पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे:—

भुज्जितुं, भोत्तुं।

(१३) ५.७६। (१४) ५.७८। (१५) ५.१५६। (१६) ५.६४।
(१७) ६.३७। (१८) ५.१३७। (१९) ५.१३६। (२०) ५.१७०।

* 'क्य' वा 'य' रह जाता है। 'क्' अनुबन्ध है।

कृदन्त प्रत्ययों की सूची

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	नत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
अ	जयो, पग्गहो	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
अ	तितिक्खा, वीमंसा	” इत्थिय	५.४६	२०१
अक	जीवको, नन्दको	कत्तरि (आशीर्वादि)	५.३५	१६२
अण	कुम्भाकारो	कत्तरि (कम्मतो)	५.११	१६३
अथु	वमथु, वेपथु	भाव-कारकेसु	५.४६	२०१
अनीय	करणीयो	भाव-कम्मेसु	५.२७	१५०
अनो	गमन, दानं	भाव-कारकेसु	५.४८	२०२, २७८
अस्स	नमस्सति	त करोति, (नामधातु)	५.११	२३६
आपि	सच्चापेति	नाप धातु	५.१३	२३७
आय	सहायति	त करोति (नाम धातु)	५.१०	२३६
आय	भुसायति	च्यत्थे (नाम धातु)	५.४	२३२
आय	पव्वतायति	कत्तुनो उपमानाधरे	५.८	२३६
आवी	भयदस्सावी	कत्तरि	५.३४	१६२
इ	अतिहत्थयति	नाम धातु	५.१२	२३७
इ	वचि	सरूपे	५.५२	२०३
इय	पुत्तीयति	उपमानाचारे (कम्मा) नाम धातु	५.५६	१४२
इय	कुटीयति	” (आधारा)	५.७	२३६
क	पियो, आयुधं	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
क	सदिसो	कम्म-कारके	५.४३	२७६
क	गुहा, रुजा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
कि	युधि	सरूपे	५.५२	२०३
कु	सव्वञ्जू	कत्तरि (कम्मा)	५.४०	१६२
कु	विञ्जू	कत्तरि	५.३६	१६२
कु	लोकाविदू	”	५.३८	१६२
क्त	आसितं, कतो	भाव कम्मेसु	५.५६	१४२
क्त	पकतो	कत्तरि च आरम्भे	५.५७	१४३
क्त	यातं (इदमेसं)	कत्तरि, कम्मे, भावे	५.५६	१४३
क्त	उपट्ठितो	”	५.५५	१४२
क्त	भुत्तं (इदमेसं)	”	५.६०	१४३

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
क्तवन्तु	विजितवन्त	कत्तरि भूते	५.५५	१४२
क्तावी	विजितावी	(कत्तरि) भूते	५.५५	"
क्ति	इष्टि, भूति	भावकारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
क्य	ठीयते, मूयते	कम्मे, भावे	५.१७	१८०
क्वि	अभिभू, रायम्भू	भाव-कारकेसु	५.४७	२०१
ख	बुभूक्खति	इच्छायं	५.४	२३२
ख	तितिकखा	खन्तियं	५.१	१८६
घ	वको, निपको	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
घण्	पाको, चागो	"	५.४४	"
घ्यण्	वाक्यं	भाव-कम्मेसु	५.२८	१५०
घ्यण्	देय्य	"	५.२६	१५०
छ	जिघच्छति	इच्छायं	५.४	२३२
छ	जिगृच्छा, बीभच्छा	निन्दाय	५.३	१८७
छ	तिकिच्छा, विचि- किच्छा	तिकिच्छा-संसयेसु	५.२	१८६
ण	कारा, हारा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
णक	पाठको	कत्तरि	५.३०	१५१
णन	हायनो	"	५.३७	१६२
णन	कारणनं	"	५.३६	१६२
णापि	कारापेति	प्रेरणार्थक	५.१४	२१०
णि	कारेति	"	५.१६	२०६
णी	उण्ह भोजी	सीले (कत्तरि)	५.५३	१६३
तब्ब	कतब्बं	भाव-कम्मेसु	५.२७	१५०
तवे	कातवे	तदत्थायं (निमित्तार्थक)	५.६१	१५२
ताये	कत्ताये	"	५.६१	"
ति	पत्ति	सरूपे	५.५२	२०३
तुं	कातु	तदत्थायं (निमित्तार्थ)	५.६१	१५२
तून(अलं)	अलं सोतून	पटिसेधे	५.६२	१५४
त्वा	अल सुत्वा	पटिसेधे	५.६२	"
त्वा	सुत्वा	पूर्वकालिक	५.६३	"
त्वान	अलं सुत्वान	अव्यय पटिसेधे	५.६२	"

प्रत्यय	उदाहरण	प्रतिशब्दान्तर	मूल संख्या	पठ संख्या
त्वाभन	मुत्त्वान्	पवेदाभनित्	५.३३	५५४
न्ति	हान्ति	भाय-कारकेभु (उत्थिय)	५.५०	२००
न्त	निट्ठन्तो	वत्तमाने कत्तन्ति (कस्से हुण्)	५.३४	२९
अश्ल	ठोयमान, पच्चमानो	भावे, कस्से	५.३३	१५०
अश्ल	निट्ठान्तो	वत्तमाने कत्तन्ति (कस्से हुण्)	५.३५	२९
य	वज्ज	भावे-कस्सेभु	५.३०	१५१
य	मेय्या, समज्जा	भाय-कारकेभु	५.४९	२०१
यक्	विज्जा	,, (उत्थिय)	५.४९	.
यक्	गुग्ग	भावे-कस्सेभु	५.३२	१५२
रिक्ख	सद्विक्खो	कम्म-कारकेभु	५.४३	२०३
रिरिध	किरिध	,, (उत्थिय)	५.४४	१५४
री	मदी	कम्म-कारकेभु	५.४०	२०५
रू	वेदग्ग	कत्तन्ति (कस्मानो)	५.४०	१६३
ल	पच्चति, ल्त, मान (अपरोक्खे)	!	५.५२	२२७
ल	कारेति, कारयति	!	५.५०	२१०
ल्लु	पठिता	कत्तन्ति	५.४३	२०४, १६१
स	जिगिसन्ति	इच्छाय	५.४४	२३७
स्सन्त	ठस्सन्तो	अनागमे कत्तन्ति	५.३७	२२
स्समान	ठस्समानो	,,	५.३७	२२

सातवाँ परिशिष्ट

१. सूत्र-सूची

सातवां परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-सूची

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	
२७०	अ	३.५८	२३६	अघातुस्स०	४.१४२
१ परि०	अ आदयो०	१.१	२०२	अनघणस्वा०	५.१२७
१८७	अ आदिस्वा०	६.१६	१८४	अनज्जतने०	६.५
६६	अ आस्सआदिमु	५.१२६	१३६	अनुना	२.१२
६८	अ ईस्मआदीन०	६.३५	२०२,	} अनो	५.४८
२६८	अकालेसकत्थे	३.८१	२७८		
२८५	अन्निस्समा०	३.४६	५५	अन्वादेने	२.२३७
१६७	अङ्गा नो०	८.६२	२७४	अन् सरे	३.७५
	अङ्गुल्यादीहि०	८ (४७)	२७१	अपच्चक्खे	३.८०
२१८	अज्जसज्ज०	४.१०७	१३८	अपपरीहि०	२.२६
२६१	अज्जादीहि०	४.२१	५५	अपादादो०	२:२३४
	अञ्जत्रापि	५.८७	२२०	अभूततब्भावे०	४.११६
	अञ्जस्मि	४.१२१	२१६	अभ्यादीहि	४.६७
१८१	अञ्जादिस्सा०	५.१३७	२६१	अमात्वच्चो	४.२३
२७६	अञ्जे च	३.१६	२७२	अमादि	३.१०
२०६	अण्वादित्विमो	४.६२	६१	अमुस्साहुं	२.२०४
३	अतेन	२.११०	१०२	अम्वादीहि	२.८०
३	अतो योनं०	२.४३	५६	अम्हि त म०	२.२२६
१२६	अत्थितेय्यादि०	६.५०	२४८	अयुभट्ठि०	४.४६
१५२	अत्यादिन्ते०	५.१२८	३	अयूनं वा दीघो	२.६१
२५७	अदूरभवे	४.१७	२६७	असङ्ख्यं०	३.२

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२८४	अनङ्ग्येहि चाङ्ग्यत्वा०	३४४	प्राची
३६	अनङ्ग्येहि सव्याग	३४८	ग गणका०
१४८	अस्मु	१२८	तर्गना०
२१०	अस्मा णानु०	१२१	अस्माणादि०
८२	अं ङ नपुंसके	१५०	मास्ते च
४	अ नपुंसके	१४३	प्रातारन्था
६६	आ	२०२	किर्ति०
८६	आ ई आदिमु०	१७५	एतो ङ्को
८५, १८४	आ ई ऊहा०	१०१	एतो ङ्ग्यत्वे०
८४, १८८	आ ईस्मादि०	२१५	एतोनेतो०
	आकस्मिन्का०	६१५	एतिसमणवितका०
	४ (१५)	०३०	एतिसन्था
२५६	आ णि	०३१	एतिथयाभा०
१२६	आदिद्विच०	५६	एस्मानि०
२१६	आद्यादीहि	२३३	एस्मिदं
२३२	आदिस्मा०	५६	एस्मिन् वा
१ परि०	आदिस्व	१६८	एसिया
२३६	आधारा	५७	एमेतान०
५५	आमन्तण०	२०४१	इयुवणा०
२६	आमन्तणे	२४०	इयो हिते
२८५	आयामे तु०	३८८	इस्स च०
२१०	आयावा०	५६०	ई आदोदीघो
१६४	आयुस्ता०	४१३४	ई आदो वच०
६८	आयो नो च०	२१५६	ईयो कम्मा
६५	आरङ्गस्मा	२१७३	ई स्सच्चादि०
२४१	आरामिका०	३२६	उत्तरपदे
१६६	आत्वभिज्भा०	४८६	उदरे इये

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या		
२३६	उत्तमाना०	५६	१२६ एय्यु स्मृ	६.४७	
२४२	उत्तमा सहित०	३.३४	१२६ एय्येच्या०	६.७५	
१३६	उत्तेन	२.१५	एसुम्	६.५५	
७३	उत्तमगोहि टो	२.१७२	२६६ ओरे परि०	३.८	
१६७	उत्तमन्न	२.५२	१२३ ओविकरणस्मृ०	६.७६	
२५५	उत्तमणस्मृ०	१.१०६	८५, } ओस्स अड०	६.४२	
१८७	उत्तमस्वा०	६.१६	१८५		
८५	उत्तमन्वत्तु	६.३६	१५० कगा चजान०	५.६८	
८६	उत्तमोत्तानु	६.४०	२४६ कणकनाथ्य०	४.१३७	
४८,			२६२ कण्येयणे०	४.२५	
१०५,			२१६ कतिम्हा	४.११५	
११६,	उत्तममथवा सरे	५.८६	१४३ कत्तरि चा०	५.५७	
२१०,			१४२ कत्तरि भू०	५.५५	
२००			११५, }		
२०६	उत्तमम वण्णे	१.३७	१०५, } कत्तरि लो	५.१८	
२२४	उत्तमोन	१.३१	२१०		
१०१	उत्तमवादी०	२.१३७	६४, }		
१६८	उत्तमटानमा	३.१०२	१६१	कत्तरि लुणका	५.३३
२३५	उत्तमथनाथ	२.१२१	२५४	कत्तिका विधवा०	४.३
१६	उत्तमवचनयो०	२.६६	३०	कत्तुकरणेसु०	२.१८
२४८	उत्तमका कावत्र०	४.५५	२३६	कत्तुतायो	५.८
२४६	उत्तमस्मेट्०	४.१४०	२१६	कत्थेत्थकुवात्र०	४.१००
६५	उत्तमिस्मा	६.६६	२१८	कथमित्थ	४.१०६
१३०	उत्तमिस्सा	६.७२	२६३	कथादित्थिको	४.७४
१३०	उत्तमिस्सि०	६.६३	२१८	कदाकुदासदा०	४.१०६
८५	उत्तमिथस्से०	६.३८	१६२	कम्मा	५.४०
१८८	उत्तमिदा०	६.७	१००	कम्मादितो	२.८१
१२६	उत्तमिदस्से०	६.७८	२६३	कम्मा नियञ्जा	४.७३

पृष्ठ संख्या	मंत्र मन्त्रा	पृष्ठ संख्या	नाम मन्त्रा	
२६	कम्पे वुनिया	००	कन्तो	००७
१३०	कथिरेय्यस्सेय्यु०	३.७०	के वा	०१३२
१२३	करस्स सोस्स कुव्व०	५.१७७	कोधार्त्तो	०१०६
१२४	करस्स सोस्स कु	३.०३	कोमज्जाज०	०१२७
१५३	करस्सा तत्रे	५.११८	विमहाञ्जन्ये	३३१
१६२	कराणनो	५.३६	कतो भावकम्ममु	५.५६
२४२	करा रिरियो	५.५१	कयस्स	३.३७
१२४	करोतिस्स खो	५.१३३	कयस्स स्से	३.४६
२३३	कवग्गाहानं चवग्गाजा	५.७६	क्यादीहि कणा	५०४
१४५	कसस्सिम् च वा	५.१४१	नयो भावकम्मम्	५.१७
८६	का ईआदिमु	३.०४	धिगन्था	५.१४
१ परि०	कादयो व्यञ्जना	१३	क्यन्था	५.४१
२७५	काप्पत्थे	३.१०८	कर्त्तनापान	३.६८
२६	कालद्धानमच्च०	०३	नर्त्तान् धिक्कणान	५.४१
१५२	किच्चधच्चभच्च०	५.३१	क्यक्केना च च्छ्त्थ्या	३.२२
१८७	कितस्सासंसये०	५.८१	नवचे वा	२.११२
१८६	किता तिकिच्छा०	५.२	किय	५.४७
२३	किंसंसिमु सह०	२.२०२	किवम्हि घो०	५.१००
२४८	किम्हा निद्वारणे०	४.५७	किवम्हि लोपो०	५.६४
२४७	किम्हा रतिरीव०	४.४४	किवस्स	५.१५६
१४६	करादीहि णो	५.१५२	खद्धमानमेकस्स०	५.६६
२०६	किसमहतमिमे०	४.१३३	खद्धमेस्वस्सि	५.७६
२३	कि सस्सिमु०	२.२०१	खत्ता यिया	४.७
२२	किस्स को०	२.२००	गतिबोधाहार०	२.४
२७५	कुपादयो निच्चम०	३.१३	गन्थान्ताधिक्ये	३.८२
२७४	कुम्हादिसु वा	३.७२	गमनत्थाकम्म०	५.५६
८६	कुसरुहेहीस्स छि	६.३४	गमयमिसास०	५.१७३
२१७	कुहि कहं	४.१०४	गमवददान०	५.१७६

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
१४४	गमादिरान०	५.१०६	२२ घपा सस्स स्सा वा
१६३	गमा ऋ	५.४२	१४ घब्रह्मादिते
८६	गम्मिस्म	६.२६	२४१ घरण्यादयो
७८	गव मेन	२.७१	१ परि० घा
२५८	गवादीहि यो	४.३५	२५ घोस्सस्सास्सायं०
३,१३	गमीनं	२.११६	१५० धयण्
७८	गस्स	२.१८६	१ परि० ङनुवन्धो
११६	गहम्म्व घेप्पो	५.१७८	५६ ङडाक नम्हि
१४५	गापानमी	५.११५	२६० चक्खवादितो स्सो
७३	गावुम्हि	२.७४	१७६ चतुत्थततियानम०
१३७	गुणे	२.२३	१८७, } चतुत्थदुनियानं०
७४	गुणञ्च नना	२.७२	२३२
१८७	गुणिसुम्मा	५.७७	१२०, } चतुत्थदुतियेस्वे०
६६, } ११६	गुणपुत्रा रस्सा०	६.७४	२२८,
			२००
१५२	गुटादीहि गक्	५.३२	३० चतुत्थी सम्पदाने
२०२	गुहिसस मरे	५.१०५	१६८ चतुरो वा चतुस्स
६६	गे अ च	२.६०	१६८ चतुस्स चुचो दसे
७१	गे वा	२.६७	१७१ चत्तालीसादो वा
२८५	गोत्वचत्थे०	३.४६	२० चत्थसमासे
१४७	गोभञ्जादीहि	५.१५४	२७८ चत्थे
१ परि०	गोस्यालपने	१.१२	२८५ चि वीतिहारे
७३	गोस्सागमि०	२.६६	२८६ चीस्मि
२२४	गोस्मावड्	१.३२	२७६ ची क्रियत्थेहि
२४०	गोस्मावड्	३.३८	१२४ चुरादितो णि
२७०	गोस्सु	३.२५	२३६ च्यत्थे
१३	घपतेकास्मि०	४.४७	१ परि० छट्ठिन्नस्स
२७०	घपस्सान्तस्सा०	३.२४	३२ छट्ठी चानादरे

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
३१	छट्ठी मम्बन्धे	२८१	११७ जित्तम्मो	५.१६३
१३८	छट्ठी हेत्त्वत्थेहि	२८८	८१ टट्टा प्रणे	८.२२०
१६८	छतीहि लो च	३१०८	२७८ ट नत्तम्म	३७८
१६९	छस्स सो	३१०१	१ परि० टनुवन्धाणेक०	११२
१७५	छा ट्टट्टमा	८५८	२७० ट न्नन्तुन	३५७
२२८	छा लो	१.८६	१६९ ट पञ्चादीहि०	८.१७१
२५९	जतुतो स्सण्वा	४६७	२८ ट नम्माम्मि०	२.१३८
२५७	जनपदनामस्सा	८९	१३० टा	६७१
२६०	जनादीहि ता	८६८	९५ टा नाम्मान	२.१७५
१४५	जनिस्सा	५.११६	१७८ टि कनिम्हा	२.१७०
२०५	जने पुथस्सु	३६१	९५ टि गिथमो	२.१७६
१३	जन्तुहेत्वी	२.११७	१०१ टे मिग्गिमि०	२.१३५
१०२	जन्त्वादिनो नां च	२.८६	९९ टे ग्गिनां	२.१६०
११७	जरमरानमीयड्	५.१७८	९५ टो हे वा	२.१७८
११७,	} जरसदानमीम् वा	५.१२३	११७ टापान तिट्ठ०	५.१७५
१५२		१४३ टासवमसिनिम०	५.५८	
२८०	जायाय जयं पतिम्हि	३.७०	१८५ टास्सि	५.११८
२०३	जाहाहि नि	५.५०	८६ उस्स च छड्	६.३०
२३३	जिहरान गि	५.१०२	१७३ डे सनिस्स	४.१३९
२४९	जो बुद्धस्सि०	४.१३५	२५१ ण रागा तेन०	४.११
१२१	ज्यादीहि क्ता	५.२३	१२२ णानासु रस्सो	६.३२
६	भला वा	२.११५	२५८ णिकस्सियो वा	४.१४१
५	भला सस्स नो	२.८३	२६२ णिको	४.२६
१ परि०	अकानुवन्धा०	१.२०	२१२ णिणापीन०	५.१६०
१३०	आम्हि ज	६.६२	२१० णिणाप्यापीहि०	५.२०
१२१	आस्स ते जा	५.१२०	२११ णिम्हि दीघो०	५.१०४
१२२	आस्स सनास्स०	६.६१	२५८ णो	४.३४
२३३	अि व्यञ्जनस्स	५.१७०	२४८ णो च पुरिसा	४.४८

पृष्ठ संख्या	मूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
१६६	पो नपा	४.८५	२४८ तरतमिस्सिक्कि०	४.६४
११६	पो निग्गाही०	५.१७६	१४६ तरादीहि रिण्णो	५.१५३
२५४	पो नापच्चे	४.१	२२३, } तवग्गावरणानं ये०	१.४८
१६७	ण्ण ण्णन्न नित्तो०	२.५१	१२०	
२५७	प्य कुरुसि०	४.१०	५६ तव ममतुय्हंमय्हं०	२.२३१
२५५	प्य दिच्चादी०	४.४	४७ तस्स थो	६.५२
२६३	प्यो तत्थ साधु	४.७२	१७५ तस्स पूरणेकादस०	४.५१
२६६	ण्वादयो	५.६८	२०३ तस्स भावकम्मेषु०	४.५६
२७७	तग्घो चुद्ध	४.४७	२५६ तस्स विकारावये०	४.६६
२४	ततस्स नो०	२.१३३	२५७ तस्स विसये देसे	४.१५
२०	ततियत्थयोगे	२.१४२	२५२ तस्स संवत्तति	४.३०
२५३	नतो सम्भूत०	४.३१	२५७ तस्सिदं	४.३३
२८५	तत्थ गहेत्वा०	३.१८	२६६ त नपुंसकं	३.६
२६२	तत्थ वसति०	४.३२	८१ तं नम्हि	२.२१८
२६१	तत्र भवे	४.२०	२७१ तं ममञ्जत्र	३.८६
२२५	तथनरान०	१.५२	२५० तं हन्तरहति गच्छ०	४.२८
२२८	तदमिनादीनि	१.४७	३० तादत्थ्ये	२.२७
१८१	तनस्सा वा	५.१३८	२५ ताय वा	२.५५
१२३	तनादित्थो	५.२६	२१७ ता हं च	४.१०३
२५०	तन्निस्सिते०	४.६५	१८६ तिजमानेहि खसा०	५.१
१६५	तपादीहि०	४.८१	२६६ तिट्ठग्वादीनि	३.७
२६०	तब्बती०	४.११३	१६८ तिस्से	३.६५
२४६	तमधीते तं०	४.१४	१६७ तिस्सो चतस्सो	२.२०७
२४६	तमस्स परिमाणं०	४.४१	१०१ तिं सभापरिसाय	२.१०६
२४५	तमस्स सिप्पं०	४.२७	१६८ तीणि चत्तारिनपुं०	२.२०८
२४५	तमिधत्थि	४.१६	२७२ तीस्व	३.६३
१६४	तमेत्थस्सत्थी०	४.७८	१३० तुअन्तु हि थं०	६.१०
५६	तयातयीन त्व वा	२.२१५	१६५ तुण्ड्यादीहि भो	४.८३

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	सूत्र संख्या	
१२०	तुदादीहि को	५.२२	१४६	दात्विदो	५.१५१
५६	तुम्हस्स तुव त्वम०	२.२१८	२०१,	} दाधात्वि	५.१५
२७७	तुम्हाम्हान तामे०	३.८८	२७८		
३०	तुल्यत्थेन दा त०	२.४२	२८५	दास्सत्थं द्दुल्लया	३.५०
१५२	तु ताये तवे०	५.६१	४८	दास्स द वा मिमे०	६.२२
१५२	तुं तूनतव्वेमु वा	५.११६	११८	दास्मिन्नु	५.१३२
१५४	तु याना	५.१६५	२७२	दि गुणादिमु	३.६२
२३२	तुस्मा लोपो०	५.४	१००	दिवादिती	२.१७७
२५	तेतिमातो सस्स०	२.५६	११६	दिवादीहि षक्	५.२१
२११	तेन कतं कीत०	४.२६	११८	दिमस्स पस्म०	५.१२४
२५२	तेन दत्ते लिया	४.५८	१५५	दिसा वानवा०	५.१६६
२५१	तेन निव्वत्ते	४.१८	२६३	दिस्सत्तञ्जेपि०	६.१२०
५५	तेमे नारे	२.२३६	८६	दीया ऽम	६.४८
६५,	} तेमु सुतो वणोक्खणा	६.६०	२८४	दीयाहोवग्गे०	३.१५
८७			१८१	दीयां मग्गम	५.१३६
६२	ते स्स पुब्बानागते	५.६७	१०१	दुतियस्स यास्स	२.१३६
८१	तोतातिता सस्मा०	२.२१६	१७६	दुतियस्स सह०	३.१०६
२१५	तो पञ्चम्या	४.६५	५६	दुतिये योम्हि०	२.२३३
२४	त्यतेतानं तस्स सो	२.१३०	१६७	दुविन्नं नम्हि वा	२.२२२
४८	त्यन्तीनं टटू	६.२०	२१६	द्वितीहेधा	४.११२
१६३	थावरित्तरभङ्गुर०	५.५४	१७१	द्विस्सा च	३.६७
६६	दक्खखहेहि०	६.६६	२	द्वे द्वेकानेके०	२.१
२५०	दक्खिणायारहे	४.७६	१ परि०	द्वे द्वे सवण्णा	१.३
१६४	दण्डादित्त्विक ई वा	४.८०	१४७	धस्तोत्रस्ता	५.१४२
१ परि०	दसादो सरा	१.२	२३७	धात्वत्थे नाम०	५.१२
५५	दस्सनत्थेनालो०	२.२४०	२१८	धा संख्याहि	४.११०
११७	दहस्स दस्स डो	५.१२६	१४५	धास्स हि	५.१०८
१४५	दहा डो	५.१४६	१८७	धास्स हो	५.१०३

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
२१६	धि सव्या वा	४.१०१	२६७ नातो'मपञ्चमिया	२.१२३
१४५	धो धहभेहि	५.१४५	६३ नामे गरहाविम्ह०	६.३
१३५	ध्यादीहि०	२.६	१७१ नाम्मादीहि	२.६३
२५१	नक्खत्तेनिन्दु०	४.१२	५६ नाम्ह निमि	२.१२८
२७४	नग्वादयो	३.७६	७८ नाम्हि	२.१८७
२१३	न खादादीन	२.६	७६ नाम्हि	२.१६३
२७५	नगो वा ध्याणिनि	३.७७	५६ नास्मासु तयामया	२.२३०
५५	न चवाहाहे०	२.२३६	७७ नास्मासु रञ्जा	२.२२४
१०२	नज्जा योस्वाम्	२.१६६	६ ना स्मास्स	२.८४
२७४	नञ्ज	३.१२	१०० नास्स सा	२.१०८
२०६	नण् युवा०	४.६१	७३ नास्सा	२.७३
१४३	न ते कानुबन्ध०	५.८५	१०० नास्सेनो	२.८२
२४०	नद्वादिनो डी	३.७७	२२६ निग्गहीतं	१.३८
२८४	नदीगोदावरीन	३.८३	११८ नितो कस्सा	५.१३५
२२३	न द्वे था	१.२८	२०० नितो चिस्स छो	५.१२२
१०१	न निस्म टा	२.१६८	२४६ निन्दाञ्जातप्प०	४.४०
६०	न नो सस्म	२.८६	१८७ निन्दाय गुपवधा०	५.३
२०२	न न्तमानत्यादीन	५.१७२	३२ निमित्ते	२.३५
	न पुन	५.७२	२५७ निवासे तन्नामे	४.१६
१५१	न ब्रूस्मो	५.६७	४ नीन वा	२.४४
२३६	नमोत्वस्मो	५.११	१०२ ने स्मिनो क्वचि	२.१८५
१६७	नम्हि निचतुत्त०	२.२०६	७० नो	२.७८
१६६	नम्हि नुक् द्विदीन०	२.४६	७५ नो'त्तातुभा	२.१६६
६६	नम्हि वा	२.१६५	८० नोनानेस्वा	२.१८१
	न सामञ्जवचन०	२.२८२	६८ नोनानेस्वि	२.१६१
७०	नं भीतो	२.७६	२७७ न्तकिमिमानं टा०	३.८७
५६	न सेस्वस्माफं मम	२.२१२	२४० न्तन्तूनं डीम्हि०	३.३६
२०	नाञ्जञ्च नाम०	२.१४१	८० न्तन्तूनं न्तो यो०	२.२१७

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	मन्त्र संख्या
४७, } ११६ } न्तमानान्तिवि०	५.१३०	१८६ परोक्षवापञ्च १८७ परोक्ष्ये अ उ ए०	५.७० ६.६
८२ न्तस्स च ट वसें ६३ न्तस्सं	२.६४ २.१५०	१८५, } परो क्वचि २२२ }	१.२७
१ परि० न्तु वन्तुमन्त्वा० ८० न्तुस्स ६२ न्तो कत्तरि वत्त०	१.२५ २.१५३ ५.६४	१ परि० परो वीचो ११७ पादितो ग्राम्म० २८४ पापादीहि०	१.५ ५.१३१ २.४१
१४७ पचा को १ परि० पञ्च पञ्चका वग्गा १ परि० पञ्चमियं परस्म १३७ पञ्चमीणे वा ३१ पञ्चम्यवधिस्मा १६६ पञ्चादीन चु० १२८ पञ्हुपत्थना० १३८ पटिनिधि० १५४ पटिसेधे, अलं०	५.१५६ १ ७ १ १५ २ २२ २ २८ २ ६२ ३ ६ २ ३० ५.६२	१६६ पिच्छ्रादिद्विवो ६७ पितादीनपत्त० २५८ पितितो भान्ति० १ परि० गिथियत्र १४५ पुच्छ्रादिनो २८० पुत्तं १३७ पुथनानादि २४० पुथम्म पथव० १२३ पुव्वच्छक्के वा०	४.८७ २.१७६ ४ ३६ १.१० ५ १४३ ६.६५ २.३३ ३.३६ ६.७७
२६, } १३५ } पठमात्थमत्ते	२.३६	पुव्वपरच्छक्का० २६७ पुव्वस्मामा०	६.१४ २.१२२
१३६ पटिपरीहि भागे० २६३ पथादीहि णेय्यो १५२ पदादीनं क्वचि १०० पदादीहि सि २०६ पथोजकव्यापारे २६८ पथ्यपावहित्तिरो० १५२ पररूपमयकारे० २२७ परसरस्स २३३ परस्स घं से २६६ परस्स संख्यासु	२.११ ४,७५ ५.६२ २.१०७ ५ १६ ३.५ ५.६५ १.४० ५.१०१ ३.६०	१८७ पुव्वस्स अ २२ पुव्वादीहि० २७६ पुव्वापरज्जसा० १५४ पुव्वेककत्तुकानं १ परि० पुव्वो रस्सो ७८ पुमकम्मथा० ७८ पुमा ७ पुमालपने० १६७ पुमे तयो० १२४ चुरस्सा	६.१८ २.१४५ ३.११० ५.६३ १.४ २.१६४ २.१८६ २.६८ २.२०६ ५.१३४

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२६१	पुरातो णो च	४.२२	८४ भूते ई उं ओ०
२७५	पुरिसे वा	३.१०६	६४ भूतो
२७३	पु पुमस्स वा	३.५६	२७६ भूसनादरा०
	प्ये सिस्सा	५.८८	१८७ भूस्स वुक्
१५४	प्यो वा त्वास्स०	५.१६४	२६२ मज्झादित्त्वमो
१४५	बहस्सुम् च	५.१४७	२५५ मज्झे
१७५	बहुकतिन्नं	२.५०	२६१ मनादीनं सक्
२१६	बहुम्हा धा च०	४.११६	१०० मनादीहि स्मि०
	बहुल	१.५८	२७० मनाच्च पादीन०
५६	बहुसु वा	२.२४३	१५१ मनानं निग्गहीतं
१६८	वा चत्तालीसादो	३.६८	२५६ मनुतो स्ससण्
२४६	वाळहन्तिकपस०	४.१३६	१ परि० मनुबन्धो सरान०
	१ परि० विन्दु निग्गहीतं	१ ८	१७८ म पञ्चादिकतीहि
२२४,	} व्यञ्जने दीघरस्सा	१.३३	२२८ मयदा सरे
२२५			५४ मयस्साम्हस्स
२०६	व्य वद्धदासा वा	४.६०	६० मस्सामुस्स
७६	ब्रह्मस्सु वा	२.१६२	६४ महन्तारहन्तानं०
४८	ब्रूतो तिस्सीञ्	६.३६	११८ मं च रुधादीनं
२१३	भक्खिस्सा हिंसायं	२.८(२)	१५४ मं वा रुधादीनं
२४०	भवतो भोतो	३.३७	२५६ मातापितुस्वा०
६४	भवतो वा भोन्तो	२.१४८	२५८ मातितो च भगि०
६३	भविस्सति स्सति०	६.२	२४२ मातुलादित्वानी०
	भावकम्मेसु	५.६६	६२ मानस्स मस्स
१५०	भावकम्मेसु तब्बा०	५.२७	१८६ मानस्स वी०
२००	भावकारकेस्व०	५.४४	२४७ माने मत्तो
२५२	भावा तेन नि०	४.६३	६२ मानो
१४६	भिदादितो नो०	५.१५०	१६७ मायामेधाहि०
६५	भुजमुचवच०	६.२७	

पृष्ठ संख्या	मन्त्र संख्या	पृष्ठ संख्या	मन्त्र संख्या	
८४, } १८४	सायाने ई आ०	८८३	युवण्णानमे ओ षुत्ता १.२६	
४८		८८१	युवण्णोत्तनी ३.३०	
१६५	मिमान वा म्हिम्हा०	८८८	युवा नि ३.३५	
	मुखादितो रो	८९०	युवा गीत० ३.१८०	
	मुखादीहि यो	४ (८८)	युवा म्हास्सतो २.१८५	
१४७	मुचा वा	५.१५७	ये पम्भव० २.११८	
१४६	मुहवहान च ते०	५.१०६	येवहिम्मु ष्जो १.८५	
१४६	मुहा वा	५.१४६	ये मस्स १.४३	
८५	म्हात्थानमुञ्ज	६.८५	योन पानो २.१५८	
२४०	यक्खादित्विनी च	३.२८	योनपेद् २.१४०	
१४४	यजस्म यस्स टियी	५.११३	योन नि २.११४	
२४६	यतेतोहित्तको	४.४२	योन नोने पमे २.७७	
३१	यतो निट्ठारणं	२.३८	योन नोने वा ७.१८३	
२६८	यथा न तुल्ये	३.३	योन तिभव० २.२२५	
२३३	यथिट्ठ स्यादितो	५.७३	योमिद् द्विल्ल० ८.२२१	
३२	यवभावो भाव०	२.३६	योमिद् वा० २.६७	
२५६	यम्हि गोस्स च	४.१३०	योनोपानिमु० २.६०	
२२३	यवा सरे	१.३०	योमुज्जिक्कस्स० २.६५	
१४	यं	२.१०५	योस्सं हिन्नु० २.१६३	
१६	यं पीतो	२.७५	य्वादो त्तुस्स २.६३	
	याव बोधं स०	१.५७	रञ्जो रञ्जस्स० २.२२५	
२६८	यावावधारणे	३.४	रत्तिन्दिवदार० ३.४७	
२१७	या हि	४.१०२	रत्यादीहि टो० २.५७	
४६	युवण्णानमि०	५.१३६	र सख्यातो वा ३.१०३	
४८,			रस्सारड् २.१७८	
११५,	युवण्णानमे ओ पच्चये	५.८२	रस्सो पुव्वस्स ५.७४	
१५१,			१०१	रस्सो वा २.६४
२००,			२५६	राजतो ञ्जो जा० ४.६
२१०				

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
७७	राजस्स रञ्ज	२.२२३	२८६ त्वित्थीयूहि को ३.५२
७७	राजस्सि नाम्हि	२.१२५	१२०, } वग्गलसेहि ते १.४६
७६	राजादियुवादित्वा	२.१५६	२२४ }
२०२	रा नस्स णो	५.१७१	२२७ वग्गे वग्गन्तो १.४१
२७७	रानुबन्धे'न्त०	४.१३२	२५४ वच्छादितो णान० ४.२
२५०	रायो तुमन्ता	४.७७	१४४ वचादीनं वस्सु० ५.११०
१३६, } १३८ }	रिते दुतिया च	२.३१	२५६ वच्छादीहि तनु० ४.५६
		१ परि०	वण्ण परेन सवण्णो० १.२४
२७६	रीरिक्खेकसु	३.८५	४६ वत्तमाने ति अत्ति सिं ६.१
१४६	रहादीहि हो०	५.१४८	६६ वत्तहा लनन० २.१६१
१३६	लक्खणित्थम्भूत०	२.१०	वत्थितो इवत्थे एय्यो ४.(४१)
१३७	लक्खणे	२.२०	१५१ वदादीहि यो ५.३०
१६७	लक्ख्या णो अ च	४.६१	१४४ वट्ठस्स वा ५.११२
६४	लभवमच्छिद०	६.२६	२२५ वननरणा चागमा १.४५
८७	लभा ईईन थंथा वा	६.७३	१६४ वन्त्ववण्णा ४.७६
१५१	लट्ठस्सुपन्नस्स	५.८३	२०१ वमादीहथु ५.४६
७	ला योनं वो०	२.८५	१४६ वहस्सुस्स ५.१०७
२२७	लोपो	१.३६	२१६ वहिस्सानियन्तुके २.७.(१)
५,६	लोपो	२.११६	१४३ वा क्वचि ५.८६
२०५	लोपो	८.१२३	२८६ वाञ्जतो ३.५३
२३३	लोपो'नादिव्य०	५.७५	२६७ वा ततियासत्तमीनं २.१२४
६०	लोपो मुस्सा	२.८८	२६६ वानेकञ्जत्थे ३.१७
२०२	लोपो वड्ढा०	५.१५८	७६ वाम्हानइ २.१५७
२०४	लोपो'वण्णो०	४.१३१	२१६ वारसइ'खाय० ४.११४
२४६	लोपो वीमन्तु०	४.१३८	२८० विज्जायो'निस० ३.६४
६५	ल्लुपितादीनमसे	२.१६४	२२६ वितिस्सेवे वा १.३६
२७२	ल्लुपितादीनमार०	३.६३	१६२ वित्तो वातो ५.३६
६५	ल्लुपितादीनमा सिम्हि	२.५६	१६२ विदा कू ५.३८

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
२७२	विधादिमु द्विस्सट्ठु	३.६१	१ परि० सन्नमिय पृद्यम्म	१.१४
१ परि०	विधिद्विसेसनन्तस्स	१.१३	३२ मत्तम्याधारे	२.३४
१३६-	} विनाञ्जत्र ततिया च	२.३२	१३८ मत्तम्याधिके	२.१६
१३८		१२६ सत्यग्हेम्वे०	६.११	
१ परि०	विप्पटिसेधे	१.२२	२३६ सट्ठादीनि क०	५.१०
२७४	विसेसनमेक०	३.११	१६६ सट्ठादित्व	४.८४
२७०	वीच्छाभिकखञ्जे०	१.५४	५५ सपुव्वापठमन्ता वा	० २३८
१६८	वीसतिदसेसु०	३.६६	२४६ सव्वाच आदन्तु	४.४३
२१६	वेका ङ्ग	४.१११	२७४ सव्वादयो वृत्ति०	३.६६
२१	वेट	२.१४४	२१६ सव्वादितो मत्त०	४.६६
२७७	वेतस्सेट्	३.६०	१३४ मव्वादितो मव्वा	२.२५
२२४	वे वा	१.५१	२७३ मव्वादीनमा	३.८६
७	वेवोमु लुस्म	२.६६	८१ मव्वादीनर्नाम्ह च	२.१०१
२६४	सकत्थे	४.१२२	२७२ मव्वादीन वीनिहाये	१.५६
८७	सकाणास्स ख०	६.५८	२१ सव्वादीहि	२.१३६
१२३	सकापानं कुक्कुणे	५.१२१	२१० सव्वादीहि पकारे०	४.१०८
२१६	सकि वा	४.११७	२१७ सव्वकञ्जयनेहि०	४.१०५
	सक्करादीहि०	४.(४६)	२७६ समानञ्जभवन्त०	५.४३
१ परि०	संकेतो'नवयो०	१.२३	२७६ समानस्स पक्खादि०	३.८३
२७६	संख्यादि	३.२१	२७७ समाना रोरिरिक्ख०	५.१२५
१७३	संख्यायसच्चुती०	४.५०	२८४ समासत्त्व	३.४०
२८४	संख्याहि	३.४२	७७ समासे वा	२.२२७
२३७	सच्चादीहापि	५.१३	२७८ समाहारे नपुंसकं	३.२०
२४७	संज्जातं तारकादि०	४.४५	२६८ समीपायामेस्वनु	३.६
२७८	संज्जायमुदोद०	३.७१	२६० समूहे कण्णणिका	४.६८
२७१	संज्जायं	३.७६	सम्भावने वा	६.१२
१७६	सतादीनमी च	४.५३	२००, } सरम्हा द्वे	१.३४
६४	सतो सब्भे	२.१४७	२२५	

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२०४, } सरानमादिस्सा०	४.१२४	४७, } सिहिस्वट्	६.५३
२५५ }		१३१ }	
२७५ सेरे क्कुस्सुत्त०	३.१०७	१६७ सीलादितो वो	४.८८
२२२ सरो लोपो सरे	१.२६	१६३ सीलाभिक्खञ्जा०	५.५३
६५ सलोपो	२.१६७	३ सुम् सस्स	२.५३
३ सस्साय चतुत्थिया	२.४६	३, }	
१३६ सहत्थे	२.१३	६३, }	सुनहिसु २.१२६:२.६१
३० सहत्थेन	२.१६	७७ }	
२७१ सहस्स सो'ञ्जत्थे	३.७८	७८ सुम्हा च	२.१८८
२२६ संयोगादि लोपो	१.५३	५६ सुम्हाम्हस्सास्मा	२.२०५
२५५ संयोगे क्ववि	४.१२५	७४ सुम्हि वा	२.७०
२१ संसानं	२.१०२	१४७ सुसा खो	५.१५५
सखादीहि इयो	४.(४३)	७५ सुहिसु नक्	२.१६७
१४५ सानन्तरस्स तस्स ठो	५.१४०	१६७ सुहिसु भस्सो	२.५८
१३६ सामित्ते'धिना	२.१७	३ सुहिस्वस्से	२.१००
१४४ सासवससंससाथो	५.१४४	६६ सुहिस्वारड्	२.१६८
१४५ सासस्स सिस् वा	५.११७	२७५ सो छस्साहायतने वा	३.६२
१५५ सासाधिकरा चच०	५.१६७	२७४ सोतादिसू लोपो	३.७३
२४४ सास्स देवता पुण्ण०	४.१३	१६८ सो लोमा	४.६३
७६ सास्संसे चानड्	२.१६०	२२० सो वीच्छापकारेसु	४.११८
८५ सि	६.४३	६८ स्मानंसु वा	२.१६२
५८ सिम्हनपुंसकस्सायं	२.१२६	५६ स्माम्हि त्वम्हा	२.२१६
५४ सिम्हं	२.२१३	३ स्मास्मिन्नं	२.४५
सिलाय जेय्यो च	४.(४२)	७६ स्मास्मिन्नं नाने	२.१८२
७० सिस्मि नानपुंसकस्स	२.६८	७६ स्मास्स ना ब्रह्मा च	२.१६८
१६७ सिस्सरे आम्युवामी	४.६०	३ स्माहिस्मिन्नं म्हा०	२.६६
१०१ सिस्साग्गतो नि	२.१४६	७१ स्मिनो नि	२.७६
२ सिस्सो	२.१११	२२ स्मिनो स्सं	२.१०४

पृष्ठ संख्या	मूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	मूत्र संख्या	
५६	स्मिम्हि तुम्हा०	२.२२८	हस्सा विपल्लानां	१.५०
७७	स्मिम्हि रञ्जे०	२.२२९	हातो वीटिणाने०	५.३७
२७१	स्यादिलोपो पु०	१.५५	हातो ह	६.६८
२७३	स्यादिसु रस्सो	३.२३	हास्सा चाह्वु	६.२५
२६७	स्यादि स्यादिनेक०	३.१	हिने रेच्यण्	४.३६
१२२	स्वादीहि षणो	५.२५	हिमवतो वा औ	२.१५५
	स्सस्स हिं कम्मो	६.६५	हिगिमेस्वस्स	६.५७
२५	स्सा वा तेतिमामू०	२.४८	हिम्मतो लोपो	६.४८
६५	स्से वा	६.५६	हीने	२.१४
५८	स्संस्सा स्सा ये०	२.५४	हतां रेग्	६.४१
२११	हनस्स घातो०	५.६६	हण्ण रेनेणो	३.३१
६५	हना छेणा	६.६७	हेतुण्णोरेवे१०	६.८
१५५	हना रच्चो	५.१६६	हेतुण्णो	२.२१
२१२	हरादीन वा	२.५		

आठवाँ परिशिष्ट

एवादि वृत्ति में सिद्ध किए गए
शब्दों की अनुक्रमणिका

आठवाँ परिशिष्ट

‘एवादि’ वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका

अ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४. अक्को, (अर = गमने, क) = सूर
८. अक्खि, (इक्ख, चक्ख = दस्सने, इ नपु०) = आँख
३१. अक्खो, (अर = गमने, ख) = अक्ष; पासा
१६४. अगारं, (अग = कुटिलगमने, आर) = घर
३२. अगो, (अज, वज = गमने, गक्) = अग्र
३४. अग्गि, (अग = कुटिल गमने, गि) = आग
१४७. अङ्कुरो, (अङ्क = लक्षण, उर) = अङ्कुर
२१५. अङ्कसो, (अङ्क = लक्षण, सक्) = अङ्कश
१६४. अङ्गारो, (अङ्ग = गमनत्थे, आर) = आग
१६५. अङ्गुलं, (अङ्ग = गमनत्थे, उल) = अङ्गुली, एक नाप
१६५. अङ्गुलि, (अङ्ग = गमनत्थे, उलि) = अङ्गुली
७. अच्चि, (अच्च, अच्च = पूजायं, इ) = आँच
४३. अच्छो, (अस = खेपने, छ) = भालू
१५६. अछ्छरा, (अस = खेपने, छर) = देवकन्या, चुटकी
१०२. अजिनं, (अज, वज = गमने, इन) = चमड़ा
१०२. अजिरं, (अज, वज = गमने, किर) = आँगन
१०१. अज्जुनो, (अज्ज, सज्ज = अज्जने, कुन) = राजा, वृक्ष विशेष

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१९६. अञ्जलि, (अञ्ज = व्यक्तिसकयगतनिकन्तिमु, अलि) = प्रञ्जलि
 ११२. अटनि, (अट, पट = गमनत्थे, अनि) = पाया
 २. अणु, (अण = सदृत्थे, उ) = गूधम. धान्य धियोण
 ५८. अण्डो, (अम = गमने, उ) = अण्डा
 २१७. अतसो, (अत = सातच्चगमने, अस) = वायु
 ६३. अतिथि, (अत = सातच्चगमने, इथि) = पाटन
 ८२. अत्ता, (अत = सातच्चगमने, त) = मत
 ८८. अत्थो, (अर = गमने, थक्) = धन
 ९९. अट्ठं, (अर = गमने, ध) = मार्गं, बाल
 ९९. अट्ठा, (अर = गमने, ध) = मार्गं, बाल
 १३७. अधसो, (अस = गमने, स) = नील
 १८९. अल्लो, (अल = पाणने, हल) = पा
 ८२. अन्तो, (अम, यम = गमने, त) = मार्गित. प्रात
 २. अन्दु, (अन्द = बन्धने, उ) = जमीन
 ६८. अन्धो, (अन = पाणने, ध) = अन्धा
 ११४. अप्पं, (आप = पापणने, प) = थोड़ा
 १२८. अव्वं, (अव = रक्खने, व) = भेद्य
 ८१. अमत्तं, (अम = गमने, अत्त) = भाजन
 १२१. अम्बो, अम्बा, (अम = गमने, व) = आम
 २. अम्बु, (अम्ब = सहे, उ) = जल
 १३६. अम्मा, (अम = गमने, म) = माता
 २२२. अम्हं, (अम = गमने, ह) = पत्थर
 ५१. अरञ्जं, (अर = गमने, ज) = जगल
 ६२. अरणि, (अर = गमने, अणि) = अरणि
 २. अरु, (अर = गमने, उ) = व्रण
 १०१. अरुणो, (अर = गमने, कुन) = सूरज
 २१७. अलसो, (अल = बन्धने, अस) = आलसी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८०. अलातं, (अल = बन्धने, आतक) = स्तितकी, लुकारी
 ४. अलावू, (लम्ब = अवसंसने, ऊ) = तुम्बा, लौका
 २१. अलिकं, (अल = बन्धने, किक) = भूटा
 १६८. अल्लि, (अर = गमने, लि) = वृक्ष
 ११२. अवनि, (अव = रक्खने, अनि) = पृथ्वी
 ७६. अवन्ती, अव = रक्खने, अन्त = इस नाम का जनपद
 ११२. असनि, अस = खेपने, अनि = वज्र
 ७. अस्त्रि, अस = खेपने, इ = तलवार
 २. असु, अस = खेपने, उ = प्राण
 १४७. असुरो, अस = खेपने, उर = दैत्य
 २१३. अस्सो, अस = खेपने, स = घोडा
 २१२. अस्तु, अस = खेपने, सु = आंसू
 ८. अहि, अह = गमने, इ = साँप
 १६४. अळारो, अल = बन्धने, आर = मटमैला रंग
 २१३. अंसो, अन = पाणने, स = कधा; हिस्सा
 ६. आखु, खण = अवदारणे, कु = चूहा
 २१४. आमिसं, मि = पक्खेपे, सक् = आहारादि
 १. आयु, अय = गमनत्थे, णु = आयु
 २०२. आलुवो, अल = बन्धने, णुव = एक गाछ
 ८५. आवसथो, वस = निवासे, अथ = घर
 ५४. आवाटो, अव = रक्खने, आटण् = गड़ा
 १. आसु, अस = खेपने, णु = शीघ्र
 २६. इट्टुका, इस = इच्छायं, ठक्ण् = ईट
 ६४. इत्थी, इस = इच्छायं, थी = स्त्री
 १०५. इनो, इ = अज्जेनगतिसु, नक् = स्वामी
 २. इन्दु, इन्द = परमिस्सरिये, उ = चाँद
 १२७. इभो, इ = अज्जेनगतिसु, भक् = हाथी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६७. इरिणं, ईर = कम्पने, ण = ऊमर
 ६. इसि, इस = इच्छाय, कि = ऋणि
 २३. इसीका, इस = इच्छायं, कीक = उजला
 १५. उक्का, उस = दाहे, क = उक्का
 ३१. उक्खो, उस = दाहे, ख = वैल
 ८. उक्खलि, उस = दाहे, इ = आखल
 ३३. उच्चालिङ्गो, चल = कम्पने, गक् = एक उजला कीड़ा
 ४२. उच्छु, उस = दाहे, छुक् = ईख
 ४५. उज्जु, अर = गमने, जु = नीधा
 ७१. उतु, अर = गमने, तु = ऋतु
 १५. उदकं, उन्द = किलेदने, क = जल
 ६६. उद्दो, उन्द = किलेदने, दक् = ऊद त्रिनाव
 १४८. उन्दुरो, उन्द = किलेदने, उर = चहा
 १५. उयचिका, चि = चये, क = दीमक
 ८६. उपोसथो, वस = निवासं, अथ = तिथि विपेण, हम्मि-कुल
 १८४. उप्पलं, पा = पाने, कल = कमल
 १५. उम्मुकं, उस = दाहे, क = लुआठी, मशाल
 १४६. उरो, उस = दाहे, रक् = छाती
 ६. उरु, अर = गमने, कु = बड़ा
 २६. उलूको, उल = पवेसने, णूक् = उल्लू
 १२६. उसभो, उस = दाहे, कभ = श्रेष्ठ
 १६९. उसीरं, वस = निवासे, कीर = खस
 ५. उसु, उस = दाहे, कु = वाण
 १३०. उसुभं, उस = दाहे, कुम = गरम
 १३७. उस्सा, उस = दाहे, म = तेजो धातु
 २२४. उस्सोळ्ही, सह = सहने, ही = वीर्य
 १५. ऊका, ऊह = वितक्के, क = जूँ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१०७. ऊनो, ऊह = वितक्के, न = कम
 १३६. ऊमि, ऊह = वितक्के, मि = तरंग
 ६. ऊरु, अर = गमने, कु = जाँघ
 १४. एको, इ = अजभेन गतिकन्तिसु, क = अकेला
 ५६. एरण्डो, ईर = क्लेपे, ड = रेंड, व्याघ्रपुच्छ
 १८८. एला, इ = अजभेन गतिकन्तिसु, ल = मुँह का लार
 ५५. ओट्टो, उस = दाहे, ठ = ओठ, ऊँट
 १०७. ओदनो, उन्द = किलेदने, न = भात
 १४. कक्को, कर = करणे, क = एक तरह का रंग
 ४. कक्कन्धु, कर = करणे, ऊ = बैर का फल
 २१८. कक्कसो, कर = करणे, कस = कर्कश
 २२७. कक्कळो, कर = करणे, ळक् = क्रूर
 ३६. कङ्गु, कम = इच्छायं, गु = धान्य विशेष
 ४३. कच्छो, कच् = बन्धने, छ = तराई
 ४२. कच्छु, कस = विलेखने, छुक् = खुजली
 ४६. कञ्जा, कम = इच्छायं, ज = कुमारी
 १८. कटकं, कट = मद्दने, अक = नगर
 २२३. कटाहो, कट = मद्दने, छ = कड़ाही
 १८२. कठलं, कठ = किच्छजीवने, अल = कपाल-खंड
 १७३. कठोरो, कठ = किच्छजीवने, ओर = कठोर
 ५५. कट्टं, कस = गमने, ठ = काठ
 ५५. कण्ठो, कम = इच्छायं, ठ = कण्ठ
 ५८. कण्डो, कम = पदविक्लेपे, ड = वाण, परिच्छेद
 १६२. कण्डुलो, कण्ड = च्छेदने, कुल = वृक्ष
 ६५. कण्णो, कर = करणे, ण = कान
 २२३. कण्हो, कस = विलेखने, ह = काला
 ७३. कतु, कर = करणे, रतु = यज्ञ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२८. कलिका, कर = करणे, निक = कार्तिक
 १२२. कदम्बो, कद = सुत्तियोधानु, व = वृक्ष
 १८. कनकं, कन = दित्तिगतिकन्तिमु, अक = मोना
 ९५. कन्दो, कम = इच्छाय, दक = मूल विशेष
 १५९. कन्दरो, कन्द = वहानरोदनेमु, अर = कन्दरा
 १८६. कपालं, कप्प = सामत्थिये, काल = घटादि खड
 ८. कपि, कम्प = चलने, इ = वानर
 १९१. कपिलो कम्प = चलने; कव = वण्णे, कील = मटनेल रंग
 ७५. कपोतो, कप = अच्छादने, ओत = कवृत्तर
 १९४. कपोलो, कप = अच्छादने, ओल = गाल
 २१८. कप्पासो, कर = करणे, पास = कपाम
 १०३. कप्पिनो, कप्प = सामत्थिये, इत्त = राजा
 १७२. कप्पूरं, कप्प = सामत्थिये, ऊर = कपर, वनभार
 ५३. कमटो, कम = इच्छायं, अट = धौना
 ५६. कमठो, कम = इच्छायं, ठ = भिक्षा-भाजन
 १८२. कमलं, कम = इच्छायं, अल = कमल
 २. कम्बु, कम्ब = संवरणे, उ = शङ्ख
 १३६. कम्मं, कर = करणे, म = कर्म, सुखदुक्खफलद
 १६७. कम्मारो, कर = करणे, मार = लोहार
 २१५. कम्मासो; कम्मासं, कल = सङ्ख्याने, सक् = चित्तकवरा
 १८. करको; करका, कर = करणे, अक = वनउगी, ओला
 ५३. करटो, कर = करणे, अट = कौआ
 ५७. करण्डो, कर = करणे, अण्ड = भाण्ड विशेष
 १२४. करभो, कर = करणे, अभ = उट्ट
 २१०. करीसं, कर = करणे, ईस = गुह
 १०१. करुणा, कर = करणे, कुन = दया
 ८१. कलत्तं, कल = संख्याने, अत्त = भार्या

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१२४. कलभो; कळभो, कल = संख्याने, अभ = हाथी का बच्चा
 १८२. कललं, कल = संख्याने, अल = गर्भ की एक अवस्था, कीचड़
 २१७. कलसो, कल = मङ्ख्याने, अस = कलश
 २२३ कलहो, कल = संख्याने, ह = विवाद
 ७. कलि, कल = संख्याने, इ = पाप
 २२ कलिका, कल = संख्याने, कीक = कली
 ३३. कलिङ्गो, कल = सद्दे, गक् = एक जनपद
 १८९. कलिलं, कल = संख्याने, इल = गहन
 १९९. कलीरो, कल = संख्याने, कीर = वाँस का कोपल (अंकुर)
 १८८. कल्लं, कल = संख्याने, ल = युक्त
 १९६. कल्लोलो, कल्ल = सद्दे, ओल = समुद्र की लहर
 ५४ कवाटं, कु = सद्दे, आट = किवाड़
 ७. कवि, कु = सद्दे, इ = कवि
 ५३. कसटं, कस = गमने, अट = बुरा, अप्रिय
 ७. कसि, कस = विलेखने, इ = कृषि
 ६०. कसिणं, कस = गमने, किण = अशेष
 १४९. कसिरं, कस = गमने, किर = थोड़ा
 १७७. कसेरु, सी = सये, रु = पानी में जमने वाला एक कन्द
 २७. कसको, कस = विलेखने, सक = कृषक
 २१३. कसो, कस = इच्छायं, स = एक नाप
 १९४. कळारो, कल = संख्याने, आर = मटमैला रंग
 १४. काको, का = सद्दे, क = कौवा
 २४. कामुको, कस = इच्छायं, गुक् = कामी
 १. कारु, कर = करणे, गु = शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा
 १. कासु, कस = विलेखने, गु = गढ़ा
 २२५. काळो; काळि, का = सद्दे, ल = जंगली जानवर
 २००. कितवो, किन = निवासे, अव = ठग, जुवारी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२१२. किङ्बिसं, कर् =करणे, रिङ्बिस =पाप
 ८. किमि, कम =पद विकल्पे, इ =कीटा
 १०४. किरणा, किर =विकिरणे, कन =किरण
 ८०. किरातो, किर =विकिरणे, आतक् =एक जगती जान
 ५२. किरोटं, किर =विकिरणे, कोट =मुकुट
 ८५. किलमथो, किलम, क्रम =गिताने, अथ =परिश्रम
 ८०. किलातो, किर =विकिरणे, आतक् =एक जगती जान
 १४२. किसलयं, कस =गमने, य =पल्लव
 १७४. किसोरो, कस =गमने, ओर =किशोर, अश्व
 २२. किङ्गणिका, कण =सदृश्ये, कीक =छोटी घण्टिया
 ५४. कुक्कुटो, कुक, वक =आदाने, कुटक - मर्गा
 १४८. कुक्कुरो, कुक, वक =आदाने, उर =घृता
 २२७. कुक्कुळं; कुक्कुळो, कुक, वक =आदाने, ळ =एक तरक
 १३१. कुङ्कुमं, कम, इच्छाय, कुम =केशम
 ४१. कुच्छि, कुस =अक्कोमे, छिक् =पेट
 १६०. कुटिलो, कुट =कोटिल्ये, किल =देहा
 १२२. कुटुम्बं, कुट =कोटिल्ये, ब =परिवार, कुटुम्ब
 ५६. कुट्ठं, कुस =अक्कोमे, ठ =कुट
 १२२. कुडुबो, कण्ड =च्छेदने, ब =पैला
 ११६. कुणपो, कुथ =पूतिभावे, अप =मृतक
 १८६. कुणालो, कुण =सदृश्ये, काल =एक महासर
 ५६. कुणो, कुण =सदृश्ये, ठ =जिसका हाथ पैर कटा हो
 ५६. कुण्डं, कम =इच्छायं, ड =भाजन
 १८२. कुण्डलं, कुण्ड =दाहे, अल =कुण्डल
 ८४. कुत्तं, कर =करणे, तक् =त्रिया
 ८४. कुन्तो, कम =पदविकल्पे, तक् =एक हथियार
 ६६. कुन्दो, कम =इच्छायं, दक् =एक प्रकार का फूल

पवादि

सूत्र-संख्या

१६५. कुमारो, कम=इच्छायं, आर=कुमार
 १०३. कुमिन्, कम=पदविक्रमे, इन=मछली बभाने का छोप (टाप)
 १२६. कुम्भो, कम=इच्छायं; अथवा उम्भ=पूरणे, ह=घडा
 १३७. कुम्भो, कर=करणे, म=कछुआ
 २१५. कुम्मासो, कुल=सन्ताने, सक=एक खाद्य
 १४३. कुरं, कु=सद्दे, रकू=भात
 १५५. कुररो, कुररी, कुर=सद्दे, कुर=एक पक्षी (कुररी)
 ५. कुरु, कुर=सद्दे, कु=राजा
 ५. कुरवो, कुर=सद्दे, कु=जनपद
 १७२. कुरूरो, कर=करणे, ऊर=पापकारी
 १८५. कुललो, कुल=सन्ताने, काल=टिटिहरी (पक्षी विशेष)
 १८५. कुलालो, कुल=सन्ताने, काल=कुम्भकार, कोहोर
 २१५. कुलिसं, कुल=संवरणे, सक्=वज्र
 १७५. कुवेरो, कु=सद्दे, एरक्=कुवेर महाराज
 २१४. कुसो, कु=सद्दे, सक्=कुश घास
 ८४. कुसीतो, कुस=अवकोसे, तक्=काहिल
 १३०. कुसुमं, कुस=अवकोसे अन्हाने च, कुम=फूल
 १२६. कुसुम्भं, कुस=अवकोसे अन्हाने च, भ=एक फूल जिससे रग तैयार किया जाता है।
 १२६. कुसुम्भो, कुस=अवकोसे अन्हाने भ=सोना
 १७०. कुलीरो; कुलीरो, कुल=सन्ताने, कीर=कर्कट, केकडा
 ११५. कूपो, कु=सद्दे, प=कूआ
 ६१. केणि; केणी, की=दब्बदिनिसये, णि=क्रय
 २. केतु, कित=निवासे, उ=ध्वजा
 १६६. केदारं, क्लेद, क्लिद=अल्हाभावे, आर=खेत
 १८२. केवलं, केव=सेवने, अल=सारा
 ८. केळि, कीळ=विहारे, इ=क्रीडा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१८९. कोकिलो, कुक. वक = प्रादाने, इल = गोथल
 ४३. कोच्छो, कुच = संकोचे, छ = पीडा
 ५५. कोट्ठो, कुस = अक्कोसे, ठ = अनाज राने की ताठी
 ६५. कोणो, कु = सहे, ण = याम, मज, तीणा प्रादि का दण
 ५६. कोण्ठो, कुस = अक्कोसे, ठ = अिसका हाथ पर रटा हो
 ८९. कोत्थु, कुस = अक्कोसे, थु = शिवाय
 १८. कोरको, कुर = सहे, अक् = कर्मी
 ७८. कोलितो, कुल = मन्ताने, इल = द्वितीय अप्र श्रावक (एक अप्र का नाम)
 १६६. कोविळारो, विद = लाभे, आर दुगना हुआ
 १२२. कोसम्भो, कुस = अक्कोसे, व = वृक्ष
 १७१. खज्जूरो-खज्जूरी, खज्ज = खज्जनं, ऊर = अङ्ग
 ५८. खण्डो, खन, खण = अक्कोसे, ड = अण्ड
 १५०. खदिरो, अद, खाद = भवतने, किण् = शीघ्र
 ९८. खन्धो, खन, खण = अक्कोसे, ध = स्कन्ध; सम्ह
 ६४. खण्णु, खन, खण = अक्कोसे, णु = ठूठ
 ११६. खिप्पं, खिप = प्परणे, पक् = शीघ्र
 १४३. खीरं, खी = खये, रक् = दूध
 ९५. खुद्दो, खिद = असहने, दक् = क्षुद्र
 ८२. खेत्तं, खिप = प्परणे, त = खेत
 १३६. खेमो, खी = खये, म = क्षेम; कुगल
 २२५. खेळो, खी = खये, ल = थूक
 १३६. खोचं, खु = सहे, च = अतसि
 १०७. गगनं, गम = गमने, न = आकाश
 ३२. गगो, गद = वचने, गक् = एक ऋषि
 १५२. गगरो, गर, धर = सेचने, गर = गड़गड़ाहट, हंस की आवाज
 ३२. गङ्गा, गम = गमने, गक् = गंगा नदी
 ७. गण्ठ, गन्थ = गन्थने, इ = गाँठ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

५८. गण्डो, गम = गमने, ड = व्याधि, गाल
 ८२. गत्तं, गह = उपादाने, त = शरीर
 ९९. गद्धो, गिध = अभिकङ्खायं, ध = गिज्भो अत्यंत लोभाभिभूत
 १२५. गद्रभो, गद = व्यत्तवचने, रभ = गदहा
 ७०. गन्तु, गम = गमने, तु = जाने वाला
 १२१. गब्बो, गर = सेपने, ब = अभिमान
 १५१. गढभरं, गर = सेचने, भर, = गुहा
 १२८. गबभो, गर = सेचने, भ = गर्भ
 १७०. गभीरो; गम्भीरो, गम = गमने, कीर = गहरा
 २१. गमिको, गम = गमने, किक = जाने वाला
 २. गरु, गर = सेचने, उ = गुरु, आचार्य
 ६२. गहणि, गह = उपादाने, अणि = जठराग्नि
 ८८. गाथा, गा = सद्दे, थक् = पद्यविशेष
 १३६. गामो, गा = सद्दे, म = गाँव
 ११. गामी, गम = गमने, ईण् = जानेवाला
 २२३. गाद्धं, गाह = विलोळने, ह = दृढ
 ४०. गिज्भो, गिध = अभिकङ्खायं, भक् = गीध
 २२३. गिन्हो, गम = गमने, ह = ग्रीष्म
 ९. गिरि, गिर = निगिरणे, कि = पहाड़
 २०३. गीवा, गा = सद्दे, ईव = गला
 ४४. गुच्छो, गुप = गोपने, छ = गुच्छा
 २०. गुवाको, गु = सद्दे, आक् = सुपारी
 २२६. गुळो, गु = सद्दे, लक् = गुड़
 ८८. गूपो, गुप = गोपने, थक् = गूह
 ६७. गोषो, गम = गमने, ण = डैल
 ८२. गोत्तं, गुप = गोपने, त = गोत्र
 १४६. गोत्रं, गुप = गोपने, रक् = गोत्र

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१३२. गोधुमो, गुध् = परिवेठने, उम् = गेहूं
 १२०. गोप्फो, गुप् = गोपने, फ् = गुल्फ, पैर की पंड़ी के ऊपर का भाग
 २२६. गोळो, गु = मढ़े, ळक् = गुड
 ८३. घतं, घर = सेचने, तक = धी
 १३६. घम्मो, गर, घर = सेचने, म् = ग्रीष्म
 १०. घाति, हन = हिसाय, इण् = हथियार
 १७३. चकोरो, चक् = परिवितक्के, ओर = पक्षी विशेष
 २. चक्खु, चक्ख = दस्सने, उ = आंख
 १५२. चच्चरं, चर = गतिभक्खनेसु, चर = चौंरात्र
 १६२. चटुलो, चट = भेदने, कुल = खुमामडी
 १८७. चण्डालो, चण्ड = चण्डिको, पाल = चाण्डाल
 १४७. चतुरो, चत = याचने, उर = चतुर
 १८४. चपलो, चुप् = मन्दगमने, कल = चपल, चञ्चल
 २१७. चमसो, चम = अदने, अस = चमन्ना, श्रुवा
 ४. चम्, चम = अदने, ऊ = सेना
 ११४. चम्पा, चम = अदने, प = एक नगर (वर्तमान 'भागलपुर')
 १३३. चरिसं, चर = गतिभक्खनेसु, इम = पिछला
 २. चरु, चर = गतिभक्खनेसु, उ = हृद्यपाक
 १. चाटु, चट; पुट = भेदने, णु = खुसामद
 १. चारु, चर = गतिभक्खनेसु, णु = मुन्दर
 ८३. चित्तं, चित = सञ्चेतने, तक् = विज्ञान; चित्र
 ८०. चिलातो, चिल = वसने, आतक = एक प्रकार की मछली
 १०७. चीनो, चि = चये, न = चीन देश
 १४४. चीरं, चि = चये, रक् = बल्कल
 १५४. चीवरं, चि = चये, ववर = कपाय वस्त्र
 १६८. चुल्लि, चुद = चोदने, लि = चूल्हा
 २२५. चूळा, चु = चवने, ळ = जूरा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६७. छल्लि, छद = संवरणे, लि = छल्ली
 २०८. छवि, छद = संवरणे, रवि = शोभा;
 १४०. छाया, छा = छादने, य = छाया
 ६५. छिहं, छिद = द्वेषाकरणे, दक् = छेद
 ११७. छेपं, छुप = सम्फस्से, पक् = अंगूठा
 १०७. जघनं, हन = हिंसायं, न = जाँघ
 ३७. जङ्गा, जन = जनने, घ = जाँघ
 १५२. जज्जरो, जर = वयोहानियं, जर = जर्जर
 १६१. जठरं, जन = जनने, अर = उदर, पेट
 ६४. जणु, जन = जनने, णु = घुटना
 ७३. जतु, जन = जनने, रतु = लाह
 ७०. जत्तु, जर = वयोहानियं, तु = पंसली
 १८. जनको, जन = जनने, अक = पिता
 ७०. जन्तु, जन = जनने, तु = जीव
 ४. जम्बू, जन = जनने, ऊ = जामुन
 १३६. जम्मो, जम = अदने, म = नीच, मूर्ख
 २६. जलूका, जल = दित्तियं, णुक = जोक
 १६४. जाणु, जन = जनने, णु = घुटना
 ७२. जामाता, जन = जनने, तु = दामाद
 १४१. जाया, जन = जनने, य = स्त्री
 १०५. जिनो, जि = जये, नक् = बुद्ध
 २२२. जिव्हा, जीव = पाणधारणे, ह = जीभ
 ७६. जीवन्ती, जीव = पाणधारणे, अन्त = एक औषधि
 २२३. जुण्हा, जुत = दित्तियं, ह = चाँदनी
 १६४. तक्कोलं, तक्क = वितक्के, ओल = एक फल
 १६३. तण्डुलो, तम = छेदने, कुल = चावल
 २२३. तण्हा, तस = पियासायं, ह = तृष्णा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४२. तनयो, तन = वित्थारे, य = पुत्र
 २. तनु, तन = वित्थारे, उ = शरीर
 ४. तन्, तन = वित्थारे, ऊ = वर्ग
 ८२. तन्तं, तन = वित्थारे, त = तान
 ७०. तन्नु, तन = वित्थारे, नु = नृज
 १२. तन्दी, तन्द = आलस्से, ई = आलसा
 १८०. तम्बुलं, तम = भूसने, बूल = पान
 १८. तरको, तर = तरणे, अक = नाव
 ६२. तरणि, तर = तरणे, अणि = समुद्र, नृज
 २. तरु, तर = तरणे, उ = वृक्ष
 १०१. तरुणो, तर = तरणे, कुन = तरुण
 १५६. तसरो, तस; अस = पिपागायं, अर
 ६०. तसिणा, तस = पिपासाय, किन = नृणा
 ६५. ताणं, ता = पालने, ण = प्राण
 ८२. तातो, ता = पालने, त = पिता
 २११. तालीखं, तल = पतिट्ठायं, ईस = एक दवा का गच्छ
 १. तालु, तल = पतिट्ठायं, णु = तालु
 ६०. तिखिणं, तिज = निसाने, किण = नेज
 ६७. तिणं, तिज = निसाने, ण = तृण
 ८. तित्तिर, तर = तरणे, इ = तितर पक्षी
 ८८. तित्थं, तर = तरणे, थक् = घाट
 ६३. तिथि, ता = पालने, इथि = नारीख
 ५. तिपु, तप = सन्तापे, कु = सीमा धातु
 १४६. तिमिरं, तिम = तेमने, किर = अन्धकार; जल
 २०६. तिमिसं, तिम = तेमने, किस = अन्धकार
 ५२. तिरीटं, तर = तरणे, कीट = पगड़ी
 १४५. तीरं, ता = पालने, रक् = किनारा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१५४. तीवरो, ता = पालने, ववर = एक नीच जाति
 ४४. तुच्छं, तुस = तुष्टियं, छ = असत्य, सारहीन
 ५६. तुण्डं, तनु = वित्तधारे, ड = मुंह, चोच
 ८८. तुत्थं, तुद = व्यथने, थक् = दवा
 १६३. तुमुलो, तम = छेदने, कुल = व्याप्त, सङ्कुल
 १०३. तुहिनं, तुद = व्यथने, इन = पाला
 ७. थनि, थन = सद्दे, इ = शब्द
 ६. थरु, तर = तरणे, कु = तलवार की मूठ
 १८४. थलं, ठा = गतिनिवृत्तियं, कल् = स्थल
 १८. थवको, थु = अभित्थवे, अक = फूल का गुच्छा
 १५०. थिरं, ठा = गतिनिवृत्तियं, किर = स्थिर
 २१४. थुसो, थु = अभित्थवे, सक् = भूसा
 ६७. थूणं, थु = अभित्थवे, ण = एक नगर; थूणो = खम्भा
 ११५. थूपो, थु = अभित्थवे, प = चैत्य
 १०७. थेनो, ठा = गतिनिवृत्तियं, न = चोर
 २०६. थेवो, थु = अभित्थवे, रेव = जलविन्दु
 ६०. दक्खिणा, दक्ख = बुद्धियं, किण = दक्षिणा, पूजा
 ५८. दण्डो, दम = उपसमे, उ = दण्ड
 १५२. दहरं, दर = विदारणे, दर = एक पक्षी
 ६७. दद्दु, दद = दाने, दु = दाद
 १५१. द्दुरो, दद = दाने, दुर = मेढक
 ८. दधि, धा = धारणे, इ = दही
 ८२. दन्तो, दम = उपसमे, त = दाँत
 ६८. दन्धो, दम = उपसमे, ध = मूढ़
 १२३. दन्बि-दब्बी, दर = विदारणे, बि = कलछूल
 ८५. दमथो, दम = उपसमे, अथ = इन्द्रिय-दमन
 २१६. दस्सु, दंस, डंस = दंसने, सु = चोर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. वळ्हं, वह् = दाहे, ह् = दृढं
 ५६. वाठा, दंस; डंस = दंसने, ड = दाढ
 १. दाह, दर = दरणे, णु = लकड़ी
 १०१. दारुणो, दर = विदारणे, कुन = कर्कश
 १०३. दिनं, दा = दाने, इन = दिन
 २१८. दिवसो, दिव = कीळाविजिगभावोहारज्जुनिथुनिगनिमु, सक् = दिन
 १०५. दीनो, दी = स्ये, नक् = दीन
 ६. दुद्धु, ठा = गतिनिवत्तियं, कु = दुरा
 ७२. दुहिता, दुह = प्पूरणे, तु = वेटी
 ८३. दूतो, दू = परितापे, तक् = दून
 १४७. दूरं, दु = गमने, रक् = दूर
 ५३. देवटो, देव = देवने (पूजने) अट ऋणि
 १५६. देवरो, दिव = कीळादिमु, अर = देव
 ६५. दोणो, दु = गमने, ण = द्रोण
 ६१. दोणि-दोणी, दु = गमने, णि = नाव
 १८८. दोला, दु = परितापे, ल = हिडोला
 २. धनु, धन = सद्दे, उ = धनुष
 ११२. धमनि-धमनी, धम = सद्दे, अनि = सिरा
 १३६. धम्मो, धर = धारणे, म = धर्म
 ६२. धरणि, धर = धारणे, अणि = पृथ्वी
 ७२. धातु, धा = धारणे, तु = धातु
 १०६. धाना, धा = धारणे, न = भूजा
 ७२. धीता, धा = धारणे, तु = वेटी
 १४५. धीरो, धा = धारणे, रक् = धैर्यं
 १५४. धीवरो, धा = धारणे, ववर = मल्लाह
 १३४. धूमो, धू = कम्पने, मक् = धूम्रा
 १५८. धूसरो, धू = कम्पने, सर = धूसर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१११. धेनु, धा = धारणे, नुक् = गौ
 ७२. नत्ता, नह = बन्धने, तु = नाती
 ७६. नन्दन्ती, नन्द = समिद्धियं, अन्त = सखी
 १८. नरको, नर = नये, अक = नरक
 १०. नाभि, नभ = हिसायं, इण् नाभी
 ३१. निक्खो, कन = दित्तिगतिकत्तिषु, ख = निष्क
 १६३. निच्चुलो, चि = चये, कुल = एक गाछ
 ३८. निदाघो, दह = भस्मीकरणे, घ = ग्रीष्म
 ६६. निद्दा, निन्द = गरहायं, दक् = निद्रा
 १३६. निमि, नी = पापुणने, मि = एक राजा
 १२२. निम्बो, नम = नमने, ब = नीम
 १६८. निल्लि, निल्ली, नीलि, नीली, नी = नये, लि = वृक्षविशेष
 ६१. निस्सेणि, निस्सेणी, सि = सेवायं, णि = निसेनी
 ११६. नीपो, नी = नये, पक् = वृक्ष
 १४३. नीरं, नी = पापुणने, रक = जल
 १५४. नीवरं, नी = पापुणने, ववर = घर
 ८४. नेत्तं, नी = पापुणने, तक् = आँख
 ८४. नेता, नी = पापुणने, तक् = नेता
 १३८. नेमि, नी = पापुणने, मि = चक्के की परिधि
 १७७. नेरु, नी = नये, रु = सुमेरु पहाड़
 १५. पङ्को, कम्प = चलने, क = कीचड़
 २२७. पङ्गुळो, खञ्ज = गतिवेकल्ले, लक् = लंगड़ा
 ७६. पचतो, पच = पाके, अत = रसोइया
 ४१. पच्छि, पस = बाधने, छिक् = खाँची, डाली
 १०७. पज्जुघो, पद = गमने, न = इन्द्र; मेघ
 ३३. पटगो-पटङ्गो, पत; पथ = गमने, गक् = फतिङ्गा
 १८२. पटलं, पट = गमने, अल = समूह

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. पटहो, पट = गमने, ह = एक मात्रा
 २. पटु, पट = गमने, उ = दक्ष, पटु
 १९४. पटोलो, पट = गमने, ओल = एक मात्रा
 १३३. पठमं, पठ = उच्चारणे, अम = प्रथम् श्रेण्य
 १९९. पणवो, पण = व्यवहारस्थितिमु, अत्र = अत्र तरह का होल
 ६५. पणवो, पण = व्यवहारस्थितिमु, ण = पत्ता
 २२४. पणिह, पण = व्यवहारस्थितिमु, हि = एङी
 १९. पताका, पत; पथ = गमने, आक = ध्वजा
 ६९. पति, पा = रक्खने, अति = पति
 १०८. पत्तनं, पत; पथ = गमने, तन = नगर
 १३०. पटुमं, पट = गमने, कुम = नगर
 २१७. पनसो, पन = स्थिति, अम = नगर
 २१५. पण्णासं, पाय = बुद्धि, अण् = पण्णासं
 ६. पभङ्गु, भञ्ज = शोभने, कु = श्रेण्य
 २२२. पाम्हं, अम; गम = गमने, ङ् = प्रमत्त
 १८६. पलालं, पल = गमने, काल = पण्णासं
 ८४. पलितं, पाल = रक्खने, तक = वाय का पचना
 १८२. पल्ललं, पल्ल = गमने, अल्ल = जलाशय
 १९९. पल्लवं, पल्ल = गमने, अव = पल्लव
 १९८. पल्लि, पाल = रक्खने, लि = कुटी; छोटी वस्ती
 २. पसु, पस = वाधने, उ = चौपाय
 १७२. पसूरो, पस = वाधने, ऊर = दूर, व्यञ्जन
 २. पंसु, पंस = नासने, उ = धूलि
 १८४. पाटलं, पत, पथ = गमने, कल = फल
 १०. पाणि, पण = व्यवहारस्थितिमु, इण् = हाथ
 १८७. पातालं, पत, पथ = गमने, णाल = रसातल
 २४. पाडुका, पद = गमने, णुक = खड़ाउ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११४. पापं, पा = रक्खने, ष = अकुशल कर्म
 ११८. पालि-पाली, पाल = रक्खने, लि = पक्ति, बुद्ध-वचन, मूल
 २२८. पाळि, पा = रक्खने, ळि = तन्ति भाषा
 २०. पिञ्जा को, पण = व्यवहारत्युतिसु, आक्क = तिल का पीना, खरी
 १६२. पिठरो, पच = पाके, अर = पकाने का वर्तन
 ७२. पित्त, पा = रक्खने, तु = पिता
 २०. पिन्नाको, पा = पाने, आक = शिवजी का धनुष
 १८६. पिथाल्पे, पी = तप्पने, काल = एक फल
 २१५. पीयूलं, पी = तप्पने, सक् = अमृत
 १५३. पीवरं, पी = तप्पने, वर = स्थूल
 ४४. पुच्छो, पुस = पोसने, छ = पूछ
 ५०. पुञ्जं, पुण = कम्मनि सुभे, ज = कुशल कर्म
 ८३. पुत्तो, पुस = पोसने, तक् = पुत्र
 ५. पुथु, पुथ; पथ = वित्तियारे, कु = फेलाव
 १५. पुथुको, पुथ; पथ = वित्तियारे, क = अज्ञ
 १६२. पुथुलो, पुथ, पथ = वित्तियारे, कुल = विस्तृत
 २०६. पुरिसो, पूर = पूरणे, किल = आदमी
 २११. पुरीसं, पूर = पूरणे, ईस = गूह
 ६६. पुलिन्दो, पुल = महत्तहिंसाजाणेसु, दक् = एक नीच जाति
 २१५. पुस्सं, पुस = पोसने, सक् = एक फल
 ११६. पूपो, पू = पवने, पक् = पूआ
 ६८. पूरणो, पूर = पूरणे, अण = पूरा करने वाला
 १६६. पेत्तको, पिल = वत्तने, अव = पतला
 १८८. पेत्तो, पी = तप्पने, ल = बेंत की बनी डलिया
 १८२. पेत्तलो, पिस = गमने, अल = प्रियशील
 २२५. पेत्ठा, पी = तप्पने, ळ = पेडा
 १६८. पोक्खरं, पुस = पोसने, खर = कमल

पवादि

सूत्र-संख्या

८२. पोतो, पू = पवते, त = वचना

२१५. फस्सो, फुस = सम्फस्से, सक् = स्पद्य

५६. फुहो, फुस = सम्फस्से, ठ = स्पद्य

३३. फुलिङ्गो, फुट = चलने, गक् = चिनगारी

२१५. फुस्सो, फुस = सम्फस्से, सक् = एक नक्षत्र

३६. फेगु, फल = निष्फलिये, गु = प्रमाण

१६०. बदरं-बदरी, वद = वचने, अर = वैर का फल

१४६. बधिरो, वध = बाधने, कीर = बहुरा

२. बन्धु, वन्ध = वन्धने, उ = वन्ध

११७. बपपो, वम = उगिरणे पक् = ग्राम्

१६. बलाका, बल = पाणने, आक = एक पक्षी

७. बलि, बल = पाणने, इ = मिश्रण

१८४. बह्लं, वह = बुद्धिये, कल = घना

२. बहु, वह = बुद्धिये, उ = बहुत

२१५. बळिसो, बल = मवरणे, सक् = वमी

६. बाहु; वह = पापणने; अथवा बाध = त्रिधाधाय, कु = भुजा

२२३. बाळ्हं, वह = बुद्धिये, ह = दृढ, बहुत अधिक

६. बिन्दु, विद = लाभे, कु = स्वल्प

१२२. बिम्बं, वम = उगिरणे, ब = शरीर

१८६. बिळालो, बल = पाणने, काल = विलाव

६६. बुन्दो, बु = संवलणे, दक् = मूल, जड, वृक्ष का मूल

२०२. बेलुवो, बिल = भेजने, गुव = एक लता

३६. भग्गु, भर = भरणे, गु = एक ऋषि

७६. भदन्तो, भद् = कल्याणे, अन्त = प्रव्रजित

१४६. भद्र, भद् = कल्याणे, रक् = सुन्दर

१५६. भमरो, भम = अनवट्टाने, अर = भौरा

२. भमु, भम = अनवट्टाने, उ = भौ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६. भयानकी, भी = भये, आनक = भयानक
 ७६. भरतो, भर = भरणे, अत = नर्तक
 २. भरु, भर = भरणे, उ = पति
 १८६. भस्त्रा, भस = भस्मीकरणे, रक् = भाथी
 १३७. भस्मं, भस = भस्मीकरणे, म = राख
 ६३. भाणु, भा = दित्तियं, णु = किरण
 ७२. भाता, भा = दित्तियं, तु = भाई
 ११०. भानु, भा = दित्तियं, नुक् = सूरज
 ११. भावी, भू = सत्तायं, ईण् = होने वाला
 २. भिक्खु, भिक्ख = याचने, उ = श्रमण
 १६६. भिङ्गारो, भर = भरणे, आर = सोने की भारी
 ३३. भिङ्गो, भम = अनवट्टाने, गक् = भौरा
 १५. भीको, भी = भये, क = भीह
 १३५. भीसो, भी = भये, मक् = भयानक
 १७६. भीह, भी = भये, रुक् = भयानक (?) डरपोक
 १३५. भीसनो, भी = भये, रीसनो = भयानक
 २१५. भुसं, भू = सत्तायं, सक् = भुस्सा
 ४. भू, भम = अनवट्टाने, ऊ = भौ
 १३६. भूमि, भू = सत्तायं, मि = पृथ्वी
 १७६. भूरि, भू = सत्तायं, रिक् = बहुत
 १७६. भूरी, भू = सवायं, रिक् = मेधा
 १४. भेको, भी = भये, क = मेढक
 १४६. भेरी, भी = भये, रक् = भेरी
 १३७. भेस्सा, भी = भये, स = भयानक
 ५४. मकुटं, मङ्क = मण्डने, उट = मुकुट
 १४८. मकुरो, मङ्क = मण्डने, उर = आइना, रथ, मछली
 २२७. मकुळो, मङ्क = मण्डने, ळक् = कली

ण्वादि

सूत्र-संख्या

३८. मघा, मह् = पूजाय, घ = मघा नक्षत्र
 १८२. मङ्गलं, मङ्ग = मङ्गल्ये, अल = मङ्गल
 १४८. मङ्गुरो, मङ्ग = मङ्गल्ये, उर = एक तरफ की मछली
 ४०. मञ्चु, मर = पाणत्रागे, जु = मृत्यु
 ४०. मञ्चो, मर = पाणत्रागे, जो = मनुष्य
 ४३. मच्छो, मस = ग्रामसने, छ = मछली
 १५७. मच्छेरं, मच्छेरं, मस = ग्रामसने, छर, छेर = मात्सर्य
 १६४. मञ्जारो, मज्ज = संमुद्रियं, आर = विलाव
 ४६. मञ्जु, मन = जाणे, जु = मञ्जुल
 २१५. मञ्जूसा, मन = जाणे, सक् = वक्ता
 ८. मणि, मन = जाणे, इ = मणि
 ५८. मण्डो, मन = जाणे, उ = माउ
 ११६. मण्डपो, मण्ड = भूसने, अर = मण्डप
 १८२. मण्डलं, मण्ड = भूसने, अल = गोलाकार
 २५. मण्डूको, मण्ड = भूसने, णुक् = मेढक
 ८१. मत्तं, मा = माने, अत्त = मात्र
 १५. मत्थकं, मस = ग्रामसने, क = माथा
 ८६. मत्थु, मस = ग्रामसने, थु = मट्टा
 १४७. मथुरा, मथः मन्थ = विलोळने, उर = एक शहर
 १४६. मदिरा, मद = उम्मादे, किर = शराव
 ६५. मद्दो, मद = हासे, दक् = एक जनपद
 ६. मधु, मन = जाणे, कु = मधु
 २६. मधुको, मन = जाणे, णुक् = वृक्ष
 २. मनु, मन = जाणे, उ = प्रजापति; महासम्मत
 ६६. मन्दो, मन = जाणे, दक् = मढ़
 १५६. मन्दरो, मन्द = मोदनत्थुतिजळत्तेसु, अर = एक पर्वत
 १४६. मन्दिरं, मन्द = मोदनत्थुतिजळत्तेसु, किर = घर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४०. मन्दुरा, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेमु, उर=अस्तबल
 १३६. मम्मं, मर=पाणचागे, म=मर्मस्थान
 १५२. मम्मरो, मर=पाणचागे, मर=मर्मर शब्द
 ३१. मयूखो, मय=गमने, ख=किरण
 ४०. मरीचि, मर=पाणचागे, ईचि=किरण
 २. मरु, मर=पाणचागे, उ=देव
 ७. मसि, मस=आमसने, इ=राख
 १७१. मसूरो, मस=आमसने, ऊर=एक दाल
 २१६. मसु, मस=आमसने, मु=दाढी
 २२. महिका, मह=पूजायं, किक=हिम
 १८६. महिला, मह=पूजायं, इल=स्त्री
 २१५. महेसी, मह=पूजायं, सक्=पटरानी
 १७४. महोरो, मह=पूजाय, ओर=वल्मीक
 २१३. मंसं, मन=आणे, स=मांस
 ७२. माता, पा=पाने, तु=मा
 २०२. मालुवा, मल, मल्ल=धारणे, णुव=एक लता (अमरबेल)
 २२५. माळो, मा=माने, ळ=एक कूट वाला
 ८३. मित्तो, मिद्=स्नेहने, तक्=मित्र
 १६१. मिथिला, मिथ, मन्थ=विलोळने, किल=एक जनपद
 १०१. मिथुनं, मिथ=सङ्गमे, कुन=जोड़ा
 ८४. मिहितं, मिह=ईसंहसने, तक्=मुस्कराहट
 १०५. मीनो, मी=हिंसायं, नक्=मछली
 १४४. मीरो, मि=पक्खेपने, रक्=समुद्र
 २२३. मीळ्हं, मील=निमीलने, ह=गूह
 ३१. मुखं, मू=बन्धने, ख=मुंह
 ३२. मुग्गो, मुद=तोसे, गक्=मूग
 ५६. मुण्डो, मन=आणे, ड=शिर मुड़ाया हुआ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२००. मुतवो, मू=वन्धने, अ्रव=चण्डाल
 ८४. मुत्तं, मिह्=मेचने, तक्=मूत्र
 ५. मुद्दु, मुद=तोसे=तरम
 ९५. मुद्दा, मुद=तोसे, दक्=अग्रगुठी
 २२. मुद्दिका, मुद=तोसे, किक=अग्रगुठी
 ९९. मुद्धा, मुद=तोसे, ध=शिर
 ८. मुनि, मन=जाणे, ड=धमण
 २००. मुरवो, मुर=मवेठने, अ्रव=मुदङ्ग
 १८३. मुसलो, मुस=खण्डने, कल=अयोग्य
 १८६. मुळालं, मील=निभीलने, काल=मृणाल
 २१. मूसिको, मुस=थेय्ये=चूहा
 ३८. मेघो, मिह्=मेचने, घ=मेघ, वादल
 १७७. मेरु, मी=हिंसाय, रु=मेरु पर्वत
 २२५. मेळा, मि=पक्वेषे, ल=राग्य
 ३८. मोघो, मुह्=मुच्छायं, घ=निकम्मा
 १७४. मोरो, मी=हिंसाय, ओर=मोर
 ३१. यक्खो, यस=पयतने, ख=यक्ष
 ७९. यजतो, यज=देवपूजायं, अत=अग्नि
 २. यजु, यज=देवपूजायं, उ=एक वेद
 ४९. यञ्जो, यज=देवपूजासंगतिकरणदानेसु, ज=यज
 १०१. यमुना, यम=उपरमे, कुन=एक नदी
 २१७. यवसो, यु=मिस्सने, अस=तृणविशेष
 ३५. यागु, या=पापुणने, गु=यवागु
 १४६. यात्रा, या=पापुणने, रक्=यात्रा
 १३६. यामो, या=पापुणने, म=दिन का छठा या आठवाँ भाग
 ८८. यूथो, यु=मिस्सने, थक्=भुण्ड
 ११५. यूपो, थु=मिस्सने, प=यज्ञ की लाठ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८२. थोत्तं, युज = संयमने, त = रस्सी
 ११३. योनि, यु = मिस्सने, नि = भग-इन्द्रिय
 ६. रघु, रङ्घ = गमने, कु = एक राजा
 ७६. रजत्तं, रञ्ज = रागे, अत = चाँदी
 १०७. रजनी, रञ्ज = रागे, न = रात
 ४६. रज्जु, रुध = आवरणे, जु = रस्सी
 ५८. रण्डा, रम = कीळायं, ड = विधवा
 १०६. रतनं, रम = कीळायं, तनक् = रत्न
 ८७. रथो, रम = कीळायं, थक् = रथ
 ६८. रन्धं, रम = कीळायं, ध = बिल
 ६८. रवणो, रु = सद्दे, अण = कोयल
 ७. रवि, रु = सद्दे, इ = सूरज
 १३६. रस्मि, रस = अस्सादने, मि = किरण
 ७. राजि, राज = दित्तियं, इ = पक्वि
 १२६. रासभो, रास = सद्दे, कभ = गदहा
 १०. रासि, रस = अस्सादने, इण् = समूह
 १. राहु, रह = चागे, णु = इस नाम का असुरेन्द्र
 ६. रिपु, रप = वचने, कु = शत्रु
 ३१. रुक्खो, रुह = जनने, ख = वृक्ष
 ६. रुचि, रुच = दित्तियं, कि = अभिलाषा
 १४६. रुचिरं, रुच = दित्तियं, किर = सुन्दर
 ६५. रुदो, रुद = अस्सुविमोचने, दक् = रुद्र
 १४६. रुधिरं, रुध = आवरणे, किर = लहू
 १७६. रुह, रु = सद्दे, रुक् = भिगो
 ७६. रुहन्तो, रुह = जनने, अन्त = वृक्ष
 १४६. रुहिरं, रुह = जनने, किर = लहू
 ११७. रूपं, रूप = रूपने, पक् = रूप

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११२. वत्तनी, वत्त=वत्तने, अग्नि=मार्ग
 ६०. वत्थि, वस=निवासे, थि=पेडू
 ८६. वत्थु, वस=निवासे, थु=वस्तु
 ३. वधू, वन्ध=बन्धने, ऊ=बहू
 ११४. वप्पो, वप=बीजनिकखेपे, प=खेत
 १५. वस्मिको, वम=उगिरणे, क=दीयङ्
 १८. वरको, वर=वरणसम्भत्तिसु, अक=धान्य विशेष
 ६८. वरणो, वर=वरणे, अण=चहार दिवारी
 ५७. वरण्डो, वर=वरणे, अण्ड=मुखरोग
 ८१. वरत्तं, वर=वरणे, अत्त=रस्सी लगाम
 २२३. वराहो, वर=वरणे, ह=सूअर
 १०१. वरुणो, वर=वरणसम्भत्तिसु, कुन=वरुण
 ७. वलि-वली, वल; वल्ल=सवरणे, इ=सिकुङ्ग
 १२४. वल्लभो, वल, वल्ल=सवरणे, अभ=प्रिय
 ७. वल्लि, वल्ली, वल, वल्ल=सवरणे, इ=लता
 १७१. वल्लूरो, वल; वल्ल=सवरणे, ऊर=सूखा मांस
 ६६. वसति, वस=निवासे, अति=घर, वस्ती
 ७६. वसन्तो, वस=निवासे, अन्त=वसन्त ऋतु
 १२४. वसभो, वस=निवासे, अभ=बैल
 १८२. वसलो, वस=निवासे, अल=शूद्र
 २. वसु, वस=निवासे, उ=धन
 २१३. वस्सं, वस=निवासे, स=वर्ष
 २१३. वंसो, वनः सन=सम्भत्तियं, स=वंश, बांस
 २००. वळवा, वल, वल्ल=सवरणे, अव=अश्वराज
 १४. वाको, वा=गतिबन्धनेसु, क=वलकल
 १६३. वाकरा, कुकः क=आदाने, अरण्=जाल
 ८२. वातो, वीः वा=गमने, त=हवा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१०६. घानं, वी, वा = गमने, न = चान्तिः
 १०. वापि, वप = वीजनिक्षेपे, इण् = जगल
२१८. वायसो, अय = वय यज मय यज मय तन्वत्या, जण् = कोत्रा
 १. वायु, वा = गतिवन्धनेषु, णु = त्वा
 १०. वारि, वा = वरणसम्भन्तिषु, इण् = जग
१५८. वासरो, वी : वा = गमने, सर = दिग्
 १०. वासि, वस = निवासे, इण् = वगुन्ता
२२५. वाळो, वी; वा = गमने, ट् = वगली जात
१४६. विचित्रं, चित = गचेतने, रक् = निर्माण
 २१. विच्छिको, विच्छ = गमने, किक = चित्त
 ४८. विज्झो, वज = वाचने, झक् = एक पर्वण
११६. विटपो, वट वेठने, अय = पालो
 ८३. विस्सं, विद = लामे, तक् = धन
 २०. विदाको, विद = ज्ञाणे, आक = पण्डित
२२०. विहस्सु, विद = ज्ञाणे, वमुक् = पण्डित
 ६६. विद्धं, विध = वेधने, ध = निर्मल
२०५. विद्दा, विद = ज्ञाणे, व्वा = पण्डित
 ५. विधु, विध = वेधने, कु = चांद
१४८. विधुरो, विध = वेधने, उर = रडुआ
 १०३. विपिनं, वप = वीजनिक्षेपे, इन = जगल
 ११७. विप्पो, वप = वीजनिक्षेपे, पक् = ब्राह्मण
१८६. विसालो, विस = प्पवेसने, काल = विशाल
 ३१. विसिखा, सि = सेवाय; विम = प्पवेसने, ख = गली
 ६६. वीणा, वी = तन्तसन्ताने, णक् = वीणा
 ६१. वीथि, वी; वा = गमने, थिक् = गली
 १४३. वीरो, वी, वा = गमने, रक् = वीर
 ६१. वेणि-वेणी, वी = तन्तसन्ताने, णि = जुरा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६३. वेणु, वी, वा = गमने, णु = वाँस
 १०८. वेतनं, वी, वा = गमने, तन = वेतन
 २१७. वेतसो, वेत = सुत्तियोधातु, अस = वेत
 १०९. वेनो, वी; वा = गमने, न = एक नीच जाति
 १३६. वेमो, वी = तन्तसन्ताने, म = करघा
 १३७. वेस्मं, विस = प्पवेसने म = घर
 २२९. वेळु, वी, वमने, लु = वाँस
 ५३. सकटो, सक = सत्तियं, अट = गाडी
 १८२. सकलं, यक = सत्तियं, अल = सारा
 १०१. सकुणो-सकुणी, सक = सत्तिय, कुन = पक्षी
 १०१. सकुनो-सकुनी, सक = सत्तियं, कुन = पक्षी
 ७४. सकुन्तो, सक = सत्तियं, उन्त = पक्षी
 १४. सक्को, सक = सत्तिय, क = इन्द्र
 १६८. सक्खरा, सर = गतिहिंसाचिन्तासु, खर = सक्कर
 ३१. सखो, सह = मरिसने, ख = मित्र
 २. सङ्कु, सङ्क = सङ्कायं, उ = शूल
 ३०. सङ्को, सम = उपसमखेदेसु, ख = शङ्ख
 ३९. सच्चं, सर = गतिहिंसाचिन्तासु, च = सत्य
 ४८. सज्भं, सज्भ = सङ्गे, भक् = रजत
 १८९. सठिलो, सठ = केतवे, इल = शठ
 ५८. सण्डं, सम = उपसमे, ड = समूह
 ७०. सत्तु, सच = समवासे, तु = सत्तु
 ९०. सत्थि, सक = सत्तियं, थि = जाँघ
 ९५. सट्ठी, सप = गमने, दक् = शब्द
 ८५. सपथो, सप = अक्कोसे, अथ = कसम
 ७. सप्पि, सप्प = गमने, इ = घी
 १८२. सम्बलं, सम्ब = मण्डने, अल = पाथेय, राह-खरच

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१५. सम्बुको, सम्ब=मण्डने, क=एक जल-जन्तु
 १३६. सम्मा, सम=उपसमे, म=यथार्थ, ठीक तरह
 १८. सरको, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, अक=प्याला
 ६२. सरणि, सर=गतिहिंसा चिन्तासु, अणि=मार्ग
 १२४. सरभो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, अभ=एक मृग
 ४. सरभू, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, ऊ=एक नदी
 २०१. सरावो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, आव=प्याला
 १६६. सरीरं, सर गतिहिंसाचिन्तासु, कोर=शरीर
 १२४. सलभो, पिलु=प्लु=हुल-गमनत्था, अभ=फतिगा
 २०. सलाका, पिलु=हुल-गमनत्था, आक=वैद्यो के चीर-फाड़ का एक औजार
 १८६. सलिलं, पिलु=हुल-गमनत्था, इल=जल
 ७६. सवन्ती, सू=पसवे, अन्त=नदी
 १४७. ससुरो, सस=गति हिंसापाणनेसु, उर=ममुर
 २१३. सस्सं, सस=गतिहिंसापाणनेसु, स=धान
 २१६. सस्यु, सस=गतिहिंसापाणनेसु, सु=मास
 १५६. संवच्छरो, वस=निवासे, छर=वर्ष
 १५४. संवरी, सम=उपसमे, ववर=रात
 १. सादु, सद=अस्सादने, णु=स्वादु
 १. साधु, इध=सिध=राध=साध-संसिद्धियं, णु=साधु
 १. सानु, वन, सन=सम्भत्तियं, णु=चोरी
 १३६. सामो, सा=तनुकरणावसानेसु, म=काल
 २०. सामाको, सा=तनुकरणावसानेसु, आक=तृणधान्य
 ६२. सारथि, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, रथिण्=सारथि
 २५. सालूकं, सल=गमनत्थोदण्डकोधानु, णुक=उत्पल कन्द
 ११८. सासपो, सास=अनुसिद्धियं, अप=सरसो
 २००. साळवो, सल=गमने, अव=एक खाद्य
 १५. सिक्का, सक=सत्तियं, क=उपकरण विशेष

ण्वादि

सूत्र-संख्या

५६. सिखण्डो, सि =सेवायं, ड =चोरी
 ३१. सिखा, सि =सेवायं; सी =सये, ख =शिखा
 ३३. सिङ्गं, सी =सये, गक् =सींग
 १६४. सिङ्गारो, सिङ्गि =नामधातु, आर =शृङ्गार
 १८६. सिङ्गालो-सिगालो, सर =गतिर्हिंसाचिन्तासु, काल =सियार
 १७. सिङ्धाणिका, सिङ्घ =घायने, आणिक =पोटा
 ८३. सितो, सि =सेवायं, तक् =उजला
 ८४. सितं, मिह =ईसंहसने, तक् =मुस्कराहट
 ८८. सित्थं, सिच =क्खरणे, थक् =मोम
 १९१. शिथिलं, सह =खमायं, किल =पूथिल
 १७८. सिनेरु, सिना =सोचेय्ये, एरु =सुमेरु पर्वत
 ६. सिन्धु, सन्द =पस्सवने, कु =एक नदी
 ११७. सिप्पं, सप =गमने, पक् =शिल्प
 २२. सिप्पिका, सप्प =गमने, किक =सीपी
 १४३. सिरो, सि =सेवायं, रक् =शिर
 १४३. सिरा, सि =बन्धने, रक् =नाड़ी
 २११. सिरीसो, सर =गतिर्हिंसाचिन्तासु, ईस =वृक्ष
 १८१. सिला, सि =सेवायं, लक् =शिला
 १३१. सिलेसुमो, सिलिस =आलिङ्गने, कुम =कफ
 २०७. सिवो, सम =उपसमे, रिब =शिव, सिबं =शान्ति, सिवा
 १५०. सिसिरो, इस, सिस =इच्छायं, किर =एक ऋतु
 ३८. सीघं, सी =सये, घ =शीघ्र
 ८४. सीता, सि =बन्धने, तक् =हल की जोत
 १००. सीधु, सी =सये, धुक् =एक प्रकार की सुरा
 ७७. सीमन्तो, सी =सये, अन्त =माँग (केश की रेखा)
 १४३. सीरो, सी =सये, रक् =फाल
 २१४. सीसं, सी =सये, सक् =शिर, सीसा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२१. सीहो, सम = गति-हिंसा-पाणनेसु, रीह = मिह
 १५. सुक्कं, सुच = सोके, क = उजला
 १३०. सुख्खुमं, सुख = नक्रियायं, कुम = सूक्ष्म
 ६. सुच्चि, सुच = सूचने, कि = पवित्र
 ६. सुद्धु, ठा = गतिनिवर्त्तिय, कु = अच्छा
 ६६. सुणो, सु = सवने, णक् = कुत्ता
 २१६. सुणिसा, सु = सवने, णिसक् = पतोह
 ६५. सुद्धो, सूद = क्लरणे, दक् = दूद्र
 १०३. सुपिन, सुप = सये, इन = तीद, सपना
 ११६. सुप्पं, सुप = सये, पक् = सूफ
 १८३. सुरा, सु = सवने, रक् = देवता
 १४३. सुरा, सु = सवने, रक् = मदिरा
 १४२. सुरियो, सर = गति-हिंसा-चिन्तासु, थ = मृज
 २०४. सूवो, सु = सवने, वव = सुग्गा
 २०४. सुवा, सु = सवने, ववा = सुग्गा
 ६. सुसु, सस = गति-हिंसा-पाणनेसु, कु = शिद्यु
 ११०. सूनु, सू = पसवे, नुक् = पुत्र
 ११६. सूपो, सू = पसवे, पक् = व्यञ्जन
 ८४. सूरतो, रस = कीलायं, तक् = सुख संवास
 १७६. स्रि, सू = पसवे, रिक् = विचक्षण
 ६१. सेणि, सेणी, सि = सेवाय, णि = समान शिल्पियो का समूह (श्रेणि)
 ८२. सेतो, सि = सेवायं, त = उजला
 ७०. सेतु, सि = सेवायं, तु = पुल
 १०६. सेना, सि = बन्धने, न = सेना
 १०६. सेनो, सि = बन्धने, न = वाज
 १८१. सेलो, सि = सेवायं, लक् = पर्वत
 १८१. सेवालो, सि = सेवायं, वाल = सेवाट

ण्वादि

मूत्र-संख्या

६५. सोणो, सु = सवने, ण = कुत्ता, मनुष्य
 ६१. सोणि, सु = पसवे, णि = चूतड़
 ८२. सोतं, सु = सवने, त = कान
 १२६. सोबभं, सिद = सीदने, भ = दरार
 १२६. सोबभो, सिद = सीदने, भ = एक जलाशय
 १३६. सोभो, सु = सवने, भ = चाँद
 ८८. हत्थो, हस = हसने, थक् = हाथ
 १४२. हृदथं, हर = हरणे, थ = हृदय
 २. हनु, हन = हिसायं, उ = ठुड्डी
 १४२. हम्मिदं, हर = हरणे, थ = प्रासाद
 ६७. हरिणो, हर = हरणे, ण = मृग
 ७८. हरिलो, हर = हरणे, इत = हरा रंग
 ६४. हरेणु, हर = हरणे, णु = गन्ध-द्रव्य
 २१३. हंसो, हन = हिसायं, स = हंस
 १५. हाको, हा = चांगे, क = क्रोध
 १०. हारि, हर = हरणे, इण् = मनोज्ञ
 ३६. हिङ्गु, हि = गतियं, गु = हींग
 १३४. हिमं, हि = गतियं, मक् = हिम, पाला
 ५१. हिरञ्जं, हा = चांगे, ञ = धन, सोना
 १०७. हीनो, हि = गतियं, न = हीन
 १४४. हीरं, हि = गतियं, रक् = हीरा
 ७०. हेतु, हि = गतियं, तु = कारण
 १३६. हेमं, हि = गतियं, म = सुवर्ण, सोना
 ७७. हेमन्तो, हि = गतियं, अन्त = हेमन्त-ऋतु
 ७२. होता, हु = हवने, तु = हवन करने वाला
 १३६. होमी, हु = हवने, म = होम
 ५३. मक्कटो मक्क = सुत्तियो धातु (श्रौत धातु), अट = वानर
 १८८. माला, मा = माने, ल = माला

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

अ		पृष्ठ संख्या	पृष्ठ संख्या
	अगच्छि	..	८६
	अगमा	..	८४, ८६
अकरम्हस ते	२२६	अगमि	.. ८६
अकरि	८५, ८६	अगा	.. ८६
अकरित्थ	.. ८५	अगा पव्वता	.. २७५
अकरिम्हा	.. ८५	अगा रुक्खा	.. २७५
अकरिस्सा	.. ६४, १८८	अग्गमक्खायति	.. २२६
अका	.. ८६	अग्गि	.. २६, १०१
अकासि	.. ८६	अग्गिनि	.. १०१
अकासित्थ	.. ८५	अग्गी (०+यो)	.. ६
अकासिम्हा	.. ८५	अग्गी हि	.. ३
अकासिं	.. ८५	अघं	.. २०१
अकाहा	.. ६४, १८८	अङ्गना	.. १६७
अक्कोच्छि	.. ८६	अचेतनो हं पठवियं पपत	१८६
अक्कोसि	.. ८६	अच्चङ्गुलं	.. २८४
अक्खन्ति	.. २२६	अच्चयति	.. २०६
अक्खिकं	.. २५२	अच्चापयति	.. २०६
अक्खिको	.. २५२	अच्चापेति	.. २०६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अच्चेति ..	२०६	अञ्जिस्सं ..	५८
अच्छरियं ! अन्धो नाम पव्वतं		अञ्जिस्सा ..	५८
आरोहिस्सति ..	६४	अट्टन्न ..	१६६
अच्छानि जलानि पेय्यानि	१५१	अट्टमो ..	१७५
अच्छिन्दिस्सा ..	६४	अट्टादस ..	१६८
अच्छिन्दिंसु ..	६४	अट्टादसन्न ..	१६६
अच्छेच्छा ..	६४, १८८	अट्टायिस्सा ..	१८८
अच्छिन्दिस्सा ..	१८८	अट्ठी (नपुः० + यो)	५, ६
अजानि ..	६५	अट्ठीनि (० + यो)	४, ६
अजिनम्ह मिग हञ्जाति	३२	अट्ठतियो ..	१७६
अजेळकं ..	२७६	अट्ठुट्ठो ..	१७६
अजेळका ..	२७६	अट्ठरत्त ..	२८५
अज्ज ..	२१८	अट्ठिच्छ ..	८६
अज्जतनी वुत्ति ..	१६२	अट्ठमि ..	८६
अज्जतनो ..	२६१	अणिमा ..	२०६
अज्जन्हो ..	२७६	अण्णवो ..	१६७
अज्जवं ..	२०६, २०५	अतिमञ्चो ..	२७५
अज्जत्तं ..	२२३, २२४	अतिरत्तो ..	२८५
अज्जभापयति माणवकं वेदं	२१२	अतिलाभो ..	२७५
अज्जिणमुत्तो ..	२२३, २२४	अतिवामोह ..	२७०
अञ्ज कोट्टापेति ..	२१२	अतिसब्बा ..	२०
अञ्जं भज्जापेति ..	२१२	अतिसभारद्वाजं ..	२७६
अञ्जं सन्थरापेति ..	२१२	अतिहत्थयति ..	२३६, २३७
अञ्जदा ..	२१७	अतीतं नगर (वि०)	१०; १५८
अञ्जमञ्जस्स भोजका	२७६	अतीतानि नगरानि	
अञ्जादिकलो ..	२७७	(वि०) ..	१०, १५८
अञ्जादिसो ..	२७७	अतीता भूपा ..	१५८
अञ्जादो ..	२७७	अतीतो भूपो (वि०)	१०, १५८

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अतो ..	२१५	अधम्मिको ..	२५०
अत्तदत्थं ..	२२५	अधरुत्तरं ..	२७६
अत्तना ..	७६	अधिकरणं ..	२०८
अत्तनियं ..	२५८	अधिकरित्वा ..	१५५
अत्तनेसु ..	७५	अधिकिच्च ..	१५५
अत्तनेहि ..	७५	अधिच्च ..	१५५
अत्तनो ..	७६	अधित्थि ..	२६७
अत्तनोपदं ..	२३६	अधिपञ्चालेसु ब्रह्मदत्तो	१३६
अत्तस्स ..	७६	अधिपतियं ..	२०५
अत्तेसु ..	७५	अधिपतेय्यं ..	२०५
अत्तेहि ..	७५	अधियित्वा ..	१५५
अत्थ ..	४७, १३१	अधुना ..	२१८
अत्थवा ..	१६५	अधोगङ्गं ..	२६६
अत्थि ..	४७	अनक्खातं ..	२७४
अत्थिको ..	१६५	अनादियित्वा ..	११८
अत्थिखीरा ब्राह्मणी	२६६	अनु उपालित्थेरं विनयधरा	१३६
अत्थु ..	१३१	अनुगवं सकटं ..	२८५
अत्र ..	२१६	अनुभविस्सति ..	१८१
अदा ..	८६	अनुभूयिस्सति ..	१८१
अदासि ..	८६	अनुमोदित्वा ..	१५४
अदुं ..	६१	अनुमोदियान ..	१५४
अदेन्ति ..	११७	अनुयन्ति ..	२७०
अद्दस (भूत)	११८	अनुरथं ..	२६८
अद्दं ..	११८	अनुरूपं ..	२६८
अद्दा ..	११८	अनेकत्तं ..	२०३
अद्दुना ..	७८	अनेन ..	५६
अद्दुनो ..	७८	अनोकासं ..	२७४
		अन्ततो ..	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अन्तरा च राजगहं अन्तरा		अपचुत्थ	८५
च नाळन्दं ..	३०, १३५	अपचुम्हा	८५
अन्तिमो ..	२६२	अपचू	८५, १८५
अन्तेवासी ..	२३६	अपचो	८५, १८५
अन्तोपासादं ..	२६६	अपपन्वतं वस्सिदेवो, अपपट्थता	२६८
अन्वद्धमासं .	२६८	अप पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो	१३८
अन्वभविस्सा ..	१८१	अपरज्जु	२१८
अन्वभूयिस्सा .	१८१	अपरदक्खिणं	२१६
अपगतकालको .	२६६	अपरन्हो	२७६
अपच .	८५, १८५	अपरुत्तर	२८६
अपच्च .	८५	अपादान	२७८
अपचंभु .	८५	अपुनगेय्या गाथाः	२७८
अपच्चा .	८५, ८७, १८७	अप्फुट	२२६
	१८५,	अत्राद्वाणां	२७८
अपच्चि	१८५, ८५	अभविस्सा (हेतुहेतुमद्भूत)	६६, १८८
अपच्चित्थ	६४, ८५, १८५	अभिज्झालु ..	१६६
अपच्चित्थो .	८५, १८५	अभितो .	२१६
अपच्चिम्ह .	८५, १८५	अभित्थुतं .	२७५
अपच्चिम्हा ..	६४, ८५	अभिनन्दुन्ति ..	२२७
अपच्चिस्स ..	८५, १८५	अभिन्दिस्सा ..	६४
अपच्चिस्सम्ह ..	८५, १८५	अभिभवित्वा ..	१५४
अपच्चिस्सम्हा ..	८५, १८५	अभिभायतनं ..	२२२
अपच्चिस्संसु .	६४	अभिभू ..	२०१
अपच्चिस्सा	६४, ८४, ८५, १८५	अभिभूय ..	१५४
अपच्चिस्से ..	८५	अभिरुच्छि ..	८६
अपच्चिसु ..	८५	अभिरुहि ..	८६
अपच्ची ..	८४, ८५, १८५	अभिवादयते गुरुं देवदत्तं	
अपचु ..	८५, १८५	देवदत्तेन वा ..	२१३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अभिसेको ..	२७५	अम्हादी ..	२७७
अभिहृदु ..	१५४	अम्हि ..	२४,४८
अभिहरित्वा ..	१५४	अम्हे ..	५६
अभुवो ..	८५	अम्हेसु ..	५४,५६
अभेच्छा ..	६४	अम्हेहि हसितं ..	१४३,१८०
अभेच्छा ..	१८८	अयं इत्थी ..	५६
अभोक्त्वा ..	६५,१८८	अयं पुरिसो ..	५६
अमच्चो ..	२६१	अपुत्तो ..	२७०
अमुकं ..	६०	अरणं ..	२०२
अमुका ..	६०	अरञ्जिको भिक्वु ..	१६२
अमुकानि ..	६०	अरह ..	६४
अमुको ..	६०	अरहा ..	६४
अमुञ्चिस्सा ..	६५,१८८	अरियवृत्तिने ..	१०२
अमुयं (० + सिंम) ..	१४	अरियवृत्तिम्हि ..	१०२
अमुया (० + सिंम) ..	१४	अरुच्छा ..	६४,१८८
अमुया ..	२२,२५	अरोदिस्सा ..	६४,१८८
अमुस्स ..	६०	अलच्छा ..	६४,१८८
अमुस्सं ..	२२	अलत्थ ..	८७
अमुस्सा ..	२५	अलत्थं ..	८७
अमू पुरिसा आगच्छन्ति ..	६०	अलन्दानि ..	२२७
अमू पुरिसे पस्स ..	६०	अलभि ..	८७
अमूलामूलं गत्त्वा ..	२७४	अलभिस्सा ..	६४,१८८
अमोक्त्वा ..	६५,१८८	अलभि ..	८७
अम्मा ..	१०१	अलंकरिय ..	२७६
अम्ह ..	४७,४८	अलं सुतेन ..	१५४
अम्हं ..	५६	अलं सुत्वा ..	१५४
अम्हा ..	२४	अलं सुत्वान ..	१५४
अम्हाकं ..	५६	अलं सोतून ..	१५४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अलाहंतं	२०२	असुकं	६०
अल्हकं	१३५	असुका	६०
अवकोकिलं	२७५	असुकानि	६०
अवक्खा	६५, १८८	असुको	६०
अवचिस्सा	६५, १८८	असुणि	६५, ८७
अवच्छा	६४, १८८	असुणिस्सा	६५, ८७, १८८
अवमयूरं	२७५	असु पुरिसो	६०
अवसिस्सा	६४, १८८	अस्म	४७, ४८, १३१
अवस्सकारी	१६३	अस्मा	२४, ५४
अवसिरो	२२६	अस्माकं = अम्हाक	५६
अविज्जमानपुत्तो	२७०	अस्मामु	५६
अवोच	८६	अस्मि	४७, १३१
अन्नवि	१५१	अस्मि	२४
असकच्च	१५५	अस्स	२४, १२६
असक्करित्वा	१५५	अस्सको	२४६
असक्खि	८७	अस्सतरो	२५६
असक्खिसु	८७	अस्सते	२२४
असनं	२०२	अस्सत्थकपित्थनं	२७६
असनि गता	२६८	अस्सत्थकपित्थना	२७६
असन्तेत्थ	२२२	अस्सत्थ	१२६
असक्कच्च	२७६	अस्सं	२४, १२६
असि	४७, १३१	अस्सा	२४
असिचम्मं	२७८	अस्साम	१२६
असिच्छिन्नो	२७२	अस्साय	२४
असि छिन्दति	१७६	अस्सु	१२६
असिसत्तितोमरं	२७८	अस्सुं	६, ४७, १२६
असिसिसति	२३१, २३३	अस्सोसा	८७
असु इत्थी	६०	अस्सोसि	६५, ८७

	पृष्ठ संख्या	पृष्ठ संख्या	
अस्तोसुं ..	८६	आचरिये आगते सिस्सा उट्टहन्ति	३२
अस्तोस्सा ..	६५, १८८	आचरियेन सदिसो सिस्सो	३०
अंसिको ..	२५२	आचारो ..	२००
अहउं ..	८७	आजञ्जं ..	२०६
अहरा ..	८६	आटयति ..	२०६
अहरि ..	८६	आटापयति ..	२०६
अहं ..	५४	आटापेति ..	२०६
अहं हसामि ..	१७८	आटेति ..	२०६
अहा ..	८६	आतुमना ..	७६
अहायिस्सा ..	६४	आतुमनेसु ..	७५
अहासि ..	८६	आतुमनेहि ..	७५
अहाहा ..	६४, १८८	आतुमनो ..	७६
अहि ..	४७, १३१	आतुमस्स ..	७६
अहिनकुल ..	२७८	आतुमेसु ..	७५
अहेसु ..	८७	आतुमेहि ..	७५
अहोरत्तं ..	२८५	आदयति ..	२०६
अहोसि ..	८५	आदयति देवदत्तेन ..	२१३
		आदापयति ..	२०६
		आदापेति ..	२०६
		आदि ..	२०१, २७८
आ		आदिच्चं ..	२५५
आकासेव ..	२२३	आदिच्चो ..	२५५
आकासे सकुणा विचरन्ति	२३	आदितो ..	२१६
आकोटयन्तो सो नेति सिद्धि-		आदिस्मि ..	१५
राजस्स पेक्खतो ..	३२	आदेति ..	२०६
आचरियं अनुगच्छति सिस्सो	१३६	आदो (०+स्मि)	१५
आचरियस्स पुत्तो ..	३१	आधिपच्चं ..	२०४
आचरियस्स सदिसो सिस्सो	३०	आपदा ..	२०२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
आपाटलिपुत्त वस्सिदेवो,		आग्नि	८७
आपाटलिपत्ता .	२६८	आसित्थ	८७
आपूपिक ..	२६०	आसि	८७
आपोगतं ..	२७०	आसिम्हा	८७
आयतिगवं ..	२६६	आसीतिको वयो .	२४६
आयसं ..	२५६	आमु .	८७
आयसिको ..	२५२	आमेति ..	२११
आयस्मा ..	१६४	आह .	४६, १८७
आयुस्सं ..	२६०	आहच्च .	१५५
आयू (० + यो) ..	५, ६	आहनित्वा .	१५५
आयूनि ..	४, ६	आहसु	१८८
आरञ्जको ..	२६२	आहु .	४६, १८७
आरञ्जिको ..	२६२	—	
आरामिकिनी ..	२४१		
आरिस्सं ..	२०६	अ	
आरुल्लुहवानरो ..	२६६		
आलसियं ..	२०५	इक्खयति .	२०६
आलस्सं ..	२०४	इक्खापयति ..	२०६
आलस्यं ..	२०४	इक्खापेति ..	२०६
आलाहनं ..	२०२	इक्खेति ..	२०६
आवुसो सुमन सामणे	२६	इच्चस्स .	२२३, २२४
आसं ..	२४	इच्छा .	२०२
आसभं ..	२०६	इट्ठं ..	१४४
आसयति ..	२१७	इट्ठि ..	२०२
आसयति भाणवकं ओदनं	२१२	इतरिस्सं ..	५८
आसापयति ..	२११	इतरिस्सा ..	५८
आसापेति ..	२११	इतरीतरस्स भोजका	२७२
आसाल्ल्हो ..	२४५	इतो ..	२१५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
इतो नायति ..	२२५	इमं भिक्खुं विनयमज्झापय,	
इत्तर ..	१६३	अथो एनं धम्ममज्झापय	५७
इत्थं ..	२१८	इमाय ..	२५
इत्थि ..	७२	इमिना ..	५६
इत्थिपुमं ..	२७६	इमिस्सं ..	५८
इत्थियं, (० + अं) ..	१६	इमिस्सा ..	२५, ५८
इत्थिया (० + ना) ..	१३	इमिस्साय ..	२४, २५, ५८
इत्थिया ..	१६	इमे भिक्खू विनयमज्झापय,	
इत्थियो ..	१३, १६	अथो एने धम्ममज्झापय	५७
इत्थि ..	१६	इमेसं ..	५६
इत्थी ..	७०, ७२	इमेसु ..	५६
इत्थी (० + यो) ..	१३	इमेहि ..	५६
इत्थी विजिता रज्जा ..	१४३	इमेहि नाम कल्याणधम्मा	
इत्वेव ..	२२६	पटिजानिस्सन्ति	६३
इदप्पच्चया ..	२७३	इसि ..	१४, १०१
इदं ..	५६	इसे ..	१४, १०१
इदं तेसं भुत्तं ..	१४३	इस्सुकी ..	२६४
इदं तेसं यातं (भाव)	१४३	इह ..	२१६
इदमट्ठो ..	२७३	इह ते याता (कर्तृ) ..	१४३
इदप्पच्चया ..	२७३	इह तेहि भुत्तं ..	१४३
इदम्पि ..	२२७	इह तेहि यातं (कर्म)	१४३
इदानि ..	२१८	इह भवं भुञ्जेय्य ..	१२६
इन्दसभं ..	२७३		
इध ..	२१६		
इधमाहु ..	२२५		
इमस्मा ..	२४		
इमस्मि ..	२४	ईदिक्खो ..	२७७
इमस्स ..	२४	ईदिसो ..	२७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
ईदी	२७७	उपज्जि	१२०
ईहा	२०२	उपट्टानीय सिस्सो	१५१
		उपट्टितो गुरुं भव (कर्म)	१४३
		उपट्टितो गुरुं भोता (कर्म)	१४३
		उपरिसिखरं	२६६
		उपवसा	२६६
उट्टुहति	११८	उपवासिको	२६३
उपहभोजी	१६३	उपवीणायति	२३७
उत्त	१४४	उपासना	२०२
उत्तिट्टति	११८	उप्पन्नवा	१४६
उत्थ	१४४	उप्पन्नो	१४६
उदककुम्भो	२७४	उभयं	२४८
उदकविन्दु	२७४	उभिन्नं	१६७
उदकपत्तो	२७४	उभो	७३
उदकुम्भो	२७३, २७४	उभोसु	१६७
उदधि	२७८	उभोहि	१६७
उदपत्तो	२७४	उरगो	२७८
उदपान	२७८	उरसिकरिय	२७६
उदविन्दु	२७४	उसीरवीरणं	२७६
उदरस्स कारणा	१३८	उसीरवीरणा	२७६
उदरस्स हेत्तु	१३८	ऊसरौ	१६५
उदरियो	२६२		
उद्धगङ्गं	२६६		
उप उपालित्थेरं विनयधरा	१३६		
उपकुम्भं	२६७, २६८		
उपकुम्भकतं	२६७	एककदुकां	२
उपकुम्भं निघेहि	२६७	एकको	२४८
उप खारियं दोणो	१३८	एकक्खत्तुं	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
एकच्चानि	.. १०१	एणेय्यगोमहिसं	.. २७६
एकच्चे	.. १०१	एणेय्यगोमहिसा	.. २७६
एकज्झं करोति	. २१६	एणेय्यवराहं	.. २७६
एकतिसं सतं	. १७३	एणेय्यवाराहा	.. २८०
एकदा	.. २१७	एतरहि	.. २१८
एकधा	.. २१८	एतं भिक्खुं विनयमज्झापय,	
एकधा करोति	२१६	अथो एनं धम्ममज्झापय	५७
एक फलं	. १५६	एतादिक्खो	.. २७२
एकमिदाहं	. २२८	एतादिसो	.. २७२
एकरत्तं	२८५	एतादी	.. २७२
एक रत्ति	.. २८५	एताय	.. २५
एकवीसतिमो	.. १७६	एतिस्सं	.. ५८
एकादस	.. १६८	एतिस्सा	.. २५, ५८
एकादसन्नं	. १६६	एतिस्साय	.. २५, ५८
एकादसमो	.. १७५	एते भिक्खू विनयमज्झापय,	
एकादसं सतं	.. १७३	अथो एते धम्ममज्झापय	५७
एकादसो	.. १७५	एत्तकं	.. २४६
एकाधिकं सतं	.. १७३	एत्तावन्तं	.. २४७
एका बालिका	.. १५६	एत्थ	.. २१६
एकारस	.. १६८	एदिक्खो	.. २७८
एकिस्सं	.. ५८	एदिसो	.. २७८
एकिस्सा	.. ५८	एदी	.. २७८
एकुत्तर संयुत्तकं	.. २७६	एवरूपमकासि	.. ८४
एकेकसो	.. २२०	एवं करेय्यासि	.. १२६
एकेकस्स	.. २७१	एवाहं	.. २२७
एको	.. १३५	एस अत्थो	.. २२६
एको बालको	.. १५६	एस धम्मो	.. २२६
एणेय्यं	.. २५६	एसं	.. ५६

	पृष्ठ गण्य्या		पृष्ठ गण्य्या
एसा	२४	क	
एसितव्वं	१५१		
एमु	५६	कञ्चानो	२५४
एमो	२४	कञ्चायन व्याकरण	२५८
एस्सति	६५	कञ्चायनो	२५४
एहि	५६	कञ्जाय हसितं	१४३
एहिति	६५	कञ्जारूपं	२७३
एहिपस्सिको	२५०	कञ्जायो	२६
		कट करोतु भवं	१३१
		कट्ठं	१४५
		कणिट्ठो	२४६
		कणियो	२४६
		कण्हसप्पो	२७४
		कण्हमुक्क	२७६
		कण्हा गावीन, गावीसु वा	
		सम्पन्नखीरतमा	३१
		कण्हाणी	२५४
		कण्हायनी	२५४
		“कतञ्जुम्हि च पोसम्हि सीलवन्ते	
		अरियवुत्तिने”	१०२
		कत्तमो	१६२
		कत्तरो कत्तमो वा देवदत्तो भवतं	२४८
		कतं	१४४
		कतं ते	५५
		कतं नो	५५
		कतं मे	५५
		कतं वो	५५
		कति	१६१, २४७, २७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
कतिन्न	१७५	कन्दापयति	२०६
कनिमो	१७५	कन्दापेति	२०६
कत्त	१४	कन्देति	२०६
कत्तब्धं	१५२	कण्पासिकं	२५६
कत्तद्भो	१५०	कम्पयति	२१०
कत्तरो	१६१	कम्पापेति	२१०
कर्त्ता	६५	कदुण्हं	२७५
कर्त्ताये गच्छति	१५२	कम्पेति	२१०
कर्त्तारनिद्देशो	२७३	कम्मजं	२७३
कर्त्तिकेय्यो	२५५	कम्मञ्जं	२६३
कर्त्तुं	१५२	कम्मना	१००
कर्त्तु अलसो	१५३	कम्मनि	१००
कर्त्तुनिद्देशो	२७४	कम्मनियं	२६३
कर्त्तून	१५२	कम्मुना	७८
कर्त्ते	१४	कम्मुनो	७८
कर्त्थ	२१६	कम्मे	१००
कर्त्थं	२१७, २१८	कम्मेन	१००
कर्त्थं हि नाम सो भिक्खवे !		कयविककयिको	२५२
मोघ पुरिसो सब्बमत्ति-		कयिरन्तो	१२४
कामयं कुट्टिकं करिस्सति	६३	कयिरभावो	१२४
कथाहं	२२७	कयिरा	१३०
कथिको	२६३	कयिराथ	१३०
कदन्नं	२७५	कयिराम	१३०
कदसनं	२७५	कयिरामि	१३०
कदा	२१८	कयिरासि	१३०
कनिट्ठो	२४६	कयिहं	१३०
कनियो	२४६	कयिरति	१२४
कन्दयति	२०६	कयिरते	१२४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
करणीयो .	१५०	कातापयति ..	२११
करन्तो ..	२०२	कानापेति .	२११
करभोरु ..	२४२	कानियानो ..	२५४
करह ..	२१८	कानु ..	१५२
कराणो ..	६२, १२४	कानु गच्छति ..	१५२
करिस्सति ..	६४	कातून .	१५२
करोति ..	१२४	कातेति ..	२११
करोन्ति ..	२०२	कानि ..	२२
करोन्तो ..	१२४	कापिलवत्थवो ..	२६१
कलहायति ..	२३६	कापुरिसो ..	२७५
कव्यं ..	२५८	कापोतं ..	२५६
कसिमा ..	२०६	कायसम्फस्सो ..	२७३
कस्मा हेतुस्मा ..	१३६	कायिक ..	२५१
कस्मि ..	२३	कायो ..	२२
कस्मि हेतुस्मि ..	१३६	कारण्डवच्चक्कवाका ..	२७६
कस्स ..	२३	कारण्डवच्चक्कवाक ..	२७६
कस्स हेतुस्स ..	१३६	कारण ..	१६२
कं हेतुं ..	१३६	कारा ..	२०२
का ..	२२	कारिका ..	२३६
काकन्दी ..	२५१	कारेत्वा ..	२७४
काकं ..	२६०	कालवण्णं ..	२७५
काकोलूकं ..	२७८	कालुसिय ..	२०५
कणिट्ठो ..	२४८	कासकुसा ..	२७६
कणियो ..	२४८	कासकुसं ..	२७६
कातव्वं ..	१५१, १५२	कासावं ..	२५१
कातयति ..	२११	कासिकोसलं ..	२८०
कातवे ..	१५३	कासिकोसला ..	२८०
कातवे गच्छति ..	१५२	कासिरञ्जा ..	७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
कासिरञ्जे	.. ७७	कि निमित्तं	.. १३६
कासिरञ्जो	.. ७७	कि पयोजनं	.. १३६
कासिराजस्मा	.. ७७	कीटपतङ्गं	.. २७६
कासिराजस्स	.. ७७	कीदिक्वो	.. २७७
कासिराजे	.. ७७	कीदिसो	.. २७७
कासिराजेन	.. ७७	कीदी	.. २७७
काहति	.. ६४	कीव	.. २४७, २७७
किच्च	.. १५१, १५२	कीवतकं	.. २४७, २७७
किच्चयं	.. २६४	कीवतका	.. १६१
किच्चानि कुब्बस्स करेय्य किच्चं	.. ८२	कीवतकानि	.. १६१
किट्ठं	.. १४५	कीवतकायो	.. १६१
किणाति	.. १२२	कुक्कुरसूकरं	.. २७६
किण्णवा	.. १४६	कुक्कुरसूकरा	.. २७६
किण्णो	.. १४६	कुसलाकुसलं	.. २७६
कित्तकं	.. २४७, २७७	कुञ्जति	.. १२०
कित्तकानि	.. १६१	कुटीयति पासादे	.. २३६
कित्तकायो	.. १६१	कुतो	.. २१५
कित्तिमो	.. १६८	कुत्थकिपिल्लिकं	.. २७६
किन्ति	.. २२७	कुत्र	.. २१६
किन्दानि	.. २२७	कुदा	.. २१८
किन्नु खलु भो व्याकरणं अंधीयस्सु	.. १३१	कुहालिको	.. २५२
किमायस्सा विनयम्परियापुणेय्य,		कुपुरिसो	.. २७५
उदाहु धम्मं	.. १२८	कुब्बति	.. १२४
किरिया	.. २४२	कुब्बते	.. १२४
किस्स	.. २३	कुब्बन्तो	.. १२४
किस्सि	.. २३	कुब्बमानो	.. १२४
किं	.. २३	कुब्राह्मणो	.. २७५
कि कारणं	.. १३६	कुम्म	.. १२४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
कुमारियो बालिकायो	१५६	कांधमा	१६६
कुमारी बालिका ..	१५६	कांधमा	१००
कुमारभरियो .	२७१	कोवापेति	२११
कुमारी .	२८०	कांधान्	१६६
कुम्भकारो ..	१६३, २७८	कांधेति	२११
कुम्भे ओदनं पचति .	३२	कांधेत्	१००
कुम्भि	१२४	कापतो	२०२
कुरयो .	१००	काण्डो	२५७
कुरते ..	१२४	काण्डेयको	२६२
कुरुमानो	१२४, २०२	कासज्ज	२०६
कुरुपचाला	२८०	कास कृटिना नदी	२६
कुरुपचाल	२८०	कासि गच्छति	२६
कुमलयति	२६६, २६७	कासि पट्टपती	२६
कुह .	२१७	कासम्भा	२५१
कुहि ..	२१७	कासग्यो	२६१
कुहिचन ..	२१७	कासलो	२५७
कुहिञ्च ..	२१७	कासिनारको	२६२
के ..	२२	कासितव्वं	१५१
केतति ..	११६	कासुम्भ	२५१
केन कारणेन ..	१३६	कासिय्यं	२५६
केन निमित्तेन ..	१३६	को हेतु	१३६
केन पयोजनेन ..	१३६	क्रिया	२४२
केन हेतुना .	१३६	क्व	२१६
केसवो ..	१६७		
केसाकेसी ..	२८५		
कोण्डञ्जो ..	२५५		
कोधतो ..	२०२	खतं	१४४
कोधयति ..	२११	खत्तवन्धुनी	२४१

—

ख

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
खत्तियसभा	२७३	ग	
खत्तियो	२५६		
खत्यो	२५६	गग्यो	२५६
खदिरपलासा	२७६	गङ्गायमुनं	२७६
खदिरपलासं	२७६	गङ्गेय्यो	२६२
खन्ती परमं	२२५	गच्छ	१३१
खन्धकविभङ्गं	२७६	गच्छना	८१
खलु सुतेन	१५४	गच्छति	८१, ११६
खलु सुत्वा	१५४	गच्छती	२४०
खलु सुत्वान	१५४	गच्छतो	८१
खलु सोतून	१५४	गच्छन्ते	८१
खलेग्रधं	२६६	गच्छन्ता	८०
खार्णतिको	२५२	गच्छन्ति	६६, ११६
खादयति देवदत्तेन	२१३	गच्छन्ती	२४०
खादरो	२४५	गच्छन्ते	६६, ११६
खादरिको	२५०	गच्छन्तो	८०, ६२, ६३, ११६
खारसतिका वीहि	२४६	गच्छमानो	६२, ११६
खारी	१३५	गच्छरे	६६, ११६
खिन्नवा	१४६	गच्छं	६३
खिन्नो	१४६	गच्छाहि	१३१
खीणवा	१४६	गच्छिस्सं	६४
खीणो	१४६	गच्छेय्यं वाहं उपोमथ, न वा	
खीरपायी	१६३	गच्छेय्यं	१२८
खेपयति	२११	गजगवजं	२७६
खेपापयति	२११	गजगवजा	२७६
खेपापेति	२११	गजता	२६०
खेपेति	२११	गणहन्तो	११६
		गणहाति	११६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
गण्हित्त्वं ..	११९	गवेमु .	७४
गण्हित्तुं ..	११९	गहन—गहणं ..	२२५
गतं .	१४४	गहपतानी ..	२४२
गता बालिका ..	१६०	गहृत्वा ..	११७
गतिमा (गतिमन्तु)	१९४	गामगतो .	२७२
गतो बालको ..	१६०	गामतो ..	२१५
गन्तव्वं ..	१५१	गामनिगतो .	२७८
गन्तुकामो ..	२२७	गामस्मा गच्छति .	३१
गन्धवा ..	१९४	गामस्स मनुस्सा ..	३१
गन्धिको ..	२४५	गाम त्व भणे गच्छेय्यासि	१२९
गन्धी .	१९४	गाम परितो सब्वतो पव्वतो	१३५
गव्यमाहिसं	२८०	गाम बालको गतो ..	१८०
गव्यमाहिंसा .	२८०	गाम बालिका गता .	१८०
गव्यं .	२५६, २५८	गामियो ..	२६२
गमनं ..	२०२	गामे गामे पानीयं ..	२७१
गमयति माणवकं गाम	२१२	गामे पटो अम्हाकं, अथो नगरे	
गमिस्सरे .	११६	कम्बलो नो—अथो नगरे	
गम्मं ..	१५१	कम्बलो अम्हाकं	५५
गवम्पति ..	२३६	गामो गामो रमणीयो	२७१
गवस्मा .	७३	गामो तव च परिग्गहो	५५
गवस्स ..	७३	गामो तुम्हं परिग्गहो अथ	
गवं .	७३, ७४	जनपदो वो परिग्गहो	५५
गवा ..	७३	गामो तुम्हे-अम्हे उद्विस्सागतो	५५
गवास्सं ..	२२४	गामो वो—नो आलोचेति	५५
गवी ..	७३	गारवं ..	२०५
गवुं ..	७३	गावस्मा ..	७३
गवे ..	७३	गावस्स ..	७३
गवेन ..	७३	गाव ..	७३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
गावा	७३	गूळ्हो	१४६
गावे	७३	गो (० +सि)	१३
गावेन	७३	गोतमी	२४०
गावेसु	७४	गोनं	७४
गावो	७३	गोपुच्छिको	२५२
गीतवादितं	२७८	गोमयं	२५६
गीतं	१४५	गोमहिसं	२७६
गुणवता	८१	गोमहिसा	२७६
गुणवति	८१	गोमा (गोमन्तु)	१६४
गुणवती	२४०	गोळिकं	२५२
गुणवतो	८१	गोसु	७४
गुणवन्तपतिट्ठो	२७०	-०-	
गुणवन्तं	८१		
गुणवन्तं कुलं	८२	घ	
गुणवन्ता	८०		
गुणवन्ती	२४०	घच्चो	१५२
गुणवन्ते	८०	घतकं	२४६
गुणवन्तेन	८०	घतं तेलस्मा पति ददाति	१३८
गुणवन्तो	८०	घम्मति	११६
गुणवं कुलं	८२	घम्मन्तो	११६
गुणवा	८०	घरणी	२४१
गुणिट्ठो	२४६	घातयति	२१०, २११
गुणियो	२४६	घातिकं	२५२
गुन्न	७४	घातेति	२१०, २११
गुहं	२२४	घेप्पति	११६
गुळ्हो	१४६	घेप्पन्तो	११६
गुळोदनो	२७२	घेप्पमानो	११६
गुह्यं	१५१, १५२	-०-	

	पृष्ठ मख्या	पृष्ठ मख्या
च		चन्दिमसुरिया . २८०
		चपलता . २०३
चक्खुमा अन्धिता होन्ति	८२	चम्पेय्यको . २६२
चक्खुसोतं . .	२७८	चम्मना . १००
चक्खुस्सं .	२६०	चम्मनि . १००
चक्खु उदपादि . .	२२६	चम्मे . . १००
चक्खुं सुञ्जं अत्तेन वा अत्तनि-		चम्मेन . १००
येन वा . .	२०५	चयनीय . १५१
चङ्कमति . .	१८६	चयो . २२०
चतस्सन्नं . .	१६७	चलन . २०२
चतस्सो . .	१६७	चागो . २००
चतस्सो वालिकायां .	१५९	चाजयति . २१०
चत्तारि .	१६८	चाजापयति . २१०
चत्तारि फलानि . .	१५९	चाजापेति . २१०
चत्तारीसं सतं .	१७३	चाजेति . २१०
चत्तारो .	१६७, २२२	चातुम्महाराजिका . २६३
चत्तालीसो . .	१७५	चापल्लं . २०४
चतुक्कपञ्चक्र . .	२७८	चापल्यं . . २०४
चतुत्थ . .	१७५	चापिको . २४५
चतुद्दस . .	१६८	चिकमिसति . . २३३
चतुद्दसन्नं .	१६६	चिकिच्छति . . १८७
चतुप्पथं . .	२७६	चिच्छेद . . २३३
चतुरन्नं . .	१६६	चिण्णवा . . १४७
चतुरस्सो . .	२८५	चिण्णो . . १४७
चतुरो . .	१६८	चित्तो . . १४४
चतुरो बालका .	१५९	चित्तग . . २७०
चन्दत्तं . .	२०३	चित्तजं . . २७२
चन्दनगन्धो . .	२७३	चित्तो . . २४५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
चीयते	१८१	छाहं	२७५
चुद्स	१६८	छिन्नवा	१४६
चेतब्बं	१५१	छेकपापकं	२७६
चेतिविसं	२८०	छेच्छति	६४
चेतिविसा	२८०	छेत्तु	१६१
चेय्यं	१५१	छेदको	१६१
चोद्स	१६८	छेदयति	२११
चोरतो	२१५	छेदापयति	२११
चोरस्मा भायति	३१	छेदापेति	२११
चोरस्मा रक्खति	३१	छेदेति	२११
चोरयति	१२५		—
चोरेति	१२५		—
		ज	
		जञ्जा	१३०
		जटिलो	१६६
छक्कं	२४६	जटियो	१६८
छट्टमो	१७५	जनता	२६०
छट्ठो	१७५	जनकस्स तुल्यो पुत्तो	३०
छन्नवा	१४६	जनकेन तुल्यो पुत्तो	३०
छन्नं	१६६, १६६	जनपदो	२६१
छन्नो	१४६	जनेसुतो	२३६
छळ्ळगं	२२८	जन्तवो	१०२
छळ्ळायतनं	२२८	जन्तुयो (०+यो)	१३
छविय सलोहितं	२७८	जन्तुयो	१०२
छसु	१६६	जन्तुनो	१०२
छहि	१६६	जन्तू (०+यो)	१३
छान्दसो	२४६	जयति	११५, ११६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
जयम्पति	२८०	जायते गिनि	२२६
जयम्पती	२८०	जालिको	२५२
जयो	२००	जिगिमति	२३२, २३३
जरा	११७	जिगुच्छति	१८६, १८७
जरामरण	२७८	जिगुच्छा	२०२
जलं जलस्मा विना रुक्खो		जिघच्छति	२३२
सुक्खति	१३७	जिघंसति	२३३
जलेन विना रुक्खो सुक्खति	१३७	जिण्णवा	१४७
जहाति	१८६, २३३	जिण्णो	१४७
जहिस्सति	६६	जितिन्द्रियो	२६६
जागरिया	२०२	जिहसिस्सति	२३३
जाणुतग्घ	२४७	जीमनो	२०८
जाणुमत्त	२४७	जीर्याति	११७
जातं	१४५	जीयन्तो	११७
जातरूपरजतं	२७६	जीयमानो	११७
जातरूपरजता	२७६	जीरण	११७, १५२
जातिभूमं	२८४	जीरति	११७, १५२
जातुमयं	२६०	जीरन्तो	११७
जातुस्सं	२६०	जीरमानो	११७
जातो	१२१	जीरापेति	११७, १५२
जानन्तो	१२१	जीरितब्बं	१५२
जानाति	१२१, १२२	जीवको	१६२
जानि	२०३	जीवतु	१३१
जानितु	१२१	जीवितं तिणाय अपि न मञ्जति	३१
जानिया	१३०	जे अय्ये !	२६
जानिस्सति	६५	जेट्टमूलो	२४५
जानेय्य	१३०	जेट्ठो	२४८, २४९
जायती सोको	२२५	जेतु	१६१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
जेनदत्तिको .	२५७	तञ्चरति ..	२२७
जेय्यो ..	२४८, २४९	तञ्जते ..	१८१
जोतति .	११६	तञ्जवेव .	२२८
जस्सति .	६५	तञ्जिह्व .	२२८
		तण्ठानं .	२२७
—○—		तत .	१४४
		ततिय .	१७५
ट, ठ		ततो ..	२१५, २७४
		ततोव ..	२२२
ठितं .	१४५	तत्तकं .	२४६
ठीयते ..	१८०, १८१	तत्थ ..	२१६
ठीयमानं .	१८०	तत्थ नाम त्वं मोघपुरिस !	
—○—		मया विरागाय धम्मे	
		देसिते सरागाय च्चेतेस्ससि	६३
		ड	
		तत्र	२१६, २१७, २७४
		तत्रिमे ..	२२२
डहति ..	११७	तथरिव ..	२२४
डाहो .	११७	तथा ..	२१८
डीनवा ..	१४६	तथागतं अञ्जत्र को अञ्जो	
डसमकसं .	२७९	लोकनायको ..	१३७
डीनो ..	१४६	तथागतस्मा अञ्जत्र को	
		अञ्जो लोकनायको	१३८
—○—		तदमिना ..	२२८
		तदलं .	२२८
त		तदा ..	२१७, २७४
तङ्करोति ..	२२७	तनुति ..	१२३
तंखणे ..	२२६	तनुते ..	१२३
तच्छं ..	२२४	तनोति ..	१२३

	पृष्ठ सख्या		पृष्ठ सख्या
तन्तवायो ..	२७२	तस्मा निस्मरण	२५
तन्दीपा	२७१, २७२	तस्मा पतिट्टित्	२५
तन्धनं .	२२७	तस्माय	२४, २५
तपस्सी .	१६५	तस्मेद्	२२३
तमह	२२८	तह	२१७
तम्पाति .	२२७	तहि	२१७
तन्मुखं ..	२७३, २७४	तं	२५, ५६
तम्हा ..	२४	तंसभावो	२२६
तम्हि ..	२४	तसरणा	२७२
तयं	२४८	तादिक्खो	२७७
तया .	५६	तादिमो	२७७
तयि	५६	तादी	२७७
तयिदं .	२२८	तापसी	१६६
तयो ..	१६७	ताय	२५
तयो बालका	१५६	तायते	१८१
तय्यगो ..	२७८	तारकितं गगनं	२४७
तरुणी ..	२४०	तारा	२०२
तळाकं अभितो उभयतो दीघा		तावन्तं	२४७
रुक्खा तिट्ठन्ति ..	१३५	तासं ..	२४
तवं ..	५६	तिअसीति	१७१
तस्मा ..	२४	तिकचतुक्कं	२७८
तस्मा परिग्गहो ..	२५	तिकिच्छति	१८६, १८७
तस्मि ..	२४	तिकिच्छ्या	२०२
तस्स ..	२४	तिचत्तालीसं	१७१
तस्सं ..	२४, २५	तिट्ठगु कालो	२६६
तस्सा ..	२४, २५	तिट्ठति	११७
तस्सा कत्तं ..	२५	तिट्ठथ वो	५५
तस्सा दीयते ..	२५		

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
तिट्टन्ति धम्मस्स आतारो	३१	तिस्सन्नं	१६७
तिट्टन्तो	६२, ११७	तिसं	२५
तिट्टमानो	६२, ११७	तिस्सा	२५
तिट्टाम	५५	तिस्साय	२५
तिणकट्टसाखापलासं	२७६	तिस्सो	१६७
तिणमयं	२५६	तिस्सो बालिकायो	१५६
तिण्णन्नं	१६७	तिसतिमो	१७५, १७६
तिण्णवा	१४७	तिसं सतं	१७३
तिण्णं	१६७	तिसो	१७५
तिण्णो	१४७	तीणि	१६८
तितिक्खति	१८६, २३२	तीणि फलानि	१५६
तितिक्खा	२०२	तुट्टवा	१४५
तिदण्डकेन परिब्बाजको वुज्झति	१३७	तुट्टि	१४५
तिदसा	२६६	तुट्ठो	१४५
तिनवुति	१७१	तुण्डिमा	१६६
तिन्नं	१६६	तुण्डिमो	१६६
तिपञ्जास	१७१	तुण्हीभूय	२७६
तिभूमं	२८४	तुम्हं	५६
तियासीति	१७१	तुम्हाकं	५६
तिरोकरिय	२७६	तुम्हादी	२७७
तिरोपब्बतं, तिरोपब्बता	२६८	तुम्हे	५६
तिरोभूय	२७६	तुम्हे हसथ	१७८
तिलमुग्गमासं	२८०	तुम्हेहि हसितं	१८०
तिलमुग्गमासा	२८०	तुवं	५६
तिलेसु तेलं वत्तति	३२	ते	२४
तिवङ्गिकं	२२५	ते असीति	१७१
तिसट्ठि	१७१	तेचत्तालीस	१७१
तिसत्तति	१७१	तेचीवरिको	२४५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
तेजति	११६	त्वयि	५६
तेजस्सी	११५	त्वं	५६
तेत्तिस	१६८	त्वं आपन्न	१८५
तेधा	२१६	त्वमि	२२७
तेन	२४	त्वहममि	१७८
तेनवुनि	१७१		
तेन हसितं	१८०	—	
तेपञ्जास	१७१	थ	
तेरस	१६८		
तेरसन्नं	१६६	थञ्ज	२२४
तेलकं	२४६	थामुना	७८
तेळस	१६८	थामुनो	७८
तेलिको	२४५	थालपाचन	२७८
तेवीस	१६८	थालि पचति	१७६
तेसट्ठि	१७१	थावर	१६३
तेसत्तति	१७१	थेय्यं	२०६
तेह	२२३		
तेहि	२४	—	
तेहि हसितं	१८०	द	
तोमरिको	२४५		
त्यज्ज	२२४	दकरक्खसो	२७४
त्रस्तो	१४७	दकसोतं	२७४
त्वमसि	२२७	दक्खति	६६
त्वम्हा	५६	दक्खि	२५५, २५६
त्वया	५६	दक्खिणपुब्बा	२६६
त्वया अत्र भूयते	१७८	दक्खिणुत्तरपुब्बान	२०
त्वया अत्र भूयि	१७६	दक्खिणुत्तरं	२७६
त्वया हसितं	१८०	दक्खिणय्यो	२५०

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
दक्खिण्यो भगवतो सावकसंघो	१६१	ददन्ती	११६
दक्खियं	२०५	ददाति	१८६, २३३
दक्खिस्सति (भविष्यत्काल)	६६, ११८	ददाहि	१३१
दज्जति	११६	दद्लनि	१८६
दज्जन्तो	११६	दन्तवा	१६५
दट्ठुं चक्खु	११३	दन्तुरो	१६५
दड्ढो	१४५	दधिभोजनं	२७२
दण्डपाणिने (द्वितीया)	१०२	दम्म	४८
दण्डपाणिनो (पठमा)	१०२	दम्मि	४८
दण्डवा	१६४	दयावा	१६६
दण्डादण्डी	२८५	दल्हयति विनयं	२३६, २३७
दण्डि	७२	दस	१६६
दण्डि	१६, ७०	दसगवं	२८५
दण्डिको	१६४	दसन्नं	१६६
दण्डिनं	१६, ७०	दस्सनीयो लुक्खो	१६१
दण्डिना	१६	दस्सेति (कर्म)	११८
दण्डिना (० + स्मा)	६	दहति	११७, १८७
दण्डिनि	७१	दात	६६
दण्डिनी	२४१	दातरि	६५
दण्डिने	७०	दाता	६५, ६६
दण्डिनो (० + यो)	५, १६, ७०	दातानं	६६
दण्डिनो पस्स	७०	दातारं	६५
दण्डियो	१३	दातारा	६५
दण्डिस्मा	६, १६	दातारानं	६६
दण्डिस्मि	७१	दातारे	६५
दण्डी	३, ५, ६, १३, ७०, ७२, १६४	दातारेसु	६६
दण्डेन सप्पं पहरति	३०	दातारेहि	६६
दत्ति	२५६		

	पृष्ठ मन्व्या		पृष्ठ मन्व्या
दातारो	६५	द्विवनं गेहो मुञ्जो तिट्ठति	२६
दातु	६५, १६१	द्विवि	१००
दातुसु	६६	द्विवियो	२६२
दातूहि	६६	द्विम द्विम अनुयन्ति	२७१
दाधिक	२५२	द्विसोद्विसं	२७०
दानं	२०२	द्विस्वा	१५५
दानान दानेसु वा धम्मदाने मेट्ठ	३१	द्विस्वान	१५५
दानीयो ब्राह्मणो	१५१	दीघजङ्घो	२७१
दायक	६४, १६१	दीघमज्झिमं	२७६
दायज्जं	२०४	दीघरत्त	२८५
दारगव	२८५	दीनवा	१६६
दारुमयं	२५६	दीनो	१६६
दासव्यं	२०६	दीयते	१८१
दासिदासं	२७६	दीयते ते	५५
दाहो	११७	दीयते नो	५५
दिगु	२७२	दीयते मे	५५
दिगुणं	२७१, २७२	दीयते वो	५५
दिज्जति	१२०	दुकतिकं	२७८
दिट्ठफलं	१६७	दुक्कत	२७५
दिट्ठो	१४४	दुक्कतं=दुक्कटं	२२५
दिन्नवा	१४६	दुट्ठुल्लं	२५०
दिन्नो	१४६	दुतिय	१७५
दिब्बं	२२४	दुद्धं	१४५
दिब्बो	२६२	दुपट्टं	२७२
दियड्ढो	१७६	दुप्पुरिसो	२७५
दिरत्तं	२७८	दुविधो	२७१, २७२
दिवड्ढो	१७६	दुब्बला इत्थी	१५६
दिवसस्स तिकखत्तुं	३१	दुब्बलायो इत्थियो	१५६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
दुविन्नं ..	१६७	द्वत्तिस ..	१६८
दुवे .	१६६	द्वयं ..	२४८
दुह्यं ..	१५२	द्वयाधिकं सतं ..	१७३
दूसयति ..	२११	द्वाचत्तालीस ..	१७१
दूसेति ..	२११	द्वादस ..	१६८
देच्चो ..	२५५	द्वादसमो ..	१७५
देय्य दानं ..	१६१	द्वादसो ..	१७५
देय्यो ब्राह्मणो ..	१६१	द्वा पञ्चास ..	१७१
देवदत्त ! तव परिग्गहो	५५	द्वावीसति ..	१६८
देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु	१३६	द्वासट्ठि .	१७१
देवदत्तो पसन्नो बुद्धं पति, परि	१३६	द्वासत्तति .	१७१
देवयति ..	२११	द्वासीति .	१७१
देवसभं ..	२७३	द्वि असीति ..	१७१
देवानम्पियतिस्सो ..	२३६	द्विक्खत्तुं भुञ्जति ..	२१६
देवापयति ..	२११	द्विचत्तालीस ..	१७१
देवापेति ..	२११	द्विनवुत्ति ..	१७१
देवेति ..	२११	द्विन्नं ..	१६६
दोणमत्तं ..	२४७	द्वि, पञ्च बालका ..	१५६
दोणिको वीहि ..	२४६	द्विपञ्चास ..	१७१
दोणो .	१३५	द्विभूमं ..	२८४
दोभगं ..	२५५	द्विरत्तं ..	२८५
दोमनस्सं ..	२६१	द्विसट्ठि ..	१७१
दोवारिको ..	२६३	द्विसत्तति ..	१७१
द्वङ्गुलं ..	२८४	द्विदोणेन धञ्जं किणाति	३०
द्वङ्गुलं दारु ..	२८५	द्वे .	१६६
द्वत्तिक्खत्तुं .	२७१	द्वे असीति .	१७१
द्वत्तिपत्तपूरा .	२७२	द्वेचत्तालीस ..	१७१
द्वत्तयो वारे ..	२७२	द्वेधा ..	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
द्वनवृत्ति	१७१	धस्तो	१४७
द्वे पञ्चास	१७१	धि अलसं सिस्स	३०, १३५
द्वेसत्तति	१७१	धुनाति	१२२
द्वेसट्ठि	१७१	धेनुक	२६०
		धेनुया (० +ना)	१३
		धेनुयो	१३
		धेनू (० +थो)	१३
		धोरय्हा	२६४
धनवा	१६५		
धनं ते	५५		
धनं नो	५५		
धनं मे	५५		
धनं वो	५५	नकूलो	२७४
धनिका	२३६	नखो	२७२, २७४
धनिको	१६५	नगा पच्चता	२७५
धनिकेहि दलिदानं दानं देय्यं	१५१	नगा रुक्खा	२७५
धनी	१६५	नगो	२७४
धनीयति	२३५	नग्गियं	२०५
धनुकलापं	२७८	नज्जायो	१०२
धम्मकथिको	२६३	नत्तरि	६५
धम्मदिन्ना	२३६	नदियो	१०२
धम्मिको	२५०	नदी	२४०
धम्मेन यसो वड्ढति	१३७	नदीसोतो	२७३
धवली करोति	२२०	नन्दको	१६२
धवली भवति	२२०	नमस्सति	२३६
धवली सिया	२२०	नयनेन काणो	१३७
धवास्सकण्णं	२७६	नयिसु	८६
धवास्सकण्णा	२७६	नवल्लं	१६६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
नवाधिकं सतं .	१७३	निधि ..	२०१, २७८
नवुतं सतं .	१७३	निधेहि .	२६८
नवुतं सहस्त्रं	१७३	निपज्जनं ..	१५२
न समत्थो दारभरणाय	३१	निपज्जितब्बं .	१५१, १५२
न सिज्झति धम्मो विरिय विना	३०	निपज्जित्तु .	१५२
न हि नाम भिक्खवे ! तस्स		निप्फावकुलत्थं	२८०
मोघपुरिसस्स पाणेषु अनु-		निप्फावकुलत्था ..	२८०
द्वया भविस्सति ..	६३	निमुग्गवा .	१४७
नागलो ..	२५२	निमुग्गो	१४७
नागसुपण्णं ..	२७८	निम्मक्खिकं ..	२६८
नागिनी	२४१	निरङ्गुलं ..	२८४
नागियो	२५२	निरोजं .	२२५
नागी	२४१	निसज्ज .	११७
नाथपुत्तिको	२५७	निसीदति ..	११७, १५२
नामरूपं	२७८	निसीदनं .	११७, ५२
नायको ..	१६१	निसीदनीयं ..	१५०
नायति .	१२२	निसीदितब्बं	११७, १५०, १५१
नाययति	२१०	निसीदित्तुं ..	११७, ५२
नाळिकेरो .	२५५	निहितं ..	१४५
निक्कोसम्बि	२७०, २७५	निहितवा ..	१४५
निक्खमति	११८	नीलता ..	२०३
निगूहनं .	२०२	नीलत्तं ..	२०३
निग्गहो	२००	ने ..	२४
निग्घोसो	२२६	नेतब्बं	११५
निच्छयो	२००	नेत्तु ..	१६१
निट्टानं .	२२६	नेदिट्ठो .	२४८, २४९
नित्तिण .	२६८	नेदियो ..	२४८, २४९
निहालू .	१६६	नेन ..	२४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
नेपुञ्जं	२०४	पन्नामि	४७
नेसु	८६	पन्नाहि	४७, १३१
नेहि	०४	पच्चिस्मति	६४
नो	५४	पच्चिम्मन्ति	६४
नोदयति	२११	पच्चिम्मा (हेतु०)	८४
नोदापयति	२११	पच्ची (परि० भूत)	८४
नोदापेति	२११	पच्चीयति	१८१
नोदेति	२११	पच्चु	१२६
नोहेतं	२११	पच्चे	१२६
		पच्चेमु	१२६
		पच्चेय्य	१२६
		पच्चेय्य	१२६
		पच्चेप्याथ	८५
पकतं	२७५	पच्चेय्याथो	८५
पकतो भवं कटं (कर्त्तुं)	१४३	पच्चेय्यामु	१२६
पकतो भोता कटो	१४३	पच्चेय्यासि	१२६
पकरित्वा	२७५	पच्चेय्यु	१२६
पक्कवा	१४७	पच्छत्तो	२१६
पक्को	१४७	पच्छाभत्तं, पच्छाभत्ता	२६८
पक्खिको	२५०	पञ्च	१६६
पग्गहो	२००, २२५	पञ्चकं	२४६
पचत	८५	पञ्चकेन पसवो किणाति	३०
पचति	११५, २०३	पञ्चगवधनो	२८५
पचतु	१३०	पञ्चङ्गुलं	२८५
पचथव्हो	८५	पञ्चदस	१६८, १६९
पचन्तु	१३०	पञ्चदसन्नं	१६६
पचा (अनद्यतन)	८४, १८४	पञ्चधा	२१८
पचाम	४७	पञ्चनदं	२८४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पञ्चन्नं ..	१६६, १६६	पठमानो बालको ..	१६०
पञ्च बालका ..	१५६	पठमा बालिका ..	१५६
पञ्चमो ..	१७५	पठमो बालको ..	१५६
पञ्चवीसति	१६६	पठवी ..	२४०
पञ्चसु ..	१६६	पण्डितियं ..	२०५
पञ्चहि ..	१६६	पण्णु वीसति ..	१६६
पञ्चालियो ..	२६२	पतन्तं फलं ..	१६०
पञ्चालो ..	२५७	पतमानं फलं ..	१६०
पञ्चवा (पञ्चवन्तु)	१६४, १६६	पतितवतियो धारायो	१६०
पञ्चासयोजनिको ..	२५०	पतितवती धारा ..	१६०
पञ्चासं सतं	१७३	पतितवन्तानि फलानि	१६०
पञ्चासा इत्थी	१५६	पतितवन्तियो ..	१६०
पञ्चासा फलानि	१५६	पतितवन्ती ..	१६०
पञ्चासा (पचास) मनुस्सा	१५६	पतितवं फलं ..	१६०
पञ्चासो ..	१७५	पतितावि फलं ..	१६०
पञ्चो ..	१६६	पतिताविनियो धारायो	१६०
पटपटायति ..	२३६	पतिताविनी धारा ..	१६०
पटहालम्बर ..	२७८	पतितावीनि फलानि	१६०
पटिघो ..	२०१	पत्तेय्यो ..	२५६
पटिसोतं ..	२६६	पथवी ..	२४०
पटिहनिस्सामि ..	६५	पथावी ..	२६४
पटिहंखामि ..	६५	पदको ..	२४६
पटुजातियो ..	२६०	पदसां ..	१००
पठती बालिका ..	१६०	पदसि ..	१००
पठन्ती ..	१६०	पदर्स्मि ..	१००
पठन्तो बालको ..	१६०	पदुमं यथा पंसुनि आतपे कतं	१०२
पठमं फलं ..	१५६	पदेन ..	१००
पठमाना बालिका ..	१६२	पनायको ..	२७५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पन्नरस	१६८, १६९	पनायति = पनायति	२२५
पन्तेवासी	२७५	पग्घिं = पलिघो	२२५
पपन्न	१८५, १८६	पग्घिन्धिया	२०२
पपच्चित्थ	६४	पग्घिनो	२१६
पपच्चिरे	६४	परिपट्टवत् वस्सि देवो, परिपट्टवना	२६८
पपच्चु	१८५, १८६	परि पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो	१३८
पपण्णो	२७०	परियज्जेतो	२७५
पपतितपण्णो	२७०	परिलाहो	२०२
पव्वज्जा	२०२	परिसति	२५, १०१
पव्वतं अणु जलति अनलो	१३६	परिसाय	१०१
पव्वतं अभि जलति अनलो	१३६	परोसत	२६९
पव्वतं पति परि जलति अनलो	१३६	परोसहस्स	२६९
पव्वतायति	२३६	पलिघो	२०१
पव्वते तिट्ठति	३८	पल्लविता लना	२४७
पव्वतेय्यो	२६२	पवासिको	२६३
पव्वत्थाह	२२४	पवेक्खति	६५
पमज्जनं	१५२	पसत्थ	१४४
पमज्जितब्बं	१५२	पसुत्त भवता (भावे)	१४३
पमज्जित्तुं	१५२	पसुत्ता बालिका	१८०
पयस्सी	१९५	पसुत्तो भवं (कर्त्तृ)	१४३
पथ्येसना	२२४	पसुत्तो बालको	१८०
परकियो	२५८	पस्सति	११८
परचित्तविट्ठनी	२४१	पस्सति नो	५५
परत्थ	२१६	पस्सति वो	५५
परन्न	२१६	पस्सतो	२१६
परन्तपो	२३६	पस्सेय्यं तं वस्ससतं अरोगा	१२९
परमगवो	२८५	पस्सितब्बं फलं	१६१
परस्स पदं	२३६	पस्सितब्बा नदी	१६१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पस्सितब्बो रुक्खो ..	१६१	पापिट्ठो ..	२४८
पस्सित्त्वा .	१५५	पापिस्सिको .	२४८
पहरणवरणं ..	२७८	पापुणोति .	१२३
पहरतो पिट्ठि ददाति ..	३१	पारगू .	१६३
पंसुकूलिको	२४५	पारदारिको .	२५०
पाकिमं .	२५३	पारिसज्जो .	२०६, २६३
पाको .	२००	पारेयमुनं .	२६६
पाचको .	२१०	पाविसि	६५
पाचयति ..	२१०	पाविसिस्सा ..	६५
पाचयति ओदनं देवदत्तेन		पाविसिस्सा .	१८८
यञ्जदत्तो	२१२	पावेक्खा ..	६५, १८८
पाचरियो	२७५	पासादच्छायां .	२७३
पाचापयति	२१०	पासादीयति कुटियं .	२३६
पाचापेति	२१०	पासिको .	२५२
पाचैति .	२११, २१०	पिच्छवा .	१६६
पाटवं .	२०५	पिच्छिलो .	१६६
पातकालं	२६६	पिट्ठं ..	१४५
पातमग्गं .	२६६	पिट्ठित्तो ..	२१६
पातमेघं ..	२६६	पित .	६६
पाथेय्यं	२६३	पितरं .	६५, ६७
पादपो .	२७२	पितरा ..	६५
पादेन खज्जो .	१३७	पितरा अहं (भत्तुनो) दीयामि	१७६
पानं .	२०२	पितरा तुम्हे (भत्तुनो) दीयन्हे	१७६
पापतमो ..	२४८	पितरा त्वं (भत्तुनो) दीयसि	१७६
पापतरो	२४८	पितरानं .	६६
पापभूमं .	२८४	पितरा मयं पतिनो दीयाम	१७६
पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्ममेन		पितरि ..	६५
कि .	३१	पितरेसु ..	६६

	पृष्ठ मख्या		पृष्ठ मख्या
पितरेहि	६६	पुट्ठ	१४५
पितरो	६५, ६७	पुट्ठो	१४६
पिता	६५, ६६	पुण्णवा	१४६
पितान	६६	पुण्णो	१४६
पितापुत्ता	२८०	पुत्तको	२४६
पितामही	२५६	पुत्ता मत्थि	२२२
पितामहो	२५६	पुत्तिमो	१६८
पितु	६५	पुत्तियति सिस्स	२३६
पितुच्छा	२५८	पुत्तियो	१६८
पितुन्नं	६६	पुत्तीयति	२३५
पितुसदिसो	२७२	पुत्तीयियसति	२३३
पितुसमो	२७२	पुथगेव	२२५
पितुसु	६६	पुथगेव गामेन सो अरञ्ज अधि-	
पितुहि	६६	वसति	१३७
पिपासति	२३३	पुथगेव गामस्मा सो अरञ्ज	
पिलक्खको	२४६	अधिवसति	१३८
पिलक्खनिग्रोधं	२७६	पुथवी	२४०
पिलक्खनिग्रोधा	२७६	पुथुज्जनो	२७५
पिवति	११७	पुथुसो	२२०
पिवन्ती	११७	पुनपि	८४
पिवमानो	११७	पुपुत्तियियसति	२३३
पीतं	१४५	पुप्फंसा	२२६
पीनवा	१४६	पुप्फितो रुक्खो	२४७
पीनो	१४६	पुब्बन्हो	२७५
पीयते	१८१	पुब्बन्हो	२७६
पुक्कुसल्लवड़ाहक	२७६	पुब्बदक्खिणं	२७६
पुञ्ज करोतु भव	१३१	पुब्बरत्तं	२८५
पुट्टपादो	२४५	पुब्बानि	२१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पुब्बा परं . . .	२७६	पोक्खरञ्जो . . .	२२४
पुब्बुत्तरं . . .	२७६	पेत्तिकं . . .	२५३
पुम . . .	७८	पेत्तियो . . .	२५३
पुमं . . .	७८	पेत्तेयो . . .	२५८
पुमलिङ्गं . . .	२७३	पोतको . . .	२६४
पुमाना . . .	७८	पोनोभविका . . .	२५३
पुमाने . . .	७८	पोनोभविको . . .	२५३
पुमानेसु . . .	७८	पोरिसं . . .	२४८
पुमासु . . .	७८	पोरोहितियं . . .	२०५
पुमुना . . .	७८		—०—
पुमुनो . . .	७८		
पुमे . . .	७८		फ
पुमेन . . .	७८	फलरसो . . .	२७३
पुमेसु . . .	७८	फलं (० + सि) . . .	४
पुरक्खत्वा . . .	१२४	फलं पतति अम्बुनि . . .	१०२
पुराणो . . .	२६१	फग्गुनो मासो . . .	२४४
पुरातनो . . .	२६१	फला (नपुं:० + यो) . . .	४
पुरिमं जातिं . . .	२२७	फलानि (० + यो) . . .	४
पुरिसतग्घं . . .	२४८	फलानि . . .	२६
पुरिसमत्तं . . .	२४८	फले (नपुं:० + यो) . . .	४
पुरिसेन गम्मति . . .	३०	फल्लते . . .	२२४
पुरेक्खति . . .	१२४	फुस्सितग्गे (० + सि) . . .	२
पुरेक्खारो . . .	१२४	फुस्सो मासो . . .	२४४
पुरेभत्तं, पुरेभत्ता . . .	२६८	फुस्सी रत्ति . . .	२५१
पुरोभूय . . .	२७६	फुस्सो अहो . . .	२५१
पुंलिङ्गं . . .	२७३	फेणवा . . .	१६६
पोक्खरञ्जो . . .	२२४	फेणिलो . . .	१६६
पोक्खरणी . . .	२४१		—०—

	पृष्ठ संख्या	वृष्ट संख्या
व		२७०, २६६
		बहुमानो
		बह्नावाधो
व्रकवलाका .	२७६	व्रारस
व्रकसोतं	२७३	व्रारसत्त
व्रड्ढं	१४४	वालका ह्यन्ति
व्रधुयं (० + स्मि) .	१४	वालकेन अत्र भूयते
व्रधुया (० + ना) ..	१३	वालकेन चन्द्रो दिस्सति
व्रधुया (० + स्मि) .	१४	वालकेहि अत्र भूयते
व्रधुयो ..	१३	वालकेन हसितं ..
व्रधू (० + सि); (० + यो)	१३	वालको कुक्कुरं पस्सति
वन्धिको	२५२	वालको कुक्कुरे पस्सति
वन्धुता	२६०	वाय्हो
वव्वजो	२४५	वाळिसिको
वभूव	१८७	वाहुसच्च
ववराहरो ..	२७२	विसालकवो
वलिवुद्धको	२४६	वीभच्छति ..
वन्हावाधो	२२३, २२४	वीभच्छा ..
वस्सारत्तं ..	२८५	वुड्ढं ..
व्हवो .	१३५	वुद्ध !
व्हिगामं, व्हिगामा .	२६८	वुद्धं ..
वहुस्सुतियं	२०५	वुद्धत्तं ..
वहुकत्तुको	२८६	वुद्धता ..
वहुकुमारिको गामो	२८६	वुद्धदेय्यं ..
वहुक्खत्तुं .	२१६	वुद्धम्हा (० + स्मा)
वहुत्तं	२०३	वुद्धम्हि (० + स्मि)
वहुधा	२१८, २१९	वुद्धस्मा ..
वहुत्तं .	१७५	वुद्धस्मा पति सारिपुत्तो
वहुमालको ..	२८६	वुद्धस्मि ..

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
बुद्धस्स (०+स) ..	३	ब्रह्मना ..	७६
बुद्धा (०+ग)	३	ब्रह्मनो ..	७६
बुद्धान सासनं .	२२७	ब्रह्मनं ..	७६
बुद्धानं	३	ब्राह्मणा गुणवन्तो ! तुम्हाकं	
बुद्धाय (०+स)	३	परिगगहो-वो परिगगहो	५६
बुद्धा (०+यो) ..	३	ब्राह्मणानं भोजनं ददाति	३०
बुद्धे (०+यो) ..	३	ब्रूवन्ति .	४६
बुद्धा (०+स्मा) ..	३	ब्रूति	४८
बुद्धेन (०+ना) .	३	ब्रूमि	१५१
बुद्धेभि (०+हि)	३	व्यत्ततमा .	२४६
बुद्धे रतनं पणीत	२०५	व्यत्तरा ..	२४८
बुद्धेसु .	३		
बुद्धे (०+स्मि) ..	३	-०-	
बुद्धेहि ..	३	भ	
बुद्धो (+सि) .	२		
बुभुक्खति .	२३२, २३३	भक्खयति वलिवद्दे सस्सं	२१३
बुभुक्खतु .	२३१	भक्खयति मोदके देवदत्तेन	२१३
बुभुक्खि ..	२३२	भगन्दरो ..	२३६
बुभुक्खिस्सति ..	२३२	भगवम्मूलका नो धम्मा	२७०
बुभुक्खेय्य .	२३२	भगवा ..	१४७
बोधपक्खियो ..	२६२	भगो ..	१४७
बोधयति माणवकं धम्मं	२१२	भङ्गुर ..	१६३
ब्रवीति ..	४८	भच्चो ..	१५२
ब्रह्मञ्जं ..	२०४	भच्चो अमच्चस्स सतं धारेति	३१
ब्रह्मलो ..	२५२	भट्ठं ..	१४५
ब्रह्मियो ..	२५२	भतिको ..	२५२
ब्रह्म ! ब्रह्मे ! ..	१४	भत्तगं ..	२०१
ब्रह्मसभं ..	२७३	भत्ति .	२०२

	पृष्ठ सङ्ख्या		पृष्ठ सङ्ख्या
भव्वो	१५२	भावेति	२१०
भयदस्मावी	१६०	भानुग्	१६३
भरण	२००	भिक्षव	२६०
भव	६४	भिक्षया	२०२
भवता	६४	भिक्षववे !	७
भवति	११५, ११६	भिक्षववो !	७
भवतो	६४	भिक्षववो (० + यो)	७
भवन्तो	६४	भिक्षवु	३
भवन्ती	२४०	भिक्षवुना (० + स्मा)	६
भवं खलु रज्जं करेय्य	१२६	भिक्षवुनी	२४१
भवंपतिट्ठा अम्हं	२७०	भिक्षवुनो (० + यो)	५
भवम्पतिट्ठा	२७०	भिक्षवुनोवादो	२२२
भवम्पतिट्ठा मयं	२७०	भिक्षवू (० + यो)	७
भव पुञ्जं करेय्य	१२६	भिक्षवू !	३
भवादिक्वो	२७७	भिक्षवू (० + यो)	६
भवादिसो	२७७	भित्ति	२०२
भवादी	२७७	भिदुर	१६३
भवितब्बं	१५१, १५२	भिन्नवा	१४६
भविस्सति (भविप्यत्काल)	६६	भिन्दिस्सति	६४
भस्सर	१६३	भिन्नो	१४६
भा	८४	भुञ्जिस्सति	६५
भागिनेय्यो	२५५	भुवि	१००
भागो	२००	भुसायति	२३६
भाग्यं	१५०	भूति	२०२
भातब्बो	२५६	भूपं अन्तरेण पासादो न सोभति	१३५
भातब्बो	२५६	भेच्छति	६४
भारो	२००	भेत्तब्बं	१५२
भावयति	२१०, २११	भोक्खति	६५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
भो गच्छ !	८१	मग्गिको	२५०
भो गच्छं !	८१	“मच्चु गच्छति आदाय पेक्ख-	
भो गच्छा !	८१	माने महाजने”	३२
भो गुणव !	८१	मच्चो	२५३
भो गुणवा !	८१	मच्छसूरसेनं	२८०
भोजयति	२११	मच्छसूरसेना	२८०
भोजयति माणवकं ओदनं	२१२	मच्छिको	२५०
भोजापयति	२११	मज्जं	१५१
भोजापेति	२११	मज्झतो	२१६
भोजेति	२११	मज्झहो	२७६
भोता	६४	मज्झिमो	१६१, २६२
भोति अन्ना	१०१	मज्झेकरिय	२७६
भोति अम्म	१०१	मज्झेगङ्गं	२६६
भोति अम्मा	१०१	मणिसंखमुत्तावेळुरियं	२७६
भोति अम्वा	१०१	मणिसंखमुत्तावेळुरिया	२७६
भोती	२४०	मण्डनं	२०२
भोती	६४	मतं	१४४
भोत्तुं	१५३	मत्तवहुमातङ्गं वनं	२६६
भोत्तुमनो	१५३	मत्तिकं	२५३
भोन्त	६४	मत्तिकामयं	२५६
भोन्तो	६४	मत्तियो	२५३
भो सान	७६	मत्तेय्यो	२५६
		मत्तोन्वहं विललाप	१८६
		मद्दवं	२०५, २०६
		मद्दविकपाणविकं	२७८
		मधुरो	१६५
मक्खिककिपिल्लिकं	२७६	मनं	१००
मगधो	२५७	मनसा	१००

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
मनसि करिय	२३६	मरति	११७
मनसो	१००	मरन्तो	११७
मनस्मा	१००	मरमानो	११७
मनस्मि	१००	मह	६४
मनस्स	१००	महा	६१
मनस्सी	१६५	महिमा	२०६
मनुस्सता	२०३	महीभरभू	२७६
मनुस्सा	१३५, २५६	म	५६
मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा व्वन्तियो		मसरणा	२७८
सेट्ठो	३१	माकन्दी	२५१
मनुस्सो	१३५	मागधको	२६२
मनेन	१००	मागयो	२६१
मनो	१००	मागविको	२५०
मनोमया	२७०	मावो मासो	२४४
मनोसेट्ठा	२७०	माणवक भवं अज्जापेय्य	१२६
मन्तज्जायो	१६३	मातरपितरो	२७३
मन्दीपा	२०५, २७२	मानापितरो	२७४, २८०
ममं	५६	मातापुत्ता	२८०
ममत्त	२३६	मातामही	२५६
मयं	५४	मातामहो	२५६
मयं हसाम	१७८	मातियो	२५३
मया	५६	मातुच्छा	२५८
मया अत्र भूयते	१७८	मातुलानी	२४२
मया अत्र भूयिस्सते	१७६	मादिक्खो	२७७
मया इदं न वाक्यं	१५०	मादिसो	२७७
मया हसितं	१८०, १८३	मादी	२७७
मथि	५६	मानसं	२६१
मथ्योगो	२७२	मानसिको सारीरिको रोगो	१६१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
मानसो	२६१	मुखनासिकं ..	२७२
मानुसको	२४६	मुखरो ..	१६५
मानुसी	२५६	मुग्गरिको ..	२४५
मानुसीनी	२४१	मुञ्चिस्सति .	६५
मानुस्सकं	२६०	मुञ्जबब्बजं .	२७६
मानुस्सो	२५६	मुड्ढो ..	१४६
मा भवं अगमा वत्	१८४	मुण्डको .	२४६
मामको ..	२३६	मुत्तवा .	१४७
मायावी ..	१६७	मुत्तो .	१४७
मायूरिको	२५०	मुदवो बालका (वि०)	१०
मारीच्चिकं	२५२	मुदा	२०२
मालभारो	२२५	मुदितो	१४४
मासपुब्बानं ..	२०	मुदु फलं	१५२
मासस्स बहुक्खत्तुं भुञ्जति	२१६	मुदु बालिका .	१५६
मासं गुळधाना .	२६	मुदुवालको ..	१५०
मास्सु ..	८४	मुदु बालिका (वि०) ..	१०
मास्सु पुनपि एवरूपमकसि	१८४	मुदुजातियो ..	२६०
माहिन्दो	२४४	मुदु फलं (वि०)	१०
माहिसं	२५८	मुदुयो बालिकायो .	१५६
मिगमायूरं	२८०	मुदुनिफलानि ..	१०, १५८
मिगमायूरा	२८०	मुनयो (० + यो) ..	५
मिगी	२४०	मुनि !	३
मीयति .	११७	मुनिना (० + स्मा)	६
मीयन्तो	११७	मुनिनो (० + स) ..	५
मीयमानो .	११७	मुनि (० + सि) .	१३
मुक्कवा ..	१४७	मुनिसीहो ..	२७४
मुक्को ..	१४७	मुनी ! ..	३
मुखतो ..	२१६	मुनी चरे ..	२२५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
मुनीन	३, ६	यज्जेवं	२२४
मुनी (० + यो)	५	यञ्ज	२२४, २५३
मुनीसु	३, ६	यञ्जदेव	२२८
मुनीहि	६	यतो	२१५
मुरजगोमुखं	२७८	यतोदक	२२२
मुसावादे पाचित्तियं . .	३२	यत्तक	२४६
मुहुत्तसुखं	२७२	यत्थ	२१६
मूळ्हो	१४६	यत्र	२१६, २१७
मेथुनस्मा	२७२	यथयिद	२२५
मेथुनापेतो	२७२	यथरिव	२२४
मेधिट्ठो	२४६	यथा	२१८
मेधियो	२४६	यथा देवदत्तो तथा यञ्जदत्तो	२६८
मेनिको	२५०, २५५	यथापत्तिया	२६७
मोक्खति	६५	यथापरिस	२६४
मोग्गल्लानो	२५४	यथापरिसाय	२६७, २६६
मोग्गल्लायनो	२५४	यथासत्ति	२६८
मोदति	११६	यदा	२१७
मोदितो	१४४	यदि	२७७
मेधावी	१६७	य यं हि राज भजति सतं वा	
मोरको	२४६	यदि वा असं	८२
म्यायं	२२४	यसत्थेरो	२२६
		यसस्सी	१६५
		यस्मि	२१७
		यहि	२१७
		याचकमागते . .	२२६
यक्खसभं	२७३	याचकस्स भिक्खं ददाति	३०
यक्खिनी	२४१	यादिक्खो . .	२७७
यक्खी	२४१	यादिसो .	२७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
यादी ..	२७७	रजोजल्लं .	२७०
यामो ..	२४४	रजोमयं ..	२७०
यावजीव ..	२६८	रज्जानि विजितानि रञ्जा	१४३
यावञ्चिध ..	२२७	रज्जं विजितं रञ्जा ..	१४२
यावन्तं ..	२४७	रञ्जस्स ..	७७
यावामत्तं ..	२६८	रञ्जं ..	७७
यिट्ठं .	१४४	रञ्जा ..	७७
युगनङ्गलं .	२७८	रञ्जा धनं दीयते ..	१७६
युञ्जति ..	१२०	रञ्जा धनानि दीयन्ति	१७६
युञ्जिभ्तुं धनु ..	१५३	रञ्जा रज्जं विजितं .	१८०
युधि ..	२०३	रञ्जा रज्जानि विजितानि	१८०
युवजायो ..	२७१	रञ्जा विजिते नगरे महाधनं	
युवति ..	२४२	अत्थि ..	१४४
युवस्स ..	७६	रञ्जे ..	७७
युवा .	७६	रञ्जो ..	७७
युवानं ..	७७	रतं ..	१४४
युवाना ..	८०	रत्तिन्दिवं ..	२८५
युवाने ..	७६, ८०	रत्तियं ..	१४, १५
युवानेसु ..	८०	रत्तिया ..	१३, १४
युवानेहि ..	८०	रत्तियो ..	१३
युवानो ..	७६, ७६, ८०	रत्ती ..	१३
•युविनो ..	७६	रत्तो ..	१५
यूपदारु ..	२७२	रत्तयं ..	१५
योब्बनं ..	२०६	रत्या .	१५
-०-		रत्यो .	१५
र		रथिको ..	२५२
		रवो ..	२००
रजनदोणि ..	२७२	राघवो ..	२५४, २५५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
राजक	२५८, २६०	रकवको	२४६
राजगवो	२८५	रकवमूलिको	२६२
राजञ्जकं . .	२६०	रकना फलानि पनितानी	१८०
राजञ्जो .	२५६	रच्छति	६४
राजपुरिसो .	२३५, २७३	रजा	२०२
राजपुत्तकं . .	२६०	रज्जिभन्तु	१५८
राजसभा .	२७२	रदितं	१४४
राजहतो .	२७२	रन्धितं	१५४
राजा . .	७६	रूपवा	१६४
राजानं .	७७	रूपिको	१६४
राजानो .	७६	रूपी	१६४
राजानो रञ्जं विजितवन्तो	१६०	रे धुना !	२६
राजानो रञ्जं विजिताविनो	१६०	रोचति	११६
राजानो रञ्जं विजितवन्तो- विजिताविनो . .	१८०	रोदति	११६
राजा रंजं विजितवा-विजितादी	१८०	रोदिम्यति	६४
राजा रञ्जं विजितवा	१६०		
राजा रञ्जं विजितादी	१६०		
राजिना . .	७७		
राजिनी	७७, २४१		
राजिनो . .	७७	लकखणो	१६७
राजूनं . .	७७	लकखणोरू	२४२
राजूसु	७७	लगवा	१४७
राजूहि . .	७७	लगो	१४७
रकखं रकखं अनुतिट्ठति	१३६	लघिमा	२०६
रकखं रकखं अभितिट्ठति	१३६	लघुता	२०६
रकखं रकखं पति-परि तिट्ठति	१३६	लच्छति	६४
रकखं रकखं सिञ्चति	२७१	लता (० + यो)	१३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
लता (० +सि)	१३	लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति	३१
लता (० +ग)	१४	लोका पसन्ना बुद्धं पति	३०
लता इव	२२३	लोकियो	२६२
लताय (० +ना)	१३	लोकिको	२५३, २६३
लताय (० +स्मि)	१४	लोमसा	१६८
लतायं (० +स्मि)	१४	लोमसो	१६८
लतायो	१३	लोहितसालि	२७४
लते	१४	लोहितायति	२३६
लद्धं	१४५	—	—
लभिस्सति	६४		
लभेय्याहम्भन्ते ! भगवतो		व	
सन्तिके पब्बज्ज, लभेय्यं			
उपसम्पदं	१२८	वकवलाकं	२७६
लम्बकण्णो	२६६	वक्खति	६५
लाभो	२००	वग्गुमुदा तीरिया पन भिक्खू	
लीनवा	१४६	वण्णवा होन्ति	८२
लीनो	१४६	वचि	२०३
लुब्भति	१२०	वचिस्सति	६५
लूनयवं	२६६	वच्छको	२४६
लूनवा	१४६	वच्छतरो	२५६
लूनी	१४६	वच्छति	६४
लूयमानयवं	२६६	वच्छानो	२५४
लेखयति	२११	वच्छायनो	२५४
लेखापयति	२११	वजिरपाणि	२६६
लेखापेति	२११	वज्जं	१५१
लेखेति	२११	वज्जति	११६
लेय्यं	१५२	वज्जन्दो	११६
लोकविद्	१६२	वज्जि मल्लं	२८०

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
वज्जिमल्ला	२८०	वाचको	१९१
वड्ढि	२०२	वाचसिक	२५१
वण्णवा	१९५	वाणिज्ज	२०४
वण्णी	१९५	वानिको अवाधो	१९१
वत्तहानानं	९९	वानून	९६
वत्तहानो	९९	वानेरित	२२३
वत्तु	१९१	वानेय्यो	२६२
वत्तु जळो	१५३	वामोरु	२२३, २४२
वदन्ती	११६	वाराणसी	२६८
वद्धव्यं	२०६	वाराणसेय्यको	२६२
वधु	७२	वारुणी	२८०
वधु	१६	वारुणो	२४४
वधुया	१६	वालधि	२७८
वधुयो	१६	वालिका	२३९
वधू	७०, ७२	वाळ्हो	१४६
वनप्पगुम्बे (० + सि)	२	वासातो	२५७
वन	८४	वासिट्ठी	२५४
वन्दना	२०२	वासिट्ठो	२३५, २५४, २५५
वन्धकेरो	२५५	वाहयति भारं देवदत्तेन	२१३
वमथु	२०१	वाहयति भारं बलिवद्देन	२१३
वरुणानी	२४२	विचिकिच्छा	२०२
वलाहको	२२८	विचारो	२००
वसनं	२०२	विचिकिच्छति	१८६
वसलोति	२२३	विजितं	१४२, १४४
वसिस्सति	६४	विजितवती	१४२
वहगु कालो	२६९	विजितवन्तं	१४२
वहुधनो	२६९	विजितवन्ती	१४२
वाक्यं	१५०	विजितवन्तु	१४२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
विजितवन्तो ..	१४२	वुत्तं ..	१४४
विजितवा ..	१४२	वुत्थं .	१४४
विजिताविनी वा इत्थी	१४२	वूळ्हो .	१४६
विजिताविनो वा खत्तिया	१४२	वेणिको .	२४५
विजिताविनं वा खत्तियं	१४२	वेतनिको	२५२
विजितावी ..	१४२	वेदगू	१६३
विजितावी वा खत्तियो	१४२	वेदञ्जू	१६२
विज्जा ..	२०२	वेदना	२०२
विज्जाचरणं ..	२७६	वेदल्लं ..	२५०
विञ्जू	१६२	वेदियति .	४६
विदुनो .	७२	वेदिसं	२५७
विदू	७२, १६८	वेधवेरो .	२५५
विमातरो ..	२६३	वेनतेय्यो .	२५५
विसुद्धयति ..	२३६, २३७	वेनयिको .	२४६
विलार मूसिकं ..	२७८	वेनरथकारं	२७६
विसमेन धावति .	३०	वेपथु ..	२०१
विसति इत्थी ..	१५६	वेमातिका ..	२६३
विसति फलानि .	१५६	वेय्याकरणो .	२४६
विसति मनुस्सा ..	१५६	वेरायति	२३६
विसति मनुस्से .	१५६	वेरिनेसु .	७५
वीजंव .	२२७	वेसाखो .	२४५
वीजमिव .	२२७	वो .	५४
वीमंसति ..	१८६	वोदकं	२२३
वीसतिमो	१७५	व्याकतो ..	२२३
वीसं सतं ..	१७३		
वीसो .	१७५		
वुड्ढो ..	१४५	सकटानो ..	२५४

-०-

स

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सकटायनो	२५४	सकटारंमु	६६
सकदागामी	२२८	सकटारंहि	६६
सकलं जोतिमधीते	२७१	सकटारो	६५, ६६
सकियो	२५८	सक्यिनो	६८
सकि भुञ्जति	२१६	सक्यिस्मा	६८
सकुन्तच्छायं	२७३	सक्यिस्स	६८
सको	२५८	सक्यीन	६८
सककच्च	१५५, २७६	सक्ये	१४, ६६
सककरित्वा	१५५	सक्येमु	६६
सककुणिस्सति	६५	सक्येहि	६६
सककुणिस्सा	१८८	सक्ये देति	१३६
सककुणोति	१२३	सक्येवरियति	१२४
सकखति	६६	सक्येखारनिरोधा विञ्जणनि-	
सक्यिस्सति	६५, ६६	रोधो	१३८
सक्यिस्सा	६५, १८८	सक्येवारो	१२४
सक्यपुत्तिको	२५७, २५८	सक्येवामिको	२६३
सक्यपुत्तियो	२५८	सक्येधो	२०१
सख !	१४	सक्येक	२६८
सखस्मा	६८	सक्ये पठमवये पव्वज्ज अन्-	
सखं	६६	भिस्सा अरहा अभविस्सा	१८८
सखा	६८	सक्ये संखारा निच्चा भवेदु,	
सखानं	६८, ६६	न निरुज्जेय्युं	१२८
सखानो	६८	सक्येचापयति	२३६, २३७
सखायो	६८, ६६	सक्येचापेति	२३६, २३७
सखारस्मा	६६	सक्येजोति	२७६
सखारं	६६	सक्येज्जु	२१८
सखारा	६६	सक्येज्जत	१४४
सखारानं	६६	सक्येज्जतोह	२४२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सञ्जमो	२२८	सदिसो	२७७
सण्ठहृति	११८	सदी	२७७
सतन्दायी	१६३	सदोणा	२७१
सतमत्तं	२४७	सदापयति देवदत्तेन	२१३
सतस्मा वद्धो	१३७	सदोणाखारी	२७१
सतं इत्थी	१५६	सदापयति	२३६
सतं फलानि	१५६	सद्धम्मस्मा रिते अञ्जो को	
सतं मनुस्सा	१५६	जने रक्खति ..	१३८
सति	२०२	सद्धम्मं रिते अञ्जो को जने	
सतिट्ठो	२४६	रक्खति	१३७
सतिणं अञ्जोहरति	२६८	सद्धिन्द्रियं ..	२२२
सतिमा (सतिमन्तु)	१६४	सद्धो	१६६
सतिमो	१७६	सधुर	२६८
सतियो	२४६	सन्तवा	१४६
सतेन वद्धो	१३७	सन्ति ..	४७, ११६
सतेन मनुस्सेहि	१५६	सन्तिट्ठति ..	११८
सत्तगोदावरं ..	२८४	सन्तु ..	४७, ११६, १३१
सत्तदस	१६८	सन्तो	४७, ११६, १४६
सत्तदसन्नं	१६६	सन्दिट्ठिकं	२५०
सत्तन्नं	१६६	सपक्खो	२७५, २७६
सत्तमो	१७५	सपलासं ..	२७१
सत्तरस	१६८	सपाकचण्डालं	२७६
सत्थ	१४४, १४५	सपुत्तो	२६६, २७०, २७१
सत्थारदस्सनं	२७३	सप्पो जने दंसति	२६
सत्थुदस्सनं	२७४	सबलां ..	२३६
सदा	२१८	सव्वञ्जुनो	७२
सदापयतपाणिनी	२४१	सव्वञ्जू	७२, १६२
सदिकखो	२७७	सव्वत्थ	२१६, २१७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सव्वत्र ..	२१६, २१७	समान जोति	२७६
सव्वथा	२१८	समादियनि	११८
सव्वदा .	२१७	समानपक्खो	२७६
सव्वधि ..	२१७	समानो	७७, ११६
सव्वसो	२२०	समानोदरियो	२७१
सव्वस्मि ..	२१७	समुहुत्तं	२७१
सव्वस्सं ..	२२	समेच्च	१५५
सव्वस्सा ..	२२	समेतायस्मा	२२१
सव्वानि .	२१	समेत्वा	१५५
सव्वाय (० + स्मि)	१४	समेन धावति	३०
सव्वायं ..	१४, २२	सम्पदानं	२०२
सव्वावन्त ..	२४७	सम्मतालं	२७८
सव्वे तिट्ठन्ति ..	२०	सम्मदेव ..	२२५
सव्वे पस्स ..	२०	सम्मा धम्मो	२२५
सव्वेसं ..	२१	सयम्भुवो	१६
सव्वेसानं ..	२१	सयम्भु	१६
सव्वेहि अत्र भूयेय्य .	१७६	सयम्भुना ..	१६
सब्भि ..	६४	सयम्भुनो (० + यो)	५
सब्भो ..	२६३	सयम्भुस्मा ..	६
सन्नह्तां ..	२६८	सयम्भु ..	७०, ७२
सभति ..	२५, १०१	सयम्भू	७, ७०, ७२, २०१
सभा ..	२०१	सयम्भूवो (० + यो)	७
सभाय ..	१०१	सरणं ..	२०२
समणको ..	२४६	सरभसभं ..	२७३
समणब्राह्मणा ..	२८०, १०१	सरलावो ..	१६३
समणे ब्राह्मणे बन्दे सम्पन्नचरणे		सरिक्खो	२७७
इसे समणो भायति	२६	सरिसो ..	२७७
समथविपस्सनं ..	२७६	सरी ..	२७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सलभच्छायां	२७३	साकुणिको ..	२५०
सलभच्छायेन	२७३	साकुन्तिकमागविक	२७६
सला	२७५	साख्यं ..	२०४
सलाकगं	२०१	साग्नि	२७१
सलोमको	२६६	सातिकं ..	२४६, २५०
सवनीयं	१५१	साधिट्ठो ..	२४६
सवनीयानि वा तानी वचनानि	१५०	साधियो ..	२४६
सवरभयं	२७२	साधुसम्मतो बहुजनस्स	३१
स सीलवा	२२६	सानस्स ..	७६
सस्सत्थं	२७१	सानं ..	७६
सहपुत्तो	२७१	सापतेय्यं ..	२६३
सहस्सिमो	१७६	सामणेरो ..	२५५
सहायता	२०३	सामणेरो मासं विनयं पठति	२६
सहितोरू	२४२	सामाकिको	२५०
सहोरू	२४२	सामी ..	१६७
संकुलिकं	२६०	सायकालं	२६६
संधिकं ..	२५७	सायन्हो ..	२७६
संविग्गवा	१४७	सायमग्गं ..	२६६
संविग्गो	१४७	सायमेघं ..	२६६
संविदावहारो	२२८	सारत्तो ..	२२७
संहितोरू ..	२४२	सारदिका रत्ति	२६२
सा अहं अहिसारतिनी	२४१	सारदिको ..	२६२
सा इत्थी ..	२४	सारम्भो	२२७
साकटिको ..	२५२	सारागो	२२७
साकसालं	२७६	सालिभो ..	१६६
साकसाला	२७६	सालियवकं	२८०
साकसुवं	२८०	सालियवका ..	२८०
साकसुवा ..	२८०	साव ..	२११

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सावको	१८१	साहित्ती	२११
सावज्जातवज्जं	२३२	सोती	२४१
सावणो	२४५	सुकत	२७५
साभवति देवदत्तं	२१२	सुगतादि	७०
सावियो	११५	सुन्दमहसन	२७२
सास्सत्थं	२७१	सुककमा	११७
साहस्सिक	२५१	सुकको	११७
साहस्सी	२५१	सुवापयति	२३६, २३७
नाह	२७५	सुवापेति	२३६, २३७
साह उपट्ठितमनिती	२४१	सुत्रयो कूपा	१०, १५८
सिट्ठं	१४५	सुत्ति कपो	१०, १५८
सितानीयं चुण्ण	१५१	सुत्ति जग	१०, १५८
सिद्धवा	१४६	सुत्तियो वापी	१५६
सिद्धो	१४६	सुत्ति वापी	१५६
सिया	४७, ११६, १२६	सुत्तीणि जलानि	१०, १५८
सियु	४७, ११६, १२६	सुजानिसत्तो पि अजानिसम्म	८२
सिस्सेव पुप्फानि चेष्यानि	१५०	सुज्झति	१२०
सिस्सेहि सह = सद्धि = सव		सुणिस्सति	६५, ८७
आगच्छति आचरियो	३०	सुतो	१४४
सिस्सो	१४५, १५२	सुत्तन्तिको	२४६
सीतालू	१६६	सुत्तान्वह विल्लाप	१८६
सीलधन	२७४	सुपुरिसो	२७५
सीलपञ्चाणं	२७६	सुभिक्षं	२६८
सीलवा (सीलवन्तु)	१६४	सुरियन्त	२०३
सीलवो	१६७	सुरिय	२०५
सीवलो	२५२	सुवण्णावङ्कारो	२७०
सीवियो	२५२	सुवामी	१६७
सीसिको	२५२	सुमानं	२२८

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सुसिरो	१९५	सोतव्व	१५१
सुसीला	२३९	सोतु	१९१
सुहज्जो	२०६	सोतुं सोतो	१५३
सूकरिको	२५०	सोदरियो	२७१
सूदो ओदन्नं पचति ..	२९	सोपि	२२२
सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति	३१	सो पुरिसो	२४
सूनवा	१४६	सोभति	११६
सूनो	१४६	सो भागो मं अनु भवति	१३६
सूयते	१८०, १८१	सो भागो मं पति परि भवति	१३६
सूयन्ते	१८०	सोमनस्सं	२६१
सूयमानं	१८०	सोरभ्यं	२५३
सूयिस्सति	१८०	सोरस	१६८
मेकिम	२५३	सोळलसन्नं	१६६
सेट्ठो	२४९	सोळस	१६८, १६९
सेतच्छत्तं	२२६	सोवग्गिको	२५३
सेनियो	१९८	सो वग्गिको धम्मो ..	१६२
सेव्यो	२५७	सोसानिको	२६२
सेय्यो	२४९	सो सुत्वान याति ..	१५४
सो इध अन्नेन वसति ..	१३७	सो सुत्वा याति ..	१५४
सोगतधम्मस्सा नाना तित्थिय-		सो सोतून याति ..	१५४
धम्मो ..	१३८	सोस्सति	६५, ८७
सोगतधम्मेल नाना तित्थिय-		सोहज्जं	२०६
धम्मो ..	१३७	स्याइत्थी	२४
सोगत सासनं ..	२५८	स्यो पुरिसो	२४
सोगतो	२४४	स्वागत	२२३
सोच्चति	११६	स्वातनो	२६१
सोच्चेय्य	२०५	स्वाहं	२२४
सोतव्व	११५		

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
		हार्गिणिको ..	२५०
हञ्छेम	६५	हारेति भार देवदत्त देवदत्तेग	
हञ्जति	१२०	वा	२१२
हत	१४४	हारो	२००
हत्थवा	१९५	हालिद्द	२५१
हत्थमत्तं	२४७	हाहति ..	६४, ६६
हत्थिकं	२६०	हिमवन्तो	८२
हत्थिको	२४६	हिमवं व पव्वतं	८२
हत्थिगवास्सवळवं	२७६	हिमवा	८२
हत्थिगवास्सवळवा	२७६	हिय्यत्तनी वुत्ति	१६२
हनिस्साम	६५	हिय्यत्तनो	२६१
हनुगीव	२७८	हिरञ्जसुवण्णां	२७६
हन्तव्वं	१५१	हिरञ्जसुवण्णा	२७६
हरण	२०२	हीनको	२६४
हसनीय	१५०	हीनप्पणीतं	२७६
हंसवळाकं	२७६	हे कञ्जे !	२६
हंसवळाका	२७६	हेट्ठतो	२१६
हसितव्वं	१५०	हेट्ठापासादं	२६६
हसितं	१४३	हेतुयो (० + यो)	१३
हसिस्सन्तो	६२	हेतयो	१०२
हसिस्समानो	६२	हेतू (० + यो)	१३
हानि	२०३	हेस्सति	६५
हा पुत्तं	१३५	हेहिति	६६
हायना	१६८	हेहिस्सति	६५, ६६
हायनो	१६८	होतापोतारो	२८०
हायिस्सति	६४	होहिति	६६
हारा	२०२	होहिस्सति	६५, ६६

अभ्यासों के लिए संकेत

अभ्यासों के लिए संकेत

दूसरा अभ्यास

- १—गाथा=श्लोक । मेत्ताय=मेत्ता=मैत्री ।
३—प्रज्ञा=पञ्चा । मैत्री=मेत्ता ।

तीसरा अभ्यास

१—सङ्खारा=सस्कार । अनत्ता=अनात्म । “दण्डस्स तसस्सि”=दण्ड में डरने है (यहाँ, ‘दण्डस्स’ पद में पञ्चमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी का प्रयोग किया गया है । पालि में ऐसे विभक्ति-व्यत्यय बहुत देखे जाते हैं) । पत्तिया=पत्ति=योग । सम्बोधिया=सम्बोधि=परम ज्ञान ।

चौथा अभ्यास

१—तावतिसेहि=त्रयस्त्रिंश नामक देवता । पञ्च सिखो=गन्धर्व का नाम । वेद-पटिलाभं सोमनस्स-पटिलाभं=उत्साह=उमङ्ग । निब्बिदाय=निवेद के लिए=वैराग्य के लिए । संबोधाय=ज्ञान-लाभ के लिए । सक्को=शक्र । वेध्याकरणास्मि=धार्मिक व्याख्या ।

२—चङ्कमेन=चक्रमण करते हुए, चहल कदमी करते हुए । आवरणेहि धम्मेहि=अज्ञान-मूलक धर्मों से । मारो=यम=पाप-राज । बोधिमण्डं=वह आसन जिस पर भगवान ने बुद्धत्व प्राप्त किया था । जातिया खो सति=जन्म ग्रहण करने पर । विज्जाणे=विज्ञान । नाम-रूपं=चित्त और शरीर । आसवेहि=आश्रय ।

पाँचवाँ अभ्यास

१—जिन्नो=बुद्ध । निच्चं पञ्जलिते सति=(ससार के) नित्य प्रज्वलित होने रहने पर । अग्भा=बादल से । पापो=पापी । खमनीयं, याचनीयं=कुशल

मंगल । यसस दानि कालं मञ्जसि = यत्र आप जैसा उचिन समभे । उद्यान-
भूमि = उद्यान । जिण्णे = बूढा । ओरको = बुरा । कारुञ्जनं परिच्च = कल्याण
करके । उप्लिनियं वा पडुमिनियं वा पुण्डरीकिनियं = उत्पल-पद्म-पुण्डरीक वाले
जलाशय मे । अन्तो निमुग्गपोसीनि = जो पानी के भीतर ही भीतर बढ रहे हों ।
(मोदकं = पानी के बराबर । अप्परजखे = अल्प 'रज' वाले ।

छठा अभ्यास

१—पसहति = गिरा देता है । तप्पति = अनुताप करता है । मग्गं न विन्दति
= पीछा नहीं करता है । परिळाहो = चित्त-मनाप ।

२—सङ्घ के शरण = सङ्घं सरणं ।

सातवाँ अभ्यास

१—कल्याणे मित्ते = सन्मार्ग पर ले जाने वाले मित्रो को । चारित्तं न
आपज्जितब्बं = बहुत हेल-मेल नहीं करना चाहिए । समन्नागतो = युक्त ।
सयनासनो = वास-स्थान । विपाको = फल । गहपतानी = गृहस्थ स्त्री । पतिट्टा-
पेतु वट्टति = स्थापित करना चाहिए ।

२—निदान = अवसर, आधार ।

आठवाँ अभ्यास

१—संशोधि = बुद्धत्व । गहकारक = घर बनाने वाला = तृष्णा ।

नवाँ अभ्यास

१—उट्टानवतो = उत्साह-शील । सतिमतो = स्मृति-युक्त । मेत्ताविहारी
= मैत्री का अभ्यास करने वाला । पसन्नो = श्रद्धायुक्त । अत्तना अत्तानं चोद-
यति-पटिवासेति = जो अपने आप को (योगाभ्यास में) प्रेरित करता है, लगाता
है । काये कायानुपस्सी = काया में कायानुपश्यी (योगाभ्यास की एक क्रिया—
देखिए—'दीघनिकाय'—महासतिपट्टान सूत्र) । आतापी = अपने क्लेशों को
(= चित्त-मलों को) तपाने वाला । सम्पजानो = सम्प्रज । सन्थव = साथ ।

दसवाँ अभ्यास

- १—सम्पटिच्छि=मान लिया। साणिं परिक्लिपितु=पर्दा डाल दिया। सम्पटिच्छिस्तु=ले लिया। अत्तमना=प्रसन्न। आसिभि=गौरव-पूर्ण।
३—कापाय=कासाबं। घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ=अगारस्मा अन-गारियं पब्वजि।

ग्यारहवाँ अभ्यास

- १—अयोनिंसो=व्रेठीक से। उपट्टानं=सेवा टहल। पटिजगितब्बा=उनका भरण-पोषण करना चाहिए।

बारहवाँ अभ्यास

- १—साराणीयं वीतिसारेत्वा=कुशल-क्षेम पूछ कर। सन्निपतितानं=एकत्रित हुए। पुब्बे-निवास-पटिसंयुत्ता कथा=पूर्व-जन्म के विषय में बातचीत। पञ्जत्ते आसने=विछे आसन पर। अनुलोमं=सलटा। पटिलोमं=उलटा। अनेकचित्तं विमानं='अनेक चित्त' नामक देवताओं के आवास। तमोक्खन्धं पदा-लथि=(अज्ञान) अधकार को दूर कर दिया। कता ते अनुसासनी=बुद्ध के निर्दिष्ट मार्ग को तै कर लिया। तथागत=बुद्ध। पटिपन्ना=मार्ग पर आरूढ़।

तेरहवाँ अभ्यास

- १—अभिसमयो=धर्म-ज्ञान। चतु-सच्चं=चार आर्य सत्य—दुःख, दुःख क कारण, दुःख का निरोध, दुःख-निरोध का उपाय। बाळ्हगिलानो=बहुत बीमार। समादिर्यिसु=ग्रहण किया। पधानं=योगाभ्यास। कम्मट्टानं=कर्म-स्थान (योगाभ्यास का आलम्बन)।

चौदहवाँ अभ्यास

- १—पटिरूपे=उचित मार्ग पर। लोक-बड्ढनो=संसार को बढ़ाने वाला=आवा-गमन के फेर में पड़ा रहने वाला। मिच्छा दिट्ठि=मिथ्या-दृष्टि, गलत धारणा।

धारणा । पक्षत्वं पदहेद्यन्-योक्तव्यान् मे लग्नं जानां तादृशम् । पटिभानु आद्य-
स्मरत्वं एतदस्य भावितारस्य अस्थोति आद्यस्मान् एव गते गण् का प्रथं वनवावे ।

पन्दरहवाँ अभ्यास

१—सज्भायति = पाठ करना है । कामु = पापनाम । सप्यिस्त = सपिन्दा
(विभक्ति-व्यत्यय) । पुत्तस्स = पुत्तं (विभक्ति-व्यत्यय) । पन्नो = शत्रुयुक्त ।
वज्जेसु = निन्द्य कर्मों में ।

सोलहवाँ अभ्यास

१—अस्सुतवा = अश्रुतवान् = अपण्डित । पृथुज्जनो = पृथक्जन = तृप्णा के
बन्धन में पड़ा । सत्पुरिस-धम्मो = सत्पुरुष के धर्म में = बुद्ध के धर्म में । अविस्सितो =
अशिक्षित । सब्बं अभिनन्दति = सभी में आनन्द = मौज करना है । वुत्तितवत्तानं
= ब्रह्मचर्यवास जिनका पूरा हो गया है = प्रहन् । भव-संवेजन = समार का
धन्ध । सुत्तं = सूँघा, चखा, और स्पर्श किया गया । सब्बं अनिच्छतो पच्चवेक्खि-
तब्बं = सभी को अनित्य के ऐसा प्रत्यवेक्षण करना चाहिए ।

गतद्धिनो = जिसने अथ्व = मार्ग को तें कर लिया है । परिन्वाहो = मंताप ।
सम्मदञ्जविमुत्तस्स = सम्यक् प्रजा से विमुक्त हो गया ।

सत्तरहवाँ अभ्यास

१—कुसलं = पुण्य । अकुशलं = पाप । कल्याण-मित्तो = धर्म के मार्ग पर
लाने वाला मित्र । भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा = सारी भोग-विलास की चीजों
को हटा कर । चङ्गमं च सापेट्वा = चहल कदमी करने के लिए स्थान बनवा ।

अट्ठारहवाँ अभ्यास

१—व्यापादो पट्टीयति = द्वेष-भाव शान्त हो जाता है । अरञ्जिको =
जंगल में वास करने वाला । भत्त-संमोदत्तं = भोजन कर लेने के बाद, दाता के
दान का सम्मोदन करता । अञ्जातावी = जिसने प्रजा का लाभ कर लिया है ।

उन्नीसवाँ अभ्यास

१—सञ्जोजन = बन्धन । सम्बोज्झङ्ग = सम्बोध्यङ्ग = सम्बोधि लाभ

करने के अङ्ग । अनुपस्सना = योग की एक क्रिया । सम्मन्वयान = सच्चा उत्साह ।
बहुली करणीया = ब्रह्म अभ्यास करना चाहिए ।

बीसवाँ अभ्यास

१—उदानं उदानेति = प्रीति-वाक्य निकालते हैं । फस्स-श्चवया = स्पर्श के प्रत्यय (= हेतु) से । सति अधिद्वान्वा = स्मृति उपस्थित करनी चाहिए ।
ब्रह्म-विहार = योग का एक अभ्यास । बुद्ध-धातु = बुद्ध के फूल ।

इकीसवाँ अभ्यास

१—पाटिहीर = ऋद्धि-सिद्धि के कार्य । सन्धाविस्सं = भटकता रहा (काल-व्यत्यय) ।
२—बुद्ध-मन्दिर = विहार ।

बाइसवाँ अभ्यास

१—थेयसंखात्तं = चोरी करने की नियत से । सम्पजान-मुसा = जान-बूझ कर झूठ । कतञ्जू = कृतज्ञ । अकथं कथी = संशय-रहित ।

तेइसवाँ अभ्यास

१—वज्जं = दोष । जानि = हानि । इन्द्रिय-गुत्ति = इन्द्रिय-संयम । संवरो = संयम । पटिसन्थार-वुत्ति = मीठा आचरण वाला । समथ, दमथ इत्यादि = योग के अभ्यास । विपस्सना = विदर्शना ।

२—सव दिशाओं में व्याप्त करना = सव्वासु दिसासु फरणं ।

पच्चीसवाँ अभ्यास

२—दिन दोपहर को = दिवादिवं ।

इकतीसवाँ अभ्यास

१—कायगता-सत्ति = शरीर की गन्दगियों पर मन्त्र करना । सिरो-कुड्डं = दीवाल के द्वार पार । अनुलोमं पटिलोमं = सलटा-पलटा ।

वेस्लित्तग्गा = जिसका अग्र भाग घुघरुदार । साणवास-सविसा = सन की तरह ।